पुरुषोत्तम संगमयुग

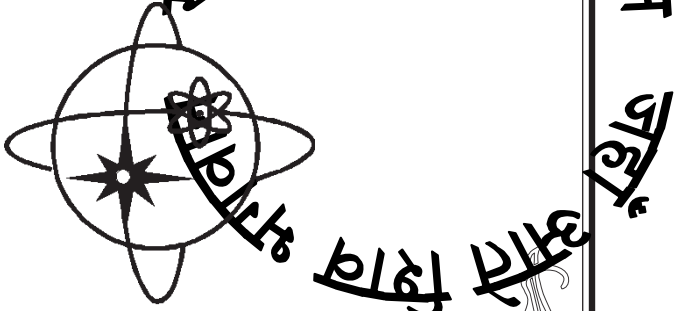

प्रस्तावना

"संगमयुग की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान"।

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते अविनाशी बाप के साथ अविनाशी प्रीति निभाने वाले बच्चों प्रति संगमयुग की हर घड़ी जीवन में नवीनता लाने वाली है।... सारे कल्प की मौजें इस जीवन में अनुभव करते हो।... पूज्यपन की मौज और राज्य करने की मौज, दोनों की नॉलेज अभी है, इसलिए अभी मौज है।" अ.बापदादा 31.12.90

पुरुषोत्तम संगमयुग इस विश्व-नाटक के नये चक्र का आदि भी है तो पुराने चक्र का अन्त भी है। संगमयुग कल्प-वृक्ष की जड़ भी है तो फूल-फल भी है, जिस जड़ और फूल-फल पर ही वृक्ष का आधार होता है और उसकी शोभा होती है। संगमयुग पर ही ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान के आधार पर ही आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला होती है, सारा विश्व पावन बनता है। संगमयुग ही सारे कल्प के लिए सुख-शान्ति-पवित्रता का बीज बोने का समय है।

संगमयुग की विशेष प्राप्तियां हैं, जिसके कारण ही कल्प के संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। जब संगमयुग की इन विशेष प्राप्तियों के महत्व का ज्ञान होगा, उनका अनुभव होगा, तब ही उनके प्रति हमारा आकर्षण बढ़ेगा और उनका लाभ उठाने के लिए हमारा पुरुषार्थ होगा, जिससे हमारा वर्तमान जीवन परम सुखमय अनुभव होगा और भविष्य सुखमय जीवन के लिए पुरुषार्थ सहज होगा। उससे हमारे जीवन में महानता आयेगी और हम महान बन जायेंगे। इसलिए इस संगमयुग के महत्व और उसकी प्राप्तियों आदि को जानना अति आवश्यक है।

यह विचारणीय है कि विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी (Eternaal) सत्य हैं, वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सभी को सर्वमान्य होते और एकमत से स्वीकार्य होते हैं और होने भी चाहिए। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक के अविनाशी नियम और सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता अवश्यम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। उनमें एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का

निर्णय करना ही यथार्थ है। उनमें देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं। बाबा ने भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग बातें कही हैं।

"इस समय तुम्हारी सब मनोकामनायें पूरी होती हैं। ... इस समय तुम्हारे में ताकत है, जिससे तुम सबकी मनोकामनायें पूरी कर सकती हो।" सा.बाबा 25.10.03 रिवा.

विषय सूची

प्रथम अध्याय (Ist Chapter

पुरुषोत्तम संगमयुग
परिभाषा
पुरुषोत्तम संगमयुग का समय
विभिन्न प्रकार के संगम और उनका महत्व
काल-चक्र के हिसाब से संगम
पुरुषोत्तम संगमयुग का महत्व एवं विशेषतायें
पुरुषोत्तम संगमयुग की विशेष घटनायें
पुरुषोत्तम संगमयुग के विशेष गुण
पुरुषोत्तम संगमयुग एवं गीता-ज्ञान यज्ञ
पुरुषोत्तम संगमयुग विशेष प्राप्तियां एवं अनुभव
ज्ञान-पक्ष एवं अनुभूति पक्ष

ज्ञान-पक्ष

1. आत्मा का ज्ञान
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक का ज्ञान
4. सृष्टि-चक्र का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान

देवी-देवता धर्म की स्थापना की स्थापना का ज्ञान।
सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान और धर्म-स्थापना में दो आत्माओं का पार्ट।

7. कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान
8. योग का यथार्थ ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान और महत्व
10. अन्य विविध विषयों का ज्ञान

अनुभूति-पक्ष

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)

पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुग का तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक ज्ञान और अनुभव
पुरुषोत्तम संगमयुग और द्वापर-कलियुग का ज्ञान तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुषोत्तम संगमयुगी सुख और कलियुगी सुखों में अन्तर
पुरुषोत्तम संगमयुगी, सतयुगी-त्रेतायुगी और द्वापर-कलियुगी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन
पुरुषोत्तम संगमयुग की खुशियाँ और उनका आधार
पुरुषोत्तम संगमयुग और पुरुषार्थ
पुरुषोत्तम संगमयुग एवं जड़ प्रकृति
पुरुषोत्तम संगमयुग, विधि-विधान और विधाता

तृतीय अध्याय (IIIrd Chapter)

पुरुषोत्तम संगमयुग और स्थापना एवं विनाश का दिव्य कर्तव्य
पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुगी राजवंश की स्थापना
पुरुषोत्तम संगमयुग और सफल कर सफलता का सिद्धान्त
पुरुषोत्तम संगमयुग और पाप-पुण्य का ज्ञान एवं पाप-पुण्य का खाता
पुरुषोत्तम संगमयुग और विश्व-कल्याण अर्थात् विश्व-शान्ति
पुरुषोत्तम संगमयुग, श्रीमत और विश्व-कल्याण
पुरुषोत्तम संगमयुग और विभिन्न धर्म, धर्म-शास्त्र, धर्म की मान्यतायें
पुरुषोत्तम संगमयुग और भक्ति मार्ग एवं भक्ति के कर्म-काण्ड, त्योहार आदि
पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्मा के हिसाब-किताब
पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब
पुरुषोत्तम संगमयुग का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक महत्व
पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत देश
पुरुषोत्तम संगमयुग और अहंकार-हीनता, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति
पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत का प्राचीन राजयोग
पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा द्वारा दिये गये स्वमान और वरदान
पुरुषोत्तम संगमयुग और निश्चयबुद्धि

चतुर्थ अध्याय (IVth Chapter)

प्रश्नावली
विविध बिन्दु
सारांश

ज्ञान पक्ष में

अभी परमात्मा से विश्व-नाटक के जिन गुह्य रहस्यों का ज्ञान मिलता है, उसमें कुछ मुख्य-मुख्य का यहाँ वर्णन करते हैं -

1. आत्मा का ज्ञान
आत्मिक स्वरूप एवं आत्मा के गुण-धर्मों का ज्ञान
मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़
आत्मा और शरीर के अस्तित्व एवं दोनों के सम्बन्ध का ज्ञान
आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का ज्ञान
आत्मा के लेप-क्षेप का ज्ञान
आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का और आपही पूज्य और आपही पुजारी पन का ज्ञान
आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का ज्ञान
आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का ज्ञान
आत्मा-परमात्मा के भेद और उनकी समानता का ज्ञान
आत्मा के **84** जन्मों का ज्ञान
आत्मा के अविनाशी संस्कारों का ज्ञान
आत्मा की विभिन्न योनियों का ज्ञान
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है, पशु योनियों में नहीं का ज्ञान
विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनके सुख-दुख का ज्ञान
आत्माओं के लिंग परिवर्तन का ज्ञान
आत्मा के वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का ज्ञान
आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का ज्ञान
आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का ज्ञान
आत्मा की कर्मातीत स्थिति का ज्ञान
आत्मा के प्रकृति और आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का ज्ञान
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का ज्ञान
फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का ज्ञान तथा दोनों के गुण-धर्मों में अन्तर का ज्ञान
देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का ज्ञान
ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का ज्ञान
आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का ज्ञान
आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का ज्ञान
आत्मा की चेतनता की परख का ज्ञान
परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख और विषयानन्द के विषय में ज्ञान

2. परमात्मा का ज्ञान
परमात्मा शब्द के भाव-अर्थ का ज्ञान
परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के पिता स्वरूप का ज्ञान
परमात्म के सर्वशक्तिवान स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी है अर्थात् परमधाम का वासी का ज्ञान

परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का ज्ञान
परमात्म के न्यायकारी और समदर्शीपन का ज्ञान
परमात्मा के परकाया प्रवेश का ज्ञान
परमात्मा के अवतरण कि विधि-विधान का ज्ञान
परमात्म मिलन का ज्ञान
परमात्मा के लिब्रेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता पन का ज्ञान
परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का ज्ञान
परमात्मा के बाग़वान स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का ज्ञान
परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का ज्ञान
परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के खिवैया स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा खिवैया स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के सौदागर स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का ज्ञान

3. विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान
विश्व-नाटक और उसकी संरचना का ज्ञान
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का ज्ञान
विश्व-नाटक के गुण-धर्मों **(Characterstics)** का ज्ञान
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान
विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का ज्ञान
विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का ज्ञान
विश्व-नाटक के सतत परवर्तनशीलता और विविधता का ज्ञान
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का ज्ञान
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का ज्ञान
विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का ज्ञान
विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान
विश्व-नाटक में सूर्य, चांद, तारों के अस्तित्व और महत्व का ज्ञान
विश्व-नाटक में साक्षी स्थिति का ज्ञान
विश्व-नाटक में पुरुषार्थ का महत्व का ज्ञान
विश्व-नाटक की खेल-भावना का ज्ञान
विश्व-नाटक में मोक्ष का ज्ञान
विश्व-नाटक में मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान

4. सृष्टि-चक्र का ज्ञान

सृष्टि-चक्र के चक्रवत् गतिशीलता का ज्ञान
सृष्टि-चक्र के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का ज्ञान
सृष्टि-चक्र की अवधि का ज्ञान
सृष्टि-चक्र के के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का ज्ञान
स्वास्तिका का ज्ञान अर्थात् चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में समय की विशेषता का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में "नथिंग न्यू" का ज्ञान और महत्व

5. त्रिलोक का ज्ञान
ब्रह्म लोक (ब्रह्माण्ड) का ज्ञान अर्थात्
ब्रह्म तत्व क्या है?
ब्रह्म लोक में आत्मायें कैसे रहती हैं और कब तक रह सकती हैं?
ब्रह्म लोक से आत्मायें कब और कैसे आती हैं तथा कब और कैसे जा सकती हैं?
ब्रह्म लोक की स्थिति भूमण्डल के एक तरफ अर्थात् ऊपर है या चारो तरफ है?
सूक्ष्म वतन का ज्ञान
सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा - विष्णु - शंकर का ज्ञान
स्थूल वतन की गति-विधि का ज्ञान अर्थात् सूक्ष्म वतन का इस विश्व-नाटक में क्या स्थान है, उससे क्या सम्बन्ध है?
स्थूल वतन का ज्ञान अर्थात् तीनों लोकों का परस्पर क्या सम्बन्ध है?
त्रिलोकीनाथ का ज्ञान अर्थात् त्रिलोकीनाथ कौन है, कैसे है और कब बनता है?

6. कल्प वृक्ष का ज्ञान
कल्प-वृक्ष शब्द का और उसके वृक्ष के समान गुण-धर्मों का ज्ञान
कल्प-वृक्ष की कलम का ज्ञान अर्थात् देवी-देवता धर्म की स्थापना का ज्ञान
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का ज्ञान
संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत धर्म की स्थापना का ज्ञान
परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का ज्ञान
सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान और धर्म-स्थापना में दो आत्माओं के पार्ट का ज्ञान।
आत्माओं का एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का ज्ञान
आदि-सनातन धर्म रूपी तने से विभिन्न धर्म रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलने का ज्ञान
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म के सम्बन्ध का ज्ञान
सनातन शब्द का ज्ञान
सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का ज्ञान

कल्प-वृक्ष की आयु और उसके लाखों वर्ष न होकर, **5000** वर्ष के होने का ज्ञान
विभिन्न धर्मों की आयु का ज्ञान अर्थात् उनके स्थापना और विनाश का ज्ञान
कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का ज्ञान
वृक्षपति, वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का ज्ञान
सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान और धर्म-स्थापना में दो आत्माओं का पार्ट का ज्ञान

7. कर्मों की गुह्य गति के ज्ञान की प्राप्ति
कर्मों की गहन गति का ज्ञान
कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का ज्ञान
विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का ज्ञान
सुकर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान
सुकर्म कर्म करने के विधि-विधान का ज्ञान
कर्म और कर्म फल का ज्ञान
निष्काम कर्म का ज्ञान
कर्म और विश्व-नाटक के विधि-विधान के सम्बन्ध का ज्ञान
कर्मातीत अवस्था का ज्ञान
कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का ज्ञान
कर्मभोग और कर्मयोग का ज्ञान और कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय का ज्ञान
कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का ज्ञान
कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का ज्ञान
धर्म और कर्म का ज्ञान
पाप-पुण्य का ज्ञान
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का ज्ञान
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का ज्ञान
धर्मराज और धर्मराजपुरी का ज्ञान
धर्मराजपुरी के विधि-विधान का ज्ञान
धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का ज्ञान
धर्मराज की ट्रिबुनल का ज्ञान
कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का ज्ञान
संगमयुग पर एक का कई गुणा फल क्यों ?
1. यथार्थ ज्ञान से अच्छे या बुरे दोनों प्रकार के कर्म के फल की कई गुणा प्राप्ति होती है।
2. संगमयुग पर परमात्मा के साथ डायरेक्ट सम्बन्ध होने कर्म के कई गुणा फल की प्राप्ति होती है।
3. संगमयुग पर हम निमित्त बनते हैं तो हम जो करते हैं, हमको देखकर और भी फॉलो करते हैं, तो उसका अंश भी हमको मिलता है। गलत करते हैं तो कट जाता है।

8. योग का यथार्थ ज्ञान

योग का अर्थ एवं योग अर्थात याद का ज्ञान
योग के विधि-विधान का ज्ञान
राजयोग और हठयोग के अन्तर का ज्ञान
निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का ज्ञान
बिन्दु रूप स्थिति और उस स्थिति के अभ्यास का ज्ञान
बिन्दुरूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का ज्ञान
विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का ज्ञान
राजयोग-हठयोग की समानताओं और असमानताओं का ज्ञान
रुहानी ड्रिल का ज्ञान और अभ्यास
योग की सफलता में एकान्त और एकाग्रता के महत्व का ज्ञान
स्मृति और विस्मृति का ज्ञान
स्मृति से समर्थी का ज्ञान
योग की सफलता में मौन के महत्व का ज्ञान
योग में विभिन्न प्रकार की बाधायें, तूफान और उन पर विजय का ज्ञान
योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द का ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान और जीवन में उसके महत्व का ज्ञान
सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का ज्ञान
सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का ज्ञान
सच्ची पवित्रता, ब्रह्मचर्य व्रत का ज्ञान और दोनों में अन्तर एवं सम्बन्ध का ज्ञान
जीवन में पवित्रता के महत्व का ज्ञान
संगमयुग की पवित्रता और सतयुग की पवित्रता के सम्बन्ध और उसमें अन्तर का ज्ञान
10. अन्य विविध विषयों का ज्ञान
ब्रह्मा का ज्ञान
ब्रह्मा-सरस्वती का ज्ञान और उनके सम्बन्ध का ज्ञान
बेहद के दिन और रात का ज्ञान
ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का ज्ञान
परमात्मा की छत्रछाया का राज़
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का ज्ञान
काशी कलवट का ज्ञान और अनुभव
सतयुग-त्रेता की राजाई और उसके विधि-विधान का ज्ञान
यथार्थ दान और अविनाशी ज्ञान रतनों के दान का ज्ञान
दानी, महादानी और वरदानी पन का ज्ञान और अनुभव
नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का ज्ञान
ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का ज्ञान
सागर मंथन का ज्ञान और विचार-सागर मन्थन का ज्ञान
त्याग और भाग्य का ज्ञान और त्याग से भाग्य का अनुभव

आपघात और जीवघात के भेद का ज्ञान
आत्माओं से दुआयें लेने और दुआयें देने का ज्ञान और अनुभव
परमात्मा की दुआयें लेने का ज्ञान और अनुभव
इच्छामात्रम् अविद्या का ज्ञान और अनुभव
पैगम्बर-मैसेन्जर का ज्ञान और अनुभव
गीता-ज्ञान, उसके समय और गीता ज्ञान-दाता का ज्ञान
राम-रावण, कौरव-पाण्डव का ज्ञान
जीते जी मरने का ज्ञान और अनुभव
अमृत और विष का ज्ञान
विभिन्न त्योहारों, पर्वों और उत्सवों का ज्ञान
गोप-गोपियों और मुरलीधर की मुरली का ज्ञान
रुद्र माला और वैजन्ती माला का ज्ञान और वैजन्ती माला का दाना बनने का ज्ञान
तीसरे नेत्र का ज्ञान और अनुभव
ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों का ज्ञान और उनके अन्तर का ज्ञान
सच्ची स्वतन्त्रता का ज्ञान और अनुभव
साइलेन्स और साइन्स का ज्ञान तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान
भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज
त्याग और भाग्य का राज़
भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज़
बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज़
योगबल - भोगबल का ज्ञान
योगबल और भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का ज्ञान
योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़
देह-भान और देहाभिमान का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का ज्ञान
बैलेन्स का ज्ञान और बैलेन्स से ब्लेसिंग पाने का ज्ञान एवं अनुभव
आत्मा और शरीर, स्व-सेवा और विश्व-सेवा, साधन और साधना, अधिकार और कर्तव्य, स्वमान और सम्मान आदि-आदि में बैलेन्स स्थापित करके स्व-उन्नति को पाने का ज्ञान और अनुभव परमात्मा द्वारा संगमयुग पर ही आत्माओं को मिलता है।
भारत का यथार्थ ज्ञान
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का ज्ञान
सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान
सत्य नारायण, अमर कथा, तीजरी की कथा, वेदों-शास्त्रों का सार रूप में ज्ञान
आत्मा के मूल गुण शान्ति, शक्ति, पवित्रता, पवित्रता, स्वतन्त्रता आदि आदि का ज्ञान
परमात्मा के परकाया प्रवेश और ब्रह्मा द्वारा नई रचना का ज्ञान आदि आदि
अनुभूति-पक्ष
* आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अनुभव

* परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति
* पुरुषोत्तम संगमयुग है सुख-शान्ति-पवित्रता की अनुभूति का टॉवर
* निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि .... जय-पराजय में समान स्थिति का अनुभव
* मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ और सुखद अनुभव
* परमात्मा के अवतरण अर्थात् परकाया प्रवेश का अनुभव
* परमात्म-मिलन और परमात्मा के सानिध्य का सुखद अनुभव
* ज्ञान सागर परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव
* परमात्म-प्यार और पालना का अनुभव
* परमात्मा के मात-पिता के रूप में पालना और प्यार का सुखद अनुभव
* विचित्र परमात्मा को चित्र अर्थात् साकार रूप में देखने और उनके दिव्य चरित्रों का अनुभव
* परमात्मा से सर्व प्राप्तियों की अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति की अनुभूति
* परमात्मा से मदद लेने और परमात्मा को मदद देने का अनुभव
* परमात्मा की मदद का यथार्थ अनुभव
* परमात्मा की मदद और उसके विधि-विधान का यथार्थ अनुभव
* परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की यथार्थ अनुभूति
* ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का अनुभव
* ईश्वरीय गोद का अनुभव
* परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का अनुभव
* परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात ईश्वरीय वर्से की अनुभूति
* परमपिता परमात्मा का वारिस बनने और बनाने का अनुभव
* परमात्मा के सौदागर स्वरूप का अनुभव
* डायरेक्ट परमात्मा को देने और परमात्मा से लेने का अनुभव
* परमात्मा के खिवैया स्वरूप का अनुभव
* निराकार आत्मा का निराकार बाप के प्यार का साकार में अनुभव
* आत्मा आशिक को परमात्मा माशूक के प्यार का यथार्थ अनुभव
* परमात्म के गरीब-निवाज स्वरूप का अनुभव
* परमात्मा के सानिध्य से पवित्रता की धारणा और दिव्य शक्तियों की प्राप्ति की अनुभूति
* अमरत्व का अनुभव
* यथार्थ रीति से साक्षीपन का अनुभव
* विश्व-नाटक के सुख का अनुभव
* विश्व-नाटक के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* विश्व-नाटक के गुण-धर्मों और नियम-सिद्धान्तों का अनुभव
* बच्चों का बाप और बाप का बच्चों पर बलिहार जाने का अनुभव
* श्रेष्ठ भाग्य और भाग्यविधाता परमात्मा के भाग्य-विधाता स्वरूप का अनुभव
* त्याग में भी भाग्य अनुभव
* पुरुषार्थ में प्रालब्ध का अनुभव

* परमात्मा की छत्रछाया और उनके हाथ और साथ का अनुभव
* परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त का सुखद अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त और उसकी विशालता का सुखद अनुभव
* ज्ञान सागर परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव
* ईश्वरीय राज-दरबार अर्थात् इन्द्र-सभा का अनुभव
* शिवरात्रि का ज्ञान और रात्रि जागरण के महत्व का अनुभव
* परमात्मा के शिक्षक स्वरूप का अनुभव
* गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ का अनुभव
* वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुभव
* विश्व-परिवार और परिवार के पूर्वजपन का अनुभव
* आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम (Sapling) और विभिन्न धर्मों की स्थापना का अनुभव
* कर्म और फल के विधि-विधान का अनुभव
* कर्मयोग और कर्मभोग तथा दोनों के अन्तर का अनुभव
* धर्मराज और धर्मराज पुरी के विधि-विधान का अनुभव
* विभिन्न धर्मों के अस्तित्व और धर्म-ग्रन्थों के सार का अनुभव
* लव एण्ड लॉ के बैलेन्स के सन्तुलन का अनुभव
* राजा जनक के समान विदेही स्थिति का अनुभव
* मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का अनुभव
* स्वराज्य अधिकारीपन का अनुभव
* अहंकार और हीनता से मुक्त जीवन का अनुभव
* खुदा दोस्त का अनुभव
* बेफिकर बादशाह का अनुभव
* बाप के हाथ और साथ का अनुभव
* बालकपन और मालिकपन का अनुभव
* मास्टर सर्वशक्तिवान का अनुभव
* आत्मा के लाइट-माइट स्वरूप का अनुभव
* गार्डन आफ अल्लाह अर्थात् खुदा के बगीचे का अनुभव
* कमल पुष्प सम जीवन का अनुभव
* परमात्मा के करन-करावनहार का ज्ञान और अनुभव

पारलौकिक एवं अलौकिक मात-पिता के प्यार का अनुभव

विश्व-परिवार की अनुभूति

साक्षीपन की दिव्य अनुभूति

* संगमयुग है प्रभु-प्यार के अनुभव का युग अर्थात् प्रभु-प्यार में आत्मा अपनी देह और देह की दुनिया को भूलकर अलौकिक अनुभव करती है तथा आत्मा देह और देह की दुनियां को भूलने का जो पुरुषार्थ करती वह भी एक अलौकिक अनुभव है। इसलिए संगमयुग का पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान सुखदायी अनुभव

होता है।
पुरुषोत्तम संगमयुग की खुशियाँ और उनका आधार
परमपिता परमात्मा के मिलन की खुशी
योगानन्द के अनुभव की खुशी
परमात्मा के साथ-साथ पार्ट बजाने की खुशी
विश्व-नाटक में श्रेष्ठ और आदि से अन्त तक पार्ट बजाने की खुशी
परमपिता परमात्मा से वर्सा पाने की खुशी
कल्प-कल्प बाप से वर्सा पाने की खुशी
दिलाराम बाप के दिल-तख्त पर बैठने की खुशी
मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव की खुशी
त्याग-तपस्या से भाग्य अनुभव करने की खुशी
ज्ञान-धन की प्राप्ति की खुशी
आत्म-ज्ञान
परमात्म-ज्ञान
विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की खुशी
त्रिलोकीनाथ और त्रिकालदर्शी बनने की खुशी
विश्व-नाटक को खेल के रूप में अवलोकन करने की खुशी
परमधाम घर जाने की खुशी
स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग में जाने की खुशी
मृत्युलोक से अमरलोक में जाने की खुशी
स्वर्ग की राजाई स्थापन करने और पाने की खुशी
ईश्वरीय परिवार के मिलन की खुशी
विश्व-परिवार के मिलन की खुशी
परमात्म-पालना की खुशी
परमात्म पढ़ाई की खुशी
त्रिकालदर्शी बनने की खुशी
ज्ञान-गुण-शक्तियों का खज़ाना जमा करने की खुशी
विश्व-सेवा की खुशी
ऊच से ऊंच ब्राह्मण बनने की खुशी
पूज्य राज्य अधिकारी और पूज्यनीय बनने की खुशी
माया से युद्ध करने और युद्ध में जीत पाने की खुशी
स्वराज्य अधिकारी सो विश्व-राज्य अधिकारी पन की खुशी
गॉर्डन ऑफ अल्लाह का ज्ञान और उस गॉर्डन का फूल बनने की खुशी
रामराज्य की स्थापना और रावण राज्य के विनाश की खुशी
सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानने की खुशी
भारत भूमि में जन्म लेने की खुशी

पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा द्वारा दिये गये स्वमान, वरदान एवं टाइटिल

तुम बच्चे बाप समान मास्टर ज्ञान के सागर हो,

तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

तुम बच्चे विश्व के कल्याणकारी हो।

तुम जगत के लिए लाइटहाउस-माइट हाउस हो।

तुम स्वराज्य अधिकारी सो विश्व के राज्य अधिकारी हो।

तुम विश्व के सहारे दाता हो।

तुम सर्व आत्माओं के पूर्वज हो।

तुम लकी सितारे हो, तुम जगत को रोशन करते हो, तुम्हारे रोशन होने से जगत रोशन होता है।तुम बेहद सन्यासी हो।

तुम योद्धा हो, रुहानी सेना हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

तुम स्वदर्शनचक्रधारी, ब्राह्मण कुल भूषण हो।

तुम बच्चे ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो।

तुम सर्वश्रेष्ठ सत्य ज्ञान की अथॉर्टी हो।

तुम पुरुषोत्तम युगी सर्वोत्तम ब्राह्मण हो।

तुम जगत के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हो।

तुम इस जगत के जगमगाते सितारे हो, तुम्हारे आत्म-प्रकाश से जगत प्रकाशित होता है।

तुम इस ब्राह्मण कुल के दीपक हो।

तुम परमात्म की ऑखो के तारे हो।

परमपिता परमात्मा तुम्हारा सर्व सम्बन्धी है।

खुदा तुम्हारा दोस्त है।

तुम परमात्मा के बगीचे के खुशबूदार फूल हो,

तुम इस रुद्र ज्ञान यज्ञ के रक्षक हो। तुम्हारा जन्म यज्ञ वेदी से हुआ है।

तुम भक्तों के इष्टदेव हो, भक्त तुमको ही पुकार रहे हैं।

तुम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हो।

तुम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हो।

तुम पण्डे हो, सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताने वाले हो।

तुम पैगम्बर हो, बाप का पैगाम सबको देना है।

तुम ईश्वरीय कुल के हो।

तुम सच्चे सच्चे वैष्णव हो।

तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो।

तुम ही गोपी वल्लभ के गोप-गोपियाँ हो। बाप के साथी हो।

तुम पाण्डव हो, परमात्मा से प्रीत बुद्धि हो। पाण्डवों की विजय निश्चित है।

तुम विजयमाला के मणके हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

तुम परमात्मा के नयनों के नूर हो।

तुम परमात्मा के शोकेश के शो-पीस हो।

पुरुषोत्तम संगमयुग

संगमयुग की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान ...

सृष्टि-चक्र में अनेक प्रकार के संगम होते हैं कोई सुखदायी होते हैं तो कोई दुखदायी भी होते हैं परन्तु जिनसे आत्मा की उन्नति होती, आत्मा को सुख अनुभव होता, उनको विशेष रूप से संगम के रूप में याद किया जाता है। सृष्टि-चक्र के हिसाब से सतयुग-त्रेता का भी संगम होता है, द्वापर और कलियुग का भी संगम होता है परन्तु उनको कोई याद नहीं करता है। कलियुग और सतयुग का संगम होता है कल्प का संगमयुग, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग के नाम से याद किया जाता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है, इसलिए उसका गायन होता है। भक्ति मार्ग में पुरुषोत्तम मास इस कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग की ही यादगार है।

"हरेक बच्चा भाग्यवान है। साथ-साथ समय का भी सहयोग है क्योंकि यह संगमयुग जितना छोटा युग है, उतना ही विशेषताओं से भरा हुआ है। जो संगमयुग पर प्राप्तियाँ हैं, वे और कोई युग में नहीं हो सकती हैं। संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग।"

अ.बापदादा 17.5.83

परिभाषा

संगम का अर्थ है मेल परन्तु मेल अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु जिस मेल से आत्मा का और विश्व का कल्याण होता है, उसको याद किया जाता है। जहाँ आत्माओं और विश्व का कल्याण होता है, वह है कल्प का संगम, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग के नाम से जाना जाता है। जिसको इस पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान होगा और निश्चय होगा कि अभी पतित दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना का समय है और जो इस संगमयुगी जीवन के महत्व को समझेगा, उससे अपने आत्मिक कल्याण का पुरुषार्थ अवश्य होगा।

पुरुषोत्तम संगमयुग का समय

इस पुरुषोत्तम संगमयुग का समय कब से कब तक है अर्थात् कितना है, उसकी स्थिति और स्वरूप कैसे होंगे ?

पुरुषोत्तम संगमयुग का समय परमात्मा के अवतरण से लेकर लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के समय तक गिना जायेगा अर्थात् संगमयुग का शुभारम्भ परमात्मा के अवतरण की वेला से आरम्भ होता है और नई दुनिया की स्थापना एवं पुरानी दुनिया के विनाश

तथा नई दुनिया के निर्माण कार्य के सम्पन्न होने तक चलता है। इसलिए ज्ञान सागर बाबा ने बताया है कि श्रीकृष्ण के जन्म के समय कुछ पुरानी दुनिया की आत्मायें अर्थात् विकारी बीज से पैदा हुई आत्मायें भी होंगी परन्तु जब श्रीकृष्ण नारायण के रूप में सिंहासन पर बैठेगा, उस समय कोई विकारी बीज से पैदा हुई आत्मायें नहीं रहेंगी और उस समय से ही सतयुग का 1.1.1 का संवत् आरम्भ होगा।

"अभी है संगमयुग। इसको 100 वर्ष देना चाहिए। सारी किचड़पट्टी साफ हो जाये। फिर कहेंगे नई दुनिया। ... 5 वर्ष लगें या 50 वर्ष लगें विनाश में, उनसे तुम्हारा कनेक्शन नहीं।... पहले तुम पतित से पावन बनने की धुन में रहो।" सा. बाबा 5.11.71 रिवाइज

विभिन्न प्रकार के संगम और उनका महत्व

दुनिया में विभिन्न प्रकार के संगम होते हैं परन्तु भक्ति मार्ग में जिन स्थानों या समय पर दो चीजों का मेल होता है और वातावरण सुरम्य और सुखदायी होता है, जहाँ आत्माओं को कुछ समय के लिए सुख-शान्ति की अनुभूति होती है, आत्म-कल्याण की प्रेरणा मिलती है, आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ में सहयोग मिलता है, भक्ति-भावना बलवती और सहज होती है उन स्थानों और समय को आध्यात्म मार्ग में संगम के नाम से याद किया जाता है।

विभिन्न प्रवृत्तियों, कर्तव्यों, घटनाओं के आधार पर अनेक प्रकार के संगम होते हैं, जिनका आत्म-कल्याण से सम्बन्ध है, उनको आध्यात्मिक क्षेत्र में विशेष याद किया जाता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से संगम दो प्रकार के कहेंगे - एक सूक्ष्म रूप के और दूसरे स्थूल रूप के। दोनों प्रकार के संगम प्राय: देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार कल्याणकारी होते हैं, तन और मन को सुख-शान्ति की अनुभूति कराते हैं।

सूक्ष्म रूप के संगम / समय के आधार पर संगम

कल्प का संगम अर्थात् कलियुग और सतयुग का संगम, जिसको पुरुषोत्तम संगम-युग कहा जाता है क्योंकि पुरुषोत्तम संगमयुग है आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का युग।। ऐसे ही रात और दिन का संगम समय अमृतवेला तथा दिन और रात का संगम समय नुमा शाम का भी विशेष महत्व है। उस समय का भक्ति मार्ग में विशेष महत्व है।

* ब्रह्मा बाबा का तन साकार-निराकार का संगम - निराकार और साकार दोनों के गुणों को अनुभव करने का संगम ये ब्रह्मा-तन है, जिससे आत्मायें दोनों के गुणों का अनुभव करती हैं।

पूरे 84 जन्म लेने वाले और जन्म-मरण रहित का संगम ये ब्रह्मा तन है।

श्रीकृष्ण की आत्मा पूरे 84 जन्म लेती है और निराकार परमात्मा शिव जन्म-मरण रहित है, दोनो ही आत्मायें इस समय इस देह में विराजमान हैं। दोनों के गुण-कर्तव्यों का अनुभव इस तन द्वारा होता है।

"रुहानी बच्चों के प्रति रुहानी बाप सावधानी देते हैं कि बच्चे अपने को संगमयुगी समझो। तुम ब्राह्मण ही अपने को संगमयुगी समझेंगे। ... कृष्ण पूरे 84 जन्म लेते हैं और शिव पुनर्जन्म नहीं लेते हैं।" सा.बाबा 16.1.04 रिवा.

* अधर्म और धर्म की चरम सीमा का संगम अर्थात् अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना का संगम।
* ज्ञान और भक्ति का संगम।
* साइलेन्स शक्ति और साइन्स की शक्ति के चरमोत्कृष्ट स्थिति का संगम।
* दैवी सभ्यता का उद्गम और आसुरी सभ्यता के विनाश का संगम।
* देवताओं और असुरों का संगम अर्थात् दैवी और आसुरी संस्कार वाले मनुष्यों का संगम
* ब्राह्मण जीवन है आसुरी और दैवी संस्कारों का संगम अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आसुरी और दैवी दोनों प्रकार के संस्कार रहते हैं, जहाँ से आसुरी संस्कारों का विनाश और दैवी संस्कारों की जीवन में धारणा होती है, जिससे दैवी दुनिया की स्थापना होती है।
* शूद्र और ब्राह्मणों का संगम। एक तो हम शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं और दूसरे दुनिया में शूद्र भी होते हैं तो ब्राह्मण भी बनते हैं।
* ब्राह्मणों और देवताओं का संगम, ब्राह्मण ही फरिश्ता और फरिश्ता से देवता बनते हैं तो ब्राह्मणों और देवताओं का भी संगम होता है।

स्थान के आधार पर संगम

स्थान के आधार पर भी आध्यात्मिक जगत में अनेक प्रकार के संगम हैं, जिनके लिए कहा गया है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा। निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा तन में आकर जहाँ-जहाँ अपना कर्तव्य किया है, वे स्थान भी संगम हैं और उनका ब्राह्मणों की उन्नति और अवनति से गहरा सम्बन्ध है। ऐसे संगमों में मुख्यतया -

ब्रह्मा तन संगम है - जिनके मुख से ज्ञान का श्रवण, उनकी दृष्टि, उनकी गोद का ब्राह्मणों की उन्नति में विशेष महत्व और योगदान है।

भारत देश, उसमें आबू पर्वत और उसमें विशेष मधुवन अर्थात् पाण्डव भवन का विशेष महत्व

है, जिनका ब्राह्मणों की उन्नति और विश्व के नव-निर्माण में विशेष महत्व और योगदान है। ईश्वरीय सेवा स्थान भी एक संगम हैं, जहाँ आसुरी संस्कारों वाली आत्मायें आकर ईश्वरीय और दैवी संस्कार धारण करने की प्रेरणा लेती हैं।

सूक्ष्म वतन भी एक संगम है, जहाँ ब्राह्मणों और देवताओं का मिलन होता है, सूक्ष्म रूप में बाप और बच्चों का भी मिलन होता है, जहाँ से विशेष प्रेरणायें मिलती हैं।

काल-चक्र के हिसाब से संगम

कल्प का संगम अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम, जब एक कल्प पूरा होता है और नया कल्प आरम्भ होता है, ये संगम सबसे महत्वपूर्ण है और इसकी यादगार में ही अन्य संगमों का महत्व है।

युगों के संगम अर्थात् कलियुग और सतयुग का संगम, सतयुग और त्रेता का संगम, त्रेता और द्वापर का संगम, द्वापर और कलियुग का संगम। इसमें भी विशेष कलियुग और सतयुग का संगम तथा त्रेता और द्वापर का संगम विशेष है, जिसको नरक और स्वर्ग का एवं स्वर्ग और नरक का संगम कहेंगे।

वर्ष के संगम - पृथ्वी की गति के अनुसार हर वर्ष दो समय ऐसे होते हैं, जब रात और दिन समान होते हैं या उनमें बहुत कम अन्तर होता है, उस समय प्राय: विश्व के सभी भूभागों में बसन्त ऋतु का मौसम होता है, जो तीर्थ, व्रत, आदि के हिसाब से महत्वपूर्ण होता है। भारत में ये समय होली और दीवाली से15 दिन पहले और 15 दिन बाद तक का समय विशेष महत्वपूर्ण है, जब मौसम सदाबहार होता है। इसलिए इसको बसन्त त्रतु भी कहा जाता है।

मास के हिसाब से संगम - पूर्णमासी-पड़वा का संगम और अमवस्या और पड़वा का संगम।

दिन और रात के संगम - अमृत वेला और संध्याकाल रात-दिन और दिन-रात का संगम हैं, जिस समय पर भक्ति का विशेष महत्व है तो ज्ञान मार्ग में भी इन दोनों समय का विशेष महत्व है। ये दोनों ही समय तपस्या के लिए विशेष माने जाते हैं। इस समय पर मन-बुद्धि सहज ही एकाग्र हो जाती है, जिससे आत्मा को विशेष अनुभूति होती है।

गर्भ भी एक संगम है, जो जन्म और मृत्यु का संगम है - इस समय में पूर्व जन्म की स्मृतियों और सम्बन्धों की विस्मृति होती है और नये जन्म के लिए नये सम्बन्धों की जाग्रति होती है। इस समय में जो भी घटनायें होती हैं, उनका गर्भस्थ बच्चे पर विशेष प्रभाव होता है। महाभारत में भी एक विशेष उदाहरण अभिमन्यु का है।

* कलियुग-सतयुग का संगम और त्रेता-द्वापर का संगम दोनों खाता सन्तुलन (बैलेन्स) के

समय है अर्थात् आत्मिक शक्ति और देहाभिमान के सन्तुलन का समय होता है। अभी कलियुग और सतयुग संगम कल्याणकारी संगम है, इस संगम पर आत्मा के 63 जन्मों के पापों का खाता खत्म होता है और भविष्य 21 जन्मों के लिए खाता जमा होता है परन्तु त्रेता और द्वापर के संगम पर पाप का खाता समाप्त होने की बात नहीं होती है क्योंकि आत्मायें उस समय तक कोई पाप करती ही नहीं हैं, फिर भी आत्माओं की कलायें उतरती जाती हैं लेकिन त्रेता और द्वापर के संगम से और तीव्र गति से कलायें गिरनी आरम्भ होती हैं क्योंकि आत्मा की आत्मिक शक्ति कम होने के कारण आत्मा देहाभिमान के वश होकर विकारों में प्रवृत्त होकर पाप कर्मों में प्रवृत्त हो जाती है। ये आत्माभिमान और देहाभिमान का संगम है।

स्थूल रूप के संगम

स्थूल रूप में भी अनेक प्रकार के संगमों का गायन है और उनका मानव प्रकृति से विशेष सम्बन्ध है क्योंकि उनका वातावरण से विशेष सम्बन्ध है। उनकी विशेष सुरम्यता है, स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव है। ऐसे सुरम्य संगमों का भक्तिमार्ग में भी विशेष महत्व है, उनका विशेष गायन है। भक्ति मार्ग में जिन संगमों का विशेष गायन है उनमें से निम्नलिखित विशेष हैं:
रात-दिन का संगम - जिसमें सायंकाल और अमृतवेला के रूप में याद करते हैं।
विभिन्न नदियों का संगम, जिनमें प्रयाग आदि मुख्य हैं। ऐसे ही हरिद्वार में गंगा नदी पहाड़ों को छोड़कर समतल भूमि पर प्रवेश करती है, इसलिए वहाँ भी संगम का मेला कुम्भ लगता है।
सागर-नदी का संगम, जिसमें गंगासागर मुख्य है।
"फिर भी विशेष संगम पर नहाने क्यों जाते हैं? उसका विशेष महत्व क्या है? संगम के महत्व को अच्छी तरह जानते हो ना।... इसी प्रकार इस मधुवन की भट्ठी का भी विशेष महत्व है।... यह मिलन ही सम्पूर्णता की सौगात के रूप में है। इस मिलन का ही यह संगम यादगार है।"

अ.बापदादा 20.10.69

मृत्यु और जन्म का संगम

मूलवतन और स्थूलवतन का संगम अर्थात् ब्रह्मतत्व और आकाश तत्व का संगम - सूक्ष्मवतन आदि आदि।

पुरुषोत्तम संगमयुग का महत्व एवं विशेषतायें

"वर्तमान का फल भविष्य में मिलेगा। महत्व वर्तमान का है।... संगमयुग का एक सेकण्ड

और युगों के एक वर्ष से भी ज्यादा है। तो इतना महत्व सदा याद रहता है? ... सदा याद रहे तो हर सेकेण्ड परमात्म दुआयें प्राप्त करते रहेंगे।"

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 3

"यह रुहानी महफिल, रुहानी मिलन सारे कल्प में अभी ही कर सकते हो। आत्माओं से परम-आत्मा का मिलन, यह श्रेष्ठ मिलन सतयुगी सृष्टि में भी नहीं होगा। इसीलिए इस युग को महान युग, महा-मिलन का युग, सर्व प्राप्तियों का युग, असम्भव को सम्भव होने का युग, सहज और श्रेष्ठ अनुभूतियों का युग, विशेष परिवर्तन का युग, विश्व-कल्याण का युग, सहज वरदानों का युग कहा जाता है।"

अ.बापदादा 17.12.84

* ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन कल्प में सर्वश्रेष्ठ जीवन है और सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है। जो आत्मा इस सत्य को जानता है, उसके महत्व को अनुभव करता, वही अभीष्ट पुरुषार्थ करके अर्थात् अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर इस जीवन की प्राप्तियों को अनुभव करता और इस जीवन के सच्चे सुख का अनुभव करते हुए सदा हर्षित रहता है।

* संगम के सुख महान हैं और सारे कल्प के सुखों का आधार हैं। वर्तमान इन्द्रीय सुखों के आकर्षण और चिन्तन में वर्तमान संगमयुग के महान सुखों को गँवाने वाले अपने वर्तमान सुख को और भविष्य के सुख को आप ही गँवा देते हैं। इस सत्यता को अनुभव करके वर्तमान के ईश्वरीय सुखों को अनुभव कर वर्तमान जीवन को सफल करो और भविष्य सुख के लिए भी सुख का मार्ग प्रशस्त करो।

* अपने को देखो कि तुम विनाश की प्रतीक्षा कर रहे हो या संगम के सुखों का अनुभव कर रहे हो। ये संगमयुग परम सुखमय समय है और कल्प में महानतम समय है। संगम का सुख प्राप्त करना ही मानव जीवन का सार है। आत्माओं को जो सुख संगमयुग पर प्राप्त होता है, वह सारे कल्प में प्राप्त होना सम्भव नहीं है। संगमयुग के इसी सुख को आत्मायें भक्ति मार्ग में याद करती हैं और उसकी प्रतीक्षा करती हैं कि वह समय कब आये जब वे फिर उस सुख को अनुभव करें। इसके लिए ही आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं।

* इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझकर देखो और पार्ट बजाओ अर्थात् संगमयुग के यथार्थ महत्व को जानकर ज्ञान स्वरूप होकर इस जीवन को देखो तो ऐसा सुन्दर सुखमय, आनन्दमय जीवन त्रैलोक्य और त्रिकाल में न है और न हो सकता है। इस सत्य को जानकर इस जीवन का सुख अनुभव करो और सर्व को अनुभव कराओ, यही इस ब्राह्मण जीवन का सार है।

* संगमयुग कल्प-वृक्ष की जड़ भी है तो बीज भी है। जड़ जितनी मजबूत होगी, बीज जितना

श्रेष्ठ और शक्तिशाली होगा, वृक्ष उतना ही अच्छा और श्रेष्ठ फलदायी होगा। ये संगमयुग भी सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ संस्कार भरने का सुन्दर समय है, जिस पर आत्मा के सारे कल्प की प्राप्तियों का आधार है। इस संगमयुग के ऐसे महत्व को जानकर, अपने श्रेष्ठ कर्मों के बीज द्वारा अपने इस जीवन को भी सुखमय बना सकते हैं तो सारे कल्प के लिए सुख-शान्ति-सम्पन्नता के फल का खाता जमा कर सकते हैं, संस्कार भर सकते हैं।

* इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में जो सुख प्राप्त है, उससे जो सुख प्राप्त हो सकता है और जो सुख प्राप्त होता है, वह सुख त्रैलोक्य और त्रिकाल में न प्राप्त है और न ही हो सकता है। इस संगमयुगी जीवन के सुख के आगे त्रैलोक्य की सम्पूर्ण सम्पदा का कोई मूल्य नहीं है। इस जीवन के ऐसे महत्व को और इस जीवन की प्राप्तियों के महत्व को जानकर इन प्राप्तियों के सुख को अनुभव करो और अभीष्ट पुरुषार्थ करके भविष्य के लिए सुख का मार्ग प्रशस्त करो। समय और साधन तुम्हारे हाथों में है, इसे व्यर्थ नहीं गंवा देना। इसी जीवन के सुख के लिए किसी भक्त ने गाया है - कंचन हूँ कलधौत के धाम करील के कुन्जन ऊपर वारूँ, .. ।

* संगमयुग में आसुरी वृत्तियों का प्रभाव भी अपनी चरम सीमा पर होता है और कर्मभोग का प्रभाव भी अपनी चरम सीमा पर होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान को समझकर, परमात्मा को साथ रखकर अपने स्वरूप में स्थित होती है, वह आत्मा कब भी इस जीवन से ऊबती नहीं सकती है। वह सदा ही परमानन्द का अनुभव करती है। सत्य ज्ञान और परमात्मा का साथ होने के कारण आत्मा दैवी संस्कारों की धारणा और आसुरी संस्कारों से युद्ध करते भी जीत के प्रति आश्वस्त सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। इस संगमयुग जीवन के ऐसे महत्व को जानकर इसका सुख अनुभव करो।

* ये संगमयुगी ईश्वरीय जीवन भविष्य सतयुगी दैवी जीवन का आधार है और ये संगमयुग भविष्य जीवन के लिए सुख के बीज बोने का सुहावना समय है। जो अभी संगमयुग पर श्रेष्ठ कर्मों का बीज बोता है और इस जीवन का सुख अनुभव करता है, उसको ही देवताई जीवन का भी सुख प्राप्त होता है। इस सत्य को समझकर इस जीवन के ऐसे महत्व को जानकर इसका सुख प्राप्त करो और श्रेष्ठ कर्मों का बीज बोओ। भविष्य जीवन तो इस जीवन की परछाई या फल है। जब बीज और वृक्ष मीठा है तो फल भी अवश्य ही मीठा होगा। इसलिए भविश्य की चिन्ता में, भविष्य की लालसा में इस जीवन के सुख को भूल मत जाना।

* परमपिता परमात्मा आत्माओं का सबसे बड़ा सम्बन्धी है, ज्ञान सबसे श्रेष्ठ धन है, दिव्य बुद्धि परमात्मा का सबसे श्रेष्ठ वरदान है और जीवन की महानतम प्राप्ति है, जो अभी संगमयुग पर हम आत्माओं को प्राप्त है। जीवन की इन सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों के महत्व को जानकर,

उनका सुख अनुभव करो। विचार करो परमात्मा ने हमको क्या नहीं दिया है? ये इन्द्रीय सुख, मनुष्य तो क्या जानवरों को भी प्राप्त हैं, उनकी इन ईश्वरीय प्राप्तियों से कोई तुलना नहीं है। ईश्वरीय प्राप्तियों के आगे इनका कोई अस्तित्व नहीं है। ये ईश्वरीय प्राप्तियाँ संगम पर ही आत्मा को प्राप्त होती हैं, जिनका भक्ति मार्ग में गायन होता है।

* यथार्थ जीवन ये संगमयुगी जीवन ही है, जो इसके महत्व को समझ लेता और सुख को अनुभव कर लेता, वह न इस जीवन से कब ऊब सकता और न ही सतयुग के सुखों के लिए आतुर हो सकता, वह तो इन संगमयुगी सर्वोत्तम जीवन का सुख लेने में अपना परम भाग्य अनुभव करेगा। ये संगम का सुख ही जीवन का परम सुख है और सर्व सुखों का आधार है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग बहुत ही महत्वपूर्ण समय है। अभी ही सर्व प्रकार के ज्ञान के चरमोत्कर्ष का संगम होता है अर्थात् अभी आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक विज्ञान, डाक्टरी का विज्ञान, आदि के ज्ञान का भी संगम है। आत्मा और परमात्मा का भी संगम है, स्थापना-विनाश का भी संगम है, कल्प के दिन-रात का भी संगम है, कल्प के आदि-अन्त का भी संगम है, स्वर्ग-नर्क का भी संगम है। देवताओं और असुरों का भी संगम है अर्थात् दैवी और आसुरी संस्कारों का भी संगम है। अभी आसुरी संस्कार वाले मनुष्यों का विनाश और दैवी संस्कार वालों की आदि होती है। इन सब सत्यों पर विचार करें तो इन सबकी अभी चरम सीमा है। स्मृति-विस्मृति का भी संगम है अर्थात् अभी परमात्मा से अनेक प्रकार की स्मृतियां मिलती हैं, जो सतयुग के प्रथम जन्म से विस्मृति में चली जाती हैं और आत्मा में कम से कम स्मृतियां रहती हैं।

"संगमयुग की विशेषता ही है - अतीन्द्रिय सुख में झूलना, सदा खुशी में नाचना। ... इसलिए स्वयं को चेक करो कि किसी भी प्रकार के संकल्पों के बन्धन में तो नहीं हैं? ... संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही भविष्य जीवनमुक्त प्रालब्ध पाना है।"

अ.बापदादा 2.12.85

"आप बच्चों के लिए यह संगमयुग ही बड़ा युग है। आयु में यह छोटा है लेकिन विशेषताओं और प्राप्ति दिलाने में सबसे बड़ा है। तो संगमयुग का हर दिन आपके लिए बड़ा दिन है।"

अ.बापदादा 25.12.89

"इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के संस्कार इस समय ही आत्मा में भरते हो।" अ.बापदादा 30.5.73

"इसको कहेंगे चढ़ती कला का परिवर्तन। परिवर्तन तो द्वापर में भी होता है परन्तु वह है गिरती कला का परिवर्तन। अभी संगम पर है चढ़ती कला का परिवर्तन।" अ.बापदादा 11.4.73

"उन्हों का भी आधार तिथि और वेला पर होता है। वैसे ही यहाँ भी मरजीवा जन्म की तिथि, वेला और स्थिति है। ... आप लोग भी इन तीनों बातों तिथि, वेला और स्थिति को जानते हुए अपने संगमयुग की प्रारब्ध व संगमयुग की भविष्य स्थिति और भविष्य जन्म की प्रारब्ध को अपने आप भी जान सकते हो।" अ.बापदादा 24.4.73

"ज्ञान तुमको अभी संगम पर ही मिलता है। महिमा सारी इस संगमयुग की है, जब कि बाप बैठ तुमको ज्ञान समझाते हैं। ... इस समय तुम बच्चे बहुत सौभाग्यशाली हो क्योंकि तुम यहाँ ईश्वरीय सन्तान हो। ... अभी तुम ईश्वरीय बुद्धि वाले हो।"

सा.बाबा 29.4.05 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग की विशेष घटनायें

संगमयुग कल्प में विशेश युग है क्योंकि इस समय कुछ विशेष घटनायें होती हैं, जो सारे कल्प में किसी भी युग में नहीं होती है। इन विशेष घटनाओं का ज्ञान होगा तब ही संगमयुग की विशेषता को अनुभव कर सकेंगे और उन विशेषताओं का लाभ उठा सकेंगे।

* परमात्मा का अवतरण - परमात्मा का अवतरण संगम की सबसे विशेष घटना है, जिसके आधार पर ही संगमयुग पर अन्य सभी घटनायें होती हैं। परमात्मा के अवतरण से ही संगम का शुभारम्भ होता है।

* आत्मा-परमात्मा का मिलन संगमयुग पर ही होता है, जिस मिलन को भक्ति मार्ग में याद करके आत्मायें गद्गद होती हैं।

* इन्द्र सभा संगमयुग पर ही लगती है, जहाँ ज्ञानामृत की वर्षा होती है और ज्ञान-परियां रहती हैं।

* आत्मा को आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि-चक्र का ज्ञान संगमयुग पर ही होता है, जिस ज्ञान के आधार पर आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है।

* आत्माओं का पुराना पाप का खाता खत्म और पुण्य का नया खाता संगमयुग पर ही जमा होता है।

* जीवात्मायें देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी संगमयुग पर ही बनती हैं, जो आत्मा के सर्व सुखो का मूलाधार है।

देहाभिमान आत्मा के दुखों का मूल कारण है, इसलिए संगमयुग पर परमात्मा पिता आकर आत्माओं को देही-अभिमानी बनाने के लिए ज्ञान-योग की शिक्षा देते हैं, जिसको धारण

कर आत्मायें देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी बनती हैं। और तो सारे कल्प में ये शिक्षा कोई दे नहीं सकता क्योंकि यथार्थ रूप में सारे कल्प में कोई भी आत्मा देही-अभिमानी नहीं होती है। जिस आत्मा ने देह धारण की, उसमें देह-भान आ ही जाता है, जिसके कारण आत्मा की स्थिति गिरती कला में आ जाती है। सतयुग के आदि में भी जो आत्मायें जन्म लेती हैं, उनमें भी यथार्थ आत्मिक ज्ञान तो होता नहीं है, आत्मिक ज्ञान और योग के आधार पर अर्जित आत्मिक शक्ति होती है, जिस आत्मिक शक्ति के कारण देहाभिमान दबा रहता है और आत्मिक शक्ति उस पर अपना शासन करती है, जिससे वहाँ आत्माओं से कोई विकर्म या पाप कर्म नहीं होता है। परमात्मा निराकार है, वह कभी गर्भ से जन्म नहीं लेता, उसको अपनी कोई देह नहीं है इसलिए उनके लिए देहाभिमानी और देही-अभिमानी का प्रश्न ही नहीं उठता है।

"माया पर जीत पानी है, इसलिए कवच पड़ा रहे। कवच का अर्थ ही है - मन्मनाभव। शिवबाबा को याद करो, देही-अभिमानी बनो। इस अन्तिम जन्म में तुम एक ही बार देही-अभिमानी बनते हो। फिर सतयुग से कलियुग तक यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा कोई देता ही नहीं। इस समय ही तुमको देही-अभिमानी बनना पड़ता है क्योंकि अब शरीर छोड़कर मेरे पास आना है। देवतायें देही-अभिमानी क्यों बनें, उनको वापस थोड़ेही जाना है।"

सा.बाबा 25.07.03 रिवा.

* देहाभिमान और देही-अभिमानी की चरम सीमा के मिलन का युग संगमयुग

कलियुग के अन्त में जीवात्मयें देहाभिमान की चरमसीमा पर होती हैं, जिसके कारण दुख की भी चरमसीमा होती है। ऐसे समय पर ही ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा आकर जीवात्माओं को देही-अभिमानी बनने का ज्ञान देते हैं और आत्मायें देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करती हैं।

* पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना संगमयुग पर ही होती है।

* एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश संगमयुग पर होता है।

* एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत से सम्पन्न राज्य की स्थापना संगम पर ही होती है और अनेक धर्म, अनेक राज्य, अनेक भाषा, अनेक मत वाली दुनिया का विनाश संगम पर होता और वे सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं।

"संगमयुग को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है।... भारत कितना धनवान था, अभी तो कंगाल है।"

सा.बाबा 21.1.05 रिवा.

* संगमयुग पर इस धरा पर सर्व धर्मों और धर्म-वंश की उपस्थिति होती है।

* सर्व धर्मों रूपी इस कल्प-वृक्ष की कलम अभी संगमयुग पर लगती है, मूल रूप में देवी-देवता धर्म स्थापन होता है। ।

* रुद्र भगवान के द्वारा अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ की स्थापना संगमयुग पर होती है।

* परमात्मा द्वारा संगमयुग पर ही ब्रह्मा एवं ब्राह्मणों की रचना होती है।

"गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण कुल की रचना हुई। आदि सनातन पहले-पहले ब्राह्मण हो जाते हैं। वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहना रांग है। वह तो है सतयुग का धर्म। यह आदि सनातन ब्राह्मणों का धर्म जो है, वह प्राय:लोप हो गया है। परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म रचते हैं। तो यह संगमयुग हो गया ब्राह्मणों का युग, यह देवी-देवता धर्म से भी ऊंच है। पहले यह ब्राह्मण धर्म है, जिसको चोटी कहते हैं।"

सा.बाबा 17.07.03 रिवा.

"श्रेष्ठ संगमयुग अर्थात् श्रेष्ठ वेला में सभी का श्रेष्ठ ब्राह्मणों का जन्म हुआ है। जन्म, वेला सभी की श्रेष्ठ है। ... श्रेष्ठ बाप, श्रेष्ठ जन्म, श्रेष्ठ वर्सा, श्रेष्ठ परिवार, श्रेष्ठ खज़ाने - ये तकदीर की लकीर जन्म से सभी की श्रेष्ठ है। ... ये तकदीर सभी बच्चों को एक बाप के द्वारा एक जैसी प्राप्त है, इसमें अन्तर नहीं है फिर भी एक जैसी तकदीर प्राप्त होते भी नम्बरवार क्यों?... बेहद की तकदीर को जीवन के कर्म की तस्वीर में लाना, इसमें यथा शक्ति होने के कारण अन्तर पड़ जाता है।"

अ.बापदादा 4.4.84

* परमात्मा का धर्मराज़ का पार्ट भी संगमयुग पर ही चलता है

"धर्मराज़ पुरी में भी सजाओं का पार्ट अन्त में नूँधा हुआ है लेकिन वे सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती है और हिसाब-किताब चुक्तू करती है। लेकिन कर्मों के अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक हैं आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे बीमारियाँ, दिमाग कमजोर होना। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुख की प्राप्ति और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुक्तू होना।"

अ.बापदादा 10.12.84

* अधर्म और धर्म की चरम सीमा, दोनों का संगम होता है।

* धर्म की विजय और अधर्म का नाश संगमयुग पर ही होता है।

* राम-रावण का युद्ध और राम की रावण पर विजय संगमयुग पर ही होती है।

"युद्ध है ना! माया ऑपोजीशन करती है। उनका भी फर्ज है। वह न करे तो फिर युद्ध कैसे गाई जाये।... युद्ध होगी तो हम हारते ही रहें, यह भी नहीं। हमको उसके ऊपर विजयी बनना

है। जीतने की बाजी अभी ही लगानी है।... एक भरोसा एक बल गाया हुआ है।"

मातेश्वरी 27.6.1964

"यह रावण का पिंजड़ा है, इसमें दुख ही दुख है। बाबा ही हमको इससे छुटकारा दिलाने आये हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। जैसे कोई पक्षी पिंजड़े से निकल जाता है तो खुश होता है।"

सा.बाबा 30.4.69 रिवा.

* जनसंख्या की अति वृद्धि और जनसंख्या के अति कम होने का भी समय ये संगम ही है। क्योंकि संगम पर ही सर्व आत्मायें इस सृष्टि पर आ जाती हैं और जनसंख्या की वृद्धि अपनी चरम सीमा पर होती है और विनाश के समय अधिकांश आत्मायें वापस चली जाती हैं, बहुत थोड़ी आत्मायें इस धरा पर रहती हैं। जनसंख्या के विषय में विचार करें तो सारे कल्प में 150 करोड़ के लगभग आत्मायें परमधाम से इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं और छोटे से संगमयुग में परमात्मा के अवतरण के बाद 550 करोड़ के लगभग आत्मायें परमधाम से यहाँ आती हैं।

* प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी अपनी चरम सीमा पर अभी ही होता है।

* दैवी सभ्यता का उद्गम और आसुरी सभ्यता का विनाश भी संगमयुग पर ही होता है

* आसुरी और दैवी संस्कारों का संगम, देवासुर संग्राम का युग संगमयुग है।

देवता और असुरों का राज भी संगमयुग पर ही पता चलता है। देवासुर संग्राम क्या है, महाभारत का युद्ध क्या है, ये सब राज़ अभी संगमयुग पर ही पता पड़ता है और ये सब युद्ध अभी संगमयुग पर ही होते हैं। राम-रावण का युद्ध अर्थात् आसुरी और दैवी संस्कारों का युद्ध!

* शूद्रों और ब्राह्मणों का संगम

"सूक्ष्मवतन में तुम ब्राह्मणों का देवताओं के साथ मिलन होता है। जैसे पियर घर और ससुर घर के फेमिली मेम्बर्स का मिलन होता है ना। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। ब्राह्मण और देवतायें बीच में आकर मिलते हैं। वह है ब्राह्मण और देवताओं का संगम। यह है ब्राह्मण और शूद्रों का संगम।"

सा.बाबा 14.3.72 रिवा.

* विश्व में राजसत्ता में प्रजातन्त्र का अन्त और एक-छत्र दैवी राजवंश (Kingdomship) की स्थापना अभी संगमयुग पर ही होती है।

* भक्तिमार्ग का अन्त और ज्ञानमार्ग की आदि अभी संगमयुग पर ही होती है।

* आत्मा की चढ़ती कला इस संगमयुग पर ही होती है और तो सारे कल्प में उतरती कला ही होती है।

* स्वर्ग-नरक का संगम और स्वर्ग-नरक का यथार्थ ज्ञान भी अभी ही।

* संगमयुग पर सर्वोत्कृष्ट भौतिक सुख-साधनों से सम्पन्न युग की आदि होती है परन्तु सर्वोत्कृष्ट भौतिक सुखों की अनुभूति नहीं होती है, वह सतयुग में होती है। संगमयुग पर अनुभूति सर्वोत्कृष्ट आत्मिक सुख मुक्ति-जीवनमुक्ति की होती है।

"संगमयुग की विशेषता प्रमाण प्रत्यक्ष फल रंग, रूप, रस तीनों से सम्पन्न अमूल्य फल होना चाहिए - सदा संग में रहने का रंग, सदा ब्रह्मा बाप समान बाप को प्रत्यक्ष करने का रूप, सदा सर्व प्राप्तियों का रस - ऐसा बाप समान बने हो ? आजकल ब्रह्मा बाप ब्राह्मण बच्चों की समान सम्पन्नता को विशेष देखते रहते हैं।" अ.बापदादा 25.5.83

* आदि सनातन धर्म को आदि सनातन क्यों कहा जाता है, वह राज़ भी संगम पर ही पता पड़ता है।

* विभिन्न धर्मों की स्थापना का राज़ अभी संगमयुग पर ही पता चलता है।

* विश्व-नाटक का एक चक्र पूरा और नये का शुभारम्भ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होता है।

* परमात्मा के सर्व गुणों और कर्तव्यों का ज्ञान और अनुभव अभी संगम पर ही होता है। परमात्मा परम शिक्षक है, वह ईश्वरीय पाठशाला की स्थापना संगमयुग पर ही करते हैं और ईश्वरीय पाठशाला की स्थापना करके ये ईश्वरीय पढ़ाई आत्माओं को पढ़ाते हैं, जिससे आत्मायें सतयुग के योग्य बनती हैं।

* पतित-पावन बाप का पतित से पावन बनाने का दिव्य कर्तव्य संगमयुग पर चलता है।

* यथार्थ रूप में धर्म, दान-पुण्य, कल्याण का कर्तव्य इसी युग में होता है।

संगमयुग पर ही आत्मायें दान-पुण्य करके भविष्य के लिए नया खाता जमा करती हैं। और तो सारे कल्प में आत्माओं की उतरती कला ही होती है, चाहे कोई कितना भी दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत आदि करे। संगमयुग पर ही परमात्मा आत्माओं को ज्ञान देते हैं और आत्मायें एक-दूसरे को दान देते हैं, कल्याण का रास्ता बताते हैं, इसलिए यथार्थ रूप में धर्म, दान-पुण्य, कल्याण का युग यह संगमयुग ही है। ये सब कृत्य संगम युग में ही होते हैं और आत्मायें अपना तन-मन-धन सब इस ज्ञान यज्ञ में सफल करती हैं।

"याद है ब्रह्मा बाप ने आदि में कितने समय में सब सफल किया ? अन्त तक अपना समय सफल किया, चाहे कर्मातीत भी बन गये फिर भी कितने पत्र लिखे ! समय सफल किया ना। लास्ट दिन भी मुख से महावाक्य उच्चारण किये। लास्ट दिन तक सब सफल किया, इसीलिए सफलता को प्राप्त हो गये। तो फालो फादर। वास्तव में संगमयुग का एक-एक संकल्प, एक-एक सेकण्ड सफल करना ही सफलतामूर्त बनना है।"

अ.बापदादा 31.12.02

"संगमयुग समर्थ युग है, सफलता का युग है, व्यर्थ का नहीं है। अगर समय सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा समय राज्य अधिकारी बनेंगे। अगर अभी कभी-कभी सफल करेंगे तो राज्य अधिकारी भी कभी-कभी बनेंगे। समय सफल करने की प्रालब्ध यह है। स्वांस सफल कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते हार्टफेल नहीं होगी। ज्ञान के खज़ाने को भी सफल करो। ज्ञान का अर्थ है - समझ। वहाँ इतने समझदार बन जायेंगे, जो कोई मन्त्रियों की जरूरत नहीं है।"

अ.बापदादा 31.12.02

* आत्मायें कर्मातीत बनकर परमधाम जाने की तैयारी अभी संगमयुग पर ही करती हैं।

* देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर आत्मिक स्वरूप में स्थित त्रैलोक्य का परिभ्रमण और त्रिकालों का अवलोकन संगमयुग पर ही होता है। त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ का टाइटिल संगमयुग पर ही आत्माओं को मिलता है, जब आत्माओं को तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान होता है।

* संगमयुग पर ही परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं की सेवा करते हैं, उनको रावण के बन्धन से मुक्त करते हैं।

* ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा के द्वारा सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, धर्म-शास्त्रों का सार गीता ज्ञान और सबका राज़ संगमयुग पर मिलता है।

* सृष्टि-चक्र के हू ब हू पुनरावृत्ति का राज़ भी संगमयुग पर ही पता पड़ता है।

सृष्टि-चक्र के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का राज़ पता चलने से इस सृष्टि के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं और आत्मायें व्यर्थ चिन्तन से मुक्त होकर अपने जीवन की सफलता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करने में सफल होती हैं।

* भारत के प्राचीन योग की इतनी महिमा है, तो वह योग क्या है, उससे प्राप्ति क्या है, उसका यथार्थ राज़ भी अभी संगमयुग पर ही पता चलता है और उसको सीखकर आत्मायें परमात्मा से योगयुक्त होकर जीवन का सच्चा सुख पाती हैं।

* सृष्टि-रचना का राज़ अर्थात् सृष्टि की रचना कब हुई, कैसे हुई, वह सब यथार्थ रीति अभी पता चलता है। सृष्टि कैसे नई से पुरानी और फिर पुरानी से नई कैसे बनती है, वह राज़ भी संगमयुग पर ही पता चलता है।

* भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग का राज़ भी अभी संगमयुग पर ही पता चलता है।

* तीन लोकों का राज़, सूक्ष्म वतन और उसकी गति-विधि का राज़ भी अभी ही पता पड़ता

है।

* कर्मों की गहन गति का राज़ भी संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा ही पता पड़ता है, जिससे ही आत्मायें श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती हैं।

* भारत के उत्थान और पतन की कहानी भी अभी संगमयुग पर पता पड़ती है और भारत कैसे स्वर्ग से नक और नर्क से स्वर्ग बनता है, वह भी पता पड़ता है।

* सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा, अमर कथा, जिनका भारत में इतना गायन है, उनका राज़ भी अभी संगम पर ही पता पड़ता है और आत्मायें सच्ची सत्य नारायण की कथा सुनकर नर से नारायण बनती हैं।

* भारतीय सभ्यता का प्राण "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का यथार्थ रहस्य अभी संगमयुग पर ही पता चलता है कि कैसे सारी वसुधा एक परिवार है। इस सत्य को जानने से आत्माओं में विश्व-प्रेम की भावना जाग्रत होती है और आत्मायें विश्व-परिवार का सच्चा सुख अभी ही अनुभव करती है। और तो सारे कल्प नाममात्र विश्व-परिवार का नारा लगाते हैं परन्तु दिल में वह भावना जाग्रत नहीं होती है।

* लख-चौरासी का राज़ भी अभी संगमयुग पर ही पता पड़ता है।

* शिवशक्ति और पाण्डव सेना का राज़ अभी संगमयुग पर ही पता चलता और उसका कर्तव्य अभी संगमयुग पर ही होता है। महाभारत और गीता ज्ञान का राज़ भी अभी संगमयुग पर ही पता पड़ता है।

* विष्णु चतुर्भुज का राज़ और विष्णु के अलंकारों का राज़ भी अभी ही पता चलता है।

* संगम पर ही साइन्स और साइलेन्स का चरमोत्कृष्ट होता है। दोनों के सहयोग से ही स्थापना और विनाश का कार्य सम्पन्न होता है।

* यह संगम ही साइलेन्स और साइन्स की शक्ति का संगम है और अभी ही साइन्स पर सालेन्स की विजय होती है।

"जब एटॉमिक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मेल हो जायेगा अर्थात् आत्मिक शाक्ति से एटॉमिक शक्ति भी सतोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी तब दोनों शक्तियों के मिलन द्वारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी क्योंकि शान्ति-सुखमय स्वर्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ हैं।" अ.बापदादा 5.3.84

* वर्तमान संगमयुग का समय सर्व प्रकार के भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान की पराकाष्टा या चरमोत्कर्ष का समय है।

साइन्स और टेक्नॉलोजी की पुराने विश्व के विनाश और नये विश्व के नव-निर्माण में मूल भूमिका

है, इसका अपनी चरमसीमा तक विकास अभी संगमयुग पर होता है। देहाभिमान से संचालित साइन्स विनाश के साधनों का निर्माण अर्थात् विनाश की निमित्त और देही-अभिमानी स्थिति द्वारा संचालित साइन्स नये विश्व के नव-निर्माण में निमित्त बनती है। नये विश्व के नव-निर्माण के बाद देवताओं की प्रवृत्ति के कारण कोई नई चीज की खोज नहीं होगी और धीरे-धीरे ये साइन्स का ज्ञान भी प्राय: लोप हो जायेगा। फिर द्वापर से देहाभिमान के कारण लोगों में नई खोज की प्रवृत्ति जाग्रत होगी, जिससे नई बातों का अविष्कार होगा, साइन्स के द्वारा नये-नये अविष्कार होंगे। साइन्स और टेक्नॉलोजी के नये-नये अविष्कार होते-होते साइन्स का वह ज्ञान कलियुग के अन्त में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचेगा। इस विश्व-नाटक का ये एक विधि-विधान और सतत क्रम है।

वर्तमान में ही आध्यात्मिक ज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर होता है, जब ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा आकर सत्य ज्ञान देता है। परमपिता परमात्मा से सत्य ज्ञान पाकर आत्मा जीवन का सर्वोत्तम सुख अतीन्द्रिय सुख अनुभव करती है। सत्य ज्ञान और योग के द्वारा अपने में स्वर्गिक सुखों को भोगने की शक्ति प्राप्त करती है।

भौतिक साइन्स एवं टेक्नालॉजी एवं आध्यात्मिक ज्ञान एवं आध्यात्मिक शक्ति के समावेश के द्वारा स्वर्ग का नव-निर्माण होता है, जहाँ भौतिक सुख अपने चरमोत्कर्ष पर उपलब्ध होते हैं परन्तु समयान्तर में धीरे-धीरे ये भौतिक साइन्स एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। देवतायें सुख-साधनों में प्रवृत्त होते हैं, उनके द्वारा कोई नई खोज या नव निर्माण नहीं होता है, इसलिए धीरे-धीरे वह दैवी सभ्यता और साइन्स का ज्ञान लोप हो जाता है और द्वापर से नई सभ्यताओं और धर्मों का उदय होता है।

"बापदादा बार-बार सुनाते रहते हैं कि समय आपका इन्तजार कर रहा है, ब्रह्मा बाप अपने घर का गेट खोलने के लिए इन्तजार कर रहा है, प्रकृति तीव्रगति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फरिश्ते अभी अपने डबल लाइट से इन्तजार को समाप्त करो।... एवर-रेडी सिर्फ शरीर छोड़ने के लिए नहीं बनना है लेकिन बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर घर जाने में एवर-रेडी बनना है।"

अ.बापदादा 15.12.2001

"बाप संगमयुग पर आया हुआ है। महाभारत लड़ाई भी संगमयुग की ही है। ... इसको ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। ... संगमयुग पर ही बाप आकर तुमको हीरे जैसा बनाते हैं परन्तु सब नम्बरवार तो होते ही हैं।" सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

सब त्योहार और उत्सव संगमयुग की ही यादगार हैं। संगमयुग पर ही परमात्मा सभी त्योहारों

का राज़ बताते हैं और आत्माओं को पवित्रता की राखी बांधकर पवित्रता की प्रतिज्ञा कराते हैं। भक्ति मार्ग में जो भी त्योहार मनाये जाते हैं या जिनका गायन है, वे सभी प्राय: संगमयुग के ही हैं अर्थात् वे सभी घटनायें संगमयुग पर ही घटित होती हैं, जिनका यादगार भक्तिमार्ग में मनाया जाता है। ऐसा ही संगमयुग का एक विशेष त्यौहार रक्षाबन्धन है।

पुरुषोत्तम संगमयुग के विशेष गुण

संगमयुग कल्प में विशेष युग है क्योंकि इस युग में कुछ विशेष गुण हैं, जो अन्य युगों में नहीं होते हैं। इन गुणों का यथार्थ ज्ञान होगा तब ही हम उनका लाभ उठा सकेंगे और अपने को भी गुणवान बना सकेंगे। इसके कुछ गुणों का हम यहाँ वर्णन करते हैं, जो विचार करने योग्य हैं और उनका हमारे जीवन में विशेष प्रभाव एवं महत्व है।

संगमयुग पर ही आत्माओं का ज्ञान सागर परमात्मा से मंगल मिलन मेला होता है, जिस मंगल मिलन मेले को आत्मायें भक्ति मार्ग में याद कर भिन्न-भिन्न रीति से भिन्न-भिन्न स्थानों पर कुम्भ मेला मनाते हैं।

संगमयुग आत्माओं और प्रकृति की चढ़ती कला का युग है अर्थात् इस युग में ही आत्मायें और प्रकृति तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है, जिससे इस धरा पर तमोप्रधान दुनिया का अन्त और नई सतोप्रधान दुनिया का शुभारम्भ होता है।

संगमयुग पर ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है। और सभी युगों में आत्माओं की उतरती कला ही होती है। भले चाहे वह सतयुग हो या कलियुग।

संगमयुग पर परमात्मा का अवतरण होता है, जो ही सर्व के गति-सद्गतिदाता हैं।

संगमयुग पर ही परमात्मा आकर सर्व आत्माओं की गति-सद्गति करते हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा से मिले कर्म का विशेष ज्ञान होने के कारण संगमयुग पर किये गये कर्मों का विशेष फल होता है। इसलिए पुरुषोत्तम संगमयुग के यादगार पुरुषोत्तम मास में आत्मा विशेष दान-पुण्य करती हैं।

अन्य युगों में तो आत्मायें जो कर्म करती है, उसका उस अनुसार ही फल मिलता है परन्तु संगमयुग पर एक का सौगुणा फल मिलता है। आत्मा अच्छे कर्म करती है तो अच्छे का अच्छा और अगर गलत कर्म करती है तो उसका भी सौगुणा बुरा फल मिलता है।

संगमयुग पर जो आत्मायें परमात्मा के गोद के बच्चे बनते हैं, उनको स्वर्ग और नरक दोनों का ज्ञान होता है, जिससे वे नरक का किनारा छोड़कर अर्थात् नरक से नष्टोमोहा बनकर परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनकर स्वर्ग की ओर जाने का सहज पुरुषार्थ करती हैं।

संगमयुग पर पतन और उत्थान दोनों की ही चरम सीमायें होती हैं।
"जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया था, वे ही पहले-पहले वर्सा लेने आयेंगे। वे ही कहेंगे - बाबा आपके सिवाए हमारा सहायक और कोई नहीं। बाप क्षमा भी तब करेंगे, जब संगमयुग होगा।... ऐसे नहीं कि मैं तुम्हारी पुकार सुनकर आता हूँ। भक्ति जब पूरी होती है, तब मुझे आना ही है।" सा.बाबा 5.7.06 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं गीता-ज्ञान यज्ञ / पुरुषोत्तम संगमयुग और श्रीमत भगवत्-गीता

संगमयुग पर ही परमात्मा आकर गीता ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं। गीता आध्यात्मिक ज्ञान का मुख्य शास्त्र है। और धर्म-ग्रन्थ और शास्त्र तो गीता के बाल-बच्चे हैं। गीता है सबकी माई-बाप। गीता ज्ञान दाता परमात्मा है, जो संगमयुग पर ही आकर गीता ज्ञान देकर आत्माओं को अनेक प्रकार के दिव्य अनुभव कराते हैं, जो और किसी युग में सम्भव नहीं हैं। संगमयुग की प्राप्तियां और अनुभव विशेष महान हैं, जो अन्य किसी युग में न होते हैं और न हो सकते हैं।

संगमयुग्र पर ही आत्मायें परमात्म से गीता ज्ञान सुनकर और राजयोग का अभ्यास करके अनेक प्रकार की दिव्य अनुभूतियां करते हैं, जो किसी अन्य युग में सम्भव नहीं हैं। संगमयुग की दिव्य अनुभूतियां करने में गीता ज्ञान ही आधार है।

श्रीमत एक श्री श्री परमात्मा की ही हो सकती है, जो मत परमात्मा संगमयुग पर आकर देते हैं, जिसकी आत्मा में संचित स्मृति के आधार पर भक्ति मार्ग में गीता शास्त्र बनाया है, जिसका आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत महत्व है। गीता ज्ञान से ही संगमयुग पर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हुई थी और अभी फिर हो रही है। गीता ज्ञान सुनकर ही संगमयुग पर महाभारत हुआ था और अभी फिर से वही महाभारत की परिस्थितियां बन रही है और होने वाला है अर्थात् होना निश्चित है।
"गीता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म का शास्त्र। यह भी तुम जानते हो कि इस ज्ञान के बाद है विनाश।... विनाश का टाइम ही यह है। इसलिए तुमको जो ज्ञान मिलता है, वह फिर खलास हो जाता है।... बाप का पार्ट ही है संगमयुग पर आने का। भक्ति आधा कल्प चलती है, ज्ञान नहीं चलता है। ज्ञान का वर्सा आधा कल्प के लिए मिलता है, ज्ञान तो एक ही बार सिर्फ संगमयुग पर मिलता है।" सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

"गीता नई दुनिया को क्रियेट करती है। यह किसको भी पता नहीं कि नई दुनिया को कैसे क्रियेट करते हैं। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुगी दुनिया। यह पुरानी दुनिया भी नहीं है तो नई दुनिया भी नहीं है। यह है ही संगम। ... अब संगमयुग पर तुम्हारी पाप-आत्माओं से लेन-देन नहीं है। पाप आत्माओं को दान किया तो पाप सिर पर चढ़ जायेगा।"

सा.बाबा 22.4.04 रिवा.

"ज्ञान का शास्त्र एक ही गीता है, जो पुरुषोत्तम संगमयुग पर बेहद का बाप परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव सुनाते हैं या तो लिखना है - ब्रह्मा द्वारा सुना रहे हैं, जिससे 21 जन्म सद्गति होगी। ... चढ़ती कला होती है। मनुष्यों की बनाई हुई गीता से उतरती कला होती है। भक्ति की गीता और ज्ञान की गीता पर अच्छी तरह विचार सागर मंथन करना है।"

सा.बाबा 19.1.04 रिवा.

"अभी तुमको डायरेक्ट मत मिलती है। श्रीमत भगवत गीता है ना! और कोई शास्त्र पर श्रीमत अक्षर है नहीं। हर 5 हजार वर्ष बाद यह पुरुषोत्तम संगमयुग, गीता का युग आता है। बेहद के बाप ने रचयिता अर्थात् अपना और रचना का सारा परिचय दिया है।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग की विशेष प्राप्तियाँ एवं अनुभव

* संगमयुग की मूल प्राप्ति है परमात्मा की प्राप्ति और गीता-ज्ञान की प्राप्ति, जिसके आधार पर आत्मा को अनेक प्रकार की प्राप्तियाँ एवं अनुभूतियाँ होती हैं, जो आत्मा की मूलभूत प्यास है और आत्मा की चढ़ती कला का मूलाधार है।

* ये संगमयुग प्रभु-मिलन और ईश्वरीय प्राप्तियों के अनुभव का समय है। जिसकी बुद्धि उन प्राप्तियों के अनुभव में लीन हो गई अर्थात् मगन हो गई, उसकी बुद्धि कब किसी वस्तु-व्यक्ति में जा नहीं सकती। प्रभु-प्राप्तियाँ अनन्त हैं और अनन्त सुख को देने वाली हैं।

* ये संगमयुगी जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है, जिसको इस सत्य का ज्ञान होगा और उसका अनुभव होगा तथा उन पर पूरा निश्चय होगा, वही उन प्राप्तियों को प्राप्त कर जीवन में सच्ची सम्पन्नता का अनुभव कर संगमयुग के परम सुख को अनुभव कर सकेगा।

* यह विश्व-नाटक एक विविधतापूर्ण खेल है, इसमें सभी प्राप्तियाँ किसी एक व्यक्ति को प्राप्त होना सम्भव नहीं है परन्तु हर आत्मा को कुछ न कुछ विशेष प्राप्तियां हैं। इसलिए कभी भी दूसरों की प्राप्तियों को देखकर अपनी प्रभु-प्राप्तियों को भूल नहीं जाना है अथवा दूसरों की प्राप्तियों से तुलना कर अपने में अहंकार या हीनता नहीं लाना है। जो अपनी प्रभु-प्राप्तियों को

स्मृति में रखकर खुशी में रहता है, वही इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर पाता है। प्रभु-प्राप्तियाँ अनन्त हैं और परम-सुख को देने वाली हैं। जो दूसरों की प्राप्तियों को देखकर उनसे अपनी प्राप्तियों की तुलना करता, वह सदा ही अपने जीवन में कमी का अनुभव करता है और वह कभी भी सच्ची सम्पन्नता और सच्ची खुशी को अनुभव नहीं कर सकता।

परमात्मा पिता ने तुमको क्या दिया है, इस तथ्य पर विचार तो करो। अपने स्वरूप में स्थित होकर, ड्रामा के ज्ञान को समझकर साक्षी होकर देखो और साक्षी होकर पार्ट बजाओ तो ये विश्व-नाटक परम सुखमय अनुभव होगा। ड्रामा के रहस्य और आत्मा के यथार्थ ज्ञान को धारण कर देह और देह की दुनिया से पार मूल स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को परम शान्ति का अनुभव होगा। परमपिता परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को समझकर कर्मों की गहन गति को समझकर परमपिता परमात्मा के सानिध्य में सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ कर्तव्य करते हुए परमानन्द का अनुभव होगा। ये जीवन की परम प्राप्ति अभी संगम पर ही है, फिर कब नहीं होगी। व्यर्थ दूसरे की प्राप्तियों को देखकर अपनी प्राप्तियों को भूलकर ये संगम का समय और संगम का सच्चा सुख गँवा मत देना।

* ज्ञानी पुरुष कब भी भूतकाल के सुखों की स्मृति में, उसके चिन्तन में या पश्चाताप में और भविष्य की चिन्ता में वर्तमान के सुख को भूलते नहीं हैं। ये संगमयुगी जीवन महान है और इस जीवन के सुख महान हैं। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाओ तो सदा ही इस जीवन का परम सुख अनुभव होगा। इस जीवन के सुख के आगे भूतकाल का सुख और भविष्य का सुख तो कुछ भी नहीं है। ये संगमयुग सारे कल्प के सुखों का आधार है या बीज है और जीवन के सर्वश्रेष्ठ सुख को अनुभव करने का समय है।

* देह और देह की दुनिया से न्यारे निराकार बाप समान स्थिति में, साकार ब्रह्मा बाप के समान फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर सर्व के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखें तो सबकी हमारे प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रहेगी और ये जीवन परम-सुखमय अनुभव होगा। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को धारण कर स्वरूप में स्थित होकर साक्षी-दृष्टा होकर इस विश्व नाटक को देखेंगे तो आत्मा परम-शान्ति, परम-आनन्द, परम-सुख की अनुभूति करेगी और इस अनुभूति के लिए किसी साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है। ये तो इस विश्व-नाटक का स्वभाविक गुण है। ये परम-प्राप्ति संगमयुग पर ही होती है, जब परमपिता परमात्मा के द्वारा इस विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान प्राप्त होता है, जो हम आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है।

* आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। परमपिता परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, यह

विश्व-नाटक परम सुखमय है। इस सत्य को जानकर इसका सुख अनुभव करो और सर्व को कराओ, यही इस जीवन की परम-प्राप्ति है और आत्मा का परम कर्तव्य है। भौतिक प्राप्तियों-अप्राप्तियों के चिन्तन वाला कब इस परम प्राप्ति के सुख का अनुभव कर नहीं सकता। इस सत्य को जानकर इस जीवन की प्राप्तियों का सुख लो और सुख दो।

संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का आधार परमात्मा का अवतरण, परमात्मा की प्राप्ति और उनसे प्राप्त ज्ञान ही है, जिसके आधार पर ही संगम की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। परमात्मा का अवतरण संगमयुग पर ही होता है या कहें कि परमात्मा के अवतरण से ही संगमयुग का शुभारम्भ होता है और परमात्मा के द्वारा होने वाली प्राप्तियों का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर होता है।

"देहाभिमानी से कुछ न कुछ पाप जरूर होगा। ... बाप कहते हैं - तुम आत्मा अशरीरी आई थीं।... सुन्न (अशरीरी) होने का समय अभी ही है। अभी तुमको घर जाना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया और इस शरीर का भान उड़ा देना है। कुछ भी याद न रहे।"

सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

ईश्वरीय प्राप्तियाँ अति महान हैं परन्तु जब आत्मा को उनका यथार्थ ज्ञान होता है, एहसास होता है तब ही आत्मा उनका यथार्थ सुख अनुभव करती है और जब ईश्वरीय प्राप्तियों का यथार्थ सुख अनुभव होगा तब ही ये संगमयुगी जीवन सुखमय अनुभव होगा, जिस सुख के आगे सतयुग का सुख भी आत्मा को भूल जाता है। आत्मा को ये ज्ञान देना और सुख का अनुभव कराना ही परमात्मा का काम है, उसे स्थाई बनाना या उसका अधिकाधिक उपभोग करना आत्मा का काम है, जो नम्बरवार होता है।

संगमयुग की मूल प्राप्ति है परमात्म प्राप्ति, जिससे ही अन्य सर्व प्राप्तियाँ होती हैं। ये प्राप्तियों के दो पक्ष हैं। एक है ज्ञान पक्ष अर्थात् विभिन्न बातों का ज्ञान परमात्मा से मिलता है और उसके आधार से विभन्न प्रकार के सुखों का अनुभव होता है और दूसरा है अनुभूति पक्ष अर्थात् परमात्मा के सानिध्य से आत्मा को विभिन्न प्रकार के अनुभव होते हैं, जो और किसी साधन-सम्पत्ति से सम्भव नहीं है। भले ही ये ज्ञान-पक्ष और अनुभूति-पक्ष एक-दूसरे पर आधारित हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं अथवा परस्पर सम्बद्ध हैं परन्तु दोनों का अपना विशेष महत्व और अस्तित्व है, इसलिए यहाँ दोनों का अलग-अलग अध्ययन करते हैं।

ज्ञान पक्ष में

"बाप यह नॉलेज जानते हैं, जो नॉलेज तुम्हारे में भी इमर्ज हो रही है, जिस नॉलेज से ही तुम इतना ऊंच पद पाते हो। बाप है बीजरूप, उसमें झाड़ के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज है। ... अभी संगम पर तुमको यह सारा ज्ञान मिल रहा है।"

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

परमात्मा द्वारा सत्य आध्यात्मिक ज्ञान संगमयुग की परम-प्राप्ति है, जो आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला का मूलाधार है। संगमयुग पर ज्ञान-सागर परमात्मा द्वारा हमको इस विश्व-नाटक के अनेक तथ्यों का ज्ञान मिलता है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है।

गायन है - गोधन, गजधन, बाजधन और रत्नधन खानि, जो आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान। सन्तोष का आधार सम्पन्नता, सम्पन्नता अर्थात् भरपूरता। भरपूरता अर्थात सम्पूर्णता और सम्पूर्णता का आधार यथार्थ ज्ञान और ज्ञान का मूल स्रोत ज्ञान सागर परमात्मा है, जो सर्व प्रकार से ज्ञान-गुण-शक्तियों से परिपूर्ण है। वे ही कल्पान्त में यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान देकर आत्माओं को सम्पूर्णता और सम्पन्नता के लिए मार्ग दर्शाते हैं। जो उनके द्वारा इस ज्ञान को पाकर जीवन में धारण कर उसका सुख अनुभव करता है, उसका ही ये जीवन धन्य है। उसकी बुद्धि कहाँ भटक नहीं सकती। सतयुग के सुख का आधार देही-अभिमानी स्थिति है परन्तु संगमयुग पर देही-अभिमानी और परमात्माभिमानी दोनों ही स्थितियाँ होती हैं। जो इस सत्य ज्ञान को जानकर देह से न्यारी स्थिति में स्थित होता है, वह स्वयं को सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव करता है। वह सर्व बन्धनों से मुक्त, परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों से युक्त परम सुख का अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को साथ-2 अनुभव करता है।

ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ धन कहा गया है, परन्तु वह कौनसा ज्ञान है, जो सर्वश्रेष्ठ है। दुनिया में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं, परन्तु उनमें आध्यात्मिक ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है, जो ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा ही कल्पान्त में आत्माओं को मिलता है। जिसके पास इस ज्ञान धन का खज़ाना भरपूर है, वह सदा, सर्वदा, सर्वत्र सुख-शान्ति का अनुभव करेगा। परमात्मा की प्रथम महिमा ही है - ज्ञान का सागर। परमात्मा के ज्ञान के सागर का स्वरूप अभी संगमयुग पर ही प्रत्यक्ष होता है।

"परमात्मा को बीज कहा जाता है। वह सारे झाड़ की नॉलेज देता है। परमात्मा को ज्ञान सागर कहते हैं ना। ज्ञान सागर है, तब ही पतित-पावन है। लिखते हो तो बड़ी समझ से लिखना चाहिए। पहले पतित-पावन कहें वा ज्ञान सागर कहें? जरूर ज्ञान है, तब तो पतित को पावन बनायेगा। तो पहले ज्ञान सागर, पीछे पतित-पावन लिखना चाहिए।"

सा.बाबा 13.10.72 रिवा.

"सर्व सम्पत्ति से श्रेष्ठ खज़ाना ज्ञान धन है, जिससे सर्व धन की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। ... खज़ानों के भण्डारे भरपूर हैं? इतने भण्डारे भरपूर हैं, जो सदा महादानी बनकर दान करते रहो तो भी अखुट भण्डार हो।"

अ.बापदादा 7.5.83

"अभी तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है। ... जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी। तुम्हारे सिवाए कोई नहीं, जो यह नॉलेज समझ सके। गॉड फादर को ही वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी, नॉलेजफुल कहा जाता है। ... तुमको नॉलेज देने वाला बाप है, वह कितना बड़ा नॉलेजफुल है। तुम कितना मर्तबा पाते हो, कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप की सन्तान हैं। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 3.10.2001 रिवा.

"ज्ञान रतन जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रतन की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रतनों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रतन समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रतनों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रतन ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।"

सा.बाबा 10.1.69

"अभी तुम संगमयुग पर हो। संगमयुग पर पैर और चोटी मिलते हैं। अभी पुरानी दुनिया बदल कर नई बनती है। ... बाप आकर त्रिकालदर्शी बनाते हैं।"

सा.बाबा 4.12.03 रिवा.

"गीता में भी व्यास का नाम है ना। वह तो मनुष्य ठहरा परन्तु सच्चे व्यास तुम हो। तुम जो गीता बनाते हो, वह भी विनाश हो जायेगी। झूठी और सच्ची गीता अभी है।"

सा.बाबा 5.12.03 रिवा.

"तुम बच्चों को अब कितनी नॉलेज है। तुम त्रिकालदर्शी हो, तीनों कालों को जानने वाले हो। त्रिलोकीनाथ हो अर्थात् तीनों लोकों को जानने वाले हो। लक्ष्मी-नारायण को त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी नहीं कहेंगे। ... सारी सृष्टि में हमारे जैसा सौभाग्यशाली कोई हो नहीं सकता।"

सा.बाबा 9.12.03 रिवा.

"आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए यह ब्राह्मण जीवन उत्साह की जीवन है, उमंग और खुशी से भरी हुई जीवन है। इसलिए संगमयुग ही उत्सव का युग है। ईश्वरीय जीवन सदा उमंग-उत्साह वाली जीवन है। ... बाप ज्ञान सागर तो बच्चे भी संग के रंग में ज्ञान-स्वरूप बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 6.3.85

"बाप भी कहते हैं - मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ। ... वह है मनुष्य सृष्टि का

बीजरूप। उनकी ही इतनी महिमा है। वह है ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, पतित-पावन। ज्ञान से सर्व की सद्गति करते हैं।" सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

"एक समय और दूसरा संकल्प - इन दो खज़ानों पर विशेष अटेन्शन रखना।... सारे कल्प के लिए जमा करने की बैंक अभी ही खुलती है। सतयुग में ये जमा की बैंक बन्द हो जायेगी।" अ.बापदादा 16.2.96

"सतयुग में न ये बैंक होंगी और न रुहानी खज़ाने जमा करने की बैंक होगी। दोनों ही बैंक नहीं होंगी। इस समय एक का पद्मगुणा करके देने की ये रुहानी बैंक है लेकिन जमा करेंगे तब पद्म मिलेगा, ऐसे नहीं। हिसाब है।" अ.बापदादा 16.2.96

अभी परमात्मा से विश्व-नाटक के जिन गुह्य रहस्यों का ज्ञान मिलता है, उसमें कुछ मुख्य-मुख्य का यहाँ वर्णन करते हैं -

१. आत्मा का ज्ञान

आत्मा के सम्बन्ध में परमात्मा ने हमको अनेक प्रकार का ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान को समझकर, उसको जीवन में धारण कर आत्मा इस जीवन में जहाँ है, जैसी स्थिति में है, उसी में परमानन्द का अनुभव कर सकती है। अभी संगमयुग पर आत्मा के सम्बन्ध में परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें विशेष निम्नलिखित बातों का ज्ञान दिया है:-

आत्मिक स्वरूप एवं आत्मा के गुण-धर्मों का ज्ञान
मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़
आत्मा और शरीर के अस्तित्व एवं दोनों के सम्बन्ध का ज्ञान
आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का ज्ञान
आत्मा के लेप-क्षेप का ज्ञान
आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का और आपही पूज्य और आपही पुजारी पन का ज्ञान
आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का ज्ञान
आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का ज्ञान
आत्मा-परमात्मा के भेद और उनकी समानता का ज्ञान
आत्मा के 84 जन्मों का ज्ञान
आत्मा के अविनाशी संस्कारों का ज्ञान
आत्मा की विभिन्न योनियों का ज्ञान
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है, पशु योनियों में नहीं का ज्ञान

विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनके सुख-दुख का ज्ञान
आत्माओं के लिंग परिवर्तन का ज्ञान
आत्मा के वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का ज्ञान
आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का ज्ञान
आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का ज्ञान
आत्मा की कर्मातीत स्थिति का ज्ञान
आत्मा के प्रकृति और आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का ज्ञान
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का ज्ञान
फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का ज्ञान तथा दोनों के गुण-धर्मों में अन्तर का ज्ञान
देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का ज्ञान
ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का ज्ञान
आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का ज्ञान
आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का ज्ञान
आत्मा की चेतनता की परख का ज्ञान
परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख और विषयानन्द के विषय में ज्ञान

"देह में भृकुटी है आकाल आत्माओं का तख्त। आत्मा एक तख्त छोड़कर झट दूसरा लेती है।... अभी है ब्राह्मण कुल का तख्त। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग का तख्त।"

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

"बाप की श्रीमत है - अपने को आत्मा निश्चय करो। बच्चों को आत्मा का परिचय भी दिया है। आत्मा भृकुटी के बीच निवास करती है। आत्मा अविनाशी है, यह तख्त अर्थात् शरीर विनाशी है।"

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं ऐसे ही तुम सभी बच्चों को भी अशरीरी होकर के शरीर में आना है।"

अ. बापदादा 13.11.69

२. परमात्मा का ज्ञान

परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है और अनन्त गुणों और शक्तियों का सागर है। परमात्मा के सानिध्य से आत्मा ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करती है और उनको अपने

में धारण करती है। परमात्मा के ज्ञान में हमको उनके विषय में विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है, जिसका अपना महत्व और अपना विशेष सुख है, जो आत्मा उस ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त करती है। परमात्मा के यथार्थ स्वरूप का, परमात्मा के गुण-कर्तव्यों का ज्ञान परमात्मा के द्वारा संगमयुग पर ही मिलता है और परमात्मा के द्वारा ही अन्य सभी बातों का ज्ञान मिलता है।

परमात्मा शब्द के भाव-अर्थ का ज्ञान
परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के पिता स्वरूप का ज्ञान
परमात्म के सर्वशक्तिवान स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी है अर्थात् परमधाम का वासी का ज्ञान
परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का ज्ञान
परमात्म के न्यायकारी और समदर्शीपन का ज्ञान
परमात्मा के परकाया प्रवेश का ज्ञान
परमात्मा के अवतरण की विधि-विधान का ज्ञान
परमात्म मिलन का ज्ञान
परमात्मा के लिब्रेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दातापन का ज्ञान
परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का ज्ञान
परमात्मा के बागवान स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का ज्ञान
परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का ज्ञान
परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के खिवैया स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के सौदागर स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का ज्ञान
परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का ज्ञान

हिन्दू धर्म में परमात्मा के साकार और निराकार दोनों रूपों का गायन-पूजन, वर्णन तो होता है परन्तु उनके सत्य स्वरूप का राज़ और अनुभव अभी संगमयुग पर ही समझ में आता है।

"शिव भगवानुवाच, वही पतित-पावन, ज्ञान का सागर है। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा इसमें प्रवेश होकर हमको अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़, भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग के रस्म-रिवाज का राज़ और सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, अनेक धर्मों की वृद्धि कैसे होती है आदि आदि यह सभी डिटेल में समझाते हैं।"

सा.बाबा 17.11.72 रिवा.

"अन्त में बच्चों को यहाँ आकर रहना है। हमारा यादगार भी यहाँ है। ...जैसे शुरू में बाबा ने तुम बच्चों को बहलाया है, फिर पिछाड़ी में बहलाना शुरू करेंगे। जैसे पहले वालों को प्यार किया था, पिछाड़ी वालों का भी हक है। उसी समय ऐसे फील करेंगे जैसे वैकुण्ठ में बैठे हैं।"

सा.बाबा 27.5.71 रिवा.

"बाप से तुमको ताकत मिलती है, जिससे तुम पावन बनते हो।... आत्मा कैसे पावन बनेंगी, यह कोई भी बता नहीं सकते हैं।" सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ... युनिवर्स से युनिवर्सिटी अक्षर निकला है। ... बाप ही आकर सारे युनिवर्स को पावन बनाते हैं।"

सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

"ईश्वर क्या रक्षा करते हैं, सो तो तुम बच्चे जानते हो। कर्मों का हिसाब-किताब तो हर एक को अपना चुक्तू करना ही है। ... बाप कहते हैं हम तो आते हैं पतितों को पावन बनाने।"

सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

३. *विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान*

यह अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। इसमें जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ, वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह निश्चित ही अच्छा होगा। विश्व-नाटक के इस अटल सत्य का ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर ही आकर आत्माओं को देते हैं। इस अटल सत्य को जानने के बाद ही आत्मायें इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव करते हैं। विश्व-नाटक के ज्ञान से आत्मा को विभिन्न प्रकार के सुखों का अनुभव होता है। विश्व-नाटक के विषय में परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें निम्नलिखित बातों का ज्ञान मुख्य है।

विश्व-नाटक और उसकी संरचना का ज्ञान

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का ज्ञान

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Characterstics) का ज्ञान

विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान

विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का ज्ञान
विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का ज्ञान
विश्व-नाटक के सतत परवर्तनशीलता और विविधता का ज्ञान
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का ज्ञान
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का ज्ञान
विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का ज्ञान
विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान
विश्व-नाटक में सूर्य, चांद, तारों के अस्तित्व और महत्व का ज्ञान
विश्व-नाटक में साक्षी स्थिति का ज्ञान
विश्व-नाटक में पुरुषार्थ का महत्व का ज्ञान
विश्व-नाटक की खेल-भावना का ज्ञान
विश्व-नाटक में मोक्ष का ज्ञान
विश्व-नाटक में मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान

विश्व-नाटक के सम्बन्ध में इन सभी तथ्यों का ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर ही आकर देते हैं, जिससे इस विश्व-नाटक की वास्तविकता का पता पड़ता है और और इसके विधि-विधान को जानकर आत्मा इस नाटक के सुख का अनुभव करती हैं। प्राय: सभी महापुरुषों और धर्म-मनीषियों ने साक्षी स्थिति में रहने के लिए कहा है परन्तु साक्षी स्थिति का आधार क्या है, उसके विषय में यथार्थ ज्ञान किसी ने नहीं दिया है। अभी परमात्मा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उस ज्ञान की धारणा से ही आत्मा हार-जीत, लाभ-हानि ... जय-पराजय सबमें समान होकर साक्षी स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखती है। ये ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर ही देते हैं, जिससे आत्मायें साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने का परम सुख अनुभव करती हैं। ये साक्षी स्थिति संगमयुग की महान प्राप्ति है।

"बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

"यह बना-बनाया नाटक है, हम समझते हैं यह सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

ज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थिति होकर परमात्मा के साथ बैठकर इस विश्व-नाटक की यथार्थता, अद्भुतता, दिव्यता, सत्यता, कल्याणकारिता, न्यायपूर्णता, विशालता को देखो तो आत्मा परमानन्द का अनुभव करेगी, जो आनन्द देवताई जीवन में भी प्राप्त नहीं है। वह स्थिति स्वत: लाइट हाउस का काम करेगी। इस जीवन की प्राप्तियों का महत्व जानो और इसके परमानन्द में विभोर हो जाओ, इससे श्रेष्ठ जीवन त्रिलोक्य में नहीं है। इस लाइट हाउस की स्थिति में बैठकर सारे विश्व में ज्ञान की लाइट और सर्वशक्तियों तथा सर्व गुणों की माइट की किरणें विश्व में फैलाओ और विश्व को रोशन करो।

संगमयुग पर यथार्थता को जानकर नष्टोमोहा हो जाना परम भाग्य है क्योंकि नष्टोमोहा ही परमपिता परमात्मा की स्मृति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव कर सकता है। संगमयुग के परम सुख का बहुत काल का और गहन अनुभव ही भविष्य सतयुगी-त्रेतायुगी बहुत काल के सुख का आधार है।

"यह है बड़ा वण्डरफुल ड्रामा। अभी तुम बच्चे आदि से लेकर अन्त तक सब जानते हो। ... बाप के पास सारा ज्ञान है, तुम्हारे पास भी होना चाहिए।... यह साक्षात्कार आदि सब ड्रामा में नूँध हैं, इसमें तुमको मूँझने की दरकार नहीं है।"

सा.बाबा 28.3.05 रिवा.

"बाप आकर सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं।... यह चक्र फिरता रहता है। ये बड़ी सूक्ष्म बातें हैं समझने की। यह बना-बनाया खेल है।... देही-अभिमानी बनें तब खुशी का पारा चढ़े। ... बाबा से कोई बात पूछते हैं तो बाबा कहते हैं - ड्रामा में जो कुछ बताने का है, वह बता देते हैं। ड्रामा अनुसार जो उत्तर मिलना था सो मिल गया, बस उस पर चल पड़ना है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"पहले-पहले बाप का परिचय दे फिर ये चित्र दिखाना है। ... दिन प्रतिदिन चित्र भी शोभनीक होते जाते हैं। जैसे स्कूल में नक्शे बच्चों की बुद्धि में होते हैं। तुम्हारी बुद्धि में फिर यह रहना चाहिए। ... अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं, यह पुरानी दुनिया विनाश को पायेगी।"

सा.बाबा 21.6.04 रिवा.

"तुम बच्चों को कितनी खुशी होती है। जैसे बाप की बुद्धि में सारा ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी है। बीज और झाड़ को समझना है।... ड्रामा अनुसार यह सब होना ही है, इसमें घृणा नहीं आती। नाटक में एक्टर्स को कभी किससे घृणा आयेगी क्या!... यह एक ही पुरुषोत्तम संगमयुग है, जब तुम पुरुषोत्तम बनते हो। सत्य बनाने वाला, सतयुग की स्थापना करने वाला

एक ही सच्चा बाबा है।" सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

"अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो, बाकी और सब हैं कलियुग में।... मैं बैठकर तुमको ड्रामा राज़ समझाता हूँ। मैंने बनाया हो तो फिर कहेंगे कब बनाया! बाप कहते हैं - यह अनादि है ही। कब शुरू हुआ, यह सवाल नहीं आ सकता। अगर कहेंगे फलाने समय शुरू हुआ तो कहेंगे बन्द कब होगा! परन्तु नहीं, यह तो चक्र चलता ही रहता है।... यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, इसमें पुरुषार्थ कर पावन बनना है।... दिन प्रतिदिन सीढ़ी नीचे उतरते तमोप्रधान बनते जाते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। एक्टर्स होकर ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर को न जाने तो क्या कहेंगे!"

सा.बाबा 10.5.04 रिवा.

४. *सृष्टि-चक्र का ज्ञान*

ये सृष्टि चक्रवत् चलती है, इस सत्य का ज्ञान अभी संगमयुग पर ही परमात्मा ने दिया है। जीवन की सफलता के लिए यह ज्ञान अति आवश्यक है। सृष्टि-चक्र का ज्ञान देकर परमात्मा आत्माओं को त्रिकालदर्शी बनाते हैं।

सृष्टि-चक्र के चक्रवत् गतिशीलता का ज्ञान
सृष्टि-चक्र के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का ज्ञान
सृष्टि-चक्र की अवधि का ज्ञान
सृष्टि-चक्र के के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का ज्ञान
स्वास्तिका का ज्ञान अर्थात् चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में समय की विशेषता का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा का ज्ञान
सृष्टि-चक्र में "नथिंग न्यू" का ज्ञान और महत्व

इन सब तथ्यों का विवेक संगत, तर्कयुक्त ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर ही आकर देते हैं, जिससे सृष्टि-रचना के विषय में प्रचलित अनेक प्रकार की भ्रान्तियों का निराकारण होता है।

"अब उड़ने और नीचे आने का चक्र पूरा हो।... जब यह चक्र पूरा होगा तब स्वदर्शन चक्र दूर से आत्माओं को समीप लायेगा। यादगार में क्या दिखाते हैं? एक जगह पर बैठे चक्र भेजा और वह स्वदर्शन चक्र स्वयं ही आत्माओं को समीप ले आया। स्वयं नहीं जाते, चक्र

चलाते हैं। तो पहले यह सब चक्र पूरे हों तब तो स्वदर्शन चक्र चले।"

अ.बापदादा 2.4.84 दादियों के साथ

"अभी तो अधिकारी बन गये ना! पुकार का समय समाप्त हुआ। संगमयुग प्राप्ति का समय है न कि पुकार का समय है। सहज पुरुषार्थी अर्थात् सबको पार कर सहज सर्व प्राप्ति करने वाले।"

अ.बापदादा 11.4.83

"तुमने 84 जन्म कैसे लिए, यह तुम नहीं जानते हो, मैं बताता हूँ। यह ज्ञान कोई भी शास्त्र में नहीं है। ... लक्ष्मी-नारायण में यह सृष्टि-चक्र का ज्ञान ही नहीं है। अगर उनको यह मालूम हो कि 16 कला से फिर 14 कला बनना है तो उसी समय ही राजाई का नशा उड़ जाये। वहाँ तो है ही सद्गति।"

सा.बाबा 22.12.03 रिवा.

"ड्रामा के हर दृश्य को ड्रामा चक्र में संगमयुगी टॉप प्वाइन्ट पर स्थित होकर देखेंगे तो स्वत: ही अचल-अडोल रहेंगे। ... चक्र में संगमयुग ऊंचा युग है।... इसी ऊंची प्वाइन्ट पर, ऊंचे स्थान पर, ऊंची स्थिति पर, ऊंची नॉलेज में, ऊंचे ते ऊंचे बाप की याद में, ऊंचे ते ऊंची सेवा स्मृति स्वरूप होंगे तो सदा समर्थ होंगे। जहाँ समर्थ है, वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त हो जाता है। ... ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। ... जो हुआ परिवर्तन के पर्दे को खोलने के लिए बहुत ही अच्छे ते अच्छा हुआ। न भगवती (डा.) का दोष है, न भगवान का दोष है। यह तो ड्रामा का राज़ है। इसमें न भगवती कुछ कर सकता, न भगवान। यह तो ड्रामा का खेल है।"

अ.बापदादा 30.7.83

"हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं - यह किसकी बुद्धि में याद रहे तो भी सारा ड्रामा बुद्धि में आ जाये। ... तुम ब्राह्मण ही जानते हो, अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। जो ब्राह्मण हैं, उनको ही रचयिता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है।"

सा.बाबा 10.12.05 रिवा.

"तुम जानते हो हमारा बाप नॉलेजफुल है, उसमें सारे ड्रामा की नॉलेज है। अभी हमको भी नॉलेज मिल रही है। यह चक्र बड़ा अच्छा है। यह पुरुषोत्तम युग होने के कारण तुम्हारा यह जन्म भी पुरुषोत्तम है।"

सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

"विनाश के लिए तैयारी कर रहे हैं। तुम जानते हो ड्रामा में उन्होंका भी पार्ट है। ड्रामा के बन्धन में बांधे हुए हैं। तुम बच्चों के लिए यह कोई नई बात नहीं है।... यह भी जानते हो बरोबर महाभारत लड़ाई लगी थी।... सारा ड्रामा ही 5 हजार वर्ष का है, लाखों वर्ष की बात नहीं।"

सा.बाबा 25.8.06 रिवा.

५. त्रिलोक का ज्ञान

तीन लोकों का वर्णन तो धार्मिक ग्रन्थों में बहुत है परन्तु तीन लोक क्या है, उनकी क्या भूमिका है, इस सत्य का यथार्थ ज्ञान कहीं भी नहीं मिलता है। अभी संगमयुग पर ही परमात्मा ने तीनों लोकों का ज्ञान देकर आत्माओं को त्रिलोकीनाथ बनाया है, जिससे हम तीनों लोकों की गतिविधियों को जानकर तीनों लोकों का अनुभव करते हैं और उनमें भ्रमण भी करते हैं।

ब्रह्म लोक (ब्रह्माण्ड) का ज्ञान अर्थात्

ब्रह्म तत्व क्या है?

ब्रह्म लोक में आत्मायें कैसे रहती हैं और कब तक रह सकती हैं?

ब्रह्म लोक से आत्मायें कब और कैसे आती हैं तथा कब और कैसे जा सकती हैं?

ब्रह्म लोक की स्थिति भूमण्डल के एक तरफ अर्थात् ऊपर है या चारो तरफ है?

सूक्ष्म वतन का ज्ञान

सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा - विष्णु - शंकर का ज्ञान

स्थूल वतन की गति-विधि का ज्ञान अर्थात् सूक्ष्म वतन का इस विश्व-नाटक में क्या स्थान है, उससे क्या सम्बन्ध है?

स्थूल वतन का ज्ञान अर्थात् तीनों लोकों का परस्पर क्या सम्बन्ध है?

त्रिलोकीनाथ का ज्ञान अर्थात् त्रिलोकीनाथ कौन है, कैसे है और कब बनता है?

"बरोबर बाप से शिक्षा लेकर हम स्वर्ग में जायेंगे, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाकी जो भी जीव की आत्मायें हैं, वे शान्तिधाम में चली जायेंगी।... स्वर्ग स्थापन हो गया फिर नॉलेज की दरकार नहीं। यह नॉलेज बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही सिखलाई जाती है।"

सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

"आत्मायें मूलवतन वा ब्रह्म महतत्व में निवास करती हैं, वह है हम आत्माओं का घर। यह आकाश तत्व है, जहाँ साकारी पार्ट चलता है। ... अभी है संगमयुग, जिसको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। यहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है।

सा.बाबा 11.9.06 रिवा.

"बाप को जब पहले-पहले नई रचना रचनी होती है तो पहले सूक्ष्मवतन को ही रचेंगे।... पहले-पहले तुम वाया सूक्ष्मवतन से नहीं आते हो, सीधे आते हो। अभी तुम सूक्ष्मवतन में आ-जा सकते हो।... जब तक तुम सम्पूर्ण पवित्र नहीं बने, तब तक तुम ऐसे नहीं कह सकते हो कि हम सूक्ष्मवतन में जा सकते हैं। तुम साक्षात्कार कर सकते हो।" सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

६. कल्प वृक्ष का ज्ञान

गीता में सृष्टि को एक उल्टा वृक्ष कहा गया है और विभिन्न शास्त्रों और धर्म-ग्रन्थों में भी कल्प-वृक्ष का गायन है। कल्प-वृक्ष का यथार्थ ज्ञान संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा मिलता है। कल्प-वृक्ष को विभिन्न धर्मों का वृक्ष भी कहा गया है। अभी संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा दिये गये कल्प-वृक्ष के ज्ञान के द्वारा हमको पता चलता है कि इस सृष्टि की वृक्ष से तुलना क्यों की गयी है और इस सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना कब और कैसे होती है। कल्प-वृक्ष के ज्ञान के द्वारा हमको निम्नलिखित बातों का ज्ञान मिलता है और उस ज्ञान के द्वारा विभिन्न प्रकार की प्राप्तियाँ और सुख का अनुभव होता है।

कल्प-वृक्ष शब्द का और उसके वृक्ष के समान गुण-धर्मों का ज्ञान
कल्प-वृक्ष की कलम का ज्ञान अर्थात् देवी-देवता धर्म की स्थापना का ज्ञान
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का ज्ञान
संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत धर्म की स्थापना का ज्ञान
परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का ज्ञान
सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान और धर्म-स्थापना में दो आत्माओं के पार्ट का ज्ञान।
आत्माओं का एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का ज्ञान
आदि-सनातन धर्म रूपी तने से विभिन्न धर्म रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलने का ज्ञान
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म के सम्बन्ध का ज्ञान
सनातन शब्द का ज्ञान
सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का ज्ञान
कल्प-वृक्ष की आयु और उसके लाखों वर्ष न होकर, 5000 वर्ष के होने का ज्ञान
विभिन्न धर्मों की आयु का ज्ञान अर्थात् उनके स्थापना और विनाश का ज्ञान
कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का ज्ञान
वृक्षपति, वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का ज्ञान
सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान और धर्म-स्थापना में दो आत्माओं का पार्ट का ज्ञान

"संगमयुग की यादगार निशानियां सभी धर्मों में हैं। ... यह सभी धर्म आपकी शाखायें हैं, कल्प-वृक्ष की शाखायें हैं। ... इसलिए यह कल्प-वृक्ष की निशानी अन्य धर्म की शाखायें भी हर वर्ष मनाते हैं। सारे वृक्ष का ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर ब्रह्मा है।"

परमात्मा को वृक्षपति भी कहा जाता है परन्तु परमात्मा को वृक्षपति क्यों कहा जाता है ? वृक्षपति की दशा सबसे श्रेष्ठ क्यों मानी जाती है ? आदि आदि बातों का ज्ञान भी अभी ही परमात्मा ने दिया है।

कल्प-वृक्ष के ज्ञान से विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है और 'वसुधैव कुटुम्बकम" का अनुभव होता है, जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म का प्राण है और विश्व-शान्ति और परम सुख का आधार है। कल्प-वृक्ष के ज्ञान से आत्मा में विश्व-प्रेम जाग्रत होता है।

कल्प-वृक्ष के ज्ञान से हम आत्माओं में पूर्वजपन की भावना जाग्रत होती है, जिससे विश्व-कल्याण का कर्तव्य सम्भव होता है।

संगमयुग कल्प-वृक्ष का फूल और सतयुग कल्प-वृक्ष का फल है। फूल फल से ऊंचा और श्रेष्ठ होता है परन्तु फल से डाल झुक जाती है, ऐसे ही सतयुग से कलायें उतरती जाती हैं। संगमयुग कल्प-वृक्ष का बीज है। बीज के ऊपर ही वृक्ष का आधार होता है, ऐसे ही संगमयुगी जीवन के कर्मों, प्राप्तियों, सम्बन्धों के आधार पर हम अपने भविष्य सारे कल्प के संस्कारों, कर्मों, प्राप्तियों, सम्बन्धों को समझ सकते हैं।

"बच्चे जानते हैं - हमारा बीज है वृक्षपति, जिसके आने से हम पर बृहस्पति की दशा बैठती है।... अभी तुम बच्चों पर बृहस्पति की दशा है। ... भगवानुवाच - काम महाशत्रु है, उसको जीतने से तुम विश्व का मालिक बनते हो।" सा.बाबा 4.6.04 रिवा.

"बाप बीजरूप, नॉजेजफुल है तो हम भी झाड़ को पूरा समझ गये हैं। ... एक धर्म की फिर से स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश होता है।... कल्प पहले भी संगम पर आकर तुम बच्चों को राजयोग सिखाया था।" सा.बाबा 13.9.06 रिवा.

७. *कर्मों की गुह्य गति के ज्ञान की प्राप्ति*

ये सृष्टि कर्म-फल-कर्म पर आधारित एक घटना-चक्र है। कर्म करना और कर्म-फल को भोगना इस विश्व-नाटक की सतत क्रिया है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। कर्म के आधार पर ही आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर सुख या दुख भोगती है। श्रेष्ठ कर्म करने के लिए कर्मों के विधि-विधान और कर्मों की गहन गति का ज्ञान अति आवश्यक है।कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान परमात्मा के द्वारा संगमयुग पर ही प्राप्त होता है, जिससे आत्मा योग द्वारा अपना विकर्मों का खाता समाप्त कर श्रेष्ठ कर्म करके श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करती है। कर्मों की गुह्य गति के ज्ञान के द्वारा ही आत्मा में श्रेष्ठ कर्म करने की

प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में सफल होती है। कर्म के लिए गायन है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा। अभी संगमयुग पर परमात्मा ने जो कर्मों के विषय में विभिन्न बातों का ज्ञान दिया है, उनमें से निम्नलिखत मुख्य हैं।

कर्मों की गहन गति का ज्ञान
कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का ज्ञान
विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का ज्ञान
सुकर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान
सुकर्म कर्म करने के विधि-विधान का ज्ञान
कर्म और कर्म फल का ज्ञान
निष्काम कर्म का ज्ञान
कर्म और विश्व-नाटक के विधि-विधान के सम्बन्ध का ज्ञान
कर्मातीत अवस्था का ज्ञान
कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का ज्ञान
कर्मभोग और कर्मयोग का ज्ञान और कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय का ज्ञान
कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का ज्ञान
कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का ज्ञान
धर्म और कर्म का ज्ञान
पाप-पुण्य का ज्ञान
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का ज्ञान
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का ज्ञान
धर्मराज और धर्मराजपुरी का ज्ञान
धर्मराजपुरी के विधि-विधान का ज्ञान
धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का ज्ञान
धर्मराज की ट्रिबुनल का ज्ञान
कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का ज्ञान

* आत्मा के ऊपर आधा कल्प का विकर्मों का बोझा है, उसको उतारकर अभी सारे कल्प के लिए कमाई करने का शुभ अवसर यह संगमयुग ही है, इसलिए तीव्र पुरुषार्थ करके इस अवसर का लाभ उठाना परमावश्यक है।

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याणार्थ

ईश्वरीय लॉज भी बताते हैं। सबसे बड़े से बड़ा संगम का अनादि लॉ कौनसा है? ड्रामा प्लैन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - ये ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता है कि इस कर्म का यह फल वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। ... इसीलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है।"

अ.बापदादा 3.5.77

"भाग्य अपने कर्मों के हिसाब से सभी को मिलता है। द्वापर से अब तक आप आत्माओं को भी कर्म और भाग्य के हिसाब-किताब में आना पड़ता है लेकिन वर्तमान भाग्यवान युग में भगवान भाग्य देता है। भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींचने की विधि है "श्रेष्ठ कर्म रूपी कलम" आप बच्चों को दे देते हैं, जिससे जितनी श्रेष्ठ, स्पश्ट जन्म-जन्मान्तर के भाग्य की लकीर खींचने चाहो, उतनी खींच सकते हो। और कोई समय को यह वरदान नहीं है। इसी समय को यह वरदान है।"

अ.बापदादा 16.1.85

"यह है धर्माऊ कल्याणकारी जन्म। अभी हमारा कल्याण होने वाला है, इसलिए यह कल्याण्कारी जन्म और कल्याणकारी युग कहा जाता है। इस संगम का किसको पता नहीं है। संगम को युगे-युगे कहा है तो 4 संगम हो गये। बाप कहते हैं - नहीं, वे तो उतरती कला के संगम हैं, अभी ये है चढ़ती कला का संगम।"

सा.बाबा 27.2.02 रिवा.

"बापदादा बच्चों के वर्तमान और भविष्य के भाग्य को देखकर हर्षित हैं। वर्तमान कलम है भविष्य की तकदीर बनाने की। वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने का साधन है - बड़ों के इशारों को सदा स्वीकार करते हुए स्वयं को परिवर्तन कर लेना।"

अ.बापदादा 2.3.85

"राज्य अधिकारी अर्थात् सर्व सूक्ष्म और स्थूल कर्म इन्द्रियों के अधिकारी। क्योंकि स्वराज्य है ना! तो कभी-कभी राज बनते हो या सदा राजे रहते हो?... तो सदा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी। सदा चेक करो - जितना समय और जितनी पॉवर से अपनी कर्मेन्दियों, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अभी अधिकारी बनते हो, उतना ही भविष्य में राज्य अधिकार मिलता है। अगर अभी परमात्म पालना, परमात्म पढ़ाई, परमात्म श्रीमत के आधार पर यह एक संगमयुग का जन्म सदा अधिकारी नहीं तो 21 जन्म कैसे राज्य अधिकारी बनेंगे। हिसाब है ना! इस समय का स्वराज्य, स्व का राजा बनने से ही 21 जन्म की गैरन्टी है।"

अ.बापदादा 17.10.03

"संगमयुग है ही एक का पदमगुणा जमा करने का युग। ... कैसा भी कमजोर तन हो, रोगी हो लेकिन वाचा-कर्मणा नहीं तो मन्सा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। ... कैसे भी

बीमार हो अगर दिव्य-बुद्धि सालिम है तो अन्त घड़ी तक भी सेवा कर सकते हैं।"

अ.बापदादा 18.2.85

संगमयुग पर एक का कई गुणा फल क्यों ?

1. यथार्थ ज्ञान से अच्छे या बुरे दोनों प्रकार के कर्म के फल की कई गुणा प्राप्ति होती है।

2. संगमयुग पर परमात्मा के साथ डायरेक्ट सम्बन्ध होने कर्म के कई गुणा फल की प्राप्ति होती है।

3. संगमयुग पर हम निमित्त बनते हैं तो हम जो करते हैं, हमको देखकर और भी फॉलो करते हैं, तो उसका अंश भी हमको मिलता है। गलत करते हैं तो कट जाता है।

* जो आत्मा एक बार संगमयुग की सीमा रेखा में प्रवेश कर गई अर्थात् उसने परमपिता परमात्मा को अपना बाप स्वीकार कर लिया, ब्राह्मण बन गया, तो वह इस संगमयुग के विधि-विधान में बंध गया, फिर वह उससे मुख नहीं मोड़ सकता है। वह संगमयुग के सभी विधि-विधानों को पालन करने के लिए उत्तरदायी होता है। हर ब्राह्मण आत्मा का उत्तरदायित्व है कि वह उनको समझे, पढ़े और उन नियम-संयम का पालन करे। विधाता बाप ने हमारे जीवन के सभी उपयोगी विधि-विधानों, नियम-संयम, कृत्य-अकृत्य का ज्ञान दिया है। उनका पालना करना हमारा पावन कर्तव्य है। इसीलिए बाबा कहता है - तुमको हर मुरली को पढ़ना चाहिए और मुरली रोज पढ़नी चाहिए, जिससे कोई बात छूट न जाये।

"बिरला के पास कितनी ढेर मिल्कियत है। मन्दिर बनाते हैं, उससे कुछ भी नहीं मिलता है। गरीबों को थोड़ेही कुछ देते हैं। मन्दिर बनाया, जहाँ मनुष्य आकर माथा टेकेंगे। हाँ, गरीब को दान में देते हैं तो उसका रिटर्न में मिल सकता है। धर्मशाला बनाते हैं तो बहुत मनुष्य जाकर वहाँ विश्राम पाते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए सुख मिल जाता है।... संगमयुग पर बाप सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।"

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

"अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही कर्म-अकर्म=विकर्म की नॉलेज सुनाते हैं। आत्मा ही शरीर लेकर कर्म करने यहाँ आती है। ... सतयुग में विकर्म होता ही नहीं, इसलिए वहाँ दुख होता ही नहीं।"

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

८. *योग का यथार्थ ज्ञान*

श्रेष्ठ भाग्य के निर्माण के लिए श्रेष्ठ कर्म करना आवश्यक है। श्रेष्ठ कर्म करने के लिए श्रेष्ठ कर्मों के ज्ञान के साथ-साथ श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति भी आवश्यक है। उस

शक्ति को प्राप्त करने के लिए योग ही एकमात्र साधन और साधना है। इसलिए भारत के प्राचीन राजयोग का सारे विश्व में गायन है। वह योग क्या है, उसकी साधना क्या है, उससे प्राप्ति क्या होती है, इन सब बातों का ज्ञान परमात्मा ने अभी संगमयुग पर दिया है। योग के विषय में परमात्मा ने जिन बातों का ज्ञान दिया है, उनमें निम्नलिखित मुख्य हैं, जिनका ज्ञान होने पर ही हम उनका लाभ उठा सकते हैं।

योग का अर्थ एवं योग अर्थात याद का ज्ञान / योग के विधि-विधान का ज्ञान

योग का ज्ञान, उसके विधि-विधान का राज़ भी परमात्मा संगमयुग पर ही बताते हैं, जिसको जानकर ही हम योग का यथार्थ अभ्यास कर सकते हैं और उसमें सफलता पा सकते हैं।

"योगी वह है, जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दे। ... एकदम सन्नाटा हो जायेगा। जब तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो तो यही सच्ची याद है।"

सा.बाबा 30.5.05 रिवा.

"कोशिश कर अपने को आत्मा निश्चय करो तो बाप की याद भी रहेगी। देह में आने से फिर देह के सब सम्बन्ध याद आयेंगे। यह भी एक लॉ है।... किसकी रग टूटती नहीं है। पूछते हैं - बाबा यह क्या है! अरे, तुम नाम-रूप में क्यों फँसते हो। एक तो तुम देहाभिमानी बनते हो और दूसरा फिर तुम्हारा कोई पास्ट का हिसाब-किताब है, वह धोखा देता है।"

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"अगर योग नहीं लगता तो अवश्य ही इन्द्रियों द्वारा अल्पकाल के सुख प्राप्त कराने वाले और सदाकाल की प्राप्ति से वंचित कराने वाले कोई न कोई भोग भोगने में लगे हुए हैं, इसलिए अपने निजी कार्य को भूले हुए हैं। जैसे आजकल के सम्पत्ति वाले वा कलियुगी राजायें जब भोग-विलास में व्यस्त हो जाते हैं तो अपना निजी कार्य राज्य करना वा अपना अधिकार भूल जाते हैं। ऐसे ही आत्मा भी भोग भोगने में व्यस्त होने के कारण योग भूल जाती है।... जहाँ भोग है, वहाँ योग नहीं।"

अ.बापदादा 16.10.75

"बाबा फोटो निकालने को भी मना करते हैं। ... बाबा-मम्मा का चित्र देखने लग पड़ेंगे, शिव बाबा भूल जायेगा। तुम आत्माओं को तो निराकार बाप को याद करना है। इसलिए मैं फोटो आदि देखता हूँ तो फाड़ भी देता हूँ। समझते हैं यह मम्मा-बाबा के फोटो देखते रहते हैं। मरने समय अगर उनको ही देखते रहे तो दुर्गति हो जायेगी।...समझते हैं इनका शिव बाबा से योग टूटा हुआ है, तब कहते हैं बाबा हमारे साथ फोटो निकालो। बाबा को यह फोटो आदि निकालना

अच्छा नहीं लगता। कहाँ साकार में फंस कर मर न जायें।"

सा.बाबा 16.7.72 रिवा.

"तुमको नशा होना चाहिए गुप्त में बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। कोई चित्र आदि को हम याद नहीं करते हैं। फोटो के लिए कहते हैं। मैं समझता हूँ पूरा ज्ञान नहीं उठाया है तब फोटो मांगते हैं। ... कोई भी चित्र को याद नहीं करना है। शिव बाबा का फरमान है मामेकम याद करो। ...माँ की याद में शरीर छोड़ने से दुर्गति को पायेंगे।" सा.बाबा 17.7.72 रिवा.

"बाबा आये हैं मुरली चलाकर चले जायेंगे। इनकी बुद्धि भी वहाँ रहती है। ...इनमें शिवबाबा ही न होगा तो याद क्यों करेंगे। ... तुम याद वहाँ करो। ... ऐसे नहीं सिर्फ इनको बैठ देखना है। बाबा ने समझाया है शिव बाबा को याद कर फिर इनकी गोद में आना है। नहीं तो पाप हो जायेगा।" सा.बाबा 12.11.73 रिवा.

"अभी शिवबाबा मिला है तो उनकी मत पर चलना चाहिए ना। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। कोई की भी याद न आये। चित्र भी कोई का नहीं रखना है। एक शिवबाबा की ही याद रहे।" सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

"इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह भारत का प्राचीन राजयोग है, जो बाप ही हर 5000 वर्ष के बाद आकर सिखलाते हैं। बेहद का बाप ही भारत में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को यह योग सिखलाते हैं। इस याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।" सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

"बच्चों की हर प्रकार की सम्भाल भी होती रहती है। बीमारी आदि में भी विकारी मित्र-सम्बन्धी आयें, यह तो अच्छा नहीं है। हम पसन्द भी नहीं करें। नहीं तो अन्तकाल वह मित्र-सम्बन्धी ही याद पड़ेंगे।... नहीं, उन्होंको बुलाना, कायदा नहीं है।... यह है होलीएस्ट ऑफ होली स्थान। पतित यहाँ रह न सकें।" सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

"अपनी नसीब को बनाना अपने हाथ में है। तो अब लॉटरी के इन्तजार में नहीं रहना, इन्तजाम करते रहना। तो योग से ही एम पूरा होगा परन्तु दोनों बातों को न चाहने वाला ही निर्संकल्प होता है, उनको ही सच्चा योगी कहा जाता है।" (दोनों की चिन्ता न हो, स्वभाविक पुरुषार्थ हो)

अ.बापदादा 6.7.69

"वह याद स्थाई रहती नहीं है। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, बाबा भी बिन्दी है, वह हमारा बाप है। ... आत्मा भी निराकार, परमात्मा भी निराकार है, इसमें फोटो की भी बात नहीं है। तुमको तो आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है और देहाभिमान छोड़ना है।"

सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

"तुम बच्चों की याद यथार्थ है। तुम अपने को इस देह से न्यारा, आत्मा समझकर बाप को याद करते हो। तुमको कोई की भी देह की याद नहीं आनी चाहिए।... देही-अभिमानी होकर जितना बाप को याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है।" सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

"बाप को याद करने से ज्ञान आप ही इमर्ज हो जाता है। जो बाप को याद करता है, उनको हर कार्य में बाप की मदद मिल ही जाती है। ... अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... ईश्वरीय नॉलेज क्या बनायेगी ? ईश्वरीय स्थिति।"

अ.बापदादा 24.1.70

"भल बच्चे कहते हैं कि बहुत सहज है परन्तु मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा जानकर याद करते हैं! ... मैं आत्मा बिन्दु हूँ और हमारा बाबा भी बिन्दी है। ... मनुष्यों को यह कैसे समझायें, इस पर विचार सागर मंथन चलना चाहिए।" सा.बाबा 2.2.05 रिवा.

"अभी पुरुषार्थ है विस्तार को समाने का।... जिस समय बुद्धि को बहुत विस्तार में गई देखो, उसी समय यह अभ्यास करो कि इतने विस्तार को समा सकती हूँ।"

अ.बापदादा 5.4.70

"जन्म जन्मान्तर का देहाभिमान मिटाकर देही-अभिमानी बनें, इसमें बड़ी मेहनत है। कहना तो बड़ा सहज है परन्तु अपने को आत्मा समझें और बाप को बिन्दु रूप में याद करें, इसमें मेहनत है। बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा कोई मुश्किल याद कर सकते हैं। ... आत्मा-परमात्मा दोनों एक जैसे बिन्दु हैं।" सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"कितना भी कोई कार्य में बुद्धि विस्तार में गई हुई हो लेकिन विस्तार को एक सेकेण्ड में समाने की शक्ति नहीं है, क्या ऐसे बोल वा यह संकल्प ऐसे मालिक के हो सकते हैं ? ... बाप के सामने बच्चा आकर कहे कि बाबा हमको मदद करना, शक्ति देना, सहारा देना, इसको क्या कहा जाता है। क्या इसको रॉयल भिखारीपन नहीं कहेंगे ?"

अ.बापदादा 23.6.73

"एक सेकेण्ड में चोला धारण करें और एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायें, जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जायेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त हो जायेगा। जैसे इन्जेक्शन लगाकर दर्द को खत्म कर देते हैं। ... उस अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी।"

अ.बापदादा 22.11.72

"ऐसे बुद्धि को जब चाहो, जितना समय चाहो, जहाँ स्थित करना चहो, वहाँ स्थित नहीं कर सकते हो ?... इस कला से ही अन्य सर्व कलायें स्वत: ही आ जाती हैं।"

अ.बापदादा 12.11.72

"देही-अभिमानी स्थिति सर्व विकारों को सहज ही शान्त कर देती है। ... बापदादा अचानक डायरेक्शन दें कि इस शरीर रूपी घर को छोड़कर इस देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से अपने स्वीटहोम में चले जाओ तो कर सकेंगे?... युद्ध करते ही तो समय नहीं बिता देंगे ?"

अ.बापदादा 12.11.72

"जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों का मालिक बन जब और जैसे चाहो कार्य में लगा सकते हो, वैसे ही संकल्प को वा बुद्धि को जब और जहाँ लगाने चाहो, वहां लगा सकते हो? ... पढ़ाई का लास्ट पाठ कौनसा है और फर्स्ट पाठ कौनसा है? फर्स्ट पाठ और लास्ट पाठ यही अभ्यास है।... यह है बुद्धि की ड्रिल।"

अ.बापदादा 18.6.71

"योद्धे जो युद्ध के मैदान में रहते हैं, उनको जब भी और जैसा आर्डर मिलता है, वैसे ही करते जाते हैं। ऐसे ही रुहानी वारियर्स को भी जब और जैसा डायरेक्शन मिले, वैसे ही अपनी स्थिति को स्थित कर सकते हैं?... एक सेकण्ड से भी कम समय में जैसी स्थिति में स्थित होना चाहें, उस स्थिति में टिक जायें।"

अ.बापदादा 18.6.71

"विस्तार करना और विस्तार में जाना आता है लेकिन विस्तार को जब चाहें तब समेटना और समा लेना - यह प्रैक्टिस कम है। ज्ञान के विस्तार में जाना जानते हो लेकिन ज्ञान के विस्तार को समाकर ज्ञान स्वरूप बन जाना, बीजरूप बन जाना - यह प्रैक्टिस कम है।"

अ.बापदादा 18.6.70

"अव्यक्त स्थिति में सर्व संकल्प स्वत: सिद्ध हो जाते हैं। ... अव्यक्त मूर्त को सामने देख समान बनने का प्रयत्न करना है। जैसा बाप वैसे बच्चे। ... बिन्दु रूप में तब टिक सकेंगे जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा। ... एक्सीडेण्ट के समय ब्रेक नहीं लगती तो मोड़ना होता है। बिन्दु रूप है ब्रेक, शुद्ध संकल्पों से अशुद्ध संकल्पों को हटाना है मोड़ना।"

अ.बापदादा 7.6.70 पार्टियों के साथ

"बापदादा से मुलाकात करते समय बिन्दु रूप की स्थिति में स्थित रह सकते हो? ... बिन्दुरूप स्थिति जब एकान्त में बैठते हो तब हो सकती या चलते-फिरते भी हो सकती है? अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है।"

अ.बापदादा 24.7.70

"बिन्दुरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि जब नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा।... फरिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति जिसकी सदाकाल रहती है, वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो

सकेगा। ... कार्य करते बीच-बीच में समय निकालकर इस फाइनल स्टेज अर्थात बिन्दुरूप का पुरुषार्थ करना चाहिए।" अ.बापदादा 24.7.70

"जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश के अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को भी अनुभव कराने के लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपनी अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।" अ.बापदादा 24.1.70

"अच्छा सारे दिन में अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है? बिन्दु रूप के लिए नहीं पूछते हैं, अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है? ... अव्यक्त स्थिति के लिए कह रहे हैं। अव्यक्त स्थिति आठ घण्टा बनाना बड़ी बात नहीं है। अव्यक्त की स्मृति अर्थात् अव्यक्त स्थिति। ... गीत है ना - न वो हम से जुदा होंगे...। जब जुदा ही नहीं होंगे तो स्नेह दिल से कैसे निकलेगा।" अ.बापदादा 18.6.70

"किसके संकल्पों को रीड करना - यह भी एक सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना अव्यक्त भाव में स्थित होंगे, उतना हर एक के भाव को सहज समझ जायेंगे। ... अव्यक्त स्थिति रूपी दर्पण को साफ और स्पष्ट करने के लिए तीन बातें सरलता, श्रेष्ठता और सहनशीलता की आवश्यकता है।" अ.बापदादा 7.6.70

"जिनके व्यर्थ संकल्प नहीं चलते वे अपनी अव्यक्त स्थिति को ज्यादा बढ़ा सकते हैं। शुद्ध संकल्प भी चलने चाहिए लेकिन उनको भी कन्ट्रोल करने की शक्ति होनी चाहिए।... व्यक्त में अव्यक्त स्थिति का अनुभव क्या होता है, वह सभी को प्रैक्टिकल में पाठ पढ़ाना है।"

अ.बापदादा 23.1.70

राजयोग और हठयोग के अन्तर का ज्ञान
निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का ज्ञान
बिन्दु रूप स्थिति और उस स्थिति के अभ्यास का ज्ञान
बिन्दुरूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का ज्ञान
विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का ज्ञान
राजयोग-हठयोग की समानताओं और असमानताओं का ज्ञान
रुहानी ड्रिल का ज्ञान और अभ्यास
योग की सफलता में एकान्त और एकाग्रता के महत्व का ज्ञान
स्मृति और विस्मृति का ज्ञान
स्मृति से समर्थी का ज्ञान
योग की सफलता में मौन के महत्व का ज्ञान

योग में विभिन्न प्रकार की बाधायें, तूफान और उन पर विजय का ज्ञान
योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द का ज्ञान

९. पवित्रता का ज्ञान और जीवन में उसके महत्व का ज्ञान

परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है। पवित्रता आत्मा का मूल धर्म है परन्तु पवित्रता क्या है, पवित्रता का मानव जीवन में क्या महत्व है, उसकी धारणा कैसे हो, ये सब ज्ञान भी परमात्मा ने संगमयुग पर ही दिया है और उस ज्ञान को पाकर आत्मायें उसकी धारणा करने में समर्थ होती हैं। पवित्रता के विषय में विभिन्न बातों का ज्ञान अभी ही परमात्मा ने दिया है, जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं।

सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का ज्ञान
सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का ज्ञान
सच्ची पवित्रता, ब्रह्मचर्य व्रत का ज्ञान और दोनों में अन्तर एवं सम्बन्ध का ज्ञान
जीवन में पवित्रता के महत्व का ज्ञान
संगमयुग की पवित्रता और सतयुग की पवित्रता के सम्बन्ध और उसमें अन्तर का ज्ञान

सन्यासियों की पवित्रता का भी बाबा ने महिमा की है। कन्याओं की पूजा क्यों होती है, उसका भी ज्ञान परमात्मा ने दिया है परन्तु यथार्थ पवित्रता क्या है, वह ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है। बाबा ने कहा है सम्पूर्ण पवित्र आत्मा इस धरा पर रह नहीं सकती।

"अभी बच्चे जानते हैं राखी एक ही बार बाँधते हैं, जो फिर हम 21 जन्म पवित्र रहें। तो जरूर कलियुग के अन्त में राखी बाँधने वाला चाहिए। राखी कौन आकर बांधते हैं? कौन प्रतिज्ञा कराते हैं? स्वयं बाप और जो उनके वंशावली ब्राह्मण हैं, वे ही राखी बांधते हैं।"

सा.बाबा 12.08.03 रिवा.

"वास्तव में इसका अर्थ तुम समझते हो। बाप आकर कहते हैं - बच्चे, प्रतिज्ञा करो। राखी बांधने से कुछ नहीं होता है। यह तो कसम उठाया जाता है कि बाबा, हम अभी पवित्र रहेंगे। ड्रामा में इन उत्सवों की भी नूँध है। सतयुग-त्रेता में राखी बांधने की दरकार नहीं रहती।"

सा.बाबा 12.08.03 रिवा.

"सभी के ऊपर लाइट का ताज चमक रहा है। संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है - पवित्रता की निशानी। यह "लाइट का ताज" जो हर ब्राह्मण आत्मा को बाप द्वारा प्राप्त होता है।... पवित्रता की प्राप्ति आप ब्राह्मण आत्माओं को उड़ती कला की तरफ सहज ले जाने का आधार है।"

अ.बापदादा 14.11.87

"आज बापदादा अपने छोटे से श्रेष्ठ सुखी संसार को देख रहे हैं। ... इस सुखी संसार में सदा

सुख-शान्ति सम्पन्न ब्राह्मण आत्मायें हैं क्योंकि पवित्रता, स्वच्छता के आधार पर यह सुख-शान्तिमय जीवन है। जहाँ पवित्रता वा स्वच्छता है वहाँ कोई भी दुख-अशान्ति का नाम निशान नहीं। ... यह बुद्धि रूपी पाँव पवित्रता के किले के अन्दर रहे तो संकल्प तो क्या स्वप्न में भी दुख-अशान्ति की लहर नहीं आ सकती। दुख-अशान्ति का जरा भी अनुभव होता है तो अवश्य कोई न कोई अपवित्रता का प्रभाव है। पवित्रता, सिर्फ कामजीत जगतजीत बनना नहीं है लेकिन कामजीत अर्थात् सर्व कामनायें जीत।"

अ.बापदादा 23.12.85

१०. अन्य विविध विषयों का ज्ञान

इसके अतिरिक्त ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी संगमयुग पर अनेकानेक अन्य बातों का भी ज्ञान दिया है और गुह्य रहस्यों का उद्घाटन किया है, जिनकी तो एक लम्बी लिस्ट है परन्तु उनमें कुछ और बातों को यहाँ लिख रहे हैं।

ब्रह्मा का ज्ञान / ब्रह्मा-सरस्वती का ज्ञान और उनके सम्बन्ध का ज्ञान

बेहद के दिन और रात का ज्ञान

ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का ज्ञान

"भारत का ही प्राचीन सहज राजयोग गाया हुआ है। गीता में भी राजयोग नाम आता है। बाप तुम्हें राजयोग सिखलाकर राजाई का वर्सा देते हैं। ... पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही प्रजापिता ब्रह्मा होना चाहिए। ... बाप ही इन चित्रों को इस रथ में आकर करेक्ट करते हैं।"

सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

"बाप बह्मा तन में प्रवेश करते हैं, इसलिए इनको भागीरथ कहा जाता है। ... तुम जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान हैं, फिर दैवी सन्तान बनेंगे तो डिग्री कम हो जायेगी। इन लक्ष्मी-नारायण की भी डिग्री कम हैं क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में ही है।"

सा.बाबा 11.6.05 रिवा.

"हर एक बात पर अच्छी रीति विचार करना चाहिए। ब्रह्मा को कहते हैं - मुझे याद करो तो यह बनेंगे। ब्रह्मा को कहा गोया ब्रह्मा मुख वंशावली सबको कहा - मुझे याद करो। ... जब यह समझें कि हम आत्मा परमात्मा के बच्चे हैं तब खुशी का पारा चढ़े और कहें कि हम बाप को याद जरूर करेंगे।"

सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

"भगवान आकर प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा रचना रचते हैं प्रजा की। ... बाबा यह ब्राह्मण धर्म संगम पर ही रचते हैं। ... ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में समझते हैं ... तुम पवित्र बन फिर फरिश्ते बन जाते हो। ... रचता निराकार बाप है, ब्रह्मा को रचता नहीं कहेंगे।"

सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

"शिवरात्रि कहते हैं लेकिन आपके लिए अभी रात्रि नहीं है, आपके लिए अमृतवेला है। आप तो रात्रि से निकल गये। ... अमृतवेला सदा वरदान का समय है। ... अपना ऐसा वरदानी स्वरूप देखते हो ?"

अ.बापदादा 16.2.96

परमात्मा की छत्रछाया का राज
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का ज्ञान
काशी कलवट का ज्ञान और अनुभव
सतयुग-त्रेता की राजाई और उसके विधि-विधान का ज्ञान
यथार्थ दान और अविनाशी ज्ञान रतनों के दान का ज्ञान
दानी, महादानी और वरदानी पन का ज्ञान और अनुभव
नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का ज्ञान
ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का ज्ञान
सागर मंथन का ज्ञान और विचार-सागर मन्थन का ज्ञान
त्याग और भाग्य का ज्ञान और त्याग से भाग्य का अनुभव
"त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो, सदा त्याग ही भाग्य है - याद रहे। ... सेवाधारी बनना - यह भी संगमयुग पर विशेष भाग्य की निशानी है।"

अ.बापदादा 25.12.85 टीचर्स

आपघात और जीवघात के भेद का ज्ञान
आत्माओं से दुआयें लेने और दुआयें देने का ज्ञान और अनुभव
परमात्मा की दुआयें लेने का ज्ञान और अनुभव
इच्छामात्रम् अविद्या का ज्ञान और अनुभव
पैगम्बर-मैसेन्जर का ज्ञान और अनुभव
गीता-ज्ञान, उसके समय और गीता ज्ञान-दाता का ज्ञान
राम-रावण, कौरव-पाण्डव का ज्ञान
जीते जी मरने का ज्ञान और अनुभव
अमृत और विष का ज्ञान
विभिन्न त्यौहारों, पर्वों और उत्सवों का ज्ञान
गोप-गोपियों और मुरलीधर की मुरली का ज्ञान

रुद्र माला और वैजन्ती माला का ज्ञान और वैजन्ती माला का दाना बनने का ज्ञान
तीसरे नेत्र का ज्ञान और अनुभव
ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों का ज्ञान और उनके अन्तर का ज्ञान
सच्ची स्वतन्त्रता का ज्ञान और अनुभव
साइलेन्स और साइन्स का ज्ञान तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान
भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज
त्याग और भाग्य का राज़
भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज़
बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज़
योगबल - भोगबल का ज्ञान
योगबल और भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का ज्ञान
योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़
देह-भान और देहाभिमान का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का ज्ञान
बैलेन्स का ज्ञान और बैलेन्स से ब्लेसिंग पाने का ज्ञान एवं अनुभव

आत्मा और शरीर, स्व-सेवा और विश्व-सेवा, साधन और साधना, अधिकार और कर्तव्य, स्वमान और सम्मान आदि-आदि में बैलेन्स स्थापित करके स्व-उन्नति को पाने का ज्ञान और अनुभव परमात्मा द्वारा संगमयुग पर ही आत्माओं को मिलता है।

भारत का यथार्थ ज्ञान
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का ज्ञान
सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान
सत्य नारायण, अमर कथा, तीजरी की कथा, वेदों-शास्त्रों का सार रूप में ज्ञान
आत्मा के मूल गुण शान्ति, शक्ति, पवित्रता, पवित्रता, स्वतन्त्रता आदि आदि का ज्ञान
परमात्मा के परकाया प्रवेश और ब्रह्मा द्वारा नई रचना का ज्ञान

हमारा अभी पुरुषार्थ कर समय है और विश्व में अनेक आत्माओं का प्रालब्ध का समय है, इसलिए पुरुषार्थ के समय की प्राप्तियों और प्रालब्ध के समय की प्राप्तियों की तुलना नहीं हो सकती है और यदि कोई करता है, तो यह उसकी अनभिज्ञता ही है। अज्ञानता वश जो पुरुषार्थ के समय की और प्रालब्ध के समय की प्राप्तियों की तुलना करता है, वह दुखी हो जायेगा। अभी संगमयुग का पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान और उससे भी अधिक सुख को देने वाला है परन्तु दोनों में स्थूल साधन-सम्पत्ति की तुलना नहीं की जा सकती।

विश्व की साधन-सम्पत्ति तो वही है, उसमें कोई घटती-बढ़ती तो न होती है और न ही हो सकती है परन्तु स्वामित्व का परिवर्तन अर्थात् रिजर्वेशन होता है, जो विश्व-नाटक के पार्ट और आत्मा के पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के आधार पर निर्भर करता है। किसी भी साधन-सम्पत्ति पर जब एक का रिजर्वेशन समाप्त होता है तो उस पर दूसरे का रिजर्वेशन आरम्भ हो जाता है।

"यह सत्यता के परिचय की वा सत्य ज्ञान की शक्ति की लहर जब तक चारो ओर नहीं फैलेगी तब तक प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे सर्व आत्मायें सहारा नहीं ले सकती। ... यहाँ अपनी स्टेज है, श्रेष्ठ वातावरण है, स्वच्छ बुद्धि का प्रभाव है, स्नेह की धरनी है, पवित्र पालना है, ऐसे वायुमण्डल के बीच अपने सत्य ज्ञान को प्रसिद्ध करने से ही प्रत्यक्षता का आरम्भ होगी।" अ.बापदादा 12.3.85

"संगम पर ही यह सब होता है। अभी तुम यह सब कुछ जानते हो। बाप कहते हैं बाकी जो कुछ राज़ हैं, वे आगे चलकर धीरे-धीरे समझाते रहेंगे। जो रिकार्ड में नूँध है, वह खुलते जायेंगे, तुम समझते जायेंगे। इन-एडवान्स कुछ भी नहीं बतायेंगे। यह भी ड्रामा का प्लेन है, रिकार्ड भी खुलता जायेगा। ... ड्रामा का राज़ सारा भरा हुआ है। ऐसे नहीं कि रिकार्ड से सुई उठाकर बीच में रख सकते हैं।" सा.बाबा 8.4.04 रिवा.

"संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है, उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और वह सदा हर्षित रहेगा। ... अपने जन्म और समय के महत्व को जानो तब ही महान कर्तव्य कर सकेंगे।" अ.बापदादा 16.6.72

"पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बनाने वाला है ही परमपिता परमात्मा बेहद का बाप। इस समय तुम्हारी बुद्धि पारस है क्योंकि तुम बाप के साथ हो। फिर सतयुग में एक जन्म कें भी फर्क जरूर पड़ता है। सेकण्ड बाई सेकण्ड कला कम होती जाती है। इस समय तुम्हारा जीवन एकदम परफेक्ट बनता है जब तुम बाप मिसल ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर बनते हो।" सा.बाबा 21.7.04 रिवा.

अनुभूति पक्ष में

"संगमयुग है ही अनुभव करने का युग। इस युग में सर्व प्राप्ति का अनुभव कर सकते हो। अभी जो अनुभव कर रहे हो, यह सतयुग में भी नहीं होगा।... अनुभवी आत्मायें कभी माया से धोखा नहीं खा सकती हैं।" अ.बापदादा 26.4.84 पार्टी 2

संगमयुग के अनुभव के आधार पर ही भक्तों ने गाया है - तुम हो तो पिया सब कुछ है वरना ये चमन बेगाना है।

पुरुषोत्तम संगमयुग कल्प में विशेष युग है, उसकी प्राप्तियां विशेष हैं, उसकी अनुभूतियां विशेष है, जो सारे कल्प में कब नहीं हो सकती हैं परन्तु उन सब अनुभूतियों का आधार परमात्मा और परमात्मा से प्राप्त ज्ञान है। संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र आदि के विषय में जो ज्ञान प्राप्त होता है और परमात्मा के सानिध्य से, उसकी श्रीमत के पालन से आत्मा को अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं, जो अनुभूतियाँ आत्मा में सूक्ष्म रूप में नीहित रहती हैं और द्वापर से जब आत्मायें दुखी होने लगती हैं तो वे अनुभूतियाँ आत्मा को सूक्ष्म स्मृति के रूप में इमर्ज होती हैं, जिसके कारण आत्मा परमात्मा को पुकारती है।

संगमयुग पर जो आत्मायें परमात्मा के बनते और परमात्मा से यथार्थ ज्ञान पाकर उसकी धारणा करते, उन आत्मओं को अनेक प्रकार की दिव्य अनुभूतियां होती हैं, जो अन्य किसी युग में न होती हैं और न होना सम्भव है, उनमें कुछ का वर्णन यहाँ कर रहे हैं।

* आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति

आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों सहित एक अनादि-अविनशी सत्ता है और आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्द मय है। आत्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा मिलता है, जिसकी धारणा से आत्मा को परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, जो संगमयुग की परम-प्राप्ति है। भले ही सतयुग में देवी-देवतायें आत्माभिमानी होते हैं परन्तु उनको आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के विषय में यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। इसलिए उनको यथार्थ आत्मिक सुख अर्थात् आनन्द की अनुभूति नहीं होती है। हमारी आत्मिक स्थिति इतनी गहन हो जाये जो हमारी दृष्टि-वृत्ति-वायब्रेशन से अन्य आत्मायें भी अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप की अनुभूति करें।

आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, इसलिए जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो परमानन्द की अनुभूति स्वत: करती है। ज्ञान और योग की आवश्यकता आत्मा के अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित होने के लिए है।

अतीन्द्रिय सुख का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा को परमात्मा द्वारा आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान होता है।

"अभी तो अधिकारी बन गये ना! पुकार का समय समाप्त हुआ। संगमयुग प्राप्ति का समय है न कि पुकार का समय है। सहज पुरुषार्थी अर्थात् सबको पार कर सहज सर्व प्राप्ति करने वाले।"

अ.बापदादा 11.4.83

"यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, वह ही अनादि फिरता रहता है। एक सेकेण्ड भी ठहरता नहीं है। इस सेकण्ड में जो कुछ होता है, वह ही फिर कल्प बाद होगा। हू ब हू कैसे रिपीट होता है, यह बात समझ की है। ... आत्मा को तो नेचुरल पार्ट मिला ही हुआ है। यह जानकर बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। अतीन्द्रिय सुख तो इस संगम का ही गाया हुआ है। जब बाप आते हैं तो तुमको सुख भासता है।" सा.बाबा 16.8.69 रिवा.

"गायन है अतीन्द्रिय सुख की भासना गोप-गोपियों से पूछो। तुम अपने दिल से पूछो कि हम उस भासना में रहते हैं? यह है ईश्वरीय मिलन।"

सा. बाबा 9.2.69 रिवाइज

अतीन्द्रिय सुख जीवन की परम प्राप्ति है। देह और देह की दुनिया से न्यारा होकर ही इस सच्चे सुख का अनुभव किया जा सकता है। परचिन्तन-परदर्शन, भय और चिन्ता वाला कब देह से न्यारा हो नहीं सकता। प्रभु-चिन्तन, स्व-चिन्तन वाला ही इस सच्चे सुख को प्राप्त करता है। ये अतीन्द्रिय सुख संगम पर परमपिता परमात्मा का आत्माओं को परम उपहार है। सेवा ब्राह्मणों का कर्तव्य है परन्तु सेवा भी एक प्रकार का परचिन्तन ही है, जो आत्मा को देह से न्यारा होने नहीं देता है परन्तु यह परचिन्तन भी आत्माओं के कल्याणार्थ है, इसलिए कल्याणकारी है। निष्काम सेवा से दुआयें मिलती हैं, जो देह से न्यारा होने में सहयोगी अवश्य होती हैं। कामनायुक्त सेवा यथार्थ पुरुषार्थ में विघ्नरूप है। मुक्ति के अनुभव के लिए मन्सा हर प्रकार के संकल्प से मुक्त हो और जीवनमुक्ति या अतीन्द्रिय सुख के अनुभव के लिए मन्सा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त अर्थात निर्विकल्प होना अति आवश्यक है। हर आत्मा अपना आपही मित्र और शत्रु है। हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है और अपने कर्मानुसार सुख-दुख को पा रही है और पाने वाली है, हम किसका चिन्तन क्यों करें? ऐसी श्रेष्ठ और शुभ स्थिति इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा से प्राप्त सत्य ज्ञान से ही सम्भव होती है। इसलिए भक्तिमार्ग में इस दिन को ही याद करते हैं। भले सेवा करना ब्राह्मणों का पावन कर्तव्य है परन्तु वह सेवा योग में विघ्न रूप नहीं होनी चाहिए।

सतयुग-त्रेता में सतोप्रधान इन्द्रिय सुख और द्वापर-कलियुग में तमोप्रधान इन्द्रिय सुख होते हैं और उनके साधन भौतिक प्रकृति प्रदत्त होते हैं तथा वे सभी सुख उतरती कला के होते हैं। अभी संगम पर जो सुख प्राप्त होता है, वह है अतीन्द्रिय सुख, जो चढ़ती कला का सुख है, उसके साधन भी अभौतिक हैं अर्थात् परमपिता परमात्मा से प्राप्त ज्ञान है। उस ज्ञान का स्वरूप बनने के लिए साधन योग है अर्थात् देह से न्यारा होने का अभ्यास है। जो जितना ज्ञान की धारणा करता है और देह से न्यारा होने का अभ्यास करके परमात्मा के समान निराकारी

स्थिति में स्थित होता है, वह उतना ही उस सुख का अनुभव करता है। यही संगमयुगी जीवन की सफलता है।

संगमयुग अतीन्द्रीय सुख का युग है। जो देह और देह की दुनिया को भूलकर अतीन्द्रीय सुख में खो जाता है, वह अभी भी परम सुख अर्थात अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करता है और सारे कल्प इन्द्रीय सुखों को पाता है। जो अभी इन्द्रिय सुखों में लिप्त रहता है, वह अभी भी संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित रह जाता है और सारे कल्प में भी सुखों से वंचित हो जाता है और अन्त समय पश्चाताप करके महान दुख को पाता है। इसीलिए गायन है - फिर पछताये क्या होवत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत।

"अतीन्द्रिय सुख संगम पर ही गाया जाता है, जब बाप आते हैं तो उनका संग होता है तो सुख भासता है।" सा.बाबा 16.8.69 रिवा.

संगमयुग है सुख-शान्ति-पवित्रता की अनुभूति का टॉवर

संगमयुग पर ही आत्मा को सुख-शान्ति-पवित्रता की सर्वोच्च स्थिति का अनुभव होता है।

"शान्ति की हाइएस्ट चोटी है निराकारी दुनिया और सुख की भी हाइएस्ट चोटी है स्वर्ग। ... विनाश देखना मासी का घर नहीं है। इसको कहा जाता है दुःख की चोटी।"

सा.बाबा 10.1.04 रिवा.

निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि, ... जय-पराजय में समान स्थिति का अनुभव

निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, मित्र-शत्रु, अपने-पराये, हित-अनहित, प्राप्ति-अप्राप्ति, राजा-प्रजा, गरीब-अमीर के साथ यथायोग्य व्यवहार करते भी समान स्थिति का अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा में दोनों विपरीत स्थितियों का अनुभव और स्मृति सूक्ष्म स्मृति के रूप में समाई हुई होती है और दोनों से परे स्थिति का ज्ञान और अनुभव परमात्मा द्वारा हमको मिलता है।

यह विश्व-नाटक सत्य-न्यायपूर्ण-कल्याणकारी है। इसके विधि-विधान इतने परिपूर्ण हैं कि आत्मा को संकल्प करने का भी स्थान नहीं है, सब समयानुसार चलता है। इस सत्य को जानने वाली आत्मा लाभ-हानि, जय-पराज्य ... में भी निश्चिन्त और एकरस रहेगी। इसकी सत्यता को जानना बड़ा पुरुषार्थ है। परमपिता परमात्मा परम-ज्ञानी है, उसके साथ योगयुक्त आत्मा ही इसके सत्य रहस्य को जानकर इसके परमसुख को अनुभव कर सकती है। ये संगमयुग ही इस सत्य को जान साक्षी होकर उस परम सुख को अनुभव करने का समय है।

इस सुख को अनुभव करने वाली आत्मा परम भाग्यशाली है। अभी यह भाग्य हमारे हाथों में है, इस सत्य को अनुभव कर विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करना और अन्य आत्माओं के लिए सुख के सुगम पथ का निर्माण करना हमारा परम कर्तव्य है।

* देह से न्यारी स्वरूप में स्थित आत्मा ही इस विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव कर सकती है। सतयुग के आदि में सुख का प्रभाव होता है तो कलियुग के अन्त में कर्मभोग का प्रभाव होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान को धारण करने वाली आत्मा देह से न्यारी होने के कारण दोनों के प्रभाव से मुक्त हो अतीन्द्रिय सुख अनुभव करती है। ये देह से न्यारा होने का ज्ञान संगमयुग पर ही आत्माओं को मिलता है, जो आत्माओं को संगम पर ईश्वरीय वरदान है।

* स्वदर्शन चक्र की आध्यात्म मार्ग में इतनी महिमा है, उसका राज़ संगमयुग पर ही पता पड़ता है, जिस राज़ को जानकर आत्मा स्वदर्शनचक्रधारी बनकर माया पर विजय पाती है। "अब उड़ने और नीचे आने का चक्र पूरा हो। ... जब यह चक्र पूरा होगा तब स्वदर्शन चक्र दूर से आत्माओं को समीप लायेगा। यादगार में क्या दिखाते हैं? एक जगह पर बैठे चक्र भेजा और वह स्वदर्शन चक्र स्वयं ही आत्माओं को समीप ले आया। स्वयं नहीं जाते, चक्र चलाते हैं। तो पहले यह सब चक्र पूरे हों तब तो स्वदर्शन चक्र चले।"

अ.बापदादा 2.4.84

दादियों के साथ

मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ और सुखद अनुभव

"सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी श्रेष्ठ है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हो कि अभी भी बन्धन हैं?... खेल समझने से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 5.12.78 पार्टी

* तीनों लोकों और तीनों कालों को जानने वाली देह से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थित आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव होता है परन्तु देहाभिमान के वश व्यर्थ चिन्तन इसमें मुख्य बाधा है, जो आत्मा को संगमयुग के मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ सुख से वंचित कर देती है। इस विश्व-नाटक का ज्ञान उसके विधि-विधान का ज्ञान, अभ्यास, निश्चय और स्थिति से ही इन संकल्पों-विकल्पों से सहज मुक्ति पाई जा सकती है और आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कर सकती है।

इस ब्राह्मण जीवन में कोई अकृत्य करते, श्रीमत का उलंघन करते या करके छिपाते तो वह हमारे संकल्प को डिस्टर्व अवश्य करेगा, जिससे हम इस जीवन की परम प्राप्ति मुक्ति-

जीवनमुक्ति की अनुभूति के परम सुख से वंचित हो जाते हैं क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का मूलाधार है - निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति।

जब हम निश्चयबुद्धि होकर सच्ची दिल से बाबा के बन जाते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं तो संगमयुग की परम प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अवश्य होता है और ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। ब्रह्मा बाबा का उदाहरण हमारे सामने हैं कि कैसे उन्होंने सच्चे दिल से अपना सबकुछ बाबा के अर्पण कर दिया और बाबा का बनते ही इस परम प्राप्ति का अनुभव किया और निरन्तर उसमें उन्नति का अनुभव किया। यदि इस अनुभूति में कोई कमी है तो ये स्पष्ट है कि हमारे निश्चय और सच्ची दिल में कहाँ न कहाँ कोई कमी अवश्य है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, ये विश्व-नाटक का ज्ञान परम सुखमय है, ये भूमि (परमात्मा की कर्मभूमि) परम पावन है, ये ब्राह्मण जीवन सर्वश्रेष्ठ है, ये ब्राह्मणों का संग परम श्रेष्ठ है, इस ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य सर्वोच्च है और सर्वोत्तम फल देने वाला है। ऐसे इस संगमयुगी जीवन के महत्व को जानकर इसका सुख लो और दो। मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो और कराओ - यही जीवन है।

मनुष्य को ज्ञान हो या न हो परन्तु समय और स्थिति अपना काम अवश्य करती है और मनुष्य को कर्मानुसार उसका सूक्ष्म आभास अर्थात् फीलिंग अवश्य होता है। वर्तमान संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव सर्वोत्कृष्ट अनुभव है, चढ़ती कला का अनुभव है। सतयुग में जीवनमुक्त स्थिति है परन्तु उस जीवनमुक्ति और वर्तमान की जीवनमुक्ति में रात-दिन का अन्तर है और आत्मा को इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर प्राप्त मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का आभास आत्मा को सूक्ष्म में रहता ही है, जिसके कारण ही भक्ति मार्ग में आत्मा उसको याद करती है और उस सुख के लिए परमात्मा को याद करती है।

"मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा बाप ही आकर देते हैं परन्तु किसको डायरेक्ट और किसको इन्डायरेक्ट।... बाप कहते हैं मैं बच्चों के ही सम्मुख होता हूँ। दिन प्रतिदिन देखेंगे बाबा मधुवन के बाहर कहाँ जायेंगे ही नहीं। इस पुरानी दुनिया में रखा ही क्या है। शिव बाबा कहते हैं हमको स्वर्ग में जाने अथवा स्वर्ग को देखने की भी खुशी नहीं होती, बाकी इस दुनिया में कहाँ जायेंगे।" सा.बाबा 29.11.72 रिवा.

संगमयुग ही यथार्थ रीति से मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का समय है, जो आत्माओं को ईश्वरीय वर्सा है और आत्माओं की मूलभूत प्यास है। संगमयुग पर यथार्थ ज्ञान के साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।

"जीवनमुक्ति का मज़ा तो अभी है। भविष्य में जीवन-मुक्त और जीवन-बन्ध का कन्ट्रास्ट नहीं

होगा। ... परमधाम में तो पता ही नहीं पड़ेगा कि मुक्ति क्या है और जीवन-मुक्ति क्या है। दोनों का अनुभव तो अभी होता है।... जीवनमुक्त, न्यारा और प्यारा बनने की विधि क्या है? तख्त-नशीन बनो।" अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 3

"अगर अपनी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त करने की आश अभी तक पूर्ण न करेंगे तो दूसरों की कैसे करेंगे! मुक्ति-जीवनमुक्ति का वास्तविक अनुभव क्या होता है, वह क्या मुक्तिधाम वा जीवनमुक्तिधाम में अनुभव करेंगे? मुक्ति में तो अनुभव करने से परे होंगे और जीवनमुक्ति में जीवनबन्ध क्या होता है, वह अविद्या होने के कारण हम जीवनमुक्ति में हैं, वह भी क्या अनुभव करेंगे! बाप द्वारा जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त होता है, उसका अनुभव तो अभी ही कर सकते हैं।" अ.बापदादा 24.10.71

करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहे हैं - यह स्मृति रहने से सहज देह-अभिमान से मुक्त बन जाते हैं और जीवनमुक्ति का मज़ा अनुभव करते हैं। भविष्य में जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी ही है लेकिन अब संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अलौकिक आनन्द और ही अलौकिक है।

* परमात्मा के अवतरण अर्थात् परकाया प्रवेश का अनुभव
* परमात्म-मिलन और परमात्मा के सानिध्य का सुखद अनुभव

परमात्मा का अवतरण कब और कैसे होता है, उसका ज्ञान और उसका अनुभव संगम पर ही परमात्मा के द्वारा होता है तथा यथार्थ रूप में आत्मा को परमात्म-मिलन और परमात्मा के सानिध्य में रहने का सुअवसर संगमयुग पर मिलता है। परमात्मा के मिलन और सानिध्य के सुख का अनुपम अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब वह ब्रह्मा तन में आकर ब्रह्मा मुख से अपने स्वरूप का यथार्थ ज्ञान देता है।

"कोई आपसे पूछे कि बाप से मिलना कब और कितने समय में हो सकता है, तो क्या कहेंगे? निश्चय और उमंग से यही कहेंगे कि बाप से मिलना बच्चे के लिए कभी मुश्किल हो नहीं सकता। सहज और सदा का मिलना है। संगमयुग है ही बाप और बच्चों के मिलन का युग।" अ.बापदादा 5.12.83

"बापदादा सभी स्नेही बच्चों को दो गोल्डन बोल दे रहे हैं। एक - सदा अपने को समझो - "मैं बाप का नूरे रत्न हूँ।"... दूसरा - "सदा बाप का साथ है और उसका हाथ मेरे ऊपर है।" साथ भी है और हाथ भी है। सदा आशीर्वाद का हाथ है और सदा सहयोग का साथ है। तो सदा बाप का साथ और हाथ है ही है।" अ.बापदादा 16.2.85

"साकार में साथ रहना नहीं लेकिन दिल से साथ निभाना। अगर दिल से साथ नहीं निभाते तो

मधुबन में होते भी दूर हैं।... एक ही परम आत्मा आत्माओं से सदा साथ निभा सकता है और ये परमात्म साथ निभाने का भाग्य आप सभी बच्चों को ही है।"

अ.बापदादा 19.1.95

"यह अव्यक्त मिलन सारे कल्प में एक ही बार इस संगम पर होता है। सतयुग में भी देव मिल होगा। फरिश्तों का मिलन, अव्यक्त मिलन इस समय ही होता है। निराकार बाप भी अव्यक्त ब्रह्मा बाप के द्वारा मिलन मनाते हैं।" अ.बापदादा 18.1.87

"यह संगमयुग का सुहावना समय जितना ज्यादा हो, उतना अच्छा है क्योंकि समझते हो सारे कल्प में यह बाप और बच्चों का मिलन फिर नहीं होगा।... सदैव यही लक्ष्य रखो कि एवर-रेडी रहें। बाकी यह अतीन्द्रिय सुख का वर्सा निरन्तर अनुभव करने के लिए रहे हुए हैं न कि अपनी कमजोरियों के लिए।" अ.बापदादा 28.7.71

* ज्ञान सागर परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव

परमात्मा के ज्ञान सागर के स्वरूप का अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब वह आकर ब्रह्मा मुख से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है।

जैसे स्थूल रत्न आत्माओं को सुख देते हैं वैसे ही ये ज्ञान रत्न भी आत्मा को सुख देते हैं। जैसे स्थूल रत्नों के लिए गायन है कि उनसे आत्मा की ग्रहचारी उतर जाती है परन्तु उनसे उतरे या न उतरे परन्तु परमात्मा से मिल इन ज्ञान रत्नों से आत्मा की आधे कल्प की ग्रहचारी उतर जाती है, जिसका अनुभव आत्मा अभी संगमयुग पर ही करती है।

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

"इस ड्रामा का राज़ बाप के सिवाए और कोई नहीं जानते हैं। ... बाप सारी नॉलेज देते हैं। अपना भी परिचय देते हैं और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी समझाते हैं। ... बाप ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं।"

सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

"एक परमात्मा को ही कहा जाता है सर्वशक्तिवान, वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी। ... दूसरा कोई मनुष्य नहीं, जिसको हम सर्वशक्तिवान कहें। लक्ष्मी-नारायण को भी सर्वशक्तिवान नहीं कह सकते क्योंकि उनको भी शक्ति देने वाला परमात्मा है। आत्मा में जो शक्ति होती है, वह

आहिस्ते-आहिस्ते डिग्रेड होती जाती है।" सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

"यह संसार का चक्र कैसे चलता है, उसे जानना, इसी का नाम है ज्ञान। बाप कहते हैं - इसी का मैं नॉलेजफुल हूँ। मेरे पास इसकी फुल नॉलेज है। यह कर्मों का खाता कैसे चलता है, कैसे नम्बरवार सब आते हैं। इन सभी बातों को मैं जानता हूँ, जिसको कोई मनुष्य नहीं जान सकता क्यों कि सभी मनुष्य इस जन्म-मरण के चक्र में आने वाले हैं। जो इस चक्र में आने वाले हैं, वे इन बातों को नहीं जान सकते।... सभी मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में आकर अपनी पॉवर्स खो देते हैं।" मातेश्वरी 24.6.65

"परमात्मा ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान सुनाने वाला होगा। ... परमात्मा के लिए कहते हैं- वह ज्ञान का सागर है। सारा जंगल कलम बनाओ... तो भी अन्त नहीं हो सकता है।"

सा.बाबा 11.7.05 रिवा.

"सेकण्ड में जीवनमुक्ति भी गाया हुआ है और फिर यह भी गायन है कि ज्ञान का सागर है। सारा सागर स्याही बनाओ ... तो भी अन्त नहीं आ सकती।"

सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

"ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं परन्तु ब्रह्मा तो करते नहीं हैं। वह तो पतित से पावन बनते हैं। ... ड्रामा प्लेन अनुसार शिवबाबा में ज्ञान है। ऐसे नहीं कहेंगे कि इनमें ज्ञान कहाँ से आया ? नहीं, वह है ही नॉलेजफुल। वही तुमको पतित से पावन बनाते हैं।"

सा.बाबा 15.6.04 रिवा.

"परमात्मा को बीज कहा जाता है। वह सारे झाड़ की नालेज देता है। ज्ञान सागर कहते हैं ना। ज्ञान सागर है, तब ही पतित-पावन है। लिखते हो तो बड़ी समझ से लिखना चाहिए। पहले पतित-पावन कहें वा ज्ञान सागर कहें ? जरूर ज्ञान है, तब तो पतित को पावन बनायेगा। तो पहले ज्ञान सागर, पीछे पतित-पावन लिखना चाहिए।"

सा.बाबा 13.10.72 रिवा.

"शिवबाबा को कोई भी श्रृंगार आदि करने की प्रैक्टिस ही नहीं है। उनको तो अविनाशी ज्ञान रतनों से बच्चों को श्रृंगारने की ही प्रैक्टिस है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं।" सा.बाबा 18.8.05 रिवा.

"ज्ञान सागर और ज्ञान गंगायें इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं। बस, एक ही समय पर होते हैं। ज्ञान सागर आते ही हैं कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। ज्ञान सागर है निराकार परमपिता परमात्मा शिव। ... भारत हीरे मिसल था, अभी फिर क्या हुआ है। भारत तो वो ही होगा ना। इस संगम को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है।" सा.बाबा 7.2.04 रिवा.

* परमात्म-प्यार और पालना का अनुभव

परमात्मा प्यार का सागर है परन्तु परमात्म-प्यार क्या होता है, उसका अनुभव क्या होता है - यह अभी पता पड़ा है और अभी उसका अनुभव हो रहा है। उसकी पालना का अनुभव भी अभी ही होता है।

"यह साकार पालना कोई साधारण पालना नहीं है। इस अमूल्य पालना का रिटर्न अमूल्य बनना और बनाना है। विशेष पालना का रिटर्न, जीवन के हर कदम में विशेषता भरी हुई हो। ... तो आज ऐसे भाग्यवान बच्चों से मिलने आये हैं।" अ.बापदादा 23.5.83

"अभी दोनों ही बाप (निराकार और साकार) तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेला था, शरीर बिगर था। ऊपर से तो तुम्हारा श्रृंगार कर न सके। अभी दोनों मिलते हैं तब तुम्हारा श्रृंगार होता है। अकेला कर न सके।" सा.बाबा 5.12.68

"दुनिया की आत्मायें पुकार रही हैं - आओ, आओ लेकिन आप सभी परमात्म-प्यार अनुभव कर रहे हो, परमात्म पालना में पल रहे हो। ऐसा अपना भाग्य अनुभव करते हो ? करते हो ? करते हो ?" अ.बापदादा 17.10.03

"सारे विश्व के चुने हुए कोटों में से कोई इस परमात्म प्यार के अधिकारी बनते हैं। ... यह परमात्म प्यार सारे कल्प में इस समय ही अनुभव करते हो। और सभी समय तो आत्माओं का प्यार, महान आत्माओं का, धर्म आत्माओं का प्यार ही अनुभव किया। लेकिन अभी परमात्म प्यार के पात्र बन गये।" अ.बापदादा 03.02.06

"ब्राह्मण आत्माओं को और विशेष गति प्राप्त होती है। वह है इस समय भी श्रेष्ठ के श्रेष्ठ कर्म का प्रत्यक्ष फल अर्थात् सफलता। ... वर्तमान और भविष्य में सदा गति-सद्गति है ही है। ... इसको कहते हैं रचता का रचना से सच्चा प्यार। सारे कल्प में ऐसा प्यारा कोई हो ही नहीं सकता।" अ.बापदादा 21.12.89

* परमात्मा के मात-पिता के रूप में पालना और प्यार का सुखद अनुभव

परमात्मा हमारा मात-पिता है, यह गाते तो थे परन्तु आत्मा अविनाशी है तो वह हमारा मात-पिता कैसे है, यह ज्ञान नहीं था, जो अभी संगमयुग पर ही परमात्मा ने आकर दिया है और मात-पिता के रूप में प्यार हमारी पालना कर रहा है। यह ज्ञान, उसकी पालना और उसके अनुपम प्यार का अनुभव अभी संगमयुग पर ही हम आत्मा को हो रहा है।

"कभी सोचा था कि स्वयं बाप हम बच्चों के लिए हमारे समान साकार रुपधारी बनकर बाप और बच्चे का वा सर्व सम्बन्धों का अनुभव करायेंगे ! हम साकार रूप में प्रभु पालना लेंगे, यह कभी संकल्प में भी नहीं था लेकिन अभी अनुभव कर रहे हो ना। ... कितनी पवित्र पालना में

पल रहे हो, कैसे अलौकिक प्राप्तियों के झूले में झूल रहे हो। यह सब अनुभव करते हो ना!"

अ.बापदादा 14.12.83

"बापदादा यही चाहते हैं कि वर्तमान समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखना पड़ता है लेकिन लॉ और लव का बैलेन्स मिलकर लॉ नहीं लगे। लॉ में भी लव महसूस हो। जैसे साकार स्वरूप में बाप को देखा। लॉ के साथ लव इतना दिया जो हरेक के मुख से यही निकलता कि बाबा का मेरे से प्यार है, मेरा बाबा है। लॉ जरूर उठाओ लेकिन लॉ के साथ लव भी दो।"

अ.बापदादा 08.10.02

"देही-अभिमानी बन बहुत प्यार से बाप को याद करना है। आत्माओं को परमात्मा बाप का प्यार इस संगमयुग पर ही मिलता है। इसको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है जबकि बाप और बच्चे आकर मिलते हैं।"

सा.बाबा 2.6.04 रिवा.

"अभी कलियुग भी है तो संगमयुग भी है। भल तुम बैठे पुरानी दुनिया में हो परन्तु बुद्धि से समझते हो हम संगमयुगी हैं। संगमयुग किसको कहा जाता है, यह भी तुम जानते हो। ... बाप कितना प्रेम से पढ़ाते हैं।"

सा.बाबा 20.4.04 रिवा.

"बाप का ये रुहानी प्यार तुम बच्चों को एक ही बार मिलता है, जो फिर अविनाशी हो जाता है। ... "बाबा" अक्षर कहने से ही परिवार की खुशबू आती है। तुम गाते हो ना - तुम मात-पिता ... तुम्हारे ज्ञान देने की कृपा से हमको सुख घनेरे मिलते हैं।... अभी तुमको बाप का लव मिलता है, बाप नजर से निहाल करते हैं।"

सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

* विचित्र परमात्मा को चित्ररूप अर्थात् साकार रूप में देखने और उनके दिव्य चरित्रों का अनुभव

निराकार परमात्मा का अवतरण होता है परन्तु उनका अवतरण कैसे होता है, इस सत्य का ज्ञान नहीं था, जो अभी संगमयुग पर पता पड़ा है और उस विचित्र बाप का चित्र रूप में अर्थात् साकार रूप ब्रह्मा-तन में प्रवेशता होती है, जिसको हम अभी देख रहे हैं, उनके कर्तव्यों का सुखद अनुभव भी कर रहे हैं।

"साकार स्वरूप में साकारी सृष्टि पर आत्मा और परमात्मा के मिलन और सर्व सम्बन्ध से प्रीति की रीति का अनुभव, परमात्म अविनाशी खज़ानों का अधिकार, साकार स्वरूप में ब्राह्मणों का ही है।... साकार सृष्टि पर इन साकारी नेत्रों द्वारा दोनों बाप को देखना, उनके साथ खाना-पीना, चलना, बोलना, सुनना हर चरित्र का अनुभव करना, विचित्र को चित्र से देखना - यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का ही है। ... ब्राह्मण जीवन अर्थात् सर्व अविनाशी अखुट,

अटल, अचल सर्व प्राप्ति स्वरूप जीवन। ब्राह्मण जीवन इस कल्प वृक्ष का फाउण्डेशन, जड है। ब्राह्मण जीवन के आधार पर ही यह वृक्ष वृद्धि को प्राप्त करता है।"

अ.बापदादा 3.5.84

* परमात्मा से सर्व प्राप्तियों की अर्थात् सर्वप्राप्ति सम्पन्न स्थिति की अनुभूति

परमात्मा से सर्व प्राप्तियां कैसे होती हैं, जिनको पाकर आत्मा सम्पूर्णता, सम्पन्नता और सन्तुष्टता का अनुभव करती है। इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव करती है। ये सब अनुभव अभी ही आत्मा को होता है।

"हर एक बच्चे को अपने से पूछना चाहिए कि बाप से सभी कुछ मिला है? किस किस चीज में कमी है? हर एक को अपने अन्दर में झाँकी पहननी है। जैसे नारद की मिसाल ... अपने अन्दर जो खामी हो, वह सर्जन को बतानी चाहिए। फिर बाबा युक्ति भी बतायेंगे और करेण्ट भी देंगे,जिससे खामी निकल जायेगी। नहीं तो बढ़ती रहेगी।"

सा.बाबा 11.12.68

जो इस ईश्वरीय ज्ञान के महत्व को समझ लेता, वह कब भी परमात्मा के एहसान को भूल नहीं सकता और वह कभी भी संगमयुगी जीवन से ऊब नहीं सकता। ये संगमयुगी जीवन मानव जीवन का श्रृंगार है, जीवन का चरमोत्कर्ष है और कल्प-वृक्ष का फूल-फल और जड़ है।

"अभी शक्तिशाली बनो और संगमयुग का श्रेष्ठ सुख अनुभव करो। समझा! सिर्फ जानने वाले नहीं लेकिन पाने वाले बनो।" अ.बापदादा 15.4.84

"संगम की जीवन प्राप्ति की जीवन है।... अभी संगम पर ही 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। सोलह कला अर्थात् फुल।" अ.बापदादा 15.11.89 दिल्ली ग्रुप

"सबसे बड़ा खज़ाना इस संगमयुग के समय का खज़ाना है।... भरपूर आत्मा कभी हिलेगी नहीं। तो इन खज़ानों को चेक करो कि सर्व खज़ाने स्वयं में समाये हैं?... जितना खजाने को स्व के कार्य और अन्य की सेवा के कार्य में यूज करते हो, उतना खज़ाना बढ़ता है।... सुनना माना लेना नहीं है लेकिन समाना और समय पर कार्य में लगाना - यह है लेना।"

अ.बापदादा 30.11.92

"संगमयुग के प्राप्तियों के वरदानी समय के अधिकारी हो। ... प्राप्ति स्वरूप के भाग्य को सहज अनुभव करो। ... मेहनत में लगे रहेंगे तो प्राप्ति-स्वरूप का अनुभव कब करेंगे?"

अ.बापदादा 9.10.87

"सर्व प्राप्ति-स्वरूप के अनुभव में रहना है, युद्ध में ही समय नहीं गँवाना है। ... अब नहीं तो

कब नहीं ... प्राप्ति के समय का लाभ उठाओ, सर्व प्राप्ति स्वरूप बनो।"

अ.बापदादा 9.10.87

"अप्राप्त नहीं कोई वस्तु इस ब्राह्मण जीवन में... जिसको सर्व प्राप्तियां हैं, उसकी निशानी प्रत्यक्ष जीवन में क्या दिखाई देगी? सर्व प्राप्तियों की निशानी है - सदा उसके चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी दिखाई देगी... जिसको सन्तुष्टता भी कहते हैं।"

अ.बापदादा 22.3.96

* परमात्मा से मदद का अनुभव और परमात्मा की मदद का अनुभव

परमात्मा आत्माओं की मदद करता है, यह तो सर्व विदित है परन्तु आत्मायें कैसे परमात्मा की मददगार बनती हैं, यह रहस्य अभी ही परमात्मा ने बताया है और दोनों का सुखद अनुभव भी अभी संगमयुग पर आत्मायें करती हैं। अभी परमात्मा यथार्थ ज्ञान देकर और श्रीमत देकर हमारी मदद कर रहा है और आत्माओं का आवाह्न भी कर रहा है कि तुम सब नई दुनिया की स्थापना में हमारे मददगार बनो। साथ ही परमात्मा यह गुप्त रहस्य भी बता रहे हैं कि जो आत्मायें नई दुनिया की स्थापना में हमारे मददगार बनेंगी, वे ही उस दुनिया के सुखों के अधिकारी बनेंगे। हम भी परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में मददगार बनकर अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ब्रह्मा बाबा भी कहते थे कि हमको नशा है कि परमात्मा हमारे तन में आया है, मैं लेण्डलार्ड हूँ, मैं ने परमात्मा को अपना मकान किराये पर दिया है। "ऐसे बहुत हैं जो जन्म से बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वह कोई दुनिया को मदद नहीं दे सकते पवित्रता की। मदद तब हो जब पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें श्रीमत पर। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।" सा.बाबा 17.10.68

"जब बाप स्वयं साथ देने का आफर कर रहे हैं, उस आफर को स्वीकार करना चाहिए ना? ...जैसे स्थूल में कोई किसी को कोई चीज ऑफर करे, वह स्वीकार न करे तो इसको सभ्यता नहीं समझेंगे। यह इज्जत कहेंगे? यह तो गॉड की ऑफर है। सदा बाप के साथ अर्थात् निरन्तर योगी बनो।" अ.बापदादा 23.1.76

"63 जन्म मेहनत की, अब एक जन्म मौजों का जन्म है, मोहब्बत का जन्म है, प्राप्तियों का जन्म है, वरदानों का जन्म है, मदद लेने का और मदद मिलने का जन्म है। ... तो अब मेहनत को मोहब्बत में परिवर्तन करो।" अ.बापदादा 15.3.85

ज्ञान परम धन है, कर्मों का खेल निराला है, ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है, परमात्मा सबका मित्र है परन्तु उसकी मदद उसको ही मिलती है, जो अपनी

मदद स्वयं करता है अर्थात् हिम्मतवान को ही परमात्मा की मदद का अनुभव होता है। संगमयुग पर ही आत्मायें परमात्मा की मदद का अनुभव करती हैं और परमात्मा की मदद से परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप का भी अनुभव करती हैं। इस आनन्द का अनुभव वही कर सकता है, जो इसके महत्व को जानकर अभीष्ट कर्तव्य करता है।

"बाप को अपना बनाना अर्थात् सदा साथ और हाथ का अनुभव करना।... आदि रतनों ने साकार में अनुभव किया, यह इन्हों का लक है। ... लेकिन ड्रामा में आप लोगों के लिए खास एक लिफ्ट है - जो अव्यक्त रूप में आये हैं, साकार रूप में ड्रामा अनुसार पीछे आये हैं ... जब चाहो तब बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलती है।"

अ.बापदादा 3.4.96

* परमात्मा की मदद और उसके विधि-विधान का यथार्थ अनुभव

परमात्मा की मदद कैसे मिलती है और उसकी मदद का विधि-विधान क्या है, उसका ज्ञान भी परमात्मा अभी देते हैं और उसका अनुभव भी अभी ही होता है।

"एक कदम बच्चों का, पदम कदम बाप के। जहाँ हिम्मत है, वहाँ उल्हास की प्राप्ति स्वत: होती है। हिम्मत है तो बाप की मदद है, इसलिए बेपरवाह बादशाह हो। सेवा करते चलो, सफलता मिलती रहेगी।" अ.बापदादा 22.1.84

"बेपरवाह, निर्भय होकर सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो बाप की पदमगुणा मदद भी मिलती है।" अ.बापदादा 27.02.86

"दिल से, मुहब्बत से कहो - "मेरा बाबा", तो मेहनत मोहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज पहुँच जाता है और बाप एक्स्ट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जबान का सौदा नहीं है। दिल का सौदा है।"

अ.बापदादा 15.10.04

"हिम्मत से बाप की मदद भी मिल जाती है। नाउम्मीद में भी उम्मीदों के दीपक जग जाते हैं। ... हिम्मत और उमंग के पंख जब लग जाते हैं तो जहाँ भी उड़ना चाहें उड़ सकते हैं। बच्चों की हिम्मत पर बापदादा सदा बच्चों की महिमा करते हैं।"

अ.बापदादा 4.03.86

"ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से ही बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।" सा.बाबा 17.10.68

"जितना आप अपने में निश्चय रखते हैं, उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही

को सहयोग अवश्य मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है तो स्नेही बनना है। ... कब भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए।" अ.बापदादा 28.9.69

"जो सपूत हैं, ज्ञान को धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे योगी और ज्ञानी हैं, वे मुझे प्यारे लगते हैं। ... तुम बच्चे इस समय नर्क को स्वर्ग बनाने वाले हो। ... योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपेही आंख खुल जायेगी, खटिया हिल जायेगी। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं।" सा.बाबा 8.12.04 रिवा.

"जो मददगार हैं, उनको मदद तो सदैव मिलती है। ... यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का सम्बन्ध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन।... ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेकों के साथ स्नेह समाप्त हो जाता है।"

अ.बापदादा 26.1.70

"एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है।... जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्होंको ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा, इस रहस्य को! ... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।"

अ.बापदादा 18.01.86

"अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझकर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का जम्प अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुणा मलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है।"

अ.बापदादा 24.12.74

"अपने को सदा बापदादा के साथ अनुभव करते हो या अकेला अनुभव करते हो? ... जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है।" अ.बापदादा 23.1.76

* परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की यथार्थ अनुभूति
* खुदा दोस्त का अनुभव

परमात्मा हमारा सर्व सम्बन्धी है अर्थात् परमात्मा के साथ हमारे सर्व सम्बन्ध है। वह

हमको सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराता है। इसीलिए भक्ति मार्ग में भक्त परमात्मा को भिन्न-भिन्न सम्बन्धों से याद करते हैं। उनमें तो हर भक्त किसी एक विशेष सम्बन्ध से ही परमात्मा को याद करता है परन्तु अभी परमात्मा हमको सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव कराते हैं।

परमात्मा को खुदा दोस्त भी कहा जाता है, परमात्मा कैसे दोस्त है, वह अनुभव भी अभी ही होता है।

"सर्व सम्बन्धों के सुख को ही सम्पन्न जीवन समझते हैं। तो ये ब्राह्मण जीवन भगवान से सर्व सम्बन्ध अनुभव करने वाली सम्पन्न जीवन है। एक भी सम्बन्ध की कमी नहीं करना। एक सम्बन्ध भी भगवान से कम होगा तो कोई न कोई आत्मा उस सम्बन्ध से अपनी तरफ खींच लेगी।... जहाँ "सर्व" है, वहाँ ही सम्पन्नता है।"

अ.बापदादा 14.10.87

"बन्धन सिद्ध करता है कि बाप से सर्व सम्बन्ध की, सदा के सम्बन्ध की कमजोरी है। ... संगमयुग बन्धन-मुक्त, सर्व सम्बन्ध युक्त, जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का युग है।"

अ.बापदादा 2.4.84

"तुम्हारा बड़े से बड़ा, ऊंच से ऊंच सम्बन्धी शिवबाबा आकर बना है ... बड़ों की मत पर चलना चाहिए। घर में बड़ों की मत पर चलते हैं ... काम महाशत्रु है, जिस पर जीत पहनो तो जगतजीत अर्थात् विश्व के मालिक बनोगे।" सा.बाबा 14.9.68

"यह (मधुवन में) है बाप और बच्चों का मेला। वहाँ बच्चों का आपस में मेला है। तुम कहते हो तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से खेलूँ, तुम्हीं से बातचीत करूँ (बाप साथ खेल सकते, खा नहीं सकते क्योंकि वह तो अभोक्ता है) बाप और बच्चे का (ब्रह्मा और शिव) पार्ट तुम समझ सकते हो। ... दोनों खेलते हैं .. करते तो सभी कुछ यहाँ ही हैं तुम्हारे साथ।"

सा.बाबा 4.5.69 रिवा.

"सारे विश्व की सर्व आत्माओं में से सिर्फ थोड़ी सी आत्माओं को यह विशेष पार्ट मिला हुआ है। कितनी थोड़ी आत्मायें हैं, जिन्होंको बीज के साथ सम्बन्ध द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति का पार्ट मिला हुआ है।" अ.बापदादा 16.1.85

"बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसे मेरे को कोई विरला ही जानते हैं। तुम बच्चों में भी कोई विरले ही एक्यूरेट जानते हैं। जो जानते हैं, उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है। ... इस समय खुदा तुम बच्चों का दोस्त है। इनमें प्रवेश कर तुम्हारे साथ खेलते भी हैं।"

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

* ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का अनुभव

दुनिया में तो अनेक प्रकार की पर्सनॉलिटीज़ हैं। छोटी-छोटी पर्सनॉलिटी वाले भी कितने नशे में रहते हैं परन्तु अभी हमारी है ईश्वरीय पर्सनॉलिटी। ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी क्या होती है, यह अनुभव भी अभी संगमयुग पर ही हम आत्माओं को होता है।

"फिर अन्त में संगमयुग में भी आप सबकी रॉयलिटी कितनी ऊंची है। ब्राह्मण जीवन की पर्सनॉलिटी कितनी बड़ी है। डायरेक्ट भगवान आपके ब्राह्मण जीवन में पार्सनॉलिटी-रॉयलिटी भरी है। ... ब्राह्मण जीवन की पर्सनॉलिटी-रॉयलिटी कौन सी है? प्योरिटी। प्योरिटी ही रॉयलिटी है।"

अ.बापदादा 17.10.03

* ईश्वरीय गोद का अनुभव

* परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का अनुभव

परमात्मा हमारा माता-पिता है, उसकी गोद का सुर-दुर्लभ अनुभव भी अभी ही होता है, जब निराकार परमात्मा साकार तन में आकर हम आत्माओं को अपने कल्याणमयी गोद में लेकर, हमको ईश्वरीय गोद का अनुभव कराते हैं और हम आत्माओं की पालना करते हैं।

"बाबा कितना रहमदिल है! आकर बच्चों को गोद लेते हैं।... बच्चे जानते हैं - हम किसके आगे बैठे हैं? ऐसा कोई सतसंग नहीं होगा, जहाँ गॉड फादर बैठ राजयोग सिखलाते हैं।"

सा.बाबा 23.07.03 रिवा.

प्रकृति और परमात्मा की गोद परम सुखदायी है। निष्छल, निर्संकल्प, निर्भय भाग्यशाली आत्मा ही उनकी गोद के इस सुख को अनुभव कर सकती है। इस सत्य को जानकर उनके सुख को अनुभव करो। ये संगमयुगी जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण और परम सुखमय है। परमात्मा की परम सुखदायी गोद का सुख अनुभव करने का समय ये संगमयुग ही है।

"आप एक रतन के आगे विश्व के सारे खज़ाने कुछ भी नहीं हैं। इतने अमूल्य रत्न हो। यह अमूल्य रत्न सिवाए इस संगमयुग के सारे कल्प में नहीं मिल सकते। सतयुगी देवात्माओं का पार्ट इस संगमयुगी ईश्वरीय अमूल्य रत्न बनने के पार्ट के आगे सेकण्ड नम्बर हो जाता है। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो, सतयुग में दैवी सन्तान होंगे।... जिस आत्मा के ऊपर बाप की नजर पड़ी, वह प्रभु नजर के कारण अमूल्य बन ही जाते हैं।"

अ.बापदादा 2.3.85

"इतने न्यारे पंख ज्ञान और योग के मिले हैं, जिससे तीनों ही लोकों का चक्र लगा सकते हो। ... इस संसार का गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के संसार में। ... परमात्म गोदी

है याद की लवलीन अवस्था में झूलना। ... यह अलौकिक गोद सेकण्ड में अनेक जन्मों के दुख-दर्द भुला देती है।"

अ.बापदादा 20.11.85

"बरोबर यह सुख-दुख का खेल है। यूँ तो तुम बच्चों को सतयुग में जाने से भी जास्ती फायदा यहाँ है क्योंकि जानते हो कि इस समय हम ईश्वरीय गोद में हैं, ईश्वरीय औलाद हैं। ... इस जन्म को जानने से कुछ न कुछ पास्ट जन्म को भी समझ सकते हैं।... सुख में तो दुख का पता नहीं चलता है। अभी संगम पर तुम दोनों को जान सकते हो कि अभी हम दुख से सुख में जा रहे हैं। मुख है दिन की तरफ और लात है रात की तरफ।"

सा.बाबा 4.4.06 रिवा.

* परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात ईश्वरीय वर्से की अनुभूति
* परमपिता परमात्मा का वारिस बनने और बनाने का अनुभव

ज्ञान, दिव्य बुद्धि, पवित्रता, सुख, शान्ति, प्रेम ईश्वरीय वर्सा है। ईश्वर भी अभी है और वर्सा भी अभी ही है। जो इस वर्से को प्राप्त कर लेता है, उसे भविष्य में सुख-शान्ति का वर्सा इसके फलस्वरूप मिलता ही है और जो इसे भूलकर भविष्य की लालसा में रहता है, वह इसे भी गँवा देता है और भविष्य से भी वंचित हो जाता है।

"एक है स्नेह, दूसरा है सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्वशक्तियों का खजाना। ... बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्वशक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है। ... सर्वशक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? सदा है? ... क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, तो अपने पर अधिकार होता है। ... अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे।"

अ.बापदादा 2.11.04

"सर्व शक्तियां बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"कहते तो सब हैं - बाबा, हम आपके हो चुके हैं परन्तु यथार्थ रीति हमारे होते थोड़ेही हैं। बहुत हैं, जो वारिस बनने के राज़ को भी नहीं जानते हैं। ... कई बच्चे समझते हैं - हम तो वारिस हैं परन्तु बाबा समझते हैं कि यह वारिस है नहीं। वारिस बनने के लिए भगवान को अपना वारिस बनाना पड़े। यह राज़ समझना और समझाना भी मुश्किल है।... सब मिल्कियत देनी

पड़े, फिर बाप भी वारिस बनायेंगे।" सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

"पढ़ते-पढ़ते आखरीन तन्त बुद्धि में आ जाता है। यह भी ऐसे है। अन्त में फिर बाप कहते हैं मन्मनाभव, तो देह का अभिमान टूट जायेगा। मन्मनाभव की आदत पड़ी होगी तो पिछाड़ी में भी बाप और वर्सा याद रहेगा।" सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

"सभी आत्माओं को आप लोगों के द्वारा अपना-अपना यथा पार्ट तथा बाप का वर्सा जरूर लेना है।" अ.बापदादा 30.7.70

"सदा बाप और वर्सा दोनों याद रहता है ? बाप की याद स्वत: ही वर्से की भी याद दिलाती है और वर्सा याद है तो बाप की स्वत: याद है। बाप और वर्सा दोनों साथ-साथ हैं।... सागर सदा सम्पन्न है तो आप सभी सदा सम्पन्न आत्मायें हो ना! खाली होंगे तो लेने के लिए कहाँ हाथ फैलाना पड़ेगा।" अ.बापदादा 16.2.86

"सब आत्माओं का बाप एक है। सबको बाप से वर्सा लेने का हक है। आत्मायें सब भाई-भाई हैं। ... भाई-भाई माना सब आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हैं।" सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

"अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए आदि से लेकर एक स्लोगन सुनाते आते हैं, अगर वह याद रहे तो कब भी कोई माया के विघ्नों में हार नहीं हो सकती है। "स्वर्ग का स्वराज्य हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और संगम के समय बाप का खजाना जन्मसिद्ध अधिकार है।" ... अधिकारी समझेंगे तो कब माया के अधीन नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 17.5.69

"रुहानी बाप से एक तो तुमको ज्ञान का वर्सा मिल रहा है। ... बाप शान्ति का सागर है तो बच्चों को शान्ति भी धारण करनी चाहिए। ... अशान्त होना भी अवगुण है। अवगुणों को निकालना है और हर एक से गुण ग्रहण करना है।"

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"शिवबाबा के वर्से का पूरा अधिकारी अपने को समझते हो ? जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्होंका सर्व के ऊपर अधिकार होता है, वे कोई भी बात के अधीन नहीं होते हैं। अगर देह के, देह के सम्बन्धियों के, देह की कोई भी वस्तुओं के अधीन होते हैं तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते।" अ.बापदादा 24.1.70

"बाप जानते हैं सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं, सबको मैं वर्सा देने आया हूँ। ... बाप यहाँ बैठे हैं लेकिन इनकी तो सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं, सब तरफ नजर जाती है, जानते हैं सबको मुझे वर्सा देना है।" सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

"अविनाशी बाप, अविनाशी बच्चे हैं तो प्राप्ति भी अविनाशी है। ... बाबा का बनना अर्थात् सदा के लिए अविनाशी खज़ाने के अधिकारी बनना।"

अ.बापदादा 13.3.86

"बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं अर्थात् बच्चों को बाप का वर्सा प्राप्त कराने के अधिकारी जरूर बनायेंगे। चाहे कैसे भी हैं लेकिन हैं तो बच्चे ही। चाहे मुक्ति का चाहे जीवनमुक्ति का, दोनों ही वर्सा हैं। बाप वर्सा देने के लिए ही आये हैं। अन्जान हैं ना। उन्हों का भी दोष नहीं है। इसलिए आप सभी को भी रहम आता है ना।"

अ.बापदादा 13.3.86

"मेरे बिगर वर्सा थोड़ेही मिलेगा। वर्सा तो तुमको मेरे से ही मिलना है ना। वर्सा एक बाप रचता से मिलता है। ... रचना से कभी वर्सा मिल न सके। ... मैं तो आता ही हूँ तुम बच्चों को पढ़ाकर पावन बनाने।"

सा.बाबा 27.3.05

Q. परमात्मा का यथार्थ वर्सा क्या है, वह किसको एवं कब मिलता है?

परमात्मा का यथार्थ वर्सा है ज्ञान, गुण, शक्तियां अर्थात् आत्मिक शक्तियां, पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द, अतीन्द्रिय सुख, जिसके आधार पर ही आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करती है। जो सर्व आत्माओं को उनके पार्ट और समय अनुसार मिलता है और सबको संगमयुग पर ही मिलता है।

"बाप से आप आत्माओं को सुख-शान्ति, पवित्रता का वर्सा सहज मिलता है। ... वे होली मनाते हैं और आप स्वयं ही परमात्मा के रंग में रंगने वाले होली आत्मायें बन जाते हो। ... यह संगमयुग होली जीवन का युग है।"

अ.बापदादा 25.3.86

"मुक्ति-जीवनमुक्ति जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको आप लोगों ने पाया है? ... मुक्ति-जीवनमुक्ति को यहाँ ही पा लिया है वा मुक्तिधाम में मुक्ति और स्वर्ग में जीवनमुक्ति लेना है। ... जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी मिला है। ... प्रैक्टिकल जो वर्सा है, वह अभी प्राप्त होता है। जीवन-बन्ध के साथ ही जीवनमुक्त का अनुभव होता है। वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं, वहाँ तो सिर्फ उसकी प्रारब्ध में होंगे।"

अ.बापदादा 11.7.72

"वर्सा सदैव अपनी प्राप्ति होती है। दान-पुण्य तो कब-कब की प्राप्ति होती है। वारिस हो तो वारिस निशानी है अतीन्द्रिय सुख के वर्से के अधिकारी।"

अ.बापदादा 30.5.71

"तुमको दीपमाला आदि की खुशी नहीं है, तुमको तो खुशी है हम बाप के बने हैं, उनसे वर्सा

पाते हैं।" सा.बाबा 25.10.69 रिवा.

"शुरू में ताकत थी। अभी इतनी हिम्मत कोई में नहीं है। भल कहते हैं - हम वारिस हैं परन्तु वारिस बनने की बात और है। ...याद का जौहर अभी कम है। किसी भी देहधारी को याद नहीं करना है।" सा.बाबा 1.8.05 रिवा.

"ये सर्वशक्तियाँ संगमयुग की विशेष परमात्म-प्रॉपर्टी है। प्रॉपर्टी किसके लिए होती है? बच्चों के लिए प्रॉपर्टी होती है। ... वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी के डायरेक्ट बच्चे हो, यह स्मृति का नशा सदा इमर्ज रहे। अपने आपको चेक करो - वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी की अधिकारी आत्मा हूँ - यह स्मृति स्वत: ही रहती है? सदा रहती है या कभी-कभी रहती है?"

अ.बापदादा 18.1.04

"पराधीन हर बात में मनसा-वाचा-कर्मणा दुख की प्राप्ति में रहते हैं और जो अधिकारी हैं, वे अधिकार के नशे और खुशी में रहते हैं। ... आपने सतयुगी सुखों की और कलियुगी दुखों की लिस्ट तो लगाई है लेकिन संगम के सुखों की लिस्ट बनायेंगे तो इससे भी दोगुणी हो जायेगी।" अ.बापदादा 17.5.69

* परमात्मा के सौदागर स्वरूप का अनुभव
* डायरेक्ट परमात्मा को देने और परमात्मा से लेने का अनुभव

परमात्मा सौदागर है, उसका अनुभव संगमयुग पर होता है अर्थात् परमात्मा के साथ आत्माओं का सौदा संगमयुग पर ही होता है। संगमयुग पर परमात्मा हमारा पुराना कखपन लेकर नई दुनिया में उसके रिटर्न में विश्व का राजभाग देते हैं।

"अभी तुम बच्चे अपना तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा में स्वाहा करते हो, बाप को मदद करते हो। ... बाबा कहते हैं - मैं तो दाता हूँ, तुमको देने के लिए आया हूँ। तुम भी अपना सब कुछ सफल करने वाले हो। जो जितना सफल करेंगे, उन्हें उतनी बड़ी बैकुण्ठ की बादशाही भी मिलेगी। लेन-देन का हिसाब है।"

सा.बाबा 21.07.03 रिवा.

"शिवबाबा की ये सब दुकान हैं। हू-ब-हू जैसे दुकानदारी में होता है, इसमें भी है। परन्तु यह व्यापार कोई विरला करे। व्यापार तो सभी को करना है। छोटे बच्चे भी ज्ञान और योग का व्यापार कर सकते हैं।" सा.बाबा 26.12.04 रिवा.

"तुम ब्राह्मणों के सिवाए और कोई को यह रुहानी नॉलेज मिल न सके। ... यह अविनाशी ज्ञान रतनों की जवाहरात है। जिनके पास अच्छे-अच्छे रतन होंगे, वे साहूकार बनेंगे और औरों को भी बनायेंगे। ... बाप को कहा जाता है सौदागर-रत्नागर, रतनों का सौदा करते हैं। फिर

जादूगर भी है क्योंकि उनके पास ही दिव्य-दृष्टि की चाबी है। ... कइयों को ब्रह्मा का और कृष्ण का साक्षात्कार होता है।" सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

"बाप अनाड़ी व्यापारी थोड़ेही है। जो किसका लेवे और काम में न आवे और ही ब्याज भरकर देना पड़े। ऐसे का थोड़ेही लेंगे। ... भोलानाथ है तब तो उनको सब याद करते हैं।"

सा.बाबा 13.5.05 रिवा.

"मनुष्य को देवता बनाने की जादूगरी कोई कर न सके। बाबा सौदागर भी है, पुराना लेकर नया देते हैं। ... मैं तुमको नम्बरवन कर्म सिखलाता हूँ। ... बाप जो मत देते हैं, उसमें टीचर की मत, गुरु की मत, सोनार की मत, धोबी की मत आदि सब मतें आ जाती हैं।"

सा.बाबा 31.5.05 रिवा.

"अब बाप तुमको यह ज्ञान रत्नों का व्यापार सिखलाते हैं। वह व्यापार तो इनके आगे कुछ भी नहीं है। ... बाबा ने इनमें प्रवेश किया और फट से सब छोड़ दिया।... ये हैं ज्ञान रत्न। कोई विरला व्यापारी इनसे व्यापार करे।" सा.बाबा 20.7.05 रिवा.

"यह भी सब धन्धा है। अपनी अविनाशी कमाई करनी है, इसमें बहुतों का कल्याण होगा। जैसे इस ब्रह्मा ने भी किया। ...बाबा बिजनेसमैन भी तो है ना। तुमसे कखपन पाई-पैसे लेकिर एक्सचेन्ज में क्या देता है।" सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

* परमात्मा के खिवैया स्वरूप का अनुभव

विषय-सागर क्या है और क्षीर सागर क्या है और कैसे परमात्मा विषय-सागर से हमारी जीवन रूपी नैया को पार करते हैं, ये अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है। परमात्मा हमारी आत्मा रूपी नैया को विषय सागर से पार कर क्षीर सागर अर्थात् सतयुग में ले जाते हैं।

"अभी तुम बच्चे जानते हो हम संगमयुग पर बैठे हैं। यह भी वण्डर है कि जो संगमयुग पर आकर स्टीमर में बैठकर फिर उतर जाते हैं। अब तुम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने के लिए आकर नांव में बैठे हो, पार जाने के लिए। फिर पुरानी दुनिया से दिल उठा लेनी होती है।"

सा.बाबा 28.6.05 रिवा.

"यह एक ही समय है जब तुमको अपने को आत्मा समझ कर एक बाप को याद करना है।... सच की स्थापना में कितने विघ्न पड़ते हैं परन्तु गाया हुआ है कि सच की नाव हिलेगी-डुलेगी लेकिन डूबेगी नहीं।" सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

"तुम जानते हो बाप हमारी नैया उस किनारे ले जाते हैं। .. बाप का खिवैया नाम भी अर्थ सहित रखा है ना। महिमा करते हैं - नैया मेरी पार लगाओ।"

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

* निराकार आत्मा का निराकार बाप के प्यार का साकार में अनुभव

आत्मायें निराकार है और परमात्मा भी निराकार है परन्तु निराकार आत्माओं को निराकार परमात्मा के प्यार का साकार में अनुभव कैसे होता है, उसकी महसूसता क्या होती है, वह भी अभी परमात्मा साकार में करा रहे हैं।

"यह प्यार भी अनोखा है। वैसे तो हमेशा देहधारी को ही प्यार किया जाता है। यह है विदेही अर्थात् बिगर देह के, हम उनके सामने बैठे हैं। वह बहुत प्यार से आकर पढ़ाते हैं। तो नई बात हुई ना।... पारलौकिक बाप को याद करना बड़ा अनोखा है। और सभी की याद को समेट एक को याद करना है।" सा.बाबा 19.07.03 रिवा.

"रुहानी बाप रूहों से रूह-रुहान करते हैं। यह रूहों की रूह-रुहान सिर्फ इस समय ही अनुभव कर सकते हो। आप रूहों में इतनी स्नेह की शक्ति है, जो रूहों के रचयिता बाप को रूहरुहान के लिए निर्वाण से वाणी में ले आते हो।" अ.बापदादा 18.3.85

"बच्चे समझते हैं - हम आत्मा परमधाम से आई हैं, यहाँ पार्ट बजाती हैं। पहले-पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्मा अविनाशी हैं। ... बाप तुम बच्चों से ही बात करते हैं क्योंकि तुम्हारे सिवाए इन बातों को कोई जानते नहीं हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही पुरुषोत्तम बनाने के लिए बाप रास्ता बताते हैं।" सा.बाबा 22.1.04 रिवा.

* आत्मा आशिक को परमात्मा माशूक के प्यार का यथार्थ अनुभव

आत्मायें सभी आशिक हैं, एक परमात्मा की। ये आशिक-माशूक के प्यार का अनुभव अभी ही होता है, जिसको भक्ति मार्ग में याद किया जाता है।

"यह तो कोई नहीं जानते हैं कि आत्मा आशिक है परमपिता परमात्मा की। सच्चे-सच्चे आशिक तुम हो। आधा कल्प तुम आशिक बन माशूक परमात्मा को खूब याद करते हो परन्तु यह जानते नहीं कि आत्मा, परमात्मा पर आशिक होती है।"

सा.बाबा 22.07.03 रिवा.

* परमात्म के गरीब-निवाज स्वरूप का अनुभव

परमात्मा को गरीब निवाज कहा जाता है परन्तु वह कैसे गरीब निवाज है, उसका अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है, जब वह आकर गरीबों, गणिकाओं, अहिल्याओं का कल्याण करता है। धन-सम्पत्ति से गरीब आत्मायें परमात्मा से जो सुख पाते हैं, वह साहूकार भी नहीं पा सकते हैं। यथार्थ तो ये है कि वह सुख देवताओं को भी प्राप्त नहीं है, जो सुख अभी गरीब आत्मायें परमात्मा से पाते हैं। भले ये गरीब ही वहाँ जाकर देवी-देवता बनते हैं।

परमात्मा के गरीब-निवाज़ स्वरूप की अनुभूति भी संगमयुग पर ही होती है।

"साहूकार तो मुश्किल उठ सकते हैं। गरीब तो झट कह देते बाबा सब कुछ आपका है। उनको फिर सर्विस भी करनी है। सिर्फ पैसे से काम नहीं होता। पावन बनने के लिए तो फिर याद चाहिए, नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी।"

सा. बाबा 7.11.71 रिवाइज

"सभी बच्चे स्नेह के भिखारी बन गये। अब बाप भिखारी से स्नेह के सागर के वर्से के अधिकारी बना रहे हैं। अनुभव के आधार से सबकी दिल से अब यह आवाज स्वत: ही निकलता है कि ईश्वरीय स्नेह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

अ.बापदादा 24.12.84

"तुम्हारे पास अक्सर करके गरीब-दुखी ही आयेंगे, साहूकार नहीं आयेंगे। ... जिनकी तकदीर में हैं, उनको झट निश्चय बैठ जाता है।... इसमें मूँझने की दरकार नहीं है। अपने ऊपर आपही रहम करना है।"

सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

"बाप बुद्धिमानों की बुद्धि है, तो क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता है लेकिन ड्रामा का बहुत कल्याणकारी नियम बना हुआ है कि परमात्म कार्य में फुरी-फुरी से तलाव होना है, अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है।"

अ.बापदादा 16.12.2000

"बाप कहते - जो साहूकार हैं, उन्हें गरीब जरूर बनना है, बनेंगे ही क्योंकि उन्हों का पार्ट ऐसा है। वे कभी ठहर न सकें क्योंकि धनवान को अहंकार भी बहुत रहता है। ... वे जब देने आयेंगे तो बाबा कहेंगे - दरकार नहीं है, अपने पास रखो, जब जरूरत होगी तो फिर ले लेंगे।"

सा.बाबा 23.11.04 रिवा.

"गरीब अपना अच्छा भाग्य बनायेंगे और समझने का पुरुषार्थ करेंगे। साहूकारों को तो पुरुषार्थ करना नहीं है। उनमें देहाभिमान बहुत है ना।... गरीब झट अपनी बैटरी भर सकते हैं क्योंकि बाप को बहुत याद करते हैं।"

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"शिव तो भगवान है, वही कल्प-कल्प भारत में आकर नर्कवासी से स्वर्गवासी, बेगर टू प्रिन्स बनाते हैं। पतित को पावन बनाते हैं। वे ही सर्व के गति-सद्गति दाता हैं।"

सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - साहूकार 10 हजार देता है, उनको भी उतना ही फल मिलेगा, जितना आठ आना देने वाले को। बाप गरीब निवाज है ना! गरीब के पास होगा ही एक रुपया, तो उनसे 10 पैसा देते हैं तो उनको 10 लाख के बराबरी में देना पड़े। इसलिए बाप का नाम है गरीब

निवाज।" सा.बाबा 29.10.71 रिवा.

"साधारण बच्चों में भावना है और बाप को भावना चाहिए। देहभान वाले नहीं चाहिए। ... ड्रामानुसार संगमयुग में साधारण बनना - ये भी भाग्य की निशानी है क्योंकि संगम पर ही भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे हैं। ... बाप के बने और बाप भाग्य की लकीर खींचने की कलम दे देता है।" अ.बापदादा 17.11.94

* परमात्मा के सानिध्य से पवित्रता की धारणा और दिव्य शक्तियों की प्राप्ति तथा उनकी अनुभूति

संगमयुग पर ही यथार्थ रूप में परमात्मा के सानिध्य की अनुभूति होती है। भले ही आत्मायें परमधाम में परमात्मा के साथ रहती हैं परन्तु वहाँ आत्माओं को शरीर ही नहीं तो अनुभूति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

संगमयुग पर ईश्वरीय ज्ञान से आत्मा को जो ज्ञानयुक्त, अतीन्द्रीय सुख प्राप्त होता है, वह विशेष सुख है और आत्मा की परम प्राप्ति है, जिस सुख को सुर-दुर्लभ गाया हुआ है। परमपिता परमात्मा ने हमको जो ज्ञान-गुण-शक्तियाँ दी हैं, उनसे जो मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम-सुख की प्राप्ति होती है, उसकी तुलना में ये भौतिक सुख तो कुछ भी नहीं है, इन्द्रीय सुख तो आत्माओं को सारे कल्प में प्राप्त होते हैं और इस जगत में पशु-पक्षियों को भी प्राप्त हैं, जो इस सत्य को अनुभव करता है, वही यथार्थ पुरुषार्थ करके संगमयुग के इस सर्वोत्तम सुख को अनुभव कर सकता है और जो इस सुख को अनुभव करता है, उसका वर्तमान और भविष्य दोनों ही सुखमय होता है।

* अमरत्व का अनुभव

आत्मा अविनाशी है, जन्म-मरण से न्यारी है अर्थात् आत्मा का कब विनाश नहीं होता है और न ही आत्मा कब बनाई गई है, इसलिए आत्मा में मृत्यु-भय का कोई प्रश्न ही नहीं है परन्तु अपने स्वरूप की अन्भिज्ञता और विकर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले दुख के कारण आत्मा को मृत्यु का भय और मृत्यु का दुख होता है। जिसको ईश्वरीय सत्य ज्ञान और अपने श्रेष्ठ कर्मों के फलस्वरूप अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देगा, उसको इस देह त्याग या मृत्यु का भय हो नहीं सकता। ये संगमयुग चढ़ती कला का समय है, अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सत्य ज्ञान दिया है और हम प्रभु-सन्तान हैं, परमात्मा की मत पर हम श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त हैं इसलिए हमारा भविश्य सदा ही उज्वल है-इस सत्य को जानकर अभीष्ट

पुरुषार्थ करने वाला सदा ही मृत्यु-भय से मुक्त हो जीवन के सच्चे सुख का अनुभव करेगा। मृत्यु तो पुराना वस्त्र उतार कर, नया धारण करने की एक सुखदायी प्रक्रिया है, जो अज्ञानतावश दुखदायी बन गई है। मृत्यु-भय से मुक्त हो अमरत्व का वरदान संगमयुग पर ही आत्माओं को परमात्मा के द्वारा प्राप्त होता है और यथार्थ पुरुषार्थ करके आत्मायें अमरत्व का अनुभव करती हैं।

मृत्यु-दुख या मृत्यु-दुख का भय आत्मा के लिए सबसे अधिक दुखदायी स्थिति है परन्तु मृत्यु से भयभीत होने से मृत्यु-दुख से मुक्त नहीं हो सकते हैं। श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होने और देह से न्यारा होने के अभ्यास से मृत्यु-दुख का निदान हो सकता है। बाबा की याद और देह से न्यारे होने का अभ्यास सबसे श्रेष्ठ कर्म है और मृत्यु-दुख से मुक्त होने का एकमात्र साधन है। जो आत्मा संगमयुग पर यथार्थ रीति खड़ी है, उसको मृत्यु-दुख दुखी कर नहीं सकता। उसके लिए हर क्षण और हर परिस्थिति कल्याणमय है। उसके लिए भविष्य उतना ही सुखद होगा, जितना वर्तमान। इसलिए वह कब भी मृत्यु-दुख से दुखी नहीं हो सकता। भविष्य जन्म की अनिश्चितत, गर्भावस्था का दुख, वर्तमान में प्राप्त सम्बन्धों और सुख-साधनों का त्याग आत्मा को भयभीत करते हैं परन्तु संगम पर स्थित आत्मा के लिए भविष्य सम्बन्ध और साधन उतने ही सुखद होंगे जितना वर्तमान। उसके लिए गर्भावस्था भी सुखदायी होगी। इसलिए वह मृत्यु-दुख या मृत्यु-भय से कब भी भयभीत नहीं होगा। विश्व-नाटक की इस सत्यता और यथार्थता को जानकर और अभीष्ट पुरुषार्थ करके मृत्यु-दुख के भय से मुक्त होकर अमरत्व का अनुभव करो। जिसका वर्तमान सुखमय है और जो परमात्मा की श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त है, उसका भविष्य अवश्य ही सुखमय होगा। भयभीत आत्मा इस वर्तमान के सच्चे सुख को भी भविष्य की चिन्ता में गँवा देती है।

संगमयुग पर ही आत्मायें परमात्मा से यथार्थ आत्मिक ज्ञान पाकर मृत्यु-भय से मुक्त अमरत्व का अनुभव करती हैं। संगमयुग में ईश्वरीय प्राप्तियों में जीना और यथा समय शान्ति से देह का त्याग करना और धारण करना ही जीवन की सच्ची सफलता है। इसीलिए परमात्मा देह में रहते देह से न्यारा होने का अभ्यास कराते हैं।

"सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज तुमको अच्छी तरह है। ... पहले अपने घर जाना है तो खुशी से जाना है। जैसे सतयुग में देवतायें खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, वैसे इस पुराने शरीर को भी खुशी से छोड़ना है। इससे तंग नहीं होना है। यह बहुत वेल्युबुल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है।"

सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

"व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो आप सब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे।"

अ.बापदादा 5.12.74

"बाबा की याद में इस पुरानी दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की टेव पड़ जायेगी तो जैसे याद में बैठे-बैठे अन्कान्शस हो जायेंगे, अशरीरी हो जायेंगे, शरीर का भान नहीं रहेगा। .. पिछाड़ी में शरीर खुशी से हर्षित मुख होकर छोड़ना चाहिए। बस, हम कहाँ जा रहे हैं।"

सा.बाबा 9.7.71 रिवा.

"अभी तुमको डायरेक्ट मत मिलती है। श्रीमत भगवत गीता है ना! और कोई शास्त्र पर श्रीमत अक्षर है नहीं। हर 5000 वर्ष बाद यह पुरुषोत्तम संगमयुग, गीता का युग आता है। बेहद के बाप ने रचयिता अर्थात् अपना और रचना का सारा परिचय दिया है।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भरपूर रहती है, फिर खाली हो जाती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, फिर आते हैं इस स्वीट संगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शान्तिधाम कोई स्वीट नहीं है। सबसे स्वीट है पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग। ड्रामा में तुम्हारा भी अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लकी हो जो बेहद के बाप के तुम बनते हो।"

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

"बाप बच्चों को क्या सिखलाते हैं? जीते जी मरना। जीते जी मरना कैसे होता है, यह और कोई सिखला न सके, सिवाए एक बाप के। ... वहाँ तमोप्रधान शरीर खुशी से छोड़ देते हैं। यह रस्म भी शुरू यहाँ से होती है। ... मैं शरीर से अलग हूँ, तुमको भी वही सिखलाता हूँ। तुम भी अपने को शरीर से अलग समझो।"

सा.बाबा 23.4.04 रिवा.

* यथार्थ रीति से साक्षीपन का अनुभव

दुनिया में अनेक महापुरुषों और धर्मात्माओं ने साक्षी स्थिति का वर्णन किया है और साक्षी स्थिति को श्रेष्ठ माना है। उन्होंने साक्षी स्थिति का अपने रीति से वर्णन किया है और उसके लिए पुरुषार्थ किया है परन्तु यथार्थ सत्य को अभी हम समझते और अनुभव करते हैं। बिना इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की साक्षी स्थिति का कोई अनुभव कर ही नहीं सकता है।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही पूर्ण साक्षी है क्योंकि उसका अपना-पराया कोई नहीं है और विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है। और सभी आत्मायें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जितना ज्ञान को धारण करती हैं, उस अनुसार साक्षी स्थिति का अनुभव करती हैं। ये साक्षी स्थिति का अनुभव अलौकिक अनुभव है और परमानन्दमय है।

देह से न्यारे मूल स्वरूप में स्थित, सूक्ष्म शरीर के साथ बाप के साथ और साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने का ज्ञान संगमयुग पर ही प्राप्त होता है, जिससे आत्मा उस स्थिति को सहज धारण कर विश्व-नाटक में पार्ट बजाते हुए परमसुख का अनुभव करती है। आत्मा को ये स्थिति संगमयुग पर ही प्राप्त होती है, जो परम सुखदायी है।

"आत्मा तो कभी विनाश नहीं होती। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वह कभी विनाश नहीं हो सकती। ... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5 हजार वर्ष है। सेकेण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता। ... देही-अभिमानी होकर साक्षी होकर खेल को देखना है।... परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है, वह बदल नहीं सकता।"

सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

"हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है। तुम साक्षी होकर देखते रहो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना है और एक्ट भी करना है।... बाप कहते हैं - तुम जो कुछ देखते हो, यह सब विनाशी है। अभी तुमको तो घर जाना है।... ये सब काग-विष्टा के समान सुख है।"

सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

"जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा। ... तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या ? ... साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।"

अ.बापदादा 8.7.73

"साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी...वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करेंगे, ...दूसरा बाप के दिल-तख्तनशीन वह होगा, जो सपूत होगा अर्थात् बापदादा को मनसा-वाचा-कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो करने का सबूत देगा। तीसरा है विश्व-महाराजन बन विश्व के राज्य के तख्तनशन बनने का। वह न सिर्फ कर्मइन्द्रिय जीत लेकिन वह साथ-साथ प्रकृतिजीत भी होगा।"

अ.बापदादा 11.7.74

"तुमको कोई आंसू न आना चाहिए, सब साक्षी होकर देखना चाहिए। जानते हो ड्रामा है। इसमें

रोने की क्या दरकार। पास्ट-प्रेजेन्ट का कब विचार भी न करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सभी को रास्ता बताते रहो।"

सा.बाबा 25.9.71 रिवा.

* विश्व-नाटक के सुख का अनुभव
* विश्व-नाटक के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* विश्व-नाटक के गुण-धर्मों और नियम-सिद्धान्तों का अनुभव

विश्व-नाटक का यथार्थ स्वरूप, उसके आध्यात्मिक और भौतिक नियम-सिद्धान्तों को जानने वाला ही इस देह और देह की दुनिया से न्यारा अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा ही इस जीवन और विश्व-नाटक के परम-सुख को अनुभव कर सकती है और ये सत्य ज्ञान और उसकी प्रक्रिया योग का ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही संगमयुग में आकर हम आत्माओं को सिखलाते हैं। जो आत्मायें इस पुरुषार्थ को करके इस परम-सुख को अनुभव करती और कराती हैं, वे परम-भाग्यशाली हैं।

"मैं अपने समय पर ही आऊंगा। ऐसे नहीं, जब चाहूँ तब आऊं। ड्रामा में जब नूँध है तब आता हूँ। बाकी ऐसे ख्यालात भी कभी नहीं आते हैं। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है। विचार करते हैं तो बड़ा वण्डर लगता है।"

सा.बाबा 2.2.04 रिवा.

* बच्चों का बाप पर और बाप का बच्चों पर बलिहार जाने का अनुभव

भक्ति में गाते हैं - परमात्मा जब आप आयेंगे तो हम आप पर बलिहार जायेंगे परन्तु अभी परमात्मा आया है और कैसे हम परमात्मा पर बलिहार जाते हैं और परमात्मा हमारे ऊपर बलिहार जाते हैं, उसका अनुभव करते हैं। इस बलिहार जाने में जो सुख अनुभव होता है, वह त्रिलोक में अनुभव हो नहीं सकता। ये परमात्मा बाप और बच्चे आत्माओं का अलौकिक प्यार और आत्माओं का अलौकिक अनुभव है।

* श्रेष्ठ भाग्य और भाग्यविधाता परमात्मा के भाग्य-विधाता स्वरूप का अनुभव

परमात्मा को भाग्य विधाता और ब्रह्मा बाबा को भाग्य-विधाता एवं भृगु-ऋषि के रूप में याद किया जाता है। परमात्मा कैसे भाग्य विधाता है, उसका अनुभव भी अभी संगमयुग पर ही होता है। यद्यपि ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, फिर भी परमात्मा कैसे आत्माओं का भाग्य-विधाता है, इसका अनुभव भी अभी संगम पर ही हम आत्माओं को होता है। परमात्मा अभी हमको जो ज्ञान देता है, उस ज्ञान और परमात्मा के साथ से हम अभी भी परम भाग्य का अनुभव करते हैं और इस अनुभव के आधार पर हमारा

भविष्य का जो भाग्य बनता है, उसकी स्मृति और ज्ञान भी हमको परम सुख का अनुभव कराती है। इसीलिए बाबा कहते हैं कि अभी ही सारे कल्प की कमाई का समय है। जो आत्मा जितना इस भाग्य का अनुभव करती है, वह उतना ही भविष्य के लिए भाग्य का निर्माण करती है।

"हर ब्राह्मण आत्मा के जन्मते ही भाग्य विधाता बाप ने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींच ली है, ऐसी श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हैं। ... हर एक ब्राह्मण के दिल में दिलाराम दिल का दुलार, दिल का प्यार दे रहे हैं। यह परमात्म प्यार सारे कल्प में एक द्वारा और एक समय ही प्राप्त होता है। यह रुहानी नशा सदा हर कर्म में रहता है?"

अ.बापदादा 30.11.03

"भाग्यवान तो सभी बच्चे हैं क्योंकि भाग्यविधाता के बने हैं, इसलिए भाग्य तो जन्मसिद्ध अधिकार है। ... इस भाग्य के अधिकार के अधिकारी बन उस खुशी और नशे में रहना और औरों को भी भाग्यविधाता द्वारा भाग्यवान बनाना, यह है अधिकारीपन के नशे में रहना। ... सारे विश्व के भाग्य की जन्मपत्रियां देख लो लेकिन आप जैसी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर किसी की भी नहीं हो सकती है।"

अ.बापदादा 9.1.85

"सारे विश्व के भाग्य की जन्मपत्रियां देख लो लेकिन आप जैसी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर किसी की भी नहीं हो सकती है। ... इसलिए अपने श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हुए समर्थपन के रुहानी नशे में रहो। बाहर से भले साधारण दिखाई दो लेकिन साधारणता में महानता दिखाई दे।... जब स्वयं, स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे तब दूसरों को भी अनुभव करायेंगे।"

अ.बापदादा 9.1.85

"मधुवन में जितने भण्डारे भरपूर हैं, उतने बेहद के वैरागी।... होते हुए भी वैराग्य वृत्ति हो, इसको कहा जाता है - बेहद के वैरागी। तो जितना जो करता है, उतना वर्तमान भी फल पाता है और भविष्य में तो मिलना ही है। वर्तमान में सच्चा स्नेह वा सबके दिल की आशीर्वाद अभी प्राप्त होती है और अभी की यह प्राप्ति स्वर्ग के राज्य-भाग्य का आधार बनती है।"

अ.बापदादा "सोचो भाग्य के भण्डार के मालिक के बालक को क्या कमी रह सकती है! मेरा भाग्य क्या है? यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि भाग्यविधाता अपना बाप बन गया।"

अ.बापदादा 19.12.84

"सारे विश्व की सर्व आत्माओं में से सिर्फ थोड़ी सी आत्माओं को यह विशेष पार्ट मिला हुआ है। कितनी थोड़ी आत्मायें हैं, जिन्होंको बीज के साथ सम्बन्ध द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति का पार्ट मिला हुआ है।"

अ.बापदादा 16.1.85

"भाग्य अपने कर्मों के हिसाब से सभी को मिलता है। द्वापर से अब तक आप आत्माओं को भी कर्म और भाग्य के हिसाब-किताब में आना पड़ता है लेकिन वर्तमान भाग्यवान युग में भगवान भाग्य देता है। भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींचने की विधि है "श्रेष्ठ कर्म रूपी कलम" आप बच्चों को दे देते हैं, जिससे जितनी श्रेष्ठ, स्पष्ट जन्म-जन्मान्तर के भाग्य की लकीर खींचने चाहो, उतनी खींच सकते हो। और कोई समय को यह वरदान नहीं है। इसी समय को यह वरदान है।" अ.बापदादा 16.1.85

"ऐसा श्रेष्ठ भाग्य, कल्प-कल्प के भाग्य की लकीर अविनाशी खिंच गई। सदा यह स्मृति में रहे कि हमारा भगवान के साथ पार्ट बजाने का भाग्य है। डायरेक्ट भाग्य-विधाता से भाग्य प्राप्त करने का पार्ट है।" अ.बापदादा 16.2.85

"दो प्रकार के बच्चों को बाप देख रहे हैं। एक है बाप को पहचानने वाले और दूसरे हैं बाप को पुकारने वाले। ... पहचानने वाले बच्चों के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर चमक रही है। सबसे श्रेष्ठ भाग्य की लकीर है कि बाप द्वारा दिव्य ब्राह्मण जन्म की लकीर।"

अ.बापदादा 13.12.89

"सारे कल्प में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य किसी का भी हो नहीं सकता। ... अपने भाग्य की लिस्ट निकालो तो कितनी बड़ी लिस्ट है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु आप ब्राह्मणों के भाग्यवान जीवन में। ... बाप द्वारा सर्व खज़ानों की खान प्राप्त है। खज़ानों की लिस्ट भी स्मृति में आई! ... वर्तमान में स्वराज्य अधिकारी और भविष्य में अनेक जन्म राज्य पद अधिकारी। ... अभी भी स्वराज्य अधिकारी बेफिकर बादशाह हो।" अ.बापदादा 30.11.04

* त्याग में भी भाग्य अनुभव
* पुरुषार्थ में प्रालब्ध का अनुभव

त्याग में भी परम-भाग्य का सुख और पुरुषार्थ में भी प्रालब्ध के सुख का अनुभव अभी संगमयुग पर होता है, जब हम परमात्मा के साथ हैं और उनकी मत पर पुरुषार्थ करते हैं, अपना तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में लगाते हैं।

"स्नेह ने आप सबको ब्राह्मण जन्म दिया है। ... स्नेह ने हद के त्याग को भाग्य अनुभव कराया है। त्याग नहीं भाग्य है।... स्नेह ने युग परिवर्तन कर लिया। कलियुगी से संगमयुगी बना दिया। ... इतना महत्व है इस ईश्वरीय स्नेह का। जो इसके महत्व को जानते हैं वे ही महान बन जाते हैं।" अ.बापदादा 24.12.84

"राजऋषि अर्थात् सर्व अधिकारी और बेहद के वैरागी। ... दोनों का बैलेन्स। ... राजऋषि

बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा, उतना ही बेहद के वैराग्य के नज़ारे। दोनों साथ-साथ अनुभव होंगे। ... त्याग के साथ-साथ भाग्य भी स्पष्ट सामने दिखाई देगा।"

अ.बापदादा 7.10.75

"जैसे स्थूल धन वा स्थूल पद के प्राप्ति की चमक चेहरे से मालूम होती है। ... ऐसे ही स्वराज्य अधिकारी बच्चों के चमकते हुए चेहरे दिखाई दें, मेहनत के चिन्ह नहीं दिखाई दें, प्राप्ति के चिन्ह दिखाई दें। ... अभी त्याग दिखाई देता है, भाग्य नहीं दिखाई देता है।"

अ.बापदादा 9.10.87

"इस भाग्य को अभी से भी समय आने पर ज्यादा समझेंगे कि हम आत्मायें कितनी भाग्यवान हैं। ... जब विधाता के बच्चे, वरदाता के बच्चे बन गये। विधाता अर्थात् देने वाला।"

अ.बापदादा 9.10.87

"राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य, उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स।... बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी।"

अ.बापदादा 27.11.87

* परमात्मा की छत्रछाया और उनके हाथ और साथ का अनुभव
* परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का अनुभव

परमात्मा इस विश्व-नाटक का साक्षी-दृष्टा है और धर्मराज भी है परन्तु वह रहमदिल भी गाया हुआ है। तो उसके रहमदिल का स्वरूप क्या है, उसका अनुभव भी अभी संगमयुग पर ही होता है।

"ब्राह्मण जीवन में, महान युग मे, बापदादा के अधिकारी बन फिर भी मेहनत करनी पड़े, सदा युद्ध की स्थिति में ही जीवन बितायें - बच्चों की यह मेहनत की जीवन बापदादा से देखी नहीं जाती। इसलिए निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो। समझा!"

अ.बापदादा 6.11.87

बाबा कहते - बाबा ने तुमको पॉट में रखा है, क्वारिनटाइन में रखा है, जिससे तुमको माया के कीटाणु प्रभाव न करें, मायावी दुनिया की तुम पर नजर न पड़े। परमात्मा के इस एहसान को सदा याद रखो और अपने भविष्य को श्रेष्ठ बनाने का अभीष्ट पुरुषार्थ करो।

"जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया था, वे ही पहले-पहले वर्सा लेने आयेंगे। वे ही कहेंगे - बाबा आपके सिवाए हमारा सहायक और कोई नहीं। बाप क्षमा भी तब करेंगे, जब संगमयुग

होगा।... ऐसे नहीं कि मैं तुम्हारी पुकार सुनकर आता हूँ। भक्ति जब पूरी होती है, तब मुझे आना ही है।" सा.बाबा 5.7.06 रिवा.

"संकल्प मात्र भी पुराना संस्कार स्मृति में न आये। ... नया जन्म, नई बातें, नये संस्कार, नई दुनिया। यह ब्राह्मणों का संसार भी नया संसार है। ... सदा बाप और मैं, साथ-साथ हैं और संगमयुग में सदा साथ रहेंगे। अलग हो ही नहीं सकते।"

अ.बापदादा 6.3.85

* परमात्मा के दिल-तख्त का सुखद अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त और उसकी विशालता का सुखद अनुभव

परमात्मा का दिल तख्त क्या होता है और उसका अनुभव क्या होता है, उसका ज्ञान और अनुभव अभी संगमयुग पर परमात्मा द्वारा होता है, जब वह ब्रह्मा तन में आकर ये अनुभव कराते हैं।

"इस समय सब दिलतख्तनशीन स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा हो। इतना रुहानी नशा रहता है ना ? क्योंकि इस समय के स्वराज्य से ही भविष्य राज्य प्राप्त होता है। यह संगमयुग बहुत-बहुत-बहुत अमूल्य श्रेष्ठ है।" अ.बापदादा 31.12.02

"परमात्म दिल-तख्त सारे कल्प में अब आप सिकीलधे, लाड़ले बच्चों को ही प्राप्त होता है। भृकुटी का तख्त तो सर्व आत्माओं को है लेकिन यह परमात्म दिल तख्त ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए कोई को भी प्राप्त नहीं है। यह दिल तख्त ही विश्व का तख्त दिलाता है।"

अ.बापदादा 30.11.02

"संगमयुगी ब्राह्मण जीवन दिलाराम बाप की दिल पर आराम करने का समय है। दिल पर आराम से रहो। ब्रह्मा भोजन खाओ, ज्ञान अमृत पियो, शक्तिशाली सेवा करो और आराम मौज से दिल तख्त पर रहो। ... कर्म के खेल का पहला पूर ब्राह्मण सो देवताओं को मिलता है और दूसरा पूर क्षत्रियों को मिलता है।" अ.बापदादा 3.5.84

"जो यहाँ संगमयुग पर तख्त नशीन बनते हैं, वही वहाँ सतयुग में तख्त नशीन बनते हैं - संगमयुग में कौनसा तख्त मिलता है ? बापदादा के दिल का तख्त।"

अ. बापदादा 13.11.69

परमात्मा का दिल-तख्त इतना विशाल है कि इस पर कितनी भी आत्मायें एक साथ बैठ सकती हैं और हर आत्मा परम-सुख का अनुभव एक साथ कर सकती है।

संगमयुग पर परमात्मा के दिल-तख्त के अनुपम सुख के अनुभव के आधार पर ही भक्तों ने उनके लिए गाया है -

तुम हो तो पिया सब कुछ है वरना ये चमन बेगाना है ...
संगमयुग की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान ...

* ईश्वरीय राज-दरबार अर्थात् इन्द्र-सभा का अनुभव

भक्ति में परमात्मा के दरबार का वर्णन तो करते हैं परन्तु वह दरबार कहाँ लगता है, कैसे लगता है, उसका अनुभव कैसा होता है, उसका न तो ज्ञान होता है और न ही अनुभव होता है। इन्द्र-सभा का भी वर्णन तो करते हैं परन्तु इन्द्र कौन है, कैसी वह सभा होती है और कहाँ होती है, उसका भी यथार्थ ज्ञान और अनुभव किसी को नहीं होता है। अभी इस सत्य का ज्ञान होता है कि परमात्मा ही इन्द्र है और वह इस धरा पर ब्रह्मा-तन में आकर आत्माओं से मिलते हैं, जब ही हम आत्माओं को ईश्वरीय दरबार का अर्थात् इन्द्र-सभा का अनुभव होता है। दरबार तो राजाओं की गाई जाती है परन्तु ये ईश्वरीय दरबार राजा-महाराजा बनाने वाले और बनने वालों की है। इसका अनुभव अति न्यारा और अति प्यारा है और परम सुखमय है। इन्द्र-सभा का अनुभव भी अभी ही होता है। इस सभा का विधि-विधान ऐसा बना हुआ है कि इस में रहते आत्मायें जो भी नैतिक या अनैतिक कार्य करती हैं, उसका फल उनको स्वत: ही प्राप्त होता है, किसको कुछ कहने और करने की आवश्यकता नहीं है।

"किसी के अधीन अर्थात् प्रजा, अधिकारी अर्थात् राजा। ... अभी त्रिकालदर्शी बन एक-दो को जानते हो, देखते हो। अभी का ये राज दरबार सतयुग से भी श्रेष्ठ है। ऐसी राज दरबार सिर्फ संगमयुग पर ही लगती है।" अ.बापदादा 3.3.84

"यह संगमयुग की निराली, श्रेष्ठ शान वाली अलौकिक दरबार सारे कल्प में अति न्यारी और अति प्यारी है।... यहाँ हर एक ब्राह्मण बच्चा स्वराज्य अधिकारी है।... बापदादा बेहद की राज्य-सभा देख रहे हैं।" अ.बापदादा 9.10.87

* शिवरात्रि का ज्ञान और रात्रि जागरण के महत्व का अनुभव

शिवरात्रि-शिवजयन्ति मनाते हैं परन्तु उसके विषय में यथार्थ रीति कोई जानता नहीं है कि कैसे परमात्मा कल्प की रात्रि के समय आते हैं और रात-रात जागकर बच्चों की पालना करते हैं, उसका अलौकिक अनुभव अभी संगम पर ही बच्चों को प्राप्त होता है, जिसका भक्तिमार्ग में केवल गायन होता है, उसके यादगार में भक्त रात्रि जागरण करते हैं और उसके आधार पर सुख का अनुभव करते हैं।

* परमात्मा के शिक्षक स्वरूप का अनुभव

परमात्मा के साथ हमारे विशेष तीन सम्बन्ध हैं - बाप, शिक्षक और सत्गुरु। परमात्मा कैसे हमारा शिक्षक बनता है और क्या शिक्षा देता है, उससे पद क्या मिलता है, ये सब अनुभव भी अभी संगमयुग पर ही होता है। परमात्मा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, राजयोग सिखलाकर, पुरुषार्थ कराकर हमको देवी-देवता बनाता है।

"बाप के रूप में हर समय, हर परिस्थिति में साथी है लेकिन थोड़े समय के बाद साथी के बजाये साक्षी होकर देखने का पार्ट चलेगा। ... पुरुषार्थ में कभी अलबेले नहीं बनना। अभी इतने वर्ष पड़े हैं। सृष्टि-परिवर्तन के समय और प्राप्ति के समय दोनों को मिलाओ मत। ... इसलिए सिर्फ दो शब्द याद रखो - भगवान और भाग्य।"

अ.बापदादा 16.1.85

"स्वयं भाग्य विधाता बाप द्वारा आप सबका जन्म है। जब जन्म दाता ही भाग्य विधाता है तो जन्म कितना अलौकिक और श्रेष्ठ है। आप सबको भी अपने इस भाग्य के जन्म का नशा और खुशी है ना! साथ-साथ सम्बन्ध की विशेषता देखो - सारे कल्प में ऐसा सम्बन्ध अन्य किसी भी आत्मा का नहीं है। आप विशेष आत्माओं को ही एक द्वारा तीन सम्बन्ध प्राप्त हैं। एक ही बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी है।"

अ.बापदादा 15.12.03

"पढ़ाई भी देखो - तीनों काल की पढ़ाई है, त्रिकालदर्शी बनने की पढ़ाई है। पढ़ाई को सोर्स आफ इन्कम कहा जाता है। पढ़ाई से पद की प्राप्ति होती है। आपको इस पढ़ाई से क्या पद प्राप्त होता है? अब भी राजे और भविष्य भी राजपद। अभी स्व-राज्य है। राजयोगी स्वराज्य अधिकारी हो और भविष्य का राज्य-भाग्य तो अविनाशी है ही। इससे बड़ा पद कोई होता नहीं है। शिक्षक द्वारा शिक्षा भी त्रिकालदर्शी की है और पद भी दैवी राज्यपद है। ऐसा शिक्षक का सम्बन्ध सिवाए ब्राह्मण जीवन के न किसका हुआ है और न हो सकता है।"

अ.बापदादा 15.12.03

"कल्प-कल्प बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। अभी है संगमयुग, तुमको ट्रान्सफर होना है। ड्रामा के प्लेन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो। इस पार्ट की महिमा है। बाप आकर पढ़ाते हैं ड्रामा अनुसार। ... अभी तुम बाप को और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए।"

सा.बाबा 8.6.04 रिवा

"यह एक ही समय है, जब परमपिता परमात्मा आत्माओं पढ़ाते हैं। बाकी तो सारे ड्रामा में कभी पार्ट ही नहीं है, सिवाए इस संगमयुग के।"

सा.बाबा 8.6.04 रिवा

* गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ का अनुभव

लौकिक दुनिया में भी स्टूडेण्ट लाइफ को सर्वश्रेष्ठ जीवन कहा गया है क्योंकि निश्चिन्तता होती है और जीवन में कुछ सीखने की लगन होती है। सच्चे स्टूडेण्ट्स छल-कपट आदि से भी दूर रहते हैं। अभी हमारी ये जीवन गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ है। यह जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है। "अभी इस पुरुषोत्तम संगमयुग को तुम ब्राह्मणों के बिगर कोई भी नहीं जानते हैं। संगमयुग पर भगवान ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। तुम जानते हो अभी हम राजयोग सीख रहे हैं।... यह पुरुषोत्तम बनने का युग है। हीरे जैसा युग गायन है ना। फिर कम हो जाता है। यह संगमयुग है डायमण्ड एज। सतयुग है गोल्डन एज। यह तुम जानते हो स्वर्ग से भी यह संगम अच्छा है। हीरे जैसा जन्म है। ... रुहानी फादर और रुहानी नॉलेज संगम पर ही मिलती है। ... तुम बच्चों को भी यह याद रहे तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। स्टूडेण्ट लाइफ इज दी बेस्ट लाइफ। यह सोर्स आफ इन्कम है।... इसीलिए गायन है - अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो।" सा.बाबा 16.4.68 रात्रि क्लास

"हम कहाँ से आते, कैसे आते, कैसे 84 का चक्र हम लगाते हैं, यह तो जरूर तुम स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में होना चाहिए। ... यह नॉलेज तुम बच्चों को ही है, दुनिया में और कोई भी यह नॉलेज नहीं जानते हैं। ... तुम बच्चों को अन्दर में कितना गद्गद् होना चाहिए। जब धारणा हो तब ही अन्दर में वह खुशी आये। बाबा हमको कितनी वण्डरफुल नॉलेज देते हैं, जिस नॉलेज से हम अपना वर्सा पाते हैं।" सा.बाबा 12.5.04 रिवा.

* वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुभव

संगमयुग पर ही यथार्थ ज्ञान द्वारा हमको पता चलता है कि हम सभी आत्मा हैं, एक परमपिता परमात्मा के बच्चे भाई-भाई हैं, प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के बच्चे भाई-बहन हैं और विश्व-नाटक के अनादि अविनाशी पार्टधारी है। इस सत्य की अनुभूति से परस्पर भ्रातृत्व-भाव जाग्रत होता है, जो सुखी जीवन का आधार स्तम्भ है। आत्मा को ये तीनों स्थितियाँ एक साथ अनुभव होती हैं। अभी संगमयुग पर ही इस हम ईश्वरीय परिवार का अनुभव करते हैं और विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बोते हैं।

"सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला, सच्चा परिवार मिला, सच्चा स्नेह मिला, सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। ... इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया।" अ.बापदादा 12.3.85

* विश्व-परिवार और परिवार के पूर्वजपन का अनुभव

विश्व हमारा परिवार है और हम सबके पूर्वज हैं। पूर्वज होने के नाते हमारा क्या कर्तव्य है, यह अनुभव हमको संगमयुग पर होता है और उस अनुसार कर्तव्य भी संगमयुग पर ही करते हैं। परमात्मा इस कल्प-वृक्ष का बीज है, उसके साथ सम्बन्ध होने से सारे वृक्ष अर्थात विश्व-परिवार से सम्बन्ध जुट जाता है और सर्व आत्माओं से पारिवारिक अनुभूति होती है। ये विश्व की सर्व आत्माओं से पारिवारिक घनिष्टता का अनुभव होना भी अति न्यारा और अति प्यारा है, अलौकिक है, जो संगमयुग पर ही सम्भव होता है।

"यह है रुहानी प्यार। रुहानी बच्चों का रुहानी बाप के साथ और बच्चों का बच्चों के साथ। तुम बच्चों का आप में भी बहुत प्यार होना चाहिए यानी आत्माओं का आत्माओं के साथ भी प्यार चाहिए। ... तुम सब आत्मायें भाई-भाई हो। ड्रामा प्लेन अनुसार सिर्फ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही रुहानी बाप आकर रुहानी बच्चों को सम्मुख यह समझाते हैं।"

सा.बाबा 1.6.04 रिवा.

* आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम (Sapling) और विभिन्न धर्मों की स्थापना का अनुभव

यह विश्व एक अनादि-अविनाशी कल्प वृक्ष है, जिसकी नई रचना होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु फिर भी कल्प-कल्प परमात्मा ज्ञान देकर इसकी कलम लगाते हैं, जिससे यह नवीनता को, सतोप्रधानता को प्राप्त होता है। हम भी परमात्मा के साथ इसकी कलम लगाने में सहयोगी होते हैं। ये कलम लगाने का ज्ञान और अनुभव भी हमको संगमयुग पर ही होता है।

* कर्म और फल के विधि-विधान का अनुभव

* कर्मयोग और कर्मभोग तथा दोनों के अन्तर का अनुभव

"कर्म के वश होकर चलने वाले "कर्मभोगी"। जो कर्मभोग के वश हो जाते हैं अर्थात् कर्म के भोग भोगने में अच्छे वा बुरे में कर्म के वशीभूत हो जाते हैं।... यह राजाओं का राजा बनने का योग है। आप सभी राजयोगी हो या राजाई भविष्य में प्राप्त करनी है? अभी संगमयुग में भी राजा हो या सिर्फ भविष्य में बनने वाले हो? जो संगमयुग में राज्य पद नहीं पा सकते, वे भविष्य में क्या पा सकते हैं।"

अ.बापदादा 30.6.73

* धर्मराज और धर्मराज पुरी के विधि-विधान का अनुभव

ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित एक घटना-चक्र है। इसके विधि-विधान का ज्ञान और अनुभव भी हमको संगमयुग पर होता है, जब परमात्मा आकर कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। उन सब विधि-विधानों को जानकर ही हम श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होते हैं।

* विभिन्न धर्मों के अस्तित्व और धर्म-ग्रन्थों के सार का अनुभव

संसार में विभिन्न धर्म और उनके विभिन्न धर्म-शास्त्र हैं, उन सबका सार परमात्मा आकर बताते हैं, जिससे उनकी यथार्थता का अनुभव होता है और धर्म के आधार पर होने वाली विभिन्न घटनाओं का भी अनुभव होता है।

लव एण्ड लॉ के बैलेन्स के सन्तुलन का अनुभव

राजा जनक के समान विदेही स्थिति का अनुभव

मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का अनुभव

स्वराज्य अधिकारीपन का अनुभव

अहंकार और हीनता से मुक्त जीवन का अनुभव

खुदा दोस्त का अनुभव

बेफिकर बादशाह का अनुभव

"इस बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे वह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है।... सदा रुहानी नशे में बेग़मपुर के बादशाह हैं - इस अधिकार में रहो, नीचे नहीं आओ।... बाप ने हर ब्राह्मण बच्चे को तख्तनशीन राजा बना दिया है।" अ.बापदादा 12.11.92

बाप के हाथ और साथ का अनुभव

बालकपन और मालिकपन का अनुभव

"मालिक बन इस रचना देह को सेवा में लगाते हो ? जब चाहे जो चाहें मालिक बन कर सकते हो ? पहले-पहले इस देह के मालिकपन का अभ्यास ही प्रकृति का मालिक वा विश्व का मालिक बना सकता है। अगर देह के मालिकपन में सम्पूर्ण सफलता नहीं तो विश्व के मालिकपन में भी सम्पन्न नहीं बन सकते हो। वर्तमान समय की यह जीवन भविष्य का दर्पण है।" अ.बापदादा 14.12.85

"इस समय जितना संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को स्व के अधिकार में रखते हो, उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो। अभी इस समय ईश्वरीय बालक हो और अभी के बालक ही विश्व के मालिक बनेंगे। बिना बालक बनने के मालिक नहीं बन सकेंगे।"

अ.बापदादा 9.12.85

मास्टर सर्वशक्तिवान का अनुभव

आत्मा के लाइट-माइट स्वरूप का अनुभव

"चैक करो नॉलेजफुल के साथ पावरफुल भी बने हो वा सिर्फ नॉलेजफुल बने हो! यथार्थ

नॉलेज लाइट और माइट का स्वरूप है। ... अभी दुखधाम से संगमयुग में पहुँच गये हो। पुरुषोत्तम संगमयुग में बैठे हो। अभी नॉलेज को शक्ति के रूप में धारण करो भी और कराओ भी। जितना स्वयं फोर्स का कोर्स किया हुआ होगा, उतना ही दूसरों को भी करायेंगे।"

अ.बापदादा 21.3.85

"संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत, निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करते हो। ... बाप समान बनने की होली है।" अ.बापदादा 25.3.86

"आपके अच्छे बनने के वायब्रेशन कैसी भी नेगेटिव सीन को पॉजिटिव में बदल देगी, इतनी शक्ति आप बच्चों में है, सिर्फ यूज़ करो। शक्तियां बहुत हैं, समय पर यूज़ करके देखो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 31.12.96

"राज्य अधिकारी बाप बनेगा या आप बनेंगे ? ... इसलिए बाप को आप सभी को कर्मातीत बनाना ही है। ... बाप को बनाना है और आप सबको बनना ही है। यह है स्वीट ड्रामा। ... बाप भी कहते हैं - यह बना-बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। ... है ड्रामा, लेकिन ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म में बहुत ही पॉवर्स मिली हुई हैं।"

अ.बापदादा 10.3.96

गार्डन आफ अल्लाह अर्थात् खुदा के बगीचे का अनुभव
कमल पुष्प सम जीवन का अनुभव
परमात्मा के करन-करावनहार का ज्ञान और अनुभव

अभी पुरुषोत्तम संगमयुगपर कलियुग के सुखों, भक्ति मार्ग का ज्ञान भी है तो सतयुगी सुखों के विषय में भी ज्ञान और ज्ञान के आधार पर सूक्ष्म अनुभव भी है और संगमयुग के रीति-रस्म और सुखों का भी अनुभव है।

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)

पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुग का तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक ज्ञान और अनुभव

पुरुषोत्तम संगमयुग और द्वापर-कलियुग का ज्ञान तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुषोत्तम संगमयुगी, सतयुगी-त्रेतायुगी और द्वापर-कलियुगी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुषोत्तम संगमयुग की खुशियाँ और उनका आधार

पुरुषोत्तम संगमयुग और पुरुषार्थ

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं जड़ प्रकृति

पुरुषोत्तम संगमयुग, विधि-विधान और विधाता

पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुग का तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक ज्ञान और अनुभव

"अभी जो समय चल रहा है, यह समय भी संगमयुग भाग्यवान युग है। सतयुग को भी भाग्यवान कहते हैं लेकिन वर्तमान संगमयुग का समय उससे भी भाग्यवान है क्योंकि इस संगमयुग में ही बाप द्वारा अखण्ड भाग्य का वरदान, वर्सा प्राप्त होता है।"

अ.बापदादा 4.9.05

इस संगमयुगी जीवन का सही लाभ उठाने के लिए उसका महत्व, उसकी श्रेष्ठता को समझना अति आवश्यक है। कई आत्मायें अज्ञानतावश संगम के सुख को भूलकर सतयुग के सुख की लालसा में जीते हैं। ऐसे संकल्प वाले संगमयुग के सुख से भी वंचित हो जाते हैं तो सतयुग के सुख से भी वंचित हो जाते हैं क्योंकि सतयुगी सुख तो इस संगमयुगी सुख की परछाई मात्र है या कहें कि इस संगमयुग सुखों का प्रतिफल है। इसलिए दोनों सुखों का तुलनात्मक अध्ययन अति आवश्यक है।

संगमयुग पर आत्मा को कलियुग और सतयुग दोनों का ज्ञान होता है, इसलिए उस ज्ञान के साथ आत्मा को जो सुख अनुभव होता है, वह सतयुग में नहीं हो सकता क्योंकि वहाँ भूतकाल और भविष्य का ज्ञान नहीं होगा। वास्तविकता तो ये है कि अगर आत्मा को वहाँ भूतकाल और भविष्य का ज्ञान हो तो उस समय के सतोप्रधान सुख भी फीके हो जायें क्योंकि

आत्मा को भविष्य में होने वाले दुख की चिन्ता उस समय के सुखों से भी वंचित कर दे।
"कोई-कोई कहते - बाबा, यहाँ अजुन कब तक रहेंगे, हम जल्दी जायें ? यहाँ बहुत दुख है। आगे चलकर भी ऐसे-ऐसे कहेंगे। बाबा कहते हैं - ऐसे क्यों कहते हो ? अरे, इस समय तो तुम ईश्वर के सम्मुख हो, फिर तो डिग्री डिग्रेड हो जायेगी। जाकर दैवी सन्तान बनेंगे, अभी यह शीतल गोद उस दैवी गोद से भी अच्छी है।"

सा.बाबा 11.07.03 रिवा.

"मनुष्य का जन्म सबसे ऊंच गाया जाता है। वह कौन-सा ?... वास्तव में तुम्हारा यह जन्म उत्तम है, जो बाप बैठ तुम्हारी सेवा करते हैं।"

सा.बाबा 12.07.03 रिवा.

"अतीन्द्रिय सुख संगम पर ही गाया जाता है, जब बाप आते हैं तो उनका संग होता है तो सुख भासता है। सतयुग के सुख को अतीन्द्रिय सुख नहीं कहेंगे।"

सा. बाबा 16.8.69 रिवा.

"इस संगमयुग का भी अभी तुमको पता पड़ा है। जबकि बाप पुरुषोत्तम बनाने आते हैं। तो पुरुषोत्तम बनना ही है। मुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम, जीवनमुक्ति में जायें तो भी पुरुषोत्तम। यह नॉलेज आत्मा को अभी ही मिलती है, आत्मा ही धारण कर संस्कार ले जाती है साथ में।"

सा.बाबा 11.1.69

* संगमयुग का सुख चढ़ती कला का सुख है अर्थात् आत्मा ऊपर चढ़ती है जबकि सतयुगी सुख उतरती कला का सुख है अर्थात् आत्मा की कलायें धीरे2 उतरती जाती है और समय की गति के साथ विश्व में भौतिक सुखों की कलायें भी गिरती जाती हैं। इसी सत्य का ज्ञान होने के कारण अभी ज्ञानी आत्माओं को कोई न कोई परिस्थितियाँ, कर्मभोग आदि होते भी वे परम सुख का अनुभव करते हैं। सतयुग-त्रेता में भले ही कोई दुख नहीं होगा, आत्माओं को उनकी आवश्यकता से अधिक साधन-सम्पत्ति होगी, इसलिए कोई कमी अनुभव नहीं होगी परन्तु लॉ यह कहता है कि जनसंख्या वृद्धि के कारण साधन-सम्पत्ति की प्रति व्यक्ति जो कमी होती जाती है, आत्माओं की जो कलायें गिरती जाती हैं, उसकी सूक्ष्म में महसूसता होनी ही चाहिए और आत्माओं में होती ही होगी। आत्मा ने अपनी सतोप्रधान स्थिति में जो सर्वोच्च सुख भोगा है, उसकी भेंट में आगे मिलने वाला सुख कम ही होगा, जिस कमी की सूक्ष्म महसूसता आत्मा में होनी ही चाहिए परन्तु उसको दुख नहीं कह सकते हैं क्योंकि वहाँ आत्मा ने कोई विकर्म नहीं किया है, इसलिए दुख की महसूसता हो नहीं सकती। वह सुख की डिग्री कम होती है अर्थात् आत्मा का संचित खाता कम होता है।

"सारी नालेज तुम्हारी बुद्धि में अभी है... वहाँ यह मालूम हो फिर तो सुख की भासना ही न रहे। यही सोच रह जाये हम फिर नीचे गिरेंगे।" सा. बाबा 11.1.69

"अभी ऐसा प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है। तो प्रत्यक्ष फल खाने वाले हो ना कि भविष्य के आधार पर सोच रहे हो। भविष्य तो है ही लेकिन भविष्य से भी श्रेष्ठ "प्रत्यक्ष फल" है। प्रत्यक्ष को छोड़कर भविष्य के इन्तजार में नहीं रहना है। अभी बाप के बने हो और अभी फल भी मिला है।" अ.बापदादा 14.4.77

सतयुग का जीवन एक उस अबोध बालक के समान है, जो भूत काल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त निश्चिन्त, निर्भय, निर्वैर, निर्विकल्प ... होता है परन्तु संगमयुग पर परमात्मा से जो ज्ञान मिलता है, जिसको ज्ञान पक्ष में वर्णन किया गया है, वहाँ आत्माओं को नहीं होता है और उस ज्ञान के फलस्वरूप आत्मा को अभी जो सुख अनुभव होता है, जिसको अनुभूति पक्ष में लिखा गया है, वह सब अनुभव सतयुग भी नहीं होता है।

* स्वर्ग का जीवन क्या है और संगमयुग का जीवन क्या है ?

* वर्तमान जीवन की स्मृति ही भविष्य जन्म का आधार है।

सतयुग में देवतायें सदा शान्ति में रहते हैं, उनका खान-पान, बोलचाल, संकल्प बहुत ही सीमित होते हैं यदि अभी हम उस स्थिति के अनुरूप शान्ति में रहें, कम बोलें, व्यर्थ न सुनें, खान-पान संतुलित रखें, संकल्प, सोचना आदि कम हो तो अभी हम स्वर्ग से भी उच्च सुख का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि अभी हमको तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान है और परमपिता परमात्मा का साथ भी है। अभी हमारी शक्ति व्यर्थ बोलने, व्यर्थ सुनने, व्यर्थ खाने और पचाने, व्यर्थ सोचने में चली जाती है, जिससे हम संगम के सच्चे सुख को अनुभव नहीं कर पाते हैं, इसलिए स्वर्ग के सुखों का आकर्षण अधिक रहता है।

सतयुग से पहले विनाश होगा, इसलिए विश्व में स्वत: ही शान्ति-सन्नाटा होगा और आत्मायें शान्तिधाम में होकर आयेंगी, इसलिए वह शान्ति भी उनको खींचेगी। सारी प्रकृति पूर्ण सौंदर्य में होगी इसलिए वे आत्मायें साक्षी होकर उसके सौंदर्य का अवलोकन करेंगी, पेन्टिंग, संगीत आदि में अभिरुचि होगी परन्तु अभी के समान ईश्वरीय कर्तव्य में जो आनन्द का अनुभव होता, वह देवताओं को नहीं होगा। अभी आत्मा, आत्मा-परमात्मा, तीनों लोको और तीनों कालों के ज्ञान से और परमात्मा की श्रीमत से जो कर्तव्य करती है, जो जीवन व्यतीत करती है, वह परमानन्दमय है।

* स्वर्ग की आशा में वर्तमान के सच्चे सुख के समय को गँवा देना भी एक प्रकार की अज्ञानता है। ज्ञानी आत्मा जिस समय जहाँ खड़ी है, वहीं अपने स्व-रूप में स्थित होकर उसका

लाभ उठाती है, उसमें ही सच्चे सुख का अनुभव करती है। वर्तमान जीवन पर ही भविष्य जीवन का आधार है।

* सतयुग-त्रेता में कम बोलने, कम खाने, कम सोचने, कम सुनने, व्यर्थ न होने से समयान्तर में आत्मिक शक्ति का जो ह्रास होता है, वह कम होता है, जिससे आत्मा को एकाग्रता एवं एकान्त की आकर्षण होती है, उससे अवस्था शान्त रहती है शान्ति का अनुभव करती है। सतयुग में यही स्थिति आत्माओं को शान्ति के लिए आकर्षित करती है परन्तु संगम पर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होने पर ये धारणायें धारण करने से आत्मा को परमपिता परमात्मा और परमधाम की ओर आकर्षण होती है, जिससे उनकी स्मृति से आत्मिक ह्रास नहीं होता है परन्तु आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

सतयुग की पवित्रता अर्थात् विषय भोग से मुक्त आत्मिक शक्ति के आधार पर होती है। आत्मिक शक्ति के आधार पर आत्मा विषय-भोग से मुक्त तो रहती हैं परन्तु फिर भी उतरती कला अवश्य होती है।

संगमयुग की पवित्रता अर्थात् विषय भोग से मुक्ति ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय याद से होती है। ईश्वरीय ज्ञान, परमात्म प्रेम के आधार पर ब्रह्मचर्य की धारणा होने आत्मा विषय-भोग से तो मुक्त होती ही है परन्तु उसके साथ आत्मा की चढ़ती कला भी होती है।

* सतयुग-त्रेता है जीवनमुक्त स्थिति। जैसे परमधाम में आत्मायें अशरीरी मुक्त अर्थात् संकल्प-विकल्पों, सुख-दुख आदि से मुक्त रहती हैं, उसी तरह सतयुग-त्रेता में आत्मायें जीवनमुक्त अर्थात् जीवन में रहते मुक्त अर्थात् सुख-दुख दोनों के अनुभव से मुक्त, संकल्प-विकल्पों से मुक्त पूर्ण शान्ति में रहती हैं। आत्मा का संकल्प-विकल्प सत्य-असत्य, कृत्य-अकृत्य, पुण्य-पाप, सफलता-असफलता, अपना-पराया, प्राप्ति-अप्राप्ति आदि के निर्णय के लिए संदेह होने के कारण ही चलते हैं। जब वहाँ दोनों ही नहीं होंगे तो संकल्प-विकल्प क्यों चलेगा! वहाँ सदा ही निश्चिन्त होंगे। संकल्प-विकल्प चलने का मूल कारण देहाभिमान और अनिश्चितता है। अभी परमात्मा ने हमको विश्व-नाटक का जो यथार्थ ज्ञान दिया है, उस ज्ञान को धारण करके संकल्प-विकल्प से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं।

* परमधाम में देह नहीं, इसलिए संकल्प-विकल्प का प्रश्न ही नहीं है, सतयुग-त्रेता में देहाभिमान नहीं, इसलिए दुख-अशान्ति की कोई बात ही नहीं, इसलिए आत्मायें संकल्प-विकल्प से भी मुक्त रहती हैं। संगमयुग पर ज्ञान की चरमोत्कृष्ट अवस्था है, परमपिता परमात्मा से विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान मिला है, उसकी यथार्थ धारणा से अवस्था साक्षी होती है और संकल्प विकल्प से मुक्त होकर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। इस

संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ है। वास्तव में परमधाम में मुक्ति का कोई अनुभव नहीं और सतयुग में जीवनबन्ध का ज्ञान नहीं इसलिए वहाँ की जीवनमुक्ति के अनुभव का भी कोई विशेष महत्व नहीं है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करने का यही समय यही संगमयुग का समय है।

"भविष्य का ताज और तिलक इसी जन्म के प्राप्ति की प्रालब्ध है। विशेष प्राप्ति का समय वा प्राप्तियों की खान प्राप्त होने का समय अभी है। अभी नहीं तो भविष्य प्रालब्ध भी नहीं। इसी जीवन का गायन है - "दाता के बच्चों को, वरदाता के बच्चों को अप्राप्त नहीं कोई वस्तु"। भविष्य में फिर भी एक अप्राप्ति तो होगी ना! बाप का मिलन तो नहीं होगा ना। ... रोज़ अमृतवेले याद करो - मैं कौन!" अ.बापदादा 14.12.83

"स्थान और समय को संख्या प्रमाण ही चलाना पड़ेगा।... फिर भी बाप के घर जैसा दिल का आराम कहाँ मिल सकेगा! इसलिए सदा हर हाल में सनतुष्ट रहना, संगमयुग की वरदानी भूमि के तीन पैर पृथ्वी सतयुग के महलों से भी श्रेष्ठ है। इतनी बैठने की जगह मिली है, यह भी बहुत श्रेष्ठ है। यह दिन भी फिर याद आयेंगे।"

अ.बापदादा 29.4.84

याद या योग - जैसी स्मृति वैसे स्थिति और जैसा संग वैसा रंग। साकार ब्रह्मा बाप साकार और निराकार दोनों का संगम है, इसलिए उनकी याद से उनके साथ से ईश्वरीय गुण-कर्तव्य और साकार बाप के दैवी गुण-कर्तव्यों की याद और धारणा होती है क्योंकि उनकी याद में साकार और निराकार दोनों की याद समाई हुई होती है, इसलिए उस याद से आत्मा की सदा ही चढ़ती कला होती है। सतयुग में दोनों ही बाप का ज्ञान नहीं होगा। भल ब्रह्मा बाप की आत्मा सतयुग में होगी परन्तु न ये ज्ञान होगा और न ही ये सम्बन्ध होगा तथा न इस ज्ञान और सम्बन्ध से प्राप्त होने वाला सुख होगा।

ज्ञान मार्ग में केवल निराकार रूप की याद से निराकारी गुणों अर्थात् निर्संकल्पावस्था होती, विकर्म विनाश होते परन्तु दैवी गुणों की धारणा और निराकार के संगमयुगी गुण-कर्तव्यों की धारणा नहीं होती इसलिए उसको यथार्थ याद नहीं कह सकते और उससे यथार्थ रूप में मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव भी नहीं होता परन्तु साकार ब्रह्मा बाप में निराकार बाप की याद से दोनों ही प्राप्तियां अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव होता है, जो ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है। सतयुग में दोनों का न ज्ञान होगा और न ही उनके गुण-कर्तव्यों का अनुभव होगा, इसलिए आत्मा की कलायें उतरती कला में ही होंगी।

* संगमयुगी जीवन - जीना स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण के लिए और खाना जीने के लिए है। सतयुग में जीना खाने-पीने अर्थात् इन्द्रीय सुखों के लिए है परन्तु द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण इन्द्रीय सुखों के साथ अनेक विकर्म भी करते हैं, जो परिणामत: आत्मा के दुख का कारण बनते हैं।

"शूद्र से अब तुम ब्राह्मण ब्रह्मा मुखवंशावली बने हो। क्यों? वर्सा लेने के लिए। ब्रह्मा मुखवंशावली सिर्फ संगम पर ही बनते हैं। तुम्हारे लिए ही संगम है।... अभी आत्मा को खुराक मिली है।... इन देवताओं में तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान तुमको मिलता है, जिससे तुम देवता बनते हो। देवताओं को ज्ञानी नहीं कहेंगे।" सा.बाबा 12.8.02 रिवा.

"यह ज्ञान की बातें अभी यहाँ ही चलती हैं, सतयुग में नहीं चलती हैं। वहाँ तो न ज्ञान है, न अज्ञान है। ज्ञान देने वाला वहाँ कोई है नहीं। ज्ञान से तो प्रालब्ध पा ली। अभी तुम ज्ञान से प्रालब्ध पा रहे हो।" सा.बाबा 13.8.02 रिवा.

* देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने अनन्त स्वरूप में स्थित हो जीवन के परम सुख, परमानन्द का अनुभव होता है, ये संगमयुगी सुख कल्प की परम प्राप्ति है। सतयुग में इन्द्रीय सुखों की भरमार होगी, दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होगा परन्तु ऐसी परमानन्दमय स्थिति का अनुभव वहाँ नहीं होगा, साक्षी और त्रिकालदर्शी बनकर इस विश्व-नाटक को अवलोकन का परम सुख वहाँ नहीं होगा। अभी संगमयुग पर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमधाम की याद और परमात्मा की याद से जो शान्ति की अनुभूति होती, वह सतयुग में नहीं होगी। इस सत्य को अनुभव कर और इस जीवन की महानता को समझकर जीवन की परम शान्ति, परमानन्द, परम सुख का अनुभव करो। ये जीवन परमानन्दमय है।

"तुम राजऋषि हो, तुम्हारे भी सुख के दिन यहाँ बीतने चाहिए। अगर बच्चे अपने को राजऋषि समझते हैं और निश्चय अटल-अडोल कायम है तो। ... वास्तव में कृष्ण स्वदर्शन चक्रधारी है नहीं, स्वदर्शन चक्रधारी तो ब्राह्मण कुलभूषण हैं, जिनको परमपिता परमात्मा स्वदर्शन चक्र-धारी अथवा त्रिकालदर्शी बनाते हैं। ... सतयुग से तो सीढ़ी नीचे उतरनी होती है। वहाँ यह ज्ञान होता नहीं। वहाँ यह मालूम होता तो तुम राजाई कर न सको, यही चिन्ता लग जाये। ... तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि विनाश जल्दी हो तो हम स्वर्ग में जायें क्योंकि यह जीवन बड़ी दुर्लभ है।" सा.बाबा 17.2.03 रिवा.

"भविष्य प्रालब्ध तो है विश्व का राज्य लेकिन इस समय की प्रालब्ध है - "सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और दूसरों को सम्पन्न बनाना"। इस समय की प्रालब्ध सबसे श्रेष्ठ

है। भविष्य की तो है ही गारन्टी। भगवान की गारन्टी कभी बदल नहीं सकती।"

अ.बापदादा 31.12.89

जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति है स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि और सत्य ज्ञान।
द्वितीय प्राप्ति है स्वस्थ तन, स्वस्थ जन अर्थात् सम्बन्ध।
तृतीय प्राप्ति है स्वस्थ धन एवं साधन।
इसके सम्बन्ध में किसी अंग्रेजी के विद्वान ने कहा है -
Wealth is lost nothing is lost, health is lost something is lost, but character is lost all things is lost.

संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा आत्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होने से कर्मभोग आदि होते भी इन सब प्राप्तियाँ की अनुभूति होती है। सतयुग में और तो सभी बातें होंगी परन्तु अभी के समान न यथार्थ ज्ञान होगा और न परमात्मा के सम्बन्ध का अनुभव होगा। "जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरुप होना इसको कहते हैं - स्व -स्थिति वा अनादि स्थिति। ... जिन चार बातों के होने से अनादि स्थिति आटोमेटिकली रहती है ? सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की स्थिति स्वत: ही रहती है। वे चार बातें हैं - हेल्थ, वेल्थ, हैप्पी और होली।"

अ.बापदादा 14.6.72

* अमरत्व की प्राप्ति - अभी आत्मा यथार्थ आत्मिक ज्ञान की धारणा से मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त अमरत्व का अनुभव करती है परन्तु सतयुग में आत्मिक शक्ति और नाममात्र के आत्मिक ज्ञान के आधार पर अमरत्व का अनुभव करती है। संगमयुग में ईश्वरीय प्राप्तियों में जीना और यथा समय शान्ति से देह का त्याग करना और धारण करना ही अमरत्व का सच्चा अनुभव है। अभी की ईश्वरीय प्राप्तियाँ महान हैं, इनके अस्तित्व को जानो, पहचानो और अनुभव करो, उनका सुख लो।

* आत्मा को त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बनने का राज़ अभी संगम पर ही पता पडता है, जिसको जानकर आत्मा त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बनती है। सतयुगी देवताओं को त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री नहीं कह सकते हैं क्योंकि उनको न त्रिलोक का ज्ञान है और न त्रिकाल का ज्ञान है और न ही यथार्थ रीति से आत्मा के तीसरे नेत्र का ज्ञान है।

सतयुग के सुखी जीवन का आधार पंच तत्वों से प्राप्त साधन-सम्पत्ति है परन्तु संगयुगी जीवन के सुखों का आधार ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वर बाप से प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियाँ हैं। सतयुग की साधन-सम्पत्ति विनाशी है परन्तु संगमयुग की साधन-सम्पत्ति अविनाशी है, इसलिए सतयुग में प्राप्त होने वाले सुख पर उपयोगिता ह्रास नियम लागू होगा परन्तु संगमयुग

के सुख पर नहीं। संगमयुग का सुख तो उपभोग करने से बढ़ता है अर्थात् योग में जितना गहरा जाओ, उतना आनन्द बढ़ता है।

संगमयुग की प्राप्तियों को पाकर और धारण करके हम ऊपर परमधाम घर जाते हैं परन्तु सतयुग की प्राप्तियों को पाकर और उपभोग करते हुए नीचे त्रेता में और फिर द्वापर-कलियुग में आ जाते हैं।

संगमयुग की प्राप्तियां और उपभोग हमको भक्ति के भटकने से मुक्त करती हैं परन्तु सतयुग और त्रेतायुग की प्राप्तियां और सुखों का उपभोग भक्ति मार्ग में ले जाता है।

"तुम बेफिकर बादशाह बन जाते हो। ... जिनको कोई भी फिकर होगा, देवतायें इस बेफिकर बादशाही का मजा नहीं ले सकेंगे। विश्व की राजाई तो 20 जन्म होगी लेकिन यह बेफिकर बादशाही और दिल-तख्त इस एक ही युग में एक जन्म के लिए ही मिलता है।"

अ.बापदादा 25.12.89

"देवताई खुशी और ब्राह्मणों की खुशी में भी फर्क है। यह ब्राह्मण जीवन की परमात्म खुशी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति देवताई जीवन में भी नहीं होगी। ... दूसरे भी आपकी खुशी की जीवन को देखकर मन से अनुभव जरूर करते हैं कि इनको कुछ मिला है, जो इतना खुश रहते हैं।"

अ.बापदादा 25.12.89 पार्टी 1

"यह संगमयुग है ही कल्याणकारी युग। इन जैसा और कोई युग होता ही नहीं, जबकि बाप आते हैं। सतयुग को कल्याणकारी नहीं कहेंगे। वहाँ किसका कल्याण होता नहीं है। सबका कल्याण संगम पर ही होता है।"

सा.बाबा 12.8.06 रिवा.

* देवताओं में न भूतकाल का चिन्तन और न भविष्य की चिन्ता होगी परन्तु उनमें न शुभ-चिन्तन होगा, न शुभ-चिन्तक होंगे, उनमें न प्रभु-चिन्तन होगा तथा उनमें खुशी प्राप्ति की अनुभूति भी नहीं होगी। उनमें स्वभाविक (Natural) शान्ति की शक्ति होगी, इसलिए वे दैहिक चिन्तन से मुक्त, शान्ति और खुशी में होंगे। वहाँ साधन-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में होंगे, इसलिए उनको किसी बात का चिन्तन और चिन्ता नहीं होगी परन्तु उनमें ज्ञान-चिन्तन से जो शान्तिधाम की अनुभूति, सूक्ष्मवतन की अनुभूति, साक्षी होकर विश्व-नाटक के अवलोकन की अनुभूति नहीं होगी।

"इम्तहान की रिजल्ट तो विनाश के समय ही निकलती है। एक तरफ रिजल्ट निकलेगी, दूसरी तरफ विनाश शुरू होगा, फिर तो हाहाकार हो जाता है। इसलिए विनाश होने के पहले, लड़ाई होने के पहले तैयार होना है। ... यह सारी सफाई भी होनी है। ... जब महाराजा-महारानी तख्त पर बैठते हैं तब नया संवत शुरू होता है। जब तक नया संवत शुरू हो तब

तक पुराना जरूर कायम रहेगा। ... हम कहते ही हैं फर्स्ट प्रिन्स-प्रिन्सेज राधे-कृष्ण, फिर भी उस समय सतयुग नहीं कहेंगे। जब तक लक्ष्मी-नारायण तख्त पर नहीं बैठे हैं, तब तक कुछ न कुछ खिटपिट होती रहेगी, भल राधे-कृष्ण आ जाते हैं।"

सा.बाबा 3.7.02 रिवा.

संगमयुग और दैवी गुण

संगमयुग पर निराकार परमपिता परमात्म शिव और उनके साकार माध्यम ब्रह्मा के गुण-कर्तव्य अथवा निराकार बाप के साकार माध्यम के द्वारा गुण-कर्तव्यों का अनुभव करते हैं और उनको जीवन में धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं। इन दोनों ही गुणों के आधार पर सतयुगी सृष्टि का निर्माण होता है।

विश्व-बन्धुत्व की भावना संगमयुग पर ही जाग्रत होती है, जब आत्मा को परमपिता परमात्मा द्वारा आत्मा-आत्मा भाई-भाई का ज्ञान मिलता है और इस भावना से आत्मा को विश्व-परिवार का सुख अनुभव होता है, जिस पारिवारिक भावना से आत्माओं में अन्य आत्माओं के कल्याण करने की भावना बलवती होती है। सतयुग में भल परस्पर अगाध प्यार होगा परन्तु विश्व-बन्धुत्व की वास्तविक भावना जाग्रत हो नहीं सकती। क्योंकि परिवार में मात-पिता और बच्चे होते हैं, जो ज्ञान हमको अभी संगमयुग में ही मिलता है। संगमयुग पर ही आत्माओं में पारिवारिक भावना जाग्रत होती है और उस भावना के जाग्रत होने से जो सुख अनुभव होता है वह भी अभी संगमयुग पर ही होता है, सतयुग में भी ये पारिवारिक भावना से उत्पन्न सुख की अनुभूति नहीं होगी।

"स्थान और समय को संख्या प्रमाण ही चलाना पड़ेगा। ... फिर भी बाप के घर जैसा दिल का आराम कहाँ मिल सकेगा! इसलिए सदा हर हाल में सन्तुष्ट रहना, संगमयुग के वरदानी भूमि के तीन पैर पृथ्वी सतयुग के महलों से भी श्रेष्ठ है। इतनी बैठने की जगह मिली है, यह भी बहुत श्रेष्ठ है। यह दिन भी फिर याद आयेंगे।" अ.बापदादा 29.4.84

"कृष्ण से भी ब्रह्मा ऊंच हो गया। ... कृष्ण की आत्मा से भी यह अच्छी हुई ना क्योंकि इस समय सेवा करते हैं। कृष्ण की आत्मा तो सिर्फ प्रालब्ध भोगेगी।... वास्तव में हीरे जैसा जन्म तो यह है क्योंकि यहाँ तुमको प्राप्ति होती है, वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि प्राप्ति होती है।"

सा.बाबा 19.06.03 रिवा.

"वहाँ सतयुग सर्व प्राप्ति है लेकिन इस संगमयुग का उससे कम नहीं है। अभी भी राजा हो ना! ... इस समय सब दिलतख्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा हो। इतना रुहानी नशा रहता है ना! क्योंकि इस समयच के स्वराज्य से ही भविष्य राज्य प्राप्त होता है। यह संगमयुग

बहुत-बहुत-बहुत अमूल्य और श्रेष्ठ है।" अ.बापदादा 31.12.02

"यहाँ तो फिर समझते - बाप के साथ रहने में मजा है। प्याला (अमृत का) ही बाप पिलाते हैं। बाप के साथ रहना स्वर्ग से भी अच्छा है। किसकी तकदीर में न है तो तदवीर भी क्या कर सकते।" सा.बाबा 4.1.69 रात्रि क्लास

"तुम्हारा यह जीवन अमूल्य गाया हुआ है। देवताओं का नहीं, मनुष्यों का अमूल्य जीवन है। कौन से मनुष्यों का ? तुम ब्राह्मणों का। बाप तुमको बच्चा बनाकर फिर कितनी मेहनत कर रहा है।" सा.बाबा 27.8.69 रिवा.

Q. सतयुगी सुखों और संगमयुगी सुखों एवं सतयुगी कर्मों और संगमयुगी कर्मों में क्या अन्तर है ?

सतयुग में भौतिक सुख भरपूर होंगे, आत्मा दैहिक और मानसिक सुख से सम्पन्न होगी परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से समयान्तर में वह स्थिति नीचे आयेगी तो उसकी सूक्ष्म में फीलिंग अवश्य होगी। प्रकृति सुखदायी है, जनसंख्या कम है, जिससे आवश्यकता से अधिक साधन हैं, इसलिए चिन्ता नहीं होती।

संगमयुग पर भौतिक सुख हैं परन्तु सतयुग की अपेक्षाकृत कम हैं। यथार्थ ज्ञान, परमात्मा का साथ होने के कारण मानसिक सुख भरपूर है परन्तु पूर्व कर्मों के फलस्वरूप दैहिक हिसाब-किताब भी चुक्ता होते हैं इसलिए दैहिक सुख सतयुग इतना नहीं है। प्रकृति तमोप्रधान होने के कारण दुख का कारण बन जाती है। चढ़ती कला होने के कारण सुख-शान्ति की स्थिति उत्तरोत्तर वृद्धि को पा रही है इसलिए चिन्ता नहीं होती।

संगमयुग पर हम ईश्वरीय सन्तान हैं, इसलिए हमारे गुण-कर्तव्य भी ईश्वरीय हैं परन्तु सतयुग में दैवी सन्तान होते हैं इसलिए गुण-कर्तव्य भी दैवी होते हैं। अभी हमको ईश्वरीय गुण-कर्तव्यों और दैवी गुण-कर्तव्यों का ज्ञान है परन्तु सतयुग में ईश्वरीय गुण-कर्तव्यों का ज्ञान नहीं होता है।

"आप सबके लिए सदा ही नया है। संगमयुग की यह विशेषता है। संगमयुग का हर कर्म उड़ती कला में जाने का है, इस कारण सदा नये ते नया है। ... संगमयुग है ही बधाइयों का युग।" अ.बापदादा 1.01.86

Q. संगमयुग पर ज्ञान से देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम सुख को अनुभव करते और सतयुग में सर्व सुख होने के कारण नष्टोमोहा होने के कारण सुख की सदा काल अनुभूति होती है - दोंनों में क्या अन्तर और कौनसा सुख श्रेष्ठ है ?

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है, जो संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जो परमात्मा का आत्माओं को वरदान और वर्सा है क्योंकि इसके लिए आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान परमावश्यक है। परमात्मा ही ज्ञान का सागर है, वही संगमयुग पर ये ज्ञान देता है। जो आत्मा इस सत्य को समझकर दृढ़ता से इसका अभ्यास करता है, वही इस सुर-दुर्लभ सुख का अनुभव करता है।

"वहाँ तुम्हारे कर्म, अकर्म हो जायेंगे। कलियुग में जो कर्म होते हैं, वे विकर्म हो जाते हैं। अभी संगमयुग पर तुमको सीखना होता है, वहाँ सीखने की बात नहीं। यहाँ की शिक्षा ही वहाँ साथ चलेगी।" सा.बाबा 16.7.04 रिवा.

"सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है। ... इस युग और इस जीवन की विशेषता है कि अब ही जो जितना जमा करना चाहे, वह कर सकते हैं। ... इस समय के श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ ज्ञान का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का खाता जमा करते हो।" अ.बापदादा 06.01.86

"सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है।... द्वापर से भक्ति से अल्पकाल का अभी-अभी जमा किया, अभी-अभी फल पाया और खत्म हुआ। ... इस युग को वरदानी युग कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं, जो एक का पदमगुणा फल देता है।" अ.बापदादा 06.01.86

"यहाँ ही फल को स्वीकार कर लिया तो भविष्य फल को खत्म कर लेंगे। ... कोई भी कार्य करना है तो संगम पर ठहर कर जजमेन्ट करना है क्योंकि आप सभी संगमयुगी कहलाते हो। ... बीच (संगम) की अवस्था है बीज अर्थात् बिन्दी।"

अ.बापदादा 17.4.69

"जरा भी पुरानापन होगा तो वह पुरानी दुनिया की तरफ आकर्षित कर लेगा और ऊंचे संसार से नीचे के संसार में चले जायेंगे। ऊंचा अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण स्वर्ग को ऊंचा दिखाते हैं और नर्क को नीचे दिखाते हैं। संगमयुगी स्वर्ग सतयुगी स्वर्ग से भी ऊंचा है क्योंकि अभी दोनों संसार के नॉलेजफुल बने हो।" अ.बापदादा 20.11.85

"संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है। ऐसी वण्डरफुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी-नारायण भी बन जायें लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेंगी।... कुछ भी न हो फिर भी सम्मुख मिलने का यह भाग्य कम नहीं है। इसलिए विशेष आत्माओं की विशेषता को बापदादा देख हर्षित होते हैं।" अ.बापदादा 24.3.85

"तुम बच्चों को बाप ने समझाया है - यह सब खेल बना हुआ है।...वह है टॉवर आफ नॉलेज।

... पवित्रता-सुख-शान्ति का वर्सा तुम इस समय ही पाते हो। बलिहारी इस पुरुषोत्तम संगमयुग की है। इसको कल्याणकारी युग कहा जाता है। ... अब तुम समझते हो सतयुग में यह ज्ञान हमको नहीं होगा। जैसे यहाँ कारोबार चलती है, वैसे वहाँ पवित्र सुख की राजधानी चलती है।"

सा.बाबा 23.1.04 रिवा.

"तुम्हारा खानपान भी शुद्ध चाहिए। दैवी गुण भी यहाँ ही धारण करने हैं। ... यहाँ तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम्हारा यह सर्वोत्तम जन्म है। देवताओं से भी तुम उत्तम हो। अभी तुम औरों को भी उत्तम बनाते हो।" सा.बाबा 30.6.06 रिवा.

"निस्वार्थ सेवा की तो सेवा का फल मिलता है, स्वार्थ का फल नहीं मिलता है। ... भविष्य फल तो कुछ नहीं है, अभी का प्रत्यक्ष फल आत्मा को उड़ती कला का बल देता है। ... बापदादा के पास सबका रिकार्ड है।" अ.बापदादा 6.4.95

"आत्म-प्यार (आत्माओं का आत्माओं से प्यार) राज्य-भाग्य गँवाता है और परमात्म-प्यार राज्य-भाग्य दिलाता है और इसी जन्म में। ऐसे नहीं कि सिर्फ भविष्य के आधार पर चल रहे हो। नहीं, डायरेक्ट परमात्म प्राप्ति तो अब है। वर्तमान के आगे भविष्य तो कुछ भी नहीं है। ... अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। देवताओं के खज़ाने में नहीं, ब्राह्मणों के खज़ाने में।" अ.बापदादा 22.12.95

"तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे। ... यह है तुम्हारा अति दुर्लभ अमूल्य जीवन। सबका तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ऐसा ही बना हुआ है। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा है, वे अब पढ़ रहे हैं।"

सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"जीवनमुक्ति का मज़ा तो अभी है। भविष्य में जीवन-मुक्त और जीवन-बन्ध का कन्ट्रास्ट नहीं होगा। ... परमधाम में तो पता ही नहीं पड़ेगा कि मुक्ति क्या है और जीवन-मुक्ति क्या है। दोनों का अनुभव तो अभी होता है। ... जीवनमुक्त, न्यारा और प्यारा बनने की विधि क्या है? तख्त-नशीन बनो।" अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 3

"सतयुग में यह समझते हो कि यह एक शरीर छोड़कर दूसरा लेना है। वहाँ उनको यह पता नहीं रहता कि सतयुग के बाद त्रेता आयेगा, द्वापर आयेगा, हम उतरते जायेंगे। यह ज्ञान की बात वहाँ नहीं रहती है। ... वहाँ आत्माभिमानी रहते हैं, फिर आत्माभिमानी से देहाभिमानी बन जाते हैं। यह नॉलेज सिर्फ तुम ब्राह्मणों को ही होती है।"

सा.बाबा 1.5.06 रिवा.

"अन्धकार-रोशनी का वर्णन संगम पर ही किया जाता है। अभी तुम घोर प्रकाश में आये हो।

सतयुग में तुम यह वर्णन नहीं कर सकेंगे। वहाँ यह नॉलेज ही नहीं रहती है।... अभी तुम सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल के हो। तुम ऊंच से ऊंच हो। यह ईश्वरीय कुल है।"

सा.बाबा 16.5.06 रिवा.

"नॉलेजफुल आत्मा कभी भी माया से हार नहीं खा सकती। ... जिसके ऊपर परमात्म हाथ है वह विघ्न विनाशक होगा ना। जिसके ऊपर दुआओं का हाथ है, वह सदा निश्चित और निश्चिन्त रहता है। ... इस समय जो अनुभव करते हो, वह सारे कल्प और किसी युग में नहीं है। सतयुग में बेफिकर होंगे लेकिन अभी आपको ज्ञान है कि फिकर क्या है, बेफिकर क्या है। वहाँ यह ज्ञान नहीं होगा।" अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 4

"भविष्य तो आपके लिए निश्चित है ही, वह तो होना ही है लेकिन प्रत्यक्ष फल कितना प्यारा है। ... सबसे श्रेष्ठ प्रत्यक्ष फल है - समीपता का अनुभव होना और समीपता की निशानी है - समान बनना।" अ.बापदादा 31.12.93 दादियों से

"इस समय की आपकी सम्पूर्ण स्थिति सतयुग की 16 कला सम्पूर्ण ... स्थिति का आधार है। ... यहाँ के सर्व खज़ानों की सम्पन्नता, ज्ञान-गुण-शक्तियां, सर्व खज़ाने वहाँ की सम्पन्नता का आधार हैं।" अ.बापदादा 15.3.88

"सतयुग में जो सूर्यवंशी देवतायें थे, उनमें कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो प्राय: लोप हो जायेगा। ज्ञान है ही सद्गति के लिए। ... अभी तुम्हारा यह जन्म सबसे अच्छा है। तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली। यह है सर्वोत्तम धर्म। देवता धर्म को सर्वोत्तम धर्म नहीं कहेंगे।"

सा.बाबा 28.02.06 रिवा.

"63 जन्म मेहनत कर चुके हो। अब एक जन्म तो मौज में रहो। 21 जन्म तो भविष्य की बात है लेकिन यह एक जन्म विशेष है। अभी मेहनत और मौज दोनों का अनुभव कर सकते हो।... मजा तो अभी है। दूसरे मेहनत कर रहे हैं और आप मौज में हो।"

अ.बापदादा 21.12.89

"संगमयुग को कल्याणकारी सुहावना संगमयुग कहा जाता है।... तुम जब सतयुग में आयेंगे तो नई राजधानी होगी, फिर कला कम होती जाती है। ये वण्डरफुल बातें कोई की भी बुद्धि में नहीं हैं, जो बाप समझाते हैं।... सभी आत्माओं के लिए यह युग है पुरुषोत्तम बनने का। जीवनमुक्त को पुरुषोत्तम कहा जाता है।... बाप आकर सबको जीवनमुक्त बनाते हैं।"

सा.बाबा 10.8.06 रिवा.

"इच्छा मात्रम् अविद्या, यह गायन किसका है ? देवताओं का या ब्राह्मणों का। देवताई जीवन में तो इच्छा वा ना इच्छा का सवाल ही नहीं। ... नॉलेज होते "इच्छा मात्रम् अविद्या", इसको ही

ब्राह्मण जीवन कहा जाता है।" अ.बापदादा 13.12.89 पार्टी

"अभी ही नई दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच बाप यह ज्ञान देते हैं, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। देवताओं को यह ज्ञान नहीं होता है। अगर उनको यह चक्र ज्ञान हो तो राजाई में मज़ा ही न आये। अभी भी तुमको ख्याल होता है कि राज्य लेकर फिर हमारी यह हालत होगी। परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है, चक्र को फिरना ही है।"

सा.बाबा 27.7.06 रिवा.

" कहते - "भविष्य किसने देखा" ... यह है असत्य की जजमेन्ट। भविष्य तो वर्तमान की परछाई है, बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता। ... अल्पकाल के मान-शान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्वात्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं पा सकते।" अ.बापदादा 24.9.92

"स्वराज्य से ही विश्व के राज्य का अधिकार प्राप्त करते हो। इस समय के स्वराज्य की प्राप्ति का अनुभव भविष्य विश्व के राज्य से भी अति श्रेष्ठ है।"

अ.बापदादा 12.11.92

"भविष्य का ताज और तख्त इस ताज और तख्त के आगे कुछ भी नहीं है। ... विश्व के महाराजन बनने से भी अभी का ताज और तख्त श्रेष्ठ है। अगर संगमयुग के राजा नहीं बने तो भविष्य के भी नहीं बन सकते।" अ.बापदादा 6.6.73

"सतयुग में तो सभी हर्षित होंगे तो यह हर्षितमुख है, यह भी कहेगा कौन ? यह तो अभी ही कहेंगे ना! जो सदा हर्षित नहीं रहते, वे ही वर्णन करेंगे कि यह हर्षितमुख है।"

अ.बापदादा 21.4.73

"बाबा ने यह भी समझाया है - सतयुग में केवल 9 लाख ही होंगे, उनसे वृद्धि होगी ना। जो अच्छी रीति इम्तहान पास करेंगे, वे पहले-पहले आयेंगे। ... वण्डरफुल लाइफ यह है। यह है मोस्ट वेल्युबुल, अमूल्य जीवन। ... इस समय तुम ही सर्विस करते हो, यह लक्ष्मी-नारायण कुछ भी सर्विस नहीं करते हैं।" सा.बाबा 15.4.05

"आपने सतयुगी सुखों की और कलियुगी दुखों की लिस्ट तो लगाई है लेकिन संगम के सुखों की लिस्ट बनायेंगे तो इससे भी दोगुणी हो जायेगी। ... हर वक्त सुखों की लिस्ट, रत्नों की लिस्ट बुद्धि में दौड़ाते रहो, सुखों रूपी रत्नों से खेलते रहो तो कब भी ड्रामा के खेल में हार न हो।" अ.बापदादा 17.5.69

"तुम कितना अच्छी रीति समझाते हो। टाइम लगता है, जो कल्प पहले लगा था, वह लगेगा। जल्दी कुछ भी कर नहीं सकते। हीरे जैसा जन्म तुम्हारा यह अभी का है। देवताओं का भी हीरे

जैसा जन्म नहीं कहेंगे। यह है तुम्हारा ईश्वरीय जन्म।"

सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - अब जज करो शास्त्र राइट हैं या मैं राइट हूँ?... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, सारी नॉलेज देते हैं। यह और कोई समझा न सके।... परमात्मा रचता और उनकी रचना को सतयुग में भी कोई नहीं जानता। अगर वहाँ भी यह मालूम हो कि हमको फिर गिरना है तो राजाई की खुशी ही न रहे।"

सा.बाबा 11.9.06 रिवा.

"सतयुग में ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि यह खराब है, यह ऐसा है। वहाँ बुरे लक्षण कोई के होते नहीं। वहाँ सब हैं ही दैवी सम्प्रदाय। हाँ, साहूकार और गरीब हो सकते हैं। बाकी अच्छे वा बुरे गुणों की भेंट वहाँ होती नहीं।"

सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

"तुम जानते हो बरोबर कल्प-कल्प हमको विस्मृति होती है, फिर स्मृति में आता है। पहली-पहली एकज भूल हुई, जो रचता और रचना को भूल गये। अभी तुम रचता-रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। सतयुग में भी यह नॉलेज नहीं होगी।"

सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

"सतयुग में पवित्रता के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं है। यहाँ का पुरुषार्थ ही वहाँ नेचुरल हो जाता है क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, पता ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है।"

अ.बापदादा 27.2.96

"ऐसी अलौकिक जयन्ति सारे कल्प में नहीं होती है। ... आत्मायें परम-आत्मा बाप की और परम-आत्मा बाप बच्चों की जयन्ति मनाते हैं। सतयुग-त्रेता में भी पर-आत्मा आपकी जयन्ति नहीं मनायेंगे और आप परमात्मा की जयन्ति नहीं मनायेंगे। ... तो कितना लकी हो!"

अ.बापदादा 16.2.96

सतयुग-त्रेता के सुखों और प्राप्तियों पर उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है परन्तु संगम के सुखों, प्राप्तियों एवं अनुभवों पर ये नियम लागू नहीं होता है बल्कि और ही उसके विपरीत उपयोगिता विकास होता है अर्थात् उसके प्रति रुचि बढ़ती जाती है।

सतयुग में दैहिक प्यार ही होगा परन्तु उसमें विकारों की दुगन्ध नहीं होगी। ईश्वरीय प्यार, आत्मिक प्यार सतयुग में नहीं होगा, ये संगमयुग पर ही ईश्वरीय वरदान और वर्सा है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान-गुण-शक्तियां, अतीन्द्रिय सुख, खुशी संगमयुग का वर्सा है और यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का आधार है, जो सतयुग-त्रेतायुग में सम्भव नहीं है।

पुरुषोत्तम संगमयुग और द्वापर-कलियुग का ज्ञान तथा उसकी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुषोत्तम संगमयुगी सुख और कलियुगी सुखों में अन्तर

परमानन्द और विषयानन्द

द्वापर-कलियुग में देवताओं के जड़ चित्रों की याद से दैवी गुणों की स्मृति तो होती है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से यथार्थ रीति धारणा नहीं हो सकती है और चित्र जड़ होने के कारण प्रकृति के नियमानुसार समयान्तर में बुद्धि में जड़ता अर्थात् अज्ञानता आती जाती है, जिससे आत्मा की सतत उतरती कला होती है।

भक्ति में निराकर रूप में परमात्मा को याद करने से निराकार के गुण - निर्संकल्पावस्था, ब्रह्मलोक की याद तो होती है या खींचती है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से यथार्थ धारणा नहीं होती, इसलिए आत्मा की उतरती कला ही होती है।

* परमानन्द और विषयानन्द का भी गायन है। दोनों को आनन्द के रूप में सम्बोधित किया जाता है परन्तु दोनों में अन्तर क्या है और समानतायें क्या हैं, वह भी विचारणीय है। संगमयुग की परमप्राप्ति है परमानन्द और कलियुग की मूल प्राप्ति है विषयानन्द अर्थात् संगमयुगी ब्राह्मणों का सुख परमानन्द-अतीन्द्रिय सुख है और कलियुगी मनुष्यों का मुख्य सुख विषयानन्द है। आत्मा को परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख और विषयानन्द दोनों ही समयानुसार आकर्षित करते हैं और दोनों ही समयानुसार एक दूसरे पर विजय प्राप्त करते हैं। परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख आत्मा को संगम युग पर ही प्राप्त होता है, जब परमात्मा द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलता है। यथार्थ ज्ञान द्वारा संगमयुग पर ही आत्मा परमानन्द और विषयानन्द के भेद को जानती है और अनुभव करती है तथा विषयानन्द से मन-बुद्धि को निकालकर परमानन्द के लिए पुरुषार्थ करती है और उसको अनुभव करती है। परमानन्द का अनुभव करने और उसकी उपयोगिता को अनुभव करने से आत्मा विषयानन्द से विमुख होकर परमानन्द को सदाकाल के लिए जीवन में धारण करने के लिए प्रयत्न करती है। आत्मा को परमानन्द का अनुभव करने और संगमयुग के यथार्थ लाभ को उठाने के लिए इन दोनों का भेद और उसके प्रभाव को समझना अति आवश्यक है।

विषयानन्द	**V/S**	**परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख**
मूल - अज्ञानता जनित देहाभिमान		मूल - यथार्थ आत्मिक ज्ञान और आत्मिक स्थिति
साधन - देह और दैहिक सम्बन्ध		साधन - आत्मा-परमात्मा का सम्बन्ध और आत्मिक

देहाभिमान के कारण दैहिक चिन्तन और परिणामस्वरूप विषय प्रवृत्ति और विषय सुख, जिसके परिणामस्वरूप अनेक दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ, मृत्यु-भय, अन्त में मृत्यु-दुख और भविष्य में पतित जन्म।	ज्ञान एवं आत्मिक स्वरूप का चिन्तन, परमात्म चिन्तन, परमात्म-प्राप्तियों का चिन्तन, आत्मिक दृष्टि,आत्माओं के दुख से द्रवित होकर आत्माओं के कल्याणार्थ प्रयत्न, परिणामस्वरूप अतीन्द्रिय सुख, सर्व दैहिक एवं मानिसक व्याधियों से मुक्ति, मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्ति, भविष्य श्रेष्ठ जन्म,
वर्तमान में जीवनबन्ध का अनुभव।	वर्तमान जीवन में यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख का अनुभव।
विषयानन्द कलियुगी नर्क के जीवन का अनुभव।	परमानन्दमय संगमयुगी ईश्वरीय जीवन के सुख का अनुभव।
विषयानन्द है रावण की सम्पत्ति अर्थात् वर्सा।	परमानन्द है ईश्वर की सम्पत्ति और ईश्वरीय वर्सा।

"बाप आकर विषय सागर से क्षीर सागर में ले जाते हैं। यहाँ के साहूकार लोग समझते हैं हम तो स्वर्ग में हैं, जो गरीब हैं वे नरक में हैं। उनको मालूम नहीं कि स्वर्ग किसको कहा जाता है।"

सा.बाबा 22.05.03 रिवा.

आत्मिक स्वरूप सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है। आत्मिक स्थिति इतनी गहन हो जाये जो हमारी दृष्टि-वृत्ति-वायब्रेशन से अन्य आत्मायें भी उसकी अनुभूति करें। यही संगमयुग पर हमारा अभीष्ट लक्ष्य और यथार्थ पुरुषार्थ है।

"ज्ञान देने वाला एक बाप के सिवाए दूसरा कोई है नहीं। ज्ञान से ही सद्गति होती है। ... अभी हम विषय वासना के दुबन में एकदम फंस पड़ते हैं। ... बाबा को भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है। बाप कहते हैं - मैं बंधायमान हूँ, इन सबको दुबन से निकालने के लिए। इसको कहा जाता है कुम्भी-पाक नर्क।"

सा.बाबा 23.10.04 रिवा.

"गरुड पुराण में भी विषय वैतरणी नदी का वर्णन है ना।... पतित हैं तब पुकारते हैं शिवबाबा हमको इस पतित दुनिया से छुड़ाओ। अभी जब बाप आये हैं तब तुमको समझ पड़ी है कि यह विकार में जाना पतित काम है। आगे यह नहीं समझते थे।"

सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

"बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, माया रावण श्राप देती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं शिवालय स्थापन करता हूँ। भारत शिवालय था, अभी वेश्यालय है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। ... अभी भारत कितना भिखारी बन गया है। भारत ही

कितना साहूकार था, स्वर्ग में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। ... इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है।"

सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

Q. सतयुगी दैवी सृष्टि में विषय सुख भी नहीं और यथार्थ परमात्म-ज्ञान न होने से अतीन्द्रिय सुख भी नहीं। तो वहाँ कौनसा विशेष सुख होगा, जिसके कारण सभी स्वर्ग को याद करते हैं और वहाँ की इच्छा रखते हैं?

सतयुग में आत्मिक शक्ति होगी, जिसके कारण कुछ हद तक आत्मिक स्मृति होगी, जिससे आत्मा में विषय भोग की आकर्षण नहीं होती, इसलिए आत्मा वहाँ विद्यमान भौतिक सुखों का यथार्थ रीति सुख अनुभव करती है। द्वापर से जब देहाभिमान के कारण दैहिक दृष्टि होगी, जिससे जीवात्मा में विषय-भोग की प्रवृत्ति होती, जिसके परिणामस्वरूप आत्मिक शक्ति का ह्रास होता और आत्मा दुख अनुभव करती तो उस सतयुगी सुख को याद करती है।

यथार्थ अतीन्द्रिय सुख अभी संगमयुग पर ही होता है। सतयुग में इन्द्रीय सुख ही होंगे परन्तु आत्मिक शक्ति गुप्त रूप में प्रधान होगी, जिससे दैहिक प्यार होते भी विषय प्रवृत्ति नहीं होगी। वहाँ का दैहिक प्यार ही परमानन्द के समान सुखदायी होगा परन्तु वहाँ न विषयानन्द होगा और न ही परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख होगा।

संगमयुग पर ही विज्ञान द्वारा अनेक प्रकार विध्वंसकारी अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण होता है, जो कलियुगी विशाल सृष्टि के विनाश के निमित्त बनते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक सम्पदा का दोहन होता है, उसके लिए अनेक प्रकार के सुख-साधनों का निर्माण होता है, उससे विभिन्न प्रकार के प्रदूषण होते हैं, जिसके कारण प्रकृति में उथल-पुथल होती है, प्राकृतिक आपदायें आती हैं, जो भी पुरानी सृष्टि के भौतिक विनाश में निमित्त बनती हैं।

संगमयुग पर ही एटॉमिक युद्ध होता है, जिससे भी पंच तत्वों में अनेक प्रकार की उथल-पुथल होती है, जिससे प्राकृतिक आपदायें आती हैं और सृष्टि का बहुत बड़ा भाग जलमग्न हो जाता है।

पुरानी सृष्टि के विनाश का दूसरा पक्ष है आध्यात्मिक - अनेक आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब भी चुक्ता होते हैं। आत्माओं के अपने आपके प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब भी पूरे होते हैं, जिसके लिए परमात्मा ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। जो आत्मायें

योगबल से अपने पुराने हिसाब-किताब चुक्ता नहीं करते, उनको अन्त समय धर्मराज़ के द्वारा भोगना भोग कर पुराना खाता भस्म करना होता है। ये सारा कार्य संगमयुग पर ही होता है। "बच्चे समझते हैं कि इतना ऊंच ते ऊंच देवता (शंकर) विनाश तो कर नहीं सकता है। लॉ के विरुद्ध है। परन्तु चित्रों पर समझाना होता है। चित्र तुम दिखाते हो तो उस पर समझाना है। संगमयुग पर विनाश तो जरूर होता ही है। पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है। प्रेरक अक्षर भी राँग है।" सा.बाबा 26.8.69 रिवा.

"यह जो महाभारत लड़ाई है, इनकी भी ड्रामा में नूँध है। यह भी अभी निकले हैं, आगे थोड़ेही थे। सौ वर्ष के अन्दर सभी हो जाते हैं। संगमयुग के कम से कम सौ वर्ष चाहिए ना। सारी दुनिया नई बननी है।" सा.बाबा 30.10.69 रिवा.

"अन्त में फिर वे आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना कि एक बार साक्षात्कार हो जाये। लास्ट तक जो पक्के होंगे, उन्होंको साक्षात्कार होंगे। फिर वही संगठन की भट्ठी होगी, सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ-तहाँ विखर गये हो, फिर नदियां सब सागर में समा जायेंगी। लेकिन समय नाजुक होगा, साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिए बुद्धि की लाइन बड़ी क्लीयर चाहिए, जो समय पर टच हो जाये कि अभी क्या करना है। एक सेकेण्ड भी देरी की तो गये। ... ऐसे अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया, ऐसे आकार रूप में भी बच्चों का आवाह्न करेंगे।" अ.बापदादा 6.3.85

"भविष्य की बात तो छोड़ो लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है? ... बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा नम्बरवार ही जानते हैं। ऐसे ही असत्य के राज्य-अधिकारी रावण को भी जो है, जैसा है, वैसा सदा नहीं जानते।"

अ.बापदादा 24.9.92

सतयुग-त्रेता के सुखों और प्राप्तियों पर उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है परन्तु संगम के सुखों, प्राप्तियों एवं अनुभवों पर ये नियम लागू नहीं होता है बल्कि और ही उसके विपरीत उपयोगिता विकास होता है अर्थात् उसके प्रति रुचि बढ़ती जाती है।

सतयुग में दैहिक प्यार ही होगा परन्तु उसमें विकारों की दुगन्ध नहीं होगी। ईश्वरीय प्यार, आत्मिक प्यार सतयुग में नहीं होगा, ये संगमयुग पर ही ईश्वरीय वरदान और वर्सा है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान-गुण-शक्तियां, अतीन्द्रिय सुख, खुशी संगमयुग का वर्सा है और यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का आधार है, जो सतयुग-त्रेतायुग में सम्भव नहीं है।

यद्यपि कलियुग में हद के सन्यास की महिमा होती है परन्तु बेहद का भी कोई

सन्यास होता है, इसका ज्ञान नहीं होता है। हद के सन्यास और बेहद के सन्यास का ज्ञान और दोनों की भेंट संगमयुग पर ही की जा सकती है।

पुरुषोत्तम संगमयुगी, सतयुगी-त्रेतायुगी और द्वापर-कलियुगी प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

तीनों समय की प्राप्तियों क्या अन्तर है और क्या समानता है, वह ज्ञान और अनुभव अभी ही आत्मा को होता है।

"बाप बच्चों को दोज़क से निकाल बहिश्त में ले जाते हैं। उसको गार्डन आफ अल्लाह कहते हैं। यह है काँटों का जंगल, संगमयुग है फूलों का बगीचा। ... तुम्हारी बुद्धि ऊपर से नीचे तक चक्कर लगाती रहती है। तुम हो लाइट हाउस, सबको रास्ता बताने वाले।"

सा.बाबा 21.1.04 रिवा.

* सारे कल्प इन्द्रिय-सुखों और विकारों के वशीभूत जीवन में ही आत्मा की आकर्षण रहती है। सतयुग-त्रेता में भी जीवात्मायें निर्विकारी इन्द्रीय सुखों में ही जीते हैं और द्वापर-कलियुग में विकारों के वशीभूत इन्द्रीय सुखों में ही जीते हैं, उसके कारण ही उनकी जीवन में अभिरुचि रहती है परन्तु संगमयुग पर आत्मा को आत्मिक स्वरूप की स्थिति में, परमात्मा के प्रेम और उसकी याद में, इस विश्व-नाटक की अद्भुतता को अवलोकन में विशेष आनन्द की अनुभूति होती है, जिसके कारण आत्मा को इस संगमयुगी जीवन में आकर्षण है।

* संगमयुग है सारे कल्प के लिए कल्प के लिए पुरुषार्थ करके प्रालब्ध जमा करने का युग अर्थात् अभी जो हम पुरुषार्थ करते हैं, उसका फल अभी भी अनुभव होता है और सारे कल्प भी मिलता है। सतयुग-त्रेतायुग में अभी के पुरुषार्थ की प्रालब्ध का उपभोग करते हैं। द्वापर-कलियुग में अभी जमा की हुई आत्मिक शक्ति के आधार पर अच्छे-बुरे कर्म करके उसका अच्छा-बुरा फल पाते हैं।

* बाबा ने भी कहा है - सतयुग का जीवन सोने तुल्य, त्रेतायुग का जीवन चांदी के समान और कलियुग का जीवन लोहे के समान या कौड़ी तुल्य है परन्तु संगमयुगी जीवन हीरे तुल्य है क्योंकि अभी तुम परमात्मा बाप द्वारा कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो। इस जीवन की तुलना बाबा ने पारस से भी की है, जो लोहे को भी सोना बना देता है।

* संगमयुग पर हम ऊंच से ऊंच ब्राह्मण चोटी हैं, सतयुग-त्रेतायुग में देवता होते हैं और द्वापर-कलियुग में आसुरी जीवन होता है। संगमयुग पर असुर से ब्राह्मण और ब्राह्मण से

फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनते हैं।

* संगमयुग पर परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है, जिसके प्रकाश में हमको तीनों कालों और तीनों लोकों, कर्म के विधि-विधान आदि का सब ज्ञान स्पष्ट होता है। सतयुग-त्रेता में ज्ञान की प्रालब्ध होती है, ज्ञान की वहाँ आवश्यकता नहीं होती है। द्वापर-कलियुग में अभी के ज्ञान के आधार पर स्मृति जाग्रत होती है परन्तु वह स्मृति स्पष्ट नहीं होती, केवल अभी के ज्ञान का अंशमात्र ही होती है, जिसके आधार पर परमात्मा को याद करते हैं।

* संगमयुग पर अनेक धर्म-मठ-पंथ, विभिल्न मत-मतान्तर होते, दुख-अशान्ति का वातावरण होते, वह सब देखते हुए भी संगमयुगी आत्मायें ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। सतयुग-त्रेतायुग में एक धर्म, एक मत, एक भाषा होती है और आत्मायें सुख का उपभोग करती हैं। द्वापर-कलियुग में अनेक धर्म-मठ-पंथ, मत-मतान्तर होते हैं और आत्मायें कर्मानुसार सुख-दुख दोनों को अनुभव करते हैं।

सतयुग में जनसंख्या कम, कलियुग में जनसंख्या की तीव्रता से वृद्धि, संगमयुग में जनसंख्या वृद्धि चरमसीमा पर और विनाश, विनाश के बाद जनसुख्या की न्युनतम सीमा। कलियुग के बाद संगमयुग पर विनाश, सतयुग के बाद विनाश नहीं होता है। विश्व की कुल जनसंख्या का 3/4 आत्मायें संगमयुग पर इस धरा पर आई हैं। परमात्मा के अवतरण से पहले विश्व की कुल जनसंख्या 175 करोड़ के लगभग ही थी।

संगमयुग पर आध्यात्मिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान अर्थात् विज्ञान (Science and Technology) अपने चरमोत्कर्ष पर होगी। संगमयुग के अन्तिम चरण में अर्थात् सतयुग के आदि में आध्यात्मिक ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी से सतयुग का निर्माण होता है, उसके बाद वह ज्ञान भी प्राय: लोप होता जाता है और त्रेता के अन्त तक पूरा ही लोप हो जाता है, फिर द्वापर से समय और आवश्यकता अनुसार नये अविष्कार आरम्भ होते हैं और बढ़ते-बढ़ते कलियुग के अन्त में संगमयुग पर अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं। देवताओं को न किसी चीज के अविष्कार की आवश्यकता होती है और न वे कोई अविशष्कार करते हैं क्योंकि उनमें संगमयुग पर अर्जित आत्मिक शक्ति होती है, जिसके फलस्वरूप प्रकृति उनको मनवांच्छित फल देती है

सतयुग-त्रेता में साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का निरन्तर ह्रास होता है और दैवी एवं आध्यात्मिक गुणों में भी ह्रास होता है परन्तु संगमयुग पर ये तीनों में वृद्धि होती है। कलियुग में दैवी एवं ईश्वरीय मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता है परन्तु साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का निरन्तर विकास होता है। साथ-साथ आसुरी गुणों और शक्तियों की भी वृद्धि होती है।

संगमयुग पर परमात्मा के प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान से ईश्वरीय, दैवी गुणों-शक्तियों का विकास होता है तो साथ-साथ साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का भी विकास होता है।

सतयुग-त्रेतायुग में न भक्ति होती है और न ही ज्ञान होता है बल्कि ज्ञान की प्रालब्ध होती है। द्वापर कलियुग में यथार्थ ज्ञान नहीं होता है परन्तु ज्ञान की खोज होती है और भक्ति-भावना प्रधान होती है। संगमयुग पर परमात्म से ज्ञान मिलता है, जिससे भक्ति का अन्त हो जाता है। भौतिक साधन कम होते हैं परन्तु ज्ञान से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति अधिक होती है, जो किसी अन्य युग में सम्भव नहीं होती।

संगमयुग पर अलौकिक जन्म अर्थात् परमात्मा के गोद के बच्चे बनते अर्थात् द्विज जन्म होता है, सतयुग-त्रेतायुग में योगबल से जन्म और द्वापर में भोगबल से जन्म होता है।

संगमयुग पर पवित्रता-अपवित्रता दोनों का ज्ञान होता, इसलिए अपवित्रता को मुक्त होकर पवित्रता का पुरुषार्थ करते। सतयुग-त्रेता में पवित्रता होती, अपवित्रता का नाम-निशान नहीं होता, इसलिए पवित्रता और अपवित्रता का अन्तर भी उनको पता नहीं होता (अ.बापदादा 22-2-96)। कलियुग में अपवित्रता होती, पवित्रता न के बराबर होती अर्थात् पवित्रता नाममात्र ही होती, उसका ज्ञान भी नाममात्र ही होता।

संगमयुग पर आत्मिक शक्ति का जमा का खाता प्लस-माइनस होकर प्लस होता, सतयुग-त्रेता में माइनस होता, प्लस का प्रश्न ही नहीं होता, द्वापर-कलियुग में प्लस-माइनस होकर माइनस ही होता है। सारे कल्प में आत्मिक शक्ति जमा का समय संगमयुग ही है।

* संगमयुग कल्प का सर्वश्रेष्ठ युग है, जिसमें कल्प की सर्वाधिक आश्चर्यजनक घटनायें घटित होती हैं। सतयुग है भौतिक सुख-साधनों के चरमोत्कर्ष का युग, परन्तु संगमयुग है आश्चर्यजनक घटनाओं का युग, चढ़ती कला का युग, आत्मिक सुख के चरमोत्कर्ष का युग, आध्यात्मिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान के चरमोत्कर्ष का युग। यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि सर्वाधिक घृणित कर्मों का समय भी यही है, जहाँ से रौरव नरक का अन्त और स्वर्णिम युग की आदि होती है परन्तु ऐसे घृणित कर्म करने वालों के लिए ये संगमयुग नहीं है, उनके लिए तो यह कलियुग का समय है। संगमयुग का शुभारम्भ परमपिता परमात्मा के अवतरण से आरम्भ होता है और समाप्ति लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारूढ़ होने पर होती है।

* सृष्टि-चक्र के चित्र को देखें और विचार करें तो स्पष्ट होता है - पास्ट नीचे, संगम बीच में और फ्युचर ऊपर नक्शे के रूप में और चक्र के रूप में कलियुग पीछे और सतयुग आगे और संगम बीच में ऊपर दिखाया गया है।

* यह ब्राह्मण जीवन सर्व प्राप्तियों सम्पन्न जीवन है। यह संगमयुगी जीवन विश्व-नाटक रूपी

तराज़ू का मुट्ठा है, जिसके नियन्त्रण में तराज़ू के दोनो पलड़े हैं अर्थात् दोनों का ज्ञान है। ये संगमयुगी जीवन एवरेस्ट की चोटी है, जहाँ से सारे विश्व के तीनों कालों और तीनों लोकों का दर्शन होता है।

"मुख्य है ही संगमयुग की बात।... यह चक्र फिरता रहता है। बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। यह अक्षर जरूर डालने होते हैं। ड्रामा के प्लॉन अनुसार आता हूँ। ड्रामा अक्षर भी लिखना पड़े, तो मनुष्यों को पता पड़े कि यह 5000 वर्ष का ड्रामा है।... जब संगमयुग याद आये तब समझें कि अब सतयुग में जाते हैं। संगम है तो बाबा भी जरूर होगा। वह इस दुनिया को बदलने वाला है।... यह लक्ष्मी-नारायण ने कहाँ ऐसे कर्म सीखे ? संगम पर। बाप कहते हैं मैं संगम पर ही आकर तुमको नई दुनिया के लिए पढ़ाई पढ़ाता हूँ।... प्रदर्शनी में संगमयुग अक्षर जरूर लिखना है।"

सा.बाबा 24.11.01 रिवा.

"मैं संगमयुग पर ही आता हूँ। मैं न सतयुग में आता और न कलियुग में आता हूँ। दोनों के बीच में आता हूँ। ... बाप ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दी है। यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। ... यह बेहद की नॉलेज तो जरूर बुद्धि में होनी चाहिए।"

सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

"तुम्हारा पार्ट ऊंच ते ऊंच है। कौड़ी और हीरे में तो बहुत फर्क है। भल कोई कितने भी लखपति वा करोड़पति हों परन्तु तुम जानते हो कि 6-7 साल में विनाश हो जायेगा। तुम आत्मायें धनवान बनती जाती हो, बाकी सब दिवाले में जाते हैं।"

सा.बाबा 30.8.69 रिवा.

"अभी तुमको चारो वर्णों का ज्ञान है, इसलिए ब्राह्मण वर्ण सबसे ऊंच है। परन्तु महिमा व पूजा देवताओं की होती है। ... तुम्हारा यह ब्राह्मण जन्म सबसे उत्तम है। यह कल्याणकारी जन्म है। देवताओं का जन्म या शूद्रों का जन्म कल्याणकारी नहीं है। तुम्हारा यह जन्म बहुत कल्याणकारी है क्योंकि बाप का मददगार बन सृष्टि पर प्योरिटी, पीस स्थापन करते हो। ... अब जो बाप के मददगार बनेंगे, उनको ही आधाकल्प के लिए पीस, प्रासपेरिटी की प्राइज़ मिलेगी। बाबा मददगार उनको कहते हैं, जो अशरीरी होकर बाप को याद करते हैं, स्वदर्शन चक्र फिराते हैं।"

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

"जितना ही यहाँ गायन होगा तो वह उतना ही वहाँ पूजनीय होगा। जैसे लौकिक रीति में भी बच्चा बाप की पूजा नहीं करता, लेकिन बाप को पूजनीय तो कहता है ना! इसी प्रकार जो सतयुग में प्रजा होगी वह पूजा तो नहीं करेगी लेकिन पूजनीय तो कहेगी अर्थात् रिगार्ड तो

देगी।" अ.बापदादा 24.6.74

"सतयुग के देवी-देवतायें हैं विष्णु सम्प्रदाय के। वहाँ चतुर्भुज की प्रतिमा रहती है, जिससे मालूम पड़ता है कि यह विष्णु सम्प्रदाय हैं।"

सा.बाबा 20.6.05 रिवा.

"अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। अभी हम लौट रहे हैं, इसलिए बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया, पुरानी देह को भी छोड़ना है। ... पुरानी दुनिया में जो कुछ देखते हो वह कब्रिस्तान होना है। अभी परिस्तान स्थापन हो रहा है। तुम संगमयुग पर हो। अभी तुम कलियुग की तरफ भी देख सकते हो तो सतयुग की तरफ भी देख सकते हो। तुम संगमयुग पर साक्षी होकर देखते हो।" सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

"बाप सच बोलने वाला, सच खण्ड स्थापन करने वाला है। भारत सच खण्ड था, वहाँ सब देवी-देवता निवास करते थे। ... राजधानी स्थापन हो रही है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। राजधानी न तो सतयुग में स्थापन हो सकती है और न ही कलियुग में क्योंकि बाप सतयुग या कलियुग में नहीं आते हैं। इस युग को कहा जाता है कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग।"

सा.बाबा 3.7.04 रिवा.

"अभी तुम हो संगमयुग पर। यह भी कोई नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। ... बाप श्रीमत देते हैं - बच्चे, मुझे याद करो। यह है बाप का बड़ा फरमान। पुरा निश्चय हो तब तो बाप के फरमान पर चलें ना। ... देवताओं की विकारी दृष्टि कभी हो नहीं सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही प्यार करेंगे, डांस करेंगे। वहाँ प्यार करेंगे परन्तु विकार की बांस नहीं होगी। ... देह की तरफ बिल्कुल दृष्टि न रहे। वह कर्मातीत अवस्था अभी बनानी है। अभी तक ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं।... जिनको पूरा निश्चय नहीं, वे पूरा पढ़ भी न सकें। पवित्र बन न सकें।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

"यह भी ड्रामा बना हुआ है। नॉलेज समझने में बहुत सहज है परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है। ... इस समय बाप तुमको कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बैठ समझाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं, सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं। ... यह कितना वण्डरफुल ड्रामा है। ... अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो, तुम्हारी माया के साथ युद्ध है।" सा.बाबा 16.6.04 रिवा.

"तुम इस समय ही श्याम-सुन्दर बनते हो। सतयुग में तुम सुन्दर थे, कलियुग में हो श्याम। इस समय हो श्याम-सुन्दर।" (श्याम से सुन्दर बन रहे हो)

सा.बाबा 27.5.04 रिवा.

सतयुग-त्रेता में आत्मिक शक्ति प्रभावशाली होती है, द्वापर-कलियुग में आत्मिक शक्ति क्षीण होने के कारण दैहिक शक्तियाँ प्रभावशाली हो जाती हैं, संगमयुग पर ईश्वरीय शक्तियां और ईश्वरीय ज्ञान प्रभावशाली होता है। ईश्वरीय शक्तियों और ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, जिससे आत्मा देहाभिमान और दैहिक शक्तियों का प्रभाव समाप्त करके अपनी आत्मिक शक्ति का प्रभाव स्थापित करती है,जिसके प्रभाव से विश्व-परिवर्तन होता है अर्थात् विश्व नरक से स्वर्ग बन जाता है।

"ब्राह्मण बनना अर्थात् खाता जमा करना क्योंकि इस एक जन्म के जमा किये हुए खाते के प्रमाण 21 जन्म प्रालब्ध पाते रहेंगें। न सिर्फ 21 जन्म प्रालब्ध प्राप्त करेंगे लेकिन जितना पूज्य बनते हो अर्थात् राजपद के अधिकारी बनते हो, उसी हिसाब अनुसार आधा कल्प भक्ति मार्ग में पूजा भी होती है। ... जो अष्टबनते हैं, वे ही इष्ट भी इतने ही महान बनते हैं। ... यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। "अब नहीं तो कब नहीं" ... ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी ? कब नहीं, लेकिन अब करना है। "तुरत दान महापुण्य" कहा जाता है।" अ.बापदादा 24.3.85

"इस समय की विशेषताओं को निकालो तो अनेकानेक विशेषतायें दिखाई देंगी। ... समय की श्रेष्ठता क्या है, जो और कोई समय की नहीं हो सकती ? इस संगमयुग की विशेषता यह है कि संगमयुग का हर सेकेण्ड मधुर मेला है। ... यह बाप से मधुर मेले की विशेषता और कोई भी युग में नहीं है।" अ.बापदादा 11.7.72

"यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो एक ही बार आता है। पुरुषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी नहीं समझते हैं तो यह भी लिखना है - कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं - मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ।" सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

"अभी हम श्रीमत पर श्रेष्ठाचारी, सतयुगी स्वराज्य पा रहे हैं।... यहाँ लाइट का ताज किसको दे नहीं सकते। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो, वहाँ लाइट का ताज नहीं देना चाहिए। तुमको डबलसिरताज भविष्य में बनना है।" (आत्मा और शरीर दोनों पावन हों, तब ही लाइट का ताज दे सकते हैं) सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

संगमयुग परम सुख का समय है, जन्म-जन्मान्तर के लिए कमाई का समय है। सतयुग में भी हमको वही मिलेगा, जितनी यहाँ कमाई की होगी। इसलिए सतयुग के लिए

उतावला होने से भी कोई फायदा नहीं है। ये वर्तमान संगमयुग ही 63 जन्मों के किये गये विकर्मों का खाता भस्म करने और भविष्य आधा कल्प के जन्म-जन्मान्तर का खाता जमा करने का समय है। संगमयुग पर परमात्मा तो रास्ता बता रहा है परन्तु विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार "जो करेगा सो पायेगा"।

पुरुषोत्तम संगमयुग की खुशियाँ और उनका आधार

"इस ज्ञान की खुशी में तुम्हारे गम, दुख आदि सब मर्ज हो जाते हैं। ... खुशी की दुनिया याद रहने से गम-दुख आदि सब भूल जाने चाहिए। ... कर्मभोग का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। खुशी में यह सब मर्ज करते जाओ।" सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

"ऐसी मौज की जीवन, जिसमें कोई चिन्ता नहीं लेकिन शुभचिन्तक हैं, शुभचिन्तन है। ऐसी मौज की सारे विश्व में चक्कर लगाओ, अगर कोई मिले तो लेकर आओ।"

अ.बापदादा 6.3.85

"तुम बच्चों को बड़ा नशा रहना चाहिए कि हम साहेबजादे हैं, साहेब की मत पर फिर से अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हैं। मुरली सुनने से तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। ... कोई चीज न मिली तो बस रूठ पड़ेंगे। बाबा को तो वण्डर लगता है बच्चों की अवस्था पर। माया की जंजीरों में फंस पड़ते हैं। तुम्हारा मान, तुम्हारी कारोबार, तुम्हारी खुशी वण्डरफुल होनी चाहिए। जो मित्र-सम्बन्धियों को नहीं भूलते हैं, वे कभी बाप को याद कर नहीं सकेंगे। फिर क्या पद पायेंगे!" सा.बाबा 3.6.04 रिवा.

"जो सेवा में निमित्त बनते हैं, उन्हें खुशी और शक्ति की प्राप्ति स्वत: होती है। सेवा का भाग्य कोटों में कोई को ही मिलता है। ... संगमयुग है ही मौजों का युग।"

अ.बापदादा 9.12.85 कुमारियों से

"वास्तव में तुमसे कोई पूछ नहीं सकता कि तुम खुश-राजी हो ... तुम कहेंगे- हम ईश्वर के बच्चे हैं, हमसे खुश-शैराफियत क्या पूछते हो। परवाह थी पार-ब्रह्म में रहने वाले बाप, वह मिल गया, फिर किसकी परवाह! हमेशा याद रहना चाहिए - हम किसके बच्चे हैं। ... तुम स्वर्ग से भी जास्ती यहाँ खुश-राजी हो।" सा.बाबा 10.01.06 रिवा.

खुशी जीवात्मा की मूलभूत प्यास है, उसका आधार कोई न कोई प्राप्ति है। आत्मा की ये खुशी सदा काल स्थिर रहे, उसके लिए आत्मा सदा ही प्राप्तियों के लिए प्रयत्नशील रहती है। संगमयुग पर परमात्मा द्वारा आत्मा को अनेक प्रकार की प्राप्तियाँ होती हैं, जिनसे

आत्मा को विशेष खुशी का अनुभव होता है, जो सारे कल्प में नहीं होता है। संगमयुग की कुछ विशेष खुशियों का यहाँ वर्णन करते हैं।

परमपिता परमात्मा के मिलन की खुशी
योगानन्द के अनुभव की खुशी
परमात्मा के साथ-साथ पार्ट बजाने की खुशी
विश्व-नाटक में श्रेष्ठ और आदि से अन्त तक पार्ट बजाने की खुशी
परमपिता परमात्मा से वर्सा पाने की खुशी
कल्प-कल्प बाप से वर्सा पाने की खुशी
दिलाराम बाप के दिल-तख्त पर बैठने की खुशी
मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव की खुशी
त्याग-तपस्या से भाग्य अनुभव करने की खुशी
ज्ञान-धन की प्राप्ति की खुशी
आत्म-ज्ञान
परमात्म-ज्ञान
विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की खुशी
त्रिलोकीनाथ और त्रिकालदर्शी बनने की खुशी
विश्व-नाटक को खेल के रूप में अवलोकन करने की खुशी
परमधाम घर जाने की खुशी
स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग में जाने की खुशी
मृत्युलोक से अमरलोक में जाने की खुशी
स्वर्ग की राजाई स्थापन करने और पाने की खुशी
ईश्वरीय परिवार के मिलन की खुशी
विश्व-परिवार के मिलन की खुशी
परमात्म-पालना की खुशी
परमात्म पढ़ाई की खुशी
त्रिकालदर्शी बनने की खुशी
ज्ञान-गुण-शक्तियों का खज़ाना जमा करने की खुशी
विश्व-सेवा की खुशी
ऊच से ऊंच ब्राह्मण बनने की खुशी
पूज्य राज्य अधिकारी और पूज्यनीय बनने की खुशी
माया से युद्ध करने और युद्ध में जीत पाने की खुशी

स्वराज्य अधिकारी सो विश्व-राज्य अधिकारी पन की खुशी
भारत भूमि में जन्म लेने की खुशी
परमपिता परमात्मा के मिलन की खुशी
योगानन्द के अनुभव की खुशी

संगमयुग पर ही हम आत्माओं का परमात्मा से यथार्थ रीति अनुभव युक्त मिलन होता है। यद्यपि परमधाम में हम आत्मायें परमात्मा के साथ रहती हैं परन्तु वहाँ आत्माओं को देह तो होती नहीं है, इसलिए वहाँ न संकल्प है और न ही किसी प्रकार की अनुभूति। यथार्थ अनुभूति इस साकार लोक में ही होती है। अभी संगमयुग पर जब परमात्मा आते हैं तो उनसे मिलकर आत्माओं को जो सुख और खुशी की अनुभूति होती है, उसके कारण ही आत्मायें दुख के समय परमात्मा को याद करती हैं।

निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति परमानन्दमय स्थिति है, ये संगमयुग का समय उसको अनुभव करने के लिए ही मिला है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, इन्द्रीय सुखों के आकर्षण के वशीभूत व्यर्थ चिन्तन में इस शुभ समय को व्यर्थ मत गँवा देना। परमात्मा का वरदानी हाथ तुम्हारे सिर पर है, इसलिए निश्चिन्त होकर इस आनन्द का अनुभव करो, उज्वल भविष्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

"बड़े से बड़े दिन संगमयुग के दिन हैं। बुरे दिन खत्म हो खुशी के उत्साह में रहने के उत्सव के दिन संगमयुग है। ... सारे कल्प में मौज मनाने का दिन वा मौंजों का युग संगमयुग है।"

अ.बापदादा 25.12.83

संगमयुग इन्द्रीय सुखों का युग नहीं है, वे तो सारे कल्प में भोगते आये हैं। संगमयुग है परमात्म मिलन अर्थात् योगानन्द, ज्ञान-चिन्तन का सुख, सर्व आत्माओं की सेवा करके बाप का मददगार बन सर्व की दुआओं का सुख लेने का युग। दुआयें आत्मा की खुशी का आधार हैं।

"डबल प्राप्ति कौनसी है ? अतीन्द्रिय सुख प्राप्ति, उसमें शान्ति और खुशी समाई हुई है। यह हुआ संगमयुग का वर्सा। अभी जो प्राप्ति है, वह फिर सारे कल्प में कब भी प्राप्त नहीं हो सकता। तो डबल प्राप्ति है - बाप और वर्सा। बाप अभी प्राप्त है और बाप द्वारा वर्सा भी अभी मिलता है, फिर कब नहीं मिलेगा।"

अ.बापदादा 20.8.71

"यह संगमयुग का सुहावना समय जितना ज्यादा हो, उतना अच्छा है क्योंकि समझते हो सारे कल्प में यह बाप और बच्चों का मिलन फिर नहीं होगा। ... सदैव यही लक्ष्य रखो कि एवर-रेडी रहें। बाकी यह अतीन्द्रिय सुख का वर्सा निरन्तर अनुभव करने के लिए रहे हुए हैं न कि

अपनी कमजोरियों के लिए।" अ.बापदादा 28.7.71

"इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह भारत का प्राचीन राजयोग है, जो बाप ही हर 5 हजार वर्ष के बाद आकर सिखलाते हैं। बेहद का बाप ही भारत में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को यह योग सिखलाते हैं। इस याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।" सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

"खुशी का दीपक सदैव जगा रहे, उसके लिए दो बातें ध्यान में रखनी है। एक ज्ञान-घृत और दूसरा योग की बत्ती। अगर ये दोनों बातें ठीक हैं तो खुशी का दीपक अविनाशी रहेगा, कभी बुझेगा नहीं।" अ.बापदादा 23.1.70

"बरोबर बाप हमारे द्वारा स्थापना करा रहे हैं, फिर हम ही राज्य करेंगे।... यह भी ड्रामा में नूँध है। मैं भी इस ड्रामा के अन्दर पार्टधारी हूँ। ड्रामा में सबका पार्ट नूँधा हुआ है। शिवबाबा का भी पार्ट है, हमारा भी पार्ट है। थैंक्स देने की बात नहीं।" सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

"जैसे अभी इस समय सकार रूप में बाप के साथ उमंग-उत्साह और खुशी में झूम रहे हो, ऐसे ही नये वर्ष में सदा अव्यक्त रूप में साथी समझना, अनुभव करना। यह साथ का अनुभव बहुत प्यारा है।" अ.बापदादा 31.12.96

परमात्मा के साथ-साथ पार्ट बजाने की खुशी

विश्व-नाटक में श्रेष्ठ और आदि से अन्त तक पार्ट बजाने की खुशी

अभी संगमयुग पर हमारा परमात्मा के साथ-साथ पार्ट है, यह स्मृति भी आत्मा को परम सुख देने वाली है। इस सत्य का ज्ञान और अनुभव तथा उसकी खुशी भी अभी संगमयुग पर ही हम आत्माओं को होती है और तो सारे कल्प न परमात्मा का यथार्थ ज्ञान होगा और न ही उसके साथ पार्ट होगा।

"वर्तमान समय आप बाप के साथ कितना श्रेष्ठ पार्ट बजा रहे हो। सारे कल्प में सबसे बड़े ते बड़ा विशेष पार्ट इस समय बजा रहे हो। ... सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले बाप समान "कामधेनु" हो, कामनायें पूर्ण करने वाले हो।" अ.बापदादा 15.3.88

"इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भरपूर रहती है, फिर खाली हो जाती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, फिर आते हैं इस स्वीट संगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शान्तिधाम कोई स्वीट नहीं है। सबसे स्वीट है पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग। ड्रामा में तुम्हारा भी अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लकी हो जो बेहद के बाप के तुम बनते हो।"

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

परमपिता परमात्मा से वर्सा पाने की खुशी

कल्प-कल्प बाप से वर्सा पाने की खुशी

परमात्मा हमारा अविनाशी पिता है तो उससे जो वर्सा मिलता है, वह भी अविनाशी होता है। संगमयुग पर ही परमात्मा का ज्ञान-गुण-शक्तियों का वर्सा मिलता है, जो सारे कल्प के सुख का आधार है।

"तुमको नशा होना चाहिए गुप्त में बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। कोई चित्र आदि को हम याद नहीं करते हैं। फोटो के लिए कहते हैं। मैं समझता हूँ पूरा ज्ञान नहीं उठाया है तब फोटो मांगते हैं।... कोई भी चित्र को याद नहीं करना है। शिव बाबा का फरमान है मामेकम याद करो।...माँ की याद में शरीर छोड़ने से दुर्गति को पायेंगे।"

सा.बाबा 17.7.72 रिवा.

"अभी तुमको अतीन्द्रिय सुख भासता है, जब हमने तुमको एडॉप्ट किया है। एडॉप्शन तो अनेक किस्म की होती है। पुरुष भी कन्या को एडॉप्ट करते हैं।... बाप बच्चे को एडॉप्ट करते हैं।"

सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

दिलाराम बाप के दिलतख्त पर बैठने की खुशी

"तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। तुम जैसा खुशनसीब वा सौभाग्यशाली तो कोई नहीं है। दुनिया में सिवाए ब्राह्मण कुल के और कोई भी सौभाग्यशाली हो नहीं सकता। विष्णु-कुल सेकण्ड नम्बर में हो गया। वह दैवी गोद हो जाती है, अभी ईश्वरीय गोद है। यह तो ऊंच ठहरे ना। देलवाड़ा मन्दिर ईश्वरीय गोद का मन्दिर है। यह देलवाड़ा मन्दिर संगमयुग का साक्षात्कार कराता है।"

सा.बाबा 18.12.03 रात्रि क्लास रिवा.

"संगमयुगी ब्राह्मण जीवन दिलाराम बाप की दिल पर आराम करने का समय है। दिल पर आराम से रहो। ब्रह्मा भोजन खाओ, ज्ञानामृत पियो, शक्तिशाली सेवा करो और आराम मौज से दिलतख्त पर रहो।... कर्म के खेल का पहला पूर ब्राह्मण सो देवताओं को मिलता है और दूसरा पूर क्षत्रियों को मिलता है।"

अ.बापदादा 3.5.84

"स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप है, सोचना स्वरूप समर्थ स्वरूप नहीं है। ... जो स्मृति स्वरूप रहते हैं वे निरन्तर नेचुरल स्वरूप रहते हैं और जो सोचता स्वरूप रहते हैं उन्हें मेहनत करनी पड़ती है। यह संगमयुग मेहनत का युग नहीं है, सर्व प्राप्तियों का युग अर्थात् समय है। 63 जन्म मेहनत की लेकिन अब मेहनत का फल प्राप्त करने का युग अर्थात् समय है।"

अ.बापदादा 17.03.03

"त्योहार आदि सब इस समय के हैं। लक्ष्मी-नारायण आदि का कोई त्योहार नहीं, वे क्या सर्विस करते हैं। तुम ब्राह्मण बहुत सर्विस करते हो। ... बच्चों को मुरली अच्छी तरह 5-6 बार पढ़ना वा सुनना चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी और खुशी का पारा चढ़ेगा।"

सा.बाबा 18.08.03 रिवा.

मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव की खुशी

संगम पर परमात्मा के द्वारा प्राप्त विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति सहज बन जाती है, जिस निर्संकल्प स्थिति से मुक्ति और निर्विकल्प स्थिति से जीवनमुक्ति का अनुभव सहज होता है, जो अनुभव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है, जिससे आत्मा विशेष खुशी का अनुभव करती है, जो खुशी उसके चेहरे और चलन से झलकती है और अन्य आत्माओं को भी उस खुशी का आभास कराती है।

कुछ भी खाने से, कितना भी भौतिक ज्ञान प्राप्त कर लेने से, कितने भी साधन-सम्पत्ति के संग्रह से मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति या सदा काल की सुख-शान्ति-सम्पन्नता को नहीं पा सकता, जब तक वह विकर्माजीत-कर्मातीत नहीं बनता। कर्मातीत-विकर्माजीत बनने का एकमात्र आधार है ईश्वरीय ज्ञान-योग और उसका दृढ़ अभ्यास, जो संगमयुग पर ईश्वरीय वरदान है। इस सत्य को जानकर उसका अभ्यास करने वाला ही जीवन का सच्चा सुख पा सकता है। सुख-शान्ति-सम्पन्नता का सन्तुलन ही आत्मा की खुशी का मूलाधार है। इसलिए बाबा कहते हैं आत्मा को शान्ति के साथ सुख भी चाहिए। अभी परमात्मा के द्वारा सुख-शान्ति अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों का अनुभव होता है।

त्याग-तपस्या से भाग्य अनुभव करने की खुशी

गायन है - लघुता से प्रभुता मिले... हाथी के सिर धूल। संगम के महत्व को जान, साधन, सम्पत्ति, पद के प्रलोभन में न जाकर त्याग-तपस्या के महत्व को जानकर उसके सुख को लेना ही संगमयुगी जीवन की सफलता है। संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान परम सुखदायी है। संगमयुग का पुरुषार्थ ही सतयुगी प्रालब्ध का आधार है। त्याग ही भाग्य है अर्थात् त्याग भी भाग्य का अनुभव कराता है।

"ब्राह्मण बच्चों के लिए सारा संगमयुग ही मनाने का युग है। तो रोज नाचो, गाओ, खुशी मनाओ। कल्प के हिसाब से तो संगमयुग थोड़े दिनों के समान है ना! इसलिए संगमयुग का हर दिन बड़ा है।"

अ.बापदादा 26.12.84

"ब्राह्मणों की जन्मपत्री में तीनों ही काल अच्छे ते अचछे हैं। जो हुआ वह अच्छा, जो हो रहा है वह और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत-बहुत अच्छा। ... बहुत भाग्यवान हो जो भाग्यविधाता ने आपके भाग्य की रेखा श्रेष्ठ बना दी। भाग्यविधाता को अपना बना लिया।" अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 4

ज्ञान-धन के प्राप्ति की खुशी
आत्म-ज्ञान के प्राप्ति की खुशी
परमात्म-ज्ञान के प्राप्ति की खुशी
विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की खुशी

आत्मा में आत्म-ज्ञान को प्राप्ति की तीव्र इच्छा रहती है परन्तु वह इच्छा क्यों होती है, इस सत्य का अनुभव अभी आत्मा को होता है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। जब आत्मा को यथार्थ आत्म-ज्ञान मिलता है तो आत्मा को उस स्थिति में स्थित होने से जो अलौकिक सुख का अनुभव होता है, वह सुख आत्मा के अन्दर स्मृति रूप में नीहित रहता है और आत्मा को उस आत्म-ज्ञान की ओर आकर्षित करता है। अभी आत्मा को उसकी खुशी अनुभव होती है, इसीलिए बाबा बार-बार याद दिलाते हैं हैं कि बच्चे सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो तो तुम अपार खुशी में रहेंगे।

"सहज पुरुषार्थी हर कदम में पद्मों से भी ज्यादा कमाई का अनुभव करेंगे। ऐसा स्वयं को सदा संगमयुगी समझने वाले सदा सर्व खज़ाने से, ज्ञान के किसी भी प्वाइन्ट के खज़ाने से, खुशी से, नशे से कभी खाली नहीं होंगे। खाली होना गिरने का साधन है।"

अ.बापदादा 11.4.83

ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है। जो आत्मा इसके सत्य रहस्य को समझकर इसको देखता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है। दुनिया में ज्ञान धन को सबसे श्रेष्ठ धन माना गया है, उसमें यह अध्यात्मिक ज्ञान की तो बात ही क्या है। इस विश्व-नाटक यथार्थ ज्ञान का चिन्तन अर्थात् इसके विधि-विधान का चिन्तन, इसकी अद्भुतता का चिन्तन, इसकी दिव्यता का चिन्तन, इसके गुण-धर्मों का चिन्तन आत्मा को परमानन्द को देने वाला है। दिन बीतें, रात बीतें, वर्ष बीतें, जीवन बीत जाये तो इसका परमानन्द का अनुभव खुटने वाला नहीं है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - बच्चे, ज्ञान का मथन-चिन्तन करते रहो तो तुमको अलौकिक खुशी अनुभव होगी, तुम अपार खुशी में रहेंगे।

ये विश्व-नाटक भी एक खेल है, जिसको खेल की तरह देखेंगे तो हम अपार खुशी

का अनुभव करेंगे।

देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना, सूक्ष्म स्वरूप धारण कर बाप के साथ का अनुभव और ड्रामा की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसे देखने और पार्ट बजाने में आत्मा को परमानन्द और परम सुख का अनुभव होता है, जो इस संगमयुग पर ही सम्भव है। इस सत्य को जानकर इसका अनुभव करने वाले परम भाग्यवान हैं। इस भाग्य का अनुभव करना और कराना ही इस ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य है, संगमयुग पर खुशी का आधार है।

इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को जानकर साक्षी होकर इसके अवलोकन का परम सुख अनुभव करने का युग ये संगमयुग है। धीर-वीर, निर्भय, ज्ञानी पुरुष ही इस सुख और खुशी को पा सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं। इसीलिए गायन है - जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ, मैं बपुरा बूढ़न डरा रहा किनारे बैठ।

"यह भी ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो बना-बनाया खेल है। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि ऐसे-ऐसे होता है। ... मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है, सो भी एक्यूरेट समय पर आता हूँ। ... ड्रामा में सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बहुत गुह्य बातें हैं। ... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, कब शुरू हुआ, कह नहीं सकते। चक्र फिरता ही रहता है। संगमयुग पर बाप आकर बतलाते हैं - यह ड्रामा 5000 वर्ष का है।" सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

त्रिलोकीनाथ और त्रिकालदर्शी बनने की खुशी

"कभी सोचा था कि इतना विशेष पार्ट इस ड्रामा में हमारा नूँधा हुआ है! ... जब त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होते हो तो कितना मज़ा आता है ... यह संगमयुग टॉप प्वाइन्ट है। तो इस पर खड़े होकर देखो तो मज़ा आयेगा।" अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 6

विश्व-नाटक को खेल के रूप में अवलोकन करने की खुशी

ये विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी खेल है, परमात्मा से ये ज्ञान पाकर और अनुभव करके हम इसे खेल के रूप में अवलोकन करने में समर्थ बने हैं और इस खेल को खेल के रूप में देखने से आत्मा को अति खुशी का अनुभव होता है और पुरुषार्थ करते हैं कि स्मृति सदा बनी रहे, जिससे ये खुशी भी स्थाई रहे।

"यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। सुख भी होता है तो दुख भी

होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं है। ... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं। ... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

""मेला और खेला" ... मेला और खेला, यह दो शब्द सदा याद रखो। ... मेला शब्द याद आने संस्कारों का मिलन, बाप और बच्चों का मिलन और सर्व सम्बन्धों से सदा प्राप्ति का मिलन सभी इस मेले में आ जाते हैं। यह सृष्टि एक खेल है, यह तो मुख्य बात है।"

अ.बापदादा 8.7.73

"यह सृष्टि एक खेल है।... अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी एक खेल हैं।... उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है, यह स्मृति आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।"

अ.बापदादा 8.7.73

"तुमको नशा है कि हम फिर से अपनी राजधानी स्थापन करेंगे, जैसे कल्प पहले की थी। ... तुम वहाँ जायेंगे तो ऑटोमेटिक तुम वह मकान आदि बनाने लग पड़ेंगे क्योंकि वह संस्कार आत्मा में भरा हुआ है। ...आत्मा में सब पहले से ही नूँध है। ...नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती है, वह भी ड्रामा में नूँध हैं। ...यह भी खेल है ना। खेल में हमेशा खुशी होती है।"

सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

परमधाम घर जाने की खुशी

गायन है - जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयशी अर्थात् हरेक को अपना घर सबसे अधिक प्यारा होता है। परमधाम हम आत्माओं का घर है, इसलिए हर आत्मा को घर जाने की आकर्षण स्वभाविक होती है, इसलिए ही हर आत्मा शान्तिधाम घर जाने के लिए प्रयत्न करती है।

"पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व जितना निकलता जायेगा तो खुशी भी होगी। तुम रिटर्न जर्नी पर हो ... फिर ये पुराना शरीर छोड़ देंगे, फिर नया लेंगे ... बातें तो बहुत सहज हैं। रात को सोने समय ऐसे ऐसे सुमिरन करो तो बहुत खुशी रहेगी - हम ये बन रहे हैं। सारे दिन में कोई शैतानी तो नहीं की, 5 विकारों से कोई विकार तो हमको नहीं सताता, लोभ तो नहीं आता .. ऐसे जाँच करनी है।"

सा.बाबा 12.12.68

स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग में जाने की खुशी

मृत्युलोक से अमरलोक में जाने की खुशी

मनुष्य स्वर्ग को बहुत याद करते हैं। प्राय: सर्व धर्मों में स्वर्ग का वर्णन मिलता है परन्तु स्वर्ग की स्थापना कब होती है और स्वर्ग में कैसे जा सकते हैं, स्वर्ग के सुख कैसे होंगे, उनसे आत्मा को कैसी खुशी की अनुभूति होती है - इसका यथार्थ ज्ञान और अनुभव किसी को भी नहीं है। आत्मा ने स्वर्ग का जो अनुभव किया है, वह स्मृति में आंशिक रूप में नीहित रहता है, इसलिए आत्माओं को उसकी याद आती है और वर्णन करते हैं। अभी परमात्मा हम आत्माओं को स्वर्ग का न केवल ज्ञान देते हैं वरन् हमारे द्वारा स्वर्ग की स्थापना कराते हैं और हमको स्वर्ग में जाने का रास्ता बताते हैं। अभी हमको जो खुशी है, वह स्वर्ग में भी नहीं होगी। इसलिए अभी संगमयुग की खुशी स्वर्ग से भी अति श्रेष्ठ है क्योंकि अभी हमको स्वर्ग और नर्क दोनों का ज्ञान है।

स्वर्ग की राजाई स्थापन करने और पाने की खुशी

परमपिता परमात्मा आकर दैवी राजधानी स्थापन करते हैं और हमको उसका मालिक बनाते हैं, उस राजाई को स्थापन करने का ज्ञान देते हैं, राजाई स्थापन में मददगार बनाते हैं, जब आत्मा इस सत्य को अनुभव करती है तो आत्मा को अपार खुशी होती है।

"गायन है - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल... मूलवतन में अलग नहीं रहते हैं। वहाँ तो सब इकट्ठे रहते हैं। आत्मायें वहाँ से बिछुड़ती हैं, यहाँ आकर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं।... बाप भी 5000 वर्ष के बाद आते हैं।"

सा.बाबा 31.10.04 रिवा.

"सारे कल्प में राजा बनने की पढ़ाई कोई नहीं पढ़ता। ... अभी स्वराज्य मिला है, फिर विश्व का राज्य मिलेगा। ... सतयुग में प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं होगा, राजा का राज्य होगा। यह तो चक्र के अन्त में प्रजा का प्रजा पर राज्य है।"

अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी 2

"विश्व के मालिक तो भविष्य में बनेंगे लेकिन बाप के सर्व खज़ानों के मालिक अभी हो। विश्व राज्य-अधिकारी तो भविष्य में बनेंगे लेकिन स्वराज्य अधिकारी अभी हो। इसलिए बालक भी हो और मालिक भी हो।"

अ.बापदादा 9.1.96

ईश्वरीय परिवार के मिलन की खुशी
विश्व-परिवार के मिलन की खुशी

परमपिता परमात्मा ने हमको कल्प-वृक्ष का ज्ञान देकर जो विश्व-परिवार का यथार्थ ज्ञान कराया है, वह भी आत्मा को अद्वितीय खुशी देने वाला है। ईश्वर का परिवार क्या होता है, उसका ज्ञान और अनुभव भी अभी ही हमको है कि ईश्वर हमारा अनादि-अविनाशी पिता है, एक पिता के बच्चे हम सब भाई-भाई हैं, हम सब आत्मायें एक ही ईश्वरीय परिवार के हैं, यहाँ तो पार्ट बजाने के लिए आये हैं, इस सत्य को जानने से ही आत्मा को उस परिवार के ज्ञान और मिलन की खुशी का अनुभव भी अभी ही होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की अभिधारणा भारती सभ्यता का प्राण है परन्तु वसुधा परिवार कैसे हैं, उसका यथार्थ ज्ञान और अनुभव हमको अभी ही होता है। ब्रह्मा सृष्टि का आदि पिता है, उनके बच्चे हम भाई-बहन हैं, एक ही विश्व-परिवार के हैं। जब सारा विश्व हमारा परिवार हो तो उससे क्या खुशी होगी, उसका अनुभव भी अभी हमको होता है। इस पारिवारिक भावना से ही हम विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करते हैं, जिससे सर्व आत्मायें उस सुख और खुशी का अनुभव करें।

विश्व-परिवार का ज्ञान होने से सर्व जीवात्माओं के प्रति हमारा प्रेम जाग्रत होता है, जिसके प्रतिफल स्वरूप विश्व की सर्व आत्माओं का हमारे प्रति भी प्रेम जाग्रत होता है, जिसका अनुभव आत्मा को अपार खुशी देता है।

यथार्थ ब्राह्मणत्व के गुणधारी आत्मा में न केवल मनुष्यात्माओं के प्रति बल्कि प्राणीमात्र के प्रति उसका प्रेम होता है और उन प्राणियों का भी उसके प्रति प्रेम होता है। इस सत्य के लिए ही किसी कवि ने कहा है - हित-अनहित पशु-पक्षिउ जाने। इसके विषय में विश्व में अनेकानेक उदाहरण हैं। इस अनुभव की खुशी भी संगमयुग की विशेष प्राप्ति है।

"अभी तुम बच्चे ईश्वरीय दुनिया में बैठे हो, और सब हैं आसुरी दुनिया में। यह बहुत छोटा संगमयुग है। तुम समझते हो अभी हम न दैवी संसार में हैं और न आसुरी संसार में हैं। अभी हम ईश्वरीय संसार में हैं।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"आज भारत ऐसा है, कल भारत ऐसा बनेंगा। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कल हम रावणराज्य में थे तो नाक में दम था, आज हम परमपिता परमात्मा के साथ रहे हुए हैं। अब हम ईश्वरीय परिवार के हैं, स्वयं भगवान हमको पढ़ा रहे हैं।"

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"यह संगमयुग बहुत-बहुत-बहुत अमूल्य और श्रेष्ठ है। यहाँ संगम जैसी मौज सारे कल्प में

नहीं है। कारण ? परमात्म मिलन की मौज सारे कल्प में अब ही मिलती है। मौज है, मूँझते तो नहीं हो ना ! हर दिन उत्सव है क्योंकि उत्साह है। उमंग है, उत्साह है कि अपने सर्व भाई बहनों को परमात्मा पिता का बनायें।" अ.बापदादा 31.12.02

"इस संगमयुग पर ब्राह्मण जीवन में परमात्म-आशीर्वाद और ब्राह्मण परिवार की आशीर्वाद प्राप्त होती है। ... इस संगमयुग को विशेष ब्लेसिंग का युग कह सकते हैं, इसलिए ही इस युग को महान युग कहते हैं। ... लेकिन यह सर्व आशीर्वाद लेने का आधार याद और सेवा का बैलेन्स है।" अ.बापदादा 6.11.87

"जब स्वयं खुश हो तब दूसरे को चैलेन्ज कर सकते हो। नहीं तो चैलेन्ज नहीं कर सकते। अपने को देखकर औरों के ऊपर रहम आता है क्योंकि अपना परिवार है ना। चाहे कैसी भी आत्मायें हैं लेकिन हैं तो एक ही परिवार के। किसको भी देखेंगे तो महसूस करेंगे कि यह हमारा ही भाई है।... ब्राह्मण आत्मा को कभी भी किसी आत्मा के प्रति घृणा नहीं आ सकती।" अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी

परमात्म-पालना की खुशी

सारे कल्प में परमात्म पालना का समय ये संगमयुग ही है। इस परमात्म-पालना का अनुभव अति अलौकिक और जीवन में सच्ची खुशी को देने वाला है।

"आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में तीन भाग्य के सितारे चमकते हुए देख रहे हैं। एक परमात्म पालना का भाग्य, परमात्म पढ़ाई का भाग्य, परमात्म वरदानों का भाग्य। ऐसे तीन सितारे सभी के मस्तक बीच देख रहे हैं। ... बापदादा का प्यार सर्व आत्माओं के प्रति एक समान ही है और सर्वात्माओं के प्रति रहम भी है। बापदादा का प्यार हर एक बच्चे से एक-दो से ज्यादा है और यह परमात्म प्यार ही सब बच्चों की विशेष पालना का आधार है।" अ.बापदादा 15.10.04

परमात्म पढ़ाई की खुशी

गायन है - Student life is the best. परन्तु अभी परमात्मा ने हमको बताया है और अनुभव कराया है कि ये ईश्वरीय पढ़ाई है और तुम ईश्वर हमारा शिक्षक है तो इस गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ की खुशी तो पदमगुणा बढ़ जाती है। पढ़ाई भी राजाओं का राजा बनने की है पढ़ाने वाला भी परम-आत्मा है, ये स्मृति भी आत्मा को अपार खुशी देने वाली है। देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर त्रैलोक्य का परिभ्रमण और त्रिकालों के अवलोकन करके देखें तो ऐसी खुशी कहाँ भी नहीं मिल सकती, ये संगमयुग पर ही होती है।

"यहाँ अन्दर आने से ही एम एण्ड आब्जेक्ट सामने देखते हैं तो जरुर खुशी होती होगी ... यह है एम एण्ड आब्जेक्ट (दूसरे जन्म की) ऐसा कोई स्कूल कहाँ भी नहीं होगा, जहाँ दूसरे जन्म की एम एण्ड आब्जेक्ट को देख सकें, तुम देख रहे हो।"

सा.बाबा 17.1.69

"शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा इन ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को बैठ पढ़ाते हैं। ये संगमयुग है ब्राह्मणों की पुरी, फिर रुद्र पुरी में जाकर विष्णुपुरी में आते हैं। पहले2 रुद्र-माला में वे आयेंगे, जो निरन्तर याद करेंगे।" सा.बाबा 1.08.03 रिवा.

"रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए। ... तुम अपने को इतना ऊंच नहीं समझते हो, जितना बाप तुमको ऊंच समझते हैं। तुम बचचों को बहुत नशा रहना चाहिए क्योंकि तुम बहुत ऊंच कुल के हो।"

सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

त्रिकालदर्शी बनने की खुशी

अभी हमको तीनों कालों का और तीनों लोकों का ज्ञान है, यह ज्ञान भी आत्मा को अपार खुशी देने वाला है। वर्तमान में भूतकाल के पश्चाताप और भविष्य की चिन्ता में अपने समय, संकल्प, शक्ति को व्यर्थ करके हम अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को ही गँवाते हैं। वर्तमान का योग ही वर्तमान में स्वस्थ मन, खुशी, पवित्रता और भविष्य में सुन्दर स्वास्थ्य, स्वस्थ मन, सुख का आधार है और वर्तमान की खुशी ही भविष्य की खुशी का आधार है। योग केवल पुरुषार्थ ही नहीं लेकिन प्राप्ति भी है। यदि वर्तमान में सही पुरुषार्थ नहीं करते तो वर्तमान और भविष्य दोनों ही प्राप्तियों से वंचित रह जाते हैं। वर्तमान में हम जो राजयोग का अभ्यास करते हैं, वह जीवन में परम-सुख को देने वाला है, अविनाशी खुशी को देने वाला है।

वर्तमान का ज्ञान धन, उसकी खुशी, श्रेष्ठ कर्म, सेवा ही भविष्य में स्थूल धन, और सर्व के सहयोग का आधार है। वर्तमान में दैवीगुणों की धारणा ही वर्तमान में श्रेष्ठ सम्बन्ध, खुशी, सेवा का आधार है और भविष्य में श्रेष्ठ सम्बन्धों का भी आधार है।

"सिर्फ सुनने वाले या सुनाने वाले तो नहीं, स्वमान वाले बने हो? सुनने-सुनाने वाले तो अनेकानेक हैं परन्तु स्वमान वाले कोटों में कोई हैं। आप कौन हो। ... अभी भाग्यवान नहीं बने तो कब बनेंगे? इस श्रेष्ठ प्राप्ति के संगमयुग पर हर कदम यह स्लोगन सदा याद रखो कि "अब नहीं तो कब नहीं", समझा।" अ.बापदादा 24.4.84

ज्ञान-गुण-शक्तियों का खज़ाना जमा करने की खुशी

जब आत्मा का ज्ञान-गुण खुशी का खजाना जमा होता है तो भी आत्मा को बहुत खुशी होती है। इसके विषय में अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है - सारे कल्प के लिए खाता जमा करने की बैंक संगमयुग पर ही खुलती है। सतयुग में भी ये बैंक नहीं होगी अर्थात् सतयुग हम कोई खाता जमा नहीं कर सकते, केवल जमा किया खाता खाते ही हैं।

"बापदादा पूछता है - सर्व बन्धनों से मुक्त, जीवनमुक्त की स्टेज संगम पर ही होनी है या सतयुग में होनी है। ... सम्पन्न तो यहाँ ही बनना है ना, सम्पूर्ण भी यहाँ ही बनना है। संगमयुग के समय का भी सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना है। तो अपना खाता चेक करो।"

अ.बापदादा 28.3.06

विश्व-सेवा की खुशी

संगमयुग पर श्रीमत पर आत्मायें, आत्माओं की सेवा करती हैं और यथार्थ सेवा करके भविष्य के अपना खाता जमा करती हैं। इसलिए परमात्मा के महावाक्य हैं - सेवा तो मेवा है अर्थात् मेवा के समान सुख देने वाली और स्वस्थ बनाने वाली है। सेवा से ही अन्य आत्मायें की दुआयें मिलती हैं, जो दुआयें भी आत्मा को खुशी देती हैं।

जब हम अपने भविष्य की प्राप्तियों के प्रति आश्वस्त होंगे और निश्चय होगा तब ही ईश्वरीय सेवा में लगन होगी, पुरुषार्थ में लगन होगी और ईश्वरीय सेवा से जो सुख की अनुभूति होती है, वह अनुभव होगी और आत्मा को खुशी होती है। ये अनुभूति आत्मा को संगमयुग पर ही होती है।

"भविष्य के राज्य अधिकारी से भी अब का सेवाधारी जीवन श्रेष्ठ है क्योंकि अभी बाप और बच्चों का साथ है। ... युक्तियुक्त सेवा करते हो तो कितनी खुशी होती है। ... सेवा में ये हलचल ही परिपक्व बनाती है, अनुभवी बनाती है।"

अ.बापदादा 26.2.95

"आत्मा के लिए यह मौजों का समय है लेकिन शरीर से सहन भी करना पड़ता है। ... अभी यह सेवा जन्म-जन्मान्तर की सेवा से मुक्त कर देती है। इस सेवा के फलस्वरूप प्रकृति और चेतन्य सेवाधारी आपके चारो ओर घूमते रहेंगे।" अ.बापदादा 19.5.83

"संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है, उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और वह सदा हर्षित रहेगा। ... अपने जन्म और समय के महत्व को जानो तब ही महान कर्तव्य कर सकेंगे।" अ.बापदादा 16.6.72

"इस समय तुम्हारी सब मनोकामनायें पूरी होती हैं। ... इस समय तुम्हारे में ताकत है, जो तुम सब कामनायें पूरी कर सकती हो।" सा.बाबा 25.10.03 रिवा.

"सेवा में खुशी भी मिलती है, शक्ति भी मिलती है और प्रत्यक्ष फल भी मिलता है लेकिन बेहद का वैराग्य खत्म भी सेवा में ही होता है। ... चाहे कितने भी साधन प्राप्त हैं और साधन तो आपको दिन प्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो, इमर्ज हो। साधन और साधना का बैलेन्स हो।" अ.बापदादा 3.4.96

ऊच से ऊंच ब्राह्मण बनने की खुशी

दुनिया में भी मनुष्य को कुल और जाति का भी नशा रहता ही है। बाबा ने भी हमको द्विज जन्म देकर ऊंच से ऊंच ब्राह्मण बनाया है। जिनको अपने इस कुल, वंश, जाति-धर्म की स्मृति रहती है, वह भी आत्मा को खुशी प्रदान करती है।

संगमयुगी ब्राह्मण भी दो प्रकार के हैं। एक हैं प्रत्यक्ष ब्राह्मण, जो बाप को पहचान-कर, प्रत्यक्ष में ज्ञान लेकर बाबा के बनते हैं और दूसरे हैं अप्रत्यक्ष ब्राह्मण जो एडवान्स पार्टी में गये हैं क्योंकि वे देवता तो बने नहीं हैं और उनको शूद्र भी कह नहीं सकते, इसलिए वे भी ब्राह्मण ही हैं। अप्रत्यक्ष ब्राह्मणों का सम्बन्ध भी अव्यक्त बापदादा से है और उनकी भी पालना उनके द्वारा ही होती है, उनको भी अव्यक्त बापदादा से दिशा-निर्देश मिलता है।

"गाया जाता है - आत्मा-परमात्मा अलग रहे ... दलाल। जब वहाँ शान्तिधाम में हैं तो उस मिलन में कोई फायदा नहीं होता है। वह तो सिर्फ पवित्रता और शान्ति का स्थान है। यहाँ तुम जीव आत्मायें हो, परमात्मा भी शरीर में प्रवेश कर बच्चों को पढ़ाते हैं। ... अभी तुम संगम पर खड़े हो, बाप सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। ... लक्ष्मी-नारायण की जो डिनायस्टी चलती है, वह बाप ने संगम पर अभी स्थापन की है। इस समय हम ईश्वरीय सम्प्रदाय और प्रजापिता ब्रह्मा की मुख वंशावली भाई-बहन हैं।"

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

"अपने इस श्रेष्ठ ब्राह्मण संसार को सदा स्मृति में रखो। इस संसार के इस जीवन की विशेशताओं को सदा स्मृति में रख समर्थ बनो, स्मृति स्वरूप बनो तो नष्टोमोहा स्वत: ही बन जायेंगे। ... सदा अन्तर स्पष्ट इमर्ज रूप में रखो कि वह पुराना संसार क्या और यह संगमयुगी संसार क्या!" अ.बापदादा 20.11.85

"बाबा का रात्रि को ख्याल चला कि मनुष्य 21 जन्म कहते हैं, गायन भी करते हैं। अभी यह ईश्वरीय जन्म एक अलग है। आठ जन्म सतयुग में, 12 जन्म त्रेता में, 21 जन्म द्वापर में, 42 जन्म कलियुग में। यह तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सबसे ऊंच जन्म है, जो एडॉप्टेड जन्म है। तुम ब्राह्मणों का ही यह सौभाग्यशाली जन्म है।" सा.बाबा 11.11.03 रिवा.

"ऐसे सर्व खज़ानों से सदा सम्पन्न हो, हर ब्राह्मण आत्मा स्वयं को सर्व खज़ानों से भरपूर सदा अनुभव करते हो ? खज़ाने भी अविनाशी हैं और देने वाला भी अविनाशी है तो खुश रहना भी अविनाशी चाहिए क्योंकि आप जैसी अलौकिक खुशी सारे कल्प में सिवाए आप ब्राह्मणों के किसको भी प्राप्त नहीं होती। ... खुश रहते हो लेकिन परसेन्टेज में अन्तर आ जाता है, सदा एकरस नहीं रहता।" अ.बापदादा 15.11.03

"जो कहावत है कि देवताओं के खजाने में अप्राप्त कोई भी वस्तु नहीं होती है - कहावत ब्राहमणों की गाई हुई है या देवताओं की ? सर्व संस्कार ब्राहमण जीवन में ही अनुभव करते हो क्योंकि अभी सर्व संसकार अपने में भर रहे हो।" अ.बापदादा 2.5.74

"सदैव एक ही संकल्प स्मृति में रहता है कि 9पाना था सो पा लिया, पाने के लिये अब कुछ नहीं रहा। ऐसे संकल्प में स्थित रहने वाले की,... निशानी क्या होगी ? सदा हर्षित रहने वाला मन, वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को सदा खुशी का दान देता रहेगा।"

अ.बापदादा 27.1.76

"अभी हम ब्राह्मण कुल के हैं, यह भी याद रहे तो नशा चढ़े। भूल जाते हैं तो यह नशा नहीं चढ़ता है।... भक्ति मार्ग में जो भी दृष्टान्त आदि हैं, वे सब इस समय के हैं।"

सा.बाबा 26.3.04 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन कितनी श्रेष्ठ और कितनी प्यारी है। अगर ब्राह्मण जीवन नहीं तो परेशानी की जीवन लगेगी। तो प्यारी जीवन है या थक जाते हो ? सोचते हो - संगम कब तक चलेगा... यह संगम की जीवन सर्व जन्मों से श्रेष्ठ जीवन है, प्राप्ति की जीवन है। और तो सब कम होने की जीवन हैं।" अ.बापदादा 15.11.89 दिल्ली ग्रुप

"यह अलौकिक, अव्यक्ति मिलन भविष्य स्वर्ण युग में भी नहीं हो सकता। सिर्फ इस समय इस विशेष युग को वरदान है बाप और बच्चों के मिलने का। इसलिए इस युग का नाम ही है संगमयुग। ... बापदादा भी ऐसे कोटों में कोई श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को देख हर्षित होते हैं और स्मृति दिलाते हैं।" अ.बापदादा 14.10.87

"यह एक ही ब्राह्मण जन्म है जो परमपिता परमात्मा द्वारा डायरेक्ट होता है। देवता जन्म भी श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा ही होता है। ... जो बाप के गुण हैं, वे ही ब्राह्मण आत्माओं के गुण होने चाहिए। ... जैसे इस ब्राह्मण जीवन में त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, ज्ञान स्वरूप बनते हो वैसे और किसी जन्म में बनेंगे क्या ?" अ.बापदादा 13.6.73

"सुप्रीम कहा जाता है सम्पूर्ण पवित्र को। ऐसे नहीं कहेंगे कि सबमें प्योरिटी है। हम अभी इस संगमयुग पर प्योरिटी सीखते हैं। तुम तो पुरुषोत्तम संगमयुग के निवासी हो। ... कलियुग और

सतयुग के बीच को कहा जाता है संगमयुग। ... तुम्हारी बुद्धि में यह नशा होना चाहिए कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं।" सा.बाबा 7.8.04 रिवा.

"बापदादा दोनों बातें चेक कर रहे थे पवित्रता कहाँ तक धारण की है। ... और रुहानी खुशी, अविनाशी खुशी, आन्तरिक खुशी कहाँ तक रहती है। ब्राह्मण जीवन धारण करने का लक्ष्य ही है सदा खुश रहना। ... रुहानी आन्तरिक खुशी वा अतीन्द्रिय सुख सारे कल्प में प्राप्त नहीं हो सकता है, वह प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण बने हो।... अल्प काल की प्राप्ति द्वारा खुशी तो दुनिया वालों के पास भी है। ... खुशियों के सागर के बने हो तो हर संकल्प में, हर सेकेण्ड खुशी की लहरों में लहराने वाले हो।" अ.बापदादा 13.1.86

"आप सभी भी हर कार्य में जैसा समय, उसी प्रमाण चलते रहेंगे तो आपके सहयोग का फल और ब्राह्मणों को भी मिलता रहेगा। ... कई स्थानों से फिर भी आप लोगों को बहुत आराम है और अभ्यास भी हो रहा है। इसलिए राजयुक्त बनकर हर परिस्थिति में राजी रहने का अभ्यास बढ़ाते चलो।" अ.बापदादा 6.11.87

"ब्राह्मणों का ही सर्वोत्तम कुल है। पहला नम्बर कुल कहेंगे ब्राह्मणों का। ब्राह्मण कुल अर्थात् ईश्वरीय कुल। ... तुम ब्राह्मण आपस में भाई-बहन हो। ... शिववंशी तो सब हैं परन्तु जब साकार में आते हैं तो प्रजापिता का नाम होने के कारण भाई-बहन हो जाते हैं।"

सा.बाबा 13.9.06 रिवा.

"बापदादा सभी बच्चों को उसी नज़र से देखते हैं कि यह हर एक रत्न इस ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार है।... भगवान और भगवान के घर का श्रृंगार बनना कम बात है क्या!"

अ.बापदादा 3.4.96

"ब्राह्मण जीवन का श्वांस खुशी है। खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। ... सदा खुशी में रहने वाले पास विद् ऑनर और कभी-कभी खुशी में रहने वालों को धर्मराज पुरी पास करनी पड़ेगी। पास विद् ऑनर वाले एक सेकेण्ड में बाप के साथ जायेंगे, रुकेंगे नहीं।"

अ.बापदादा 3.4.96

"जहाँ रुहानी फखुर होगा, वहाँ विघ्न नहीं हो सकता।... इस ईश्वरीय भाग्य के आगे धन तो कुछ भी नहीं है। वह तो पीछे-पीछे आयेगा।... सदा इसी नशे में रहो। ब्राह्मण जीवन है ही खुशी की जीवन।" अ.बापदादा 2.1.90 पार्टी 2

पूज्य राज्य अधिकारी और पूज्यनीय बनने की खुशी

हम ही पूज्य और हम ही पुजारी तथा हम ही पूज्य देवी-देवता बनते, जिनके जड़

चित्रों के मन्दिर बनाकर भक्त पूजा करते हैं। ये ज्ञान और स्मृति भी आत्मा को बहुत खुशी प्रदान करती है।

"अविनाशी बाप के साथ अविनाशी प्रीति निभाने वाले बच्चों प्रति संगमयुग की हर घड़ी जीवन में नवीनता लाने वाली है। ... सारे कल्प की मौजें इस जीवन में अनुभव करते हो। ... पूज्यपन की मौज और राज्य करने की मौज, दोनों की नॉलेज अभी है, इसलिए अभी मौज है।"

अ.बापदादा 31.12.90

"यह खुशी बच्चों को अन्दर रहे तो कभी कोई बात में रोना नहीं आये। तुम समझते हो ना कि हम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे तो तुमको क्यों नहीं अन्दर में खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

"तन की स्वच्छता अर्थात् सदा इस तन को आत्मा का मन्दिर समझ, उस स्मृति से स्वच्छ रखना। जितनी मूर्ति श्रेष्ठ होती है, उतना ही मन्दिर भी श्रेष्ठ होता है। ब्राह्मण आत्मायें सारे कल्प में नम्बरवन श्रेष्ठ आत्मायें हैं। ब्राह्मणों के आगे देवतायें भी सोने तुल्य हैं, ब्राह्मण हीरे तुल्य हैं।"

अ.बापदादा 6.1.90

माया से युद्ध करने और युद्ध में जीत पाने की खुशी

योद्धाओं के सम्बन्ध में एक वीर रस के कवि के शब्द है - जिस दिन मरि जायें माहिल मामा खुटिया पर टंगी रहे तलवार। भावार्थ यही है योद्धाओं को युद्ध करने में ही खुशी होती है। बाबा ने भी हमको माया से युद्ध करना सिखाया है और कहा है - योद्धाओं का लक्ष्य युद्ध करना और युद्ध में जीत पाना ही होता है। हमारे लिए तो बाबा ने भविष्य वाणी भी कर दी है कि पाण्डवों की जीत निश्चित है, जिसको कोई टाल नहीं सकता। तो विचारणीय है हम अपनी जीत के प्रति आश्वस्त हों तो हमको कितनी खुशी होगी और युद्ध करने में कितनी रुचि होगी। वास्तव में संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ भी खुशी-खुशी होता है, खुशी प्रदान करता है।

हमारे ऊपर बाप का हाथ है और उसके साथ के कारण हम माया से युद्ध करते हुए खुशी का अनुभव करते हैं परन्तु अन्त तक पुरुषार्थ करते रहना है क्योंकि ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है। कब भी माया का प्रभाव हो सकता और ये स्थिति परिवर्तन हो सकती है। इसलिए अपने इस संगमयुगी जीवन की रक्षा के लिए ध्यान रखना हर आत्मा का परम कर्तव्य है।

"महारथी अर्थात् इस रथ पर सवार, अपने को रथी समझे। ... जैसे योद्धे सर्व व्यक्तियों, सर्व

वैभवों का किनारा कर "युद्ध और विजय" - इन दो बातों को सिर्फ बुद्धि में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में लगे हुए होते हैं।... ऐसे योद्धे बने हो ?... योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते। कभी शस्त्रों के बिना रहीं रहते।... भय के वशीभूत नहीं होते हैं।"

अ.बापदादा 13.6.73

"संगमयुग पर युद्ध कर माया से विजय प्राप्त करना भी एक खेल समझते हो, मेहनत नहीं।... खेल लगता है। ... जब मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित होते हो तो खेल लगेगा।"

अ.बापदादा 27.12.87 पार्टी

"अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए आदि से लेकर एक स्लोगन सुनाते आते हैं, अगर वह याद रहे तो कब भी कोई माया के विघ्नों में हार नहीं हो सकती है। "स्वर्ग का स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और संगम के समय बाप का खज़ाना जन्मसिद्ध अधिकार है।"... अधिकारी समझेंगे तो कब माया के अधीन नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 17.5.69

स्वराज्य अधिकारी सो विश्व-राज्य अधिकारी पन की खुशी

"सबसे बड़े से बड़ा राज्य-अधिकार का अनुभव अब संगम पर ही स्वराज्य का होता है। मज़ा तो स्वराज्य अधिकारी का अभी अनुभव कर रहे हो।... प्रजा का अर्थ है अधीन रहना और राजा का अर्थ है अधिकारी।"

अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 4

गॉर्डन ऑफ अल्लाह का ज्ञान और उस गॉर्डन का फूल बनने की खुशी
रामराज्य की स्थापना और रावण राज्य के विनाश की खुशी
सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानने की खुशी
भारत भूमि में जन्म लेने की खुशी

ये भारत भूमि अति महान है, जहाँ स्वयं परमात्मा अवतरित होकर विश्व का कल्याण करते हैं। ये भारत भूमि अनादि-अविनाशी भूमि है। ये सर्व धर्म वालों का तीर्थ है क्योंकि परमात्मा यहाँ आकर ही सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं। भगवान स्वयं कहते हैं - जैसे परमात्मा की महिमा अपरमअपार है, वैसे इस भारत भूमि की महिमा भी अपरमअपार है। कल्प के इस संगमयुग पर ऐसी परम भाग्यशाली भूमि जन्म लेना भी परम-भाग्य है, इस भाग्य की स्मृति भी आत्मा को आन्तरिक खुशी प्रदान करती है।

"तुम बच्चों के साथ-साथ भारत खण्ड भी सबसे सौभाग्यशाली है। इन जैसा सौभाग्यशाली

दूसरा कोई खण्ड नहीं है। यहाँ बाप आते हैं। भारत ही हेविन था, जिसको गार्डर ऑफ अल्लाह कहते हैं। बाप अभी फिर से भारत को फूलों का बगीचा बना रहे हैं।"

सा.बाबा 17.5.05 रिवा.

"भारत बाप की अवतरण भूमि है और भारत प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द करने के निमित्त भूमि है। आदि से अन्त तक भारत में ही पार्ट है। विदेश का सहयोग भारत में प्रत्यक्षता करायेगा और भारत की प्रत्यक्षता का आवाज विदेश तक पहुँचेगा।... भारतवासी बच्चों के भाग्य का सभी गायन करते हैं।" अ.बापदादा 10.11.87

पुरुषोत्तम संगमयुग और पुरुषार्थ

पुरुषार्थ का सही अर्थ क्या है, पुरुषार्थ कब और कैसे किया जा सकता है, पुरुषार्थ का क्या फल होता है, ये सब राज़ परमात्मा संगमयुग पर ही आकर बताते है, जिस ज्ञान को पाकर ही आत्मायें यथार्थ पुरुषार्थ करने में समर्थ होती हैं। वास्तविकता तो ये है कि ये सारा विश्व-नाटक ही पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर बना हुआ है। पुरुषार्थ करना आत्मा का निजी स्वभाव है परन्तु आध्यात्मिक भाषा में पुरुषार्थ शब्द का प्रयोग पुरुषअर्थात् आत्मा के कल्याणार्थ किये गये प्रयत्न के लिए किया जाता है।

* संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् संगमयुग पर पुरुषार्थ भी आत्मा को परम सुखदायी अनुभव होता है क्योंकि संगमयुग पर परमात्मा साथ होता है, इसलिए उनके साथ की हुई मेहनत, मेहनत नहीं लगती खेल लगता है, इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन से कोई ऊबता नहीं है।

पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है अर्थात् हर प्राणी अपने जीवन की सुख-शान्ति के लिए प्रयत्नशील है और उसका ये प्रयत्न ही उसके जीवन के अस्तित्व को सिद्ध करता है। परन्तु पुरुषार्थ शब्द का संधि-विच्छेद और अर्थ को देखें तो वह है - पुरुष + अर्थ अर्थात् जो कार्य आत्मा के कल्याणार्थ किया जाता है, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। संगमयुग ही आत्म-कल्याण का युग है क्योंकि संगम युग पर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा, योग के अभ्यास और सेवा से ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प में उतरती कला ही होती है। इसलिए संगमयुग ही यथार्थ पुरुषार्थ का युग है।

* आत्मिक स्वरूप की स्थिति परम शान्तिमय है, परमात्मा की छत्रछाया सर्व आत्माओं पर है, ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी और परम सुखमय है। इसमें हर आत्मा कर्म

करने के लिए स्वतन्त्र है और उसके अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। इसमें किसी भी आत्मा का किसके बीच कोई हस्तक्षेप सम्भव नहीं है। पुरुषार्थ करके ड्रामा के इस सत्य को जानना और उसकी सत्यता को जानकर अनुभव करना परम सुखदायी है। ये पुरुषार्थ और प्रालब्ध का ज्ञान संगमयुग पर होता है।

* ये ईश्वरीय ज्ञान परमपिता परमात्मा का संगमयुग पर आत्माओं को परम वरदान है और परम-सुख का आधार है। जिसकी बुद्धि में ये ज्ञान जाग्रत है, उसके जीवन में हीनता-अहंकार, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, राग-द्वेष आ नहीं सकता। ये संगमयुग की परम प्राप्ति है। इस सत्य को जानकर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों के यथार्थ रहस्य को समझना और अनुभव करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है। इस सत्य को जानने और उस पर निश्चय वाले का उसके लिए पुरुषार्थ अवश्य चलता है, भले ही उसमें कोई तीव्र पुरुषार्थ करता है, कोई मध्यम और कोई कनिष्ट करता है परन्तु करता अवश्य है। जो जैसा पुरुषार्थ करता है, वह उस अनुसार इस संगमयुग का परम-सुख अनुभव करता है और भविष्य के लिए सुख का मार्ग प्रशस्त करता है अर्थात् सुख का खाता संचित करता है।

सत्यता तो ये है कि जिस आत्मा को संगमयुग की प्राप्तियों और सुखों का ज्ञान हो जाता है, वह पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकता। इसीलिए बाबा ने कहा है - निश्चयबुद्धि विजयन्ति अर्थात् जिसको संगमयुग की प्राप्तियों का ज्ञान, उनका अनुभव और उन पर निश्चय हो गया, वह पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकता। उसकी तो नींद ही भाग जायेगी। ब्रह्मा बाबा ने इसके विषय में अनेक बार अनुभव सुनाया है कि कैसे संगमयुग की ईश्वरीय प्राप्तियों की स्मृति आते ही नींद ही फिट जाती है और उसके चिन्तन में आत्मा शक्ति की अनुभूति होती है।

"इस समय के पुरुषार्थ की वह (सतयुग) प्रालब्ध है। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए, जिससे 21 जन्म की प्रालब्ध बनती है। वहाँ पुरुषार्थ-प्रालब्ध की बात होती नहीं है। वहाँ तो अप्राप्त वस्तु ही नहीं, जिसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े।"

सा.बाबा 18.07.03 रिवा.

* आत्म-कल्याण करना मानव जीवन का परम कर्तव्य है। आत्म-चिन्तन, देह और देह की दुनिया से न्यारे होने का अभ्यास, प्रभु-चिन्तन और प्रभु-प्यार में खो जाना, विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर, उसकी अद्भुतता को अनुभव करना, साक्षी होकर इसे देखना और सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ पुरुषार्थ करना ही आत्म-कल्याण और परमार्थ का एकमात्र साधन और साधना है। यह ब्राह्मण जीवन, यह संगम का सुहावना समय आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण के लिए ही मिला है। अपने को देखो कहाँ दैहिक सुखों के आकर्षण में भटक तो नहीं

रहे हो। ये दैहिक सुख, इन्द्रीय सुख और सुखों की आकर्षण आत्मा के पतन के कारण है और परिणामत: दुख देने वाले हैं। इसकी सत्यता को जानने वाले ही अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं।

* कहावत है "आम के आम, गुठलियों के दाम" अर्थात् इस संगमयुग पर किये गये पुरुषार्थ से भविष्य प्रालब्ध तो बनती ही है परन्तु संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान सुखदायी होता है। संगमयुग पर योग से मुक्ति-जीवनमुक्ति का जो आनन्द, अतीन्द्रिय सुख आत्मा को प्राप्त होता है, वह कल्प का और इस विश्व-नाटक का सर्वोत्तम सुख है। जो इस सुख में विभोर हो जाता है, उसे भविष्य सतयुगी-त्रेतायुगी सुख की प्रालब्ध भी बोनस (Bonus) में मिलती ही है। जो वर्तमान में अभीष्ट पुरुषार्थ न करके भविष्य की चिन्ता में रहता है वह इस संगम के सर्वोत्तम सुख से भी वंचित रह जाता है तो भविष्य प्रालब्ध से भी वंचित रह जाता है। इसलिए गायन है - तूने दिवस गंवाया खाये के, रात गंवाई सोय के, हीरा जन्म अमोल है, कौड़ी बदले जाये। इस सत्य को जानकर अभीष्ट पुरुषार्थ करके इस जीवन को सफल करने वाले ही सच्चे संगमयुगी ब्राह्मण हैं।

* परमपिता परमात्मा ने तुमको क्या दिया है, इस सत्य पर विचार करो - बाप ने जो दिया है, वह परमानन्द को देने वाला है, इसलिए देह और देह की दुनिया से उपराम होकर अपने स्व स्वरूप में स्थित होकर जीवन के परम सुख को अनुभव करो और भविष्य के लिए अनन्त सुख को संचित करो। जो व्यर्थ बातों, व्यर्थ खान-पान, व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ संग, व्यर्थ वातावरण, इन्द्रीय सुखों के आकर्षण में इस परम सुख को गँवा देते हैं, वे वर्तमान और भविष्य दोनों सुखों से वंचित हो जाते हैं क्योंकि वर्तमान संगमयुग का अतीन्द्रीय सुख ही भविष्य के सतयुगी स्थूल सुख का आधार है। आधार ही नहीं तो मंजिल कहाँ खड़ी होगी - इस सत्य को अनुभव करके अभीष्ट पुरुषार्थ करके इस जीवन को सफल करो।

* यह संगमयुगी जीवन कितना परमानन्दमय है! इसका अनुभव वही कर सकता है, जो आत्मिक स्वरूप में स्थित है और इस स्थिति के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ भी वही कर सकता है, जो देह और देह के सम्बन्धों की नश्वरता को अनुभव करता है और यह अनुभव भी यथार्थ रीति वही कर सकता है, जिसको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है। इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान अभी संगमयुग पर परमपिता परमात्मा के द्वारा ही प्राप्त होता है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अभीष्ट पुरुषार्थ करके जीवन का सच्चा सुख अनुभव करना और कराना संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं का परम कर्तव्य है।

* संगमयुग अतीन्द्रिय सुख का युग है। जो संगमयुग पर आकर भी भौतिक प्राप्तियों के

आकर्षण और इन्द्रीय सुखों के आकर्षण में रहता है, वह न घर का रहता और न घाट का अर्थात् वह दोनों सुखों से वंचित हो जाता है। जो इन्द्रीय सुखों और भौतिक प्राप्तियों से उपराम होकर अतीन्द्रीय सुख के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है, वह इस जीवन के परम सुख को भी अनुभव करता है और भविष्य के लिए सुख का खाता भी संचित करता है। जो ऐसा पुरुषार्थ करता है, उसका ही जीवन धन्य-धन्य है। यही मानव जीवन का सच्चा पुरुषार्थ है।

"सिर्फ सुनने वाले या सुनाने वाले तो नहीं, स्वमान वाले बने हो? सुनने-सुनाने वाले तो अनेकानेक हैं परन्तु स्वमान वाले कोटों में कोई हैं। आप कौन हो। ... अभी भाग्यवान नहीं बने तो कब बनेंगे? इस श्रेष्ठ प्राप्ति के संगमयुग पर हर कदम यह स्लोगन सदा याद रखो कि "अब नहीं तो कब नहीं", समझा।" अ.बापदादा 24.4.84

* जो दूसरों से मान-सम्मान, महिमा की आश रखता है, वह मान-शान, महिमा का भिखारी है और भिखारी की क्या महिमा होगी, यह हम स्वयं ही समझ सकते हैं। ये संगमयुग है अपने भाग्य की स्वयं महिमा अनुभव करने का युग। इसमें शब्दों की बात नहीं, यह अनुभव की बात है। जो स्वमान में रह अपने भाग्य की स्वयं महिमा अनुभव करता है, उसमें स्थित रहता है, उसकी महिमा स्वत: होती है। इस संगमयुगी जीवन के महत्व को जानकर जो अभीष्ट पुरुषार्थ करता है, उसकी भगवान भी महिमा करता है। भगवान भी उसके गुणों का गुण-गान करते हैं।

"84 जन्मों के संस्कार प्रबल हैं या इस सुहावने संगमयुग के एक सेकण्ड में अशरीरी, वाणी से परे अपनी अनादि स्टेज का अनुभव प्रबल है? क्या समझते हो? ... ज्यादा आकर्षण कौन करता है, वाणी में आने का संस्कार या वाणी से परे होने का अनुभव? वास्तव में यह एक सेकेण्ड का अनुभव बहुत समय के अनुभव का आधार है। ... श्रीमत है - एक सेकेण्ड में साक्षी अवस्था में स्थित हो जाओ। ... एक सेकण्ड में अपने को स्थित करने के इस पुरुषार्थ को ही तीव्र पुरुषार्थ कहा जाता है।" अ.बापदादा 4.5.73

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं जड़-जंगम प्रकृति

परमात्मा पतित पावन है। वह संगमयुग पर आकर जड़-जंगम एवं चेतन तीनों को पावन बनाता है अर्थात् पंच तत्वों सहित सर्वात्माओं को पावन बनाता है, जिससे सतयुग में आत्माओं के लिए प्रकृति भी सुखदायी बन जाती है। परमात्मा आत्माओं को पावन बनने का ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं, जिसका प्रभाव जड़-जंगम प्रकृति पर भी होता है और जड़-जंगम प्रकृति भी पावन बन जाती है।

* जब और जैसे आत्मा इस जड़ प्रकृति के तत्वों या उनसे निर्मित प्रकृति के सम्पर्क में आती है तो आत्मा की स्थिति का जड़ तत्वों अर्थात् प्रकृति पर और जड़ प्रकृति का आत्मा पर उसकी स्थिति के अनुसार प्रभाव अवश्य पड़ता है। सतयुग में भी ये सिद्धान्त प्रभावित होता है तो कलियुग में भी होता है। यही आत्मा के सुख और दुख का कारण बनता है। संगम पर परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं तो आत्मा इस देह और देह की दुनिया से न्यारी होकर परमपिता परमात्मा और परमधाम से बुद्धियोग लगाती है तो उसका प्रभाव जड़ प्रकृति पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से जड़ तत्व भी पावन बनते हैं और आत्मा का बुद्धियोग परमात्मा के साथ होने के कारण तथा आत्मा के स्वस्थिति अर्थात् मूल स्वरूप में स्थित होने के कारण आत्मा पर जड़ प्रकृति का प्रभाव निष्प्रभावी होता है और आत्मा का प्रभाव जड़ प्रकृति पर प्रभावित होता है। कर्मातीत आत्मा को जड़ तत्वों का प्रभाव प्रभावित नहीं करता है। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, वही इस जगत में उसकी कर्मातीत स्थिति है। आत्माओं के द्वारा प्रकृति को पतित से पावन में परिवर्तन करने की ये प्रक्रिया कल्प के संगमयुग पर ही होती है, इसलिए विश्व-नाटक में ये संगम का समय परमानन्दमय और परम कल्याणकारी है। संगमयुग के इस गुह्य रहस्य को जानकर पावन बनना, आत्माओं और प्रकृति को पावन बनाना संगमयुगी ब्राह्मणों का परम कर्तव्य है।

पुरुषोत्तम संगमयुग, विधि-विधान और विधाता

सारे कल्प के विधि-विधानों, नियम-मर्यादाओं के बीज बोने का समय ये संगमयुग ही है। संगमयुग पर ही विधाता बाप विश्व-नाटक के सारे विधि-विधानों का ज्ञान देता है। उन विधि-विधानों के अनुसार जो जितना चलता है, वह उतना ही इस विश्व-नाटक का सुख पाता है, महान बनता है। संगमयुग के इन विधि-विधानों का भी हमको जितना यथार्थ और स्पष्ट ज्ञान होगा, उतना ही हमको उनके पालन करने में रुचि होगी, पालन करना सहज होगा और उस अनुसार ही हम फल पायेंगे। गायन है - निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

परमात्मा ने अनेक बार अपने महावाक्यों में इस सत्य का ज्ञान दिया है कि तुम विधाता भी हो अर्थात् अभी तुम जो भी कार्य करते हो, वह सारे कल्प के लिए विधान बन जाता है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने जो भी कर्म किये, वे ब्राह्मण परिवार के लिए विधान, नियम-संयम बन गये और अभी जो ब्राह्मण कर्म करते हैं, वे अन्य आत्माओं के लिए विधि-विधान बन जाते हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग और स्थापना एवं विनाश का दिव्य कर्तव्य
पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुगी राजवंश की स्थापना
पुरुषोत्तम संगमयुग और सफल कर सफलता का सिद्धान्त
पुरुषोत्तम संगमयुग और पाप-पुण्य का ज्ञान एवं पाप-पुण्य का खाता
पुरुषोत्तम संगमयुग और बृहस्पति की दशा
पुरुषोत्तम संगमयुग और विश्व-कल्याण अर्थात् विश्व-शान्ति
पुरुषोत्तम संगमयुग, श्रीमत और विश्व-कल्याण
पुरुषोत्तम संगमयुग और विभिन्न धर्म, धर्म-शास्त्र, धर्म की मान्यतायें
पुरुषोत्तम संगमयुग और भक्ति मार्ग एवं भक्ति के कर्म-काण्ड, त्योहार आदि
पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्मा के हिसाब-किताब
पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब
पुरुषोत्तम संगमयुग का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक महत्व
पुरुषोत्तम संगमयुग - परमात्मा पिता का वर्सा
पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत देश
पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत का प्राचीन राजयोग

पुरुषोत्तम संगमयुग और स्थापना एवं विनाश का दिव्य कर्तव्य

पुरुषोत्तम संगमयुग और सतयुगी राजवंश की स्थापना

ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है अर्थात् इसकी न कभी स्थापना हुई है और न कभी विनाश होने वाला है परन्तु इसकी गति-विधियों को देखें तो ये नित्य नया प्रतीत होता है क्योंकि यह अनादि-अविनाशी होते भी सतत परिवर्तनशील है, इसलिए इसमें आने वाला हर क्षण नया अनुभव होता है। यह सब होते भी सतोप्रधानता की चरम सीमा और तमोप्रधानता की चरम सीमा का संगम पुराने चक्र के अन्त और नये चक्र के आदि का सन्देश देता है। इस सत्य का ज्ञान भी जब संगमयुग पर परमपिता परमात्मा आकर चक्र का ज्ञान देते हैं तब ही पता चलता है। परमात्मा ही संगमयुग पर आकर देवी-देवता धर्म की स्थापना करके नये चक्र की कलम लगाते हैं और पुराने चक्र का विनाश ड्रामा अनुसार अपने समय पर होता है। ये

स्थापना और विनाश का इतिहास बड़ा रोचक और आनन्ददायक है, जिसका अनुभव अभी संगमयुग पर हम आत्मायें करते हैं।

पुरानी दुनिया में प्रजातन्त्र से सतयुगी दुनिया के राजवंश की स्थापना का कार्य भी परमात्मा संगमयुग पर ही करते हैं और ब्राह्मण बच्चों से कराते हैं।

"यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब बाप आकर ज्ञान से तुमको उत्तम पुरुष बनाते हैं। ... जो यहाँ का होगा, उनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगेगा।... भगवानुवाच - तुम कितने महान भाग्यशाली हो, इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है। ... तुम बच्चों को 16 कला सम्पूर्ण यहाँ बनना है। ... बाबा पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर यह डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं।"

सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

"संगमयुग की राजनीति अर्थात् हर एक ब्राह्मण आत्मा स्व का राज्य अधिकारी बनता है। ... न सिर्फ यह स्थूल शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियां लेकिन मन-बुद्धि-संस्कार भी आप राज्य-अधिकारी आत्मा के डायरेक्शन प्रमाण चलते हैं। ... चाहे प्रजा है, चाहे रॉयल फैमिली है लेकिन प्रजा, प्रजा नहीं लेकिन प्रजा भी एक परिवार है। परिवार की नीति - यह है सतयुग-त्रेता की राजनीति।"

अ.बापदादा 12.11.92

पुरुषोत्तम संगमयुग और सफल कर सफलतामूर्त बनने का सिद्धान्त

संगमयुग पर ही परमात्मा आकर अपना तन-मन-धन सब सफल कर जीवन में सफलता प्राप्त करने की श्रीमत देते हैं और जो उनकी श्रीमत पर चलकर अपना तन-मन-धन सफल करते हैं, वे सारे कल्प के लिए सफलता प्राप्त करते हैं अर्थात् उसका फल सारे कल्प के लिए मिलता है। ब्रह्मा बाबा ने इस क्षेत्र में सबसे अग्रणी पार्ट बजाया और सभी ने उनको फॉलो करके अपना तन-मन-धन सफल किया।

"संगमयुग समर्थ युग है, सफलता का युग है, व्यर्थ का नहीं है। ... अगर समय सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधा कल्प का पूरा समय राज्य अधिकारी बनेंगे। अगर कभी-कभी सफल करेंगे तो राज्य अधिकारी भी कभी-कभी बनेंगे। समय सफल की प्रालब्ध यह है। स्वांस सफल कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते हार्टफेल नहीं होगी। ... ज्ञान के खज़ाने को भी सफल करो तो ज्ञान का अर्थ है - समझ। वहाँ इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मन्त्रियों की जरूरत नहीं होगी।"

अ.बापदादा 31.12.02

"एकदम सब-कुछ भूल जाओ अथवा जो कुछ है काम में लगा दो, तब ही याद टिकेगी। शरीर भी याद न रहे। अशरीरी आये थे, अशरीरी होकर जाना है। ... ड्रामा को न जानने के

कारण कुछ भी समझते नहीं हैं। ... ऐसे नहीं कहेंगे कि सतयुग में तुम देही-अभिमानी रहते हो। यह तो अब बाप सिखलाते हैं - ऐसे देही-अभिमानी बनो। ... ड्रामा कितना वण्डरफुल है, जिसको तुम ही नम्बरवार जानते हो।" सा.बाबा 11.3.04 रिवा.

"आपकी ज्ञानयुक्त कल्याण की भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है और आगे चलकर प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा। ... इतना आप अपनी शुभ भावना का महत्व जानते हो?... आपकी शुभ भावना केवल शुभ नहीं लेकिन शक्तिशाली भी है क्योंकि आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें हो और संगमयुग को ड्रामा अनुसार प्रत्यक्ष फल प्राप्त होने का वरदान है।" अ.बापदादा 27.11.89

"इस पाठशाला का टीचर शिवबाबा है, श्रीकृष्ण नहीं। शिवबाबा ही दैवी धर्म की स्थापना करते हैं। ... हम परमात्मा से तकदीर बनाने आये हैं।... गीता ज्ञान से ही तकदीर बनती है। ... संगम पर जिन्होंने अपना तन-मन-धन सब सफल किया वा कर रहे हैं, वे हैं तकदीरवान।" सा.बाबा 21.1.05 रिवा.

"समय, संकल्प, सम्पत्ति सब "सफल करो सफलता पाओ"... सफल करना है बीज और सफलता है फल। अगर बीज अच्छा है तो फल नहीं मिले, यह हो नहीं सकता। बीज में कुछ कमी है तब सफलता का फल नहीं मिलता।" अ.बापदादा 22.3.96

"आपकी मन-बुद्धि अभी एक बाप में एकाग्र हो गयी, इसलिए अभी आपकी बुद्धि जो निर्णय करेगी, वह बहुत यथार्थ करेगी। जिस समय जिसको जो करना चाहिए, वह टच होगा। ... मिनिस्टर की सीट पर नहीं लेकिन विश्व-कल्याण की सीट पर - इस वृत्ति-दृष्टि से कुछ समय सेवा करके देखो। बहुत अच्छे अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 10.3.96 पार्टी

"सफलता हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है ... निश्चयबुद्धि विजयी . यह आपका स्लोगन है ना! यह स्लोगन अभी का है, भविष्य का नहीं। वर्तमान का है ... यह बर्थराइट, परमात्म बर्थराइट है। इसको कोई छीन नहीं सकता। ऐसा निश्चयबुद्धि सदा प्रसन्नचित्त सहज और स्वत: रहेगा।" अ.बापदादा 22.3.96

पुरुषोत्तम संगमयुग और पाप-पुण्य का ज्ञान एवं पाप-पुण्य का खाता

पाप-पुण्य का ज्ञान और विधि-विधान भी परमात्मा संगमयुग पर ही आकर बताते हैं,

तब ही आत्मायें ज्ञान-योग और श्रेष्ठ कर्मों से पाप का खाता खत्म कर, पुण्य का खाता जमा करने में समर्थ होती है। पाप कर्म तो आत्मा द्वापर से देहाभिमान के वश करती ही आती है परन्तु पुण्य का युग संगमयुग ही है, जब आत्मायें परमात्मा के संग और परमात्मा के ज्ञान से स्वयं भी पावन बनती है और अन्य आत्माओं को पावन बनने का रास्ता बताती हैं, पुण्यात्मा बनने में सहयोगी बनती है। सतयुग-त्रेता में तो पाप-पुण्य का प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि वहाँ न कोई दुखी होता है और न विकार होते हैं, जो पाप के मूल कारण हैं। द्वापर-कलियुग में आत्मायें पाप-पुण्य दोनों करती हैं परन्तु वहाँ पुण्य नाममात्र ही होता है। वास्तव में वहाँ भी पुण्य का कोई कार्य होता नहीं है क्योंकि देहाभिमान के वशीभूत आत्मा में पुण्य कर्म करने की शक्ति ही नहीं होती, जिससे चाहते भी पुण्य कर्म नहीं कर पाती है। आत्मिक शक्ति की कमी के कारण आत्मा जो भी कर्म करती, उससे पाप ही होता है। पाप-पुण्य का यथार्थ रहस्य न जानने के कारण जिसको वे पुण्य समझकर करते हैं, वह भी पाप कर्म ही हो जाता है। इसलिए यथार्थ रीति सारे कल्प में पुण्य का युग संगमयुग ही है।

आधे कल्प से देहाभिमान के वश होने और देहाभिमान के वश पाप कर्म करने से आत्मा पर अनेक जन्मों तक किये गये पाप-कर्मों का बोझा चढ़ा हुआ है, अनेक जन्मों के अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब हैं, वह सब खत्म करके कर्मातीत बनने का समय भी ये संगमयुग ही है। यथार्थ ज्ञान के चिन्तन तथा देही-अभिमानी स्थिति के सतत अभ्यास से आत्मा का अनेक जन्मों का बोझा उतरने और देही-अभिमानी होकर पुण्य कर्म करने और से भविष्य के लिए पुण्य का खाता जमा करने का समय ये संगमयुग ही है। संगमयुगी जीवन की ये प्रक्रिया परम सुखदायी है। यथार्थ रीति इस सत्य को देखो और अनुभव करो।

देहाभिमान अनेक विकर्मों को कराता है, जिससे अनेक आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का बुरा खाता बनता है और देही-अभिमानी स्थिति का अभ्यास अनेक विकर्मों से बचाता है और पूर्व जन्मों के हिसाब-किताब से मुक्त करता है।

ये संगमयुगी जीवन समय काटने के लिए नहीं है, केवल ड्रामा का पार्ट बजाने मात्र नहीं है। ये जीवन परमानन्दमय है, परम सुखदायी है। ये संगमयुग सारे कल्प के लिए सर्व प्रकार के बीज बोने का समय है। देही-अभिमानी बनकर या देहाभिमान के वश हम जैसे पाप-पुण्य के कर्म करते हैं, स्वभाव-संस्कार धारण करते, आत्माओं के साथ जैसे व्यवहार करते वैसा बीज आत्मा में पड़ता है और वही भविष्य सारे कल्प में फलित होता है।

"अगर अवित्रता का कोई कार्य होता है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ... हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। इसमें अलबेले नहीं बनो। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे

सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है। इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुवन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। ... बापदादा ऑफीशियल इशारा दे रहा है। इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब अच्छी तरह से लेंगे। कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन! दोनों कान खोल कर सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृश्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति-दृष्टि क्या है! सम्पन्नता का समय समीप आ रहा है, बिल्कुल प्योर बनने का। उसमें यह चीज तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है। अच्छा।"

अ.बापदादा 15.11.03

पवित्रता जीवन की महान प्राप्ति है। वीर्य एक अमूल्य शक्ति है, जो इस देह को अनेक रोगों से मुक्त करता है, कार्य करने की शक्ति प्रदान करता है। पवित्रता की धारणा से हम जो ईश्वरीय सेवा करते, वह हमको अभी भी सुख देती और भविष्य के लिए भी सुखदायी खाता जमा करती। देहाभिमान के वश अपवित्रता से वीर्य नाश होता, जो जीवन में अनेक रोगों को जन्म देता, समय और संकल्प को नष्ट करता, कार्य क्षमता को कम करता, ईश्वरीय सेवा में बाधक बनता, जिसके परिणाम स्वरूप आत्मा श्रेष्ठ पद से वंचित हो जाता है और ये परिणाम आत्मा के सामने अन्त समय पश्चाताप के रूप प्रगट होकर दुखदायी बनता है क्योंकि उस समय आत्मा को सभी बातें याद आती हैं।

"समय पर शक्तिहीन क्यों हो जाते ? बापदादा ने देखा कि मैजारिटी बच्चों की लीकेज है। ... संकल्प और समय वेस्ट जाता है। ... बुरा नहीं किया लेकिन अच्छा क्या किया ... अशान्त नहीं किया लेकिन शान्ति का वायब्रेशन कितना फैलाया ... जमा करने का थोड़ा सा समय यह कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग का समय है। "अब नहीं तो कब नहीं"। ब्रह्मा बाबा का यही तीव्रगति का पुरुषार्थ रहा तब नम्बरवन मंजिल पर पहुँचा।"

अ.बापदादा 18.01.06

"जमा के खाते की तरफ विशेष अटेन्शन दो क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई समय नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है।"

अ.बापदादा 11.11.89

"पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य बहुत करते हैं। ... वास्तव में इस पुरुषोत्तम युग का बहुत मान है। तुमको कितनी खुशी और नशा होना चाहिए। अब तुम से कोई पाप कर्म नहीं होना चाहिए क्योंकि तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो।"

सा.बाबा 10.8.06 रिवा.

"बाप तो अपना है लेकिन बाप की प्रॉपर्टी भी अपनी है या सिर्फ बाप को पा लिया - ठीक है ?

... बाप की प्रॉपर्टी है सर्व शक्तियां। ... जिसके पास स्टॉक जमा होगा तब ही दूसरों को दे सकेंगे। ... संगम पर जमा करने का ही काम मिला है। सारे कल्प में और कोई युग नहीं है, जिसमें ये जमा कर सको। फिर तो खर्च ही करना है।"

अ.बापदादा 14.1.90 पार्टी 1

"समय और संकल्प अपना भी बचाओ और दूसरों का भी बचाओ। बचत का खाता जमा करो। ... अपने निश्चय और जन्मसिद्ध अधिकार की शान में रहो तो परेशान नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 22.3.96

"सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। ... पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। ... सत्यता सिर्फ सच बोलने, सच करने को नहीं कहा जाता है ... पहले बात अपने सत्य स्वरूप को जाना कि मैं आत्मा हूँ ... फिर बाप के सत्य परिचय को जाना ... और तीसरी बात - इस सृष्टि-चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। ... सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे।"

अ.बापदादा 27.2.96

पुरुषोत्तम संगमयुग और विश्व-कल्याण अर्थात् विश्व-शान्ति

पुरुषोत्तम संगमयुग, श्रीमत और विश्व-कल्याण

संगमयुग पर ही परमात्मा आकर विश्व-कल्याण का कर्तव्य करते हैं और हम आत्माओं को भी उस कर्तव्य में सहयोगी बनाते हैं अथवा ऐसे कहें कि परमात्मा हम आत्माओं के द्वारा विश्व-कल्याण का कर्तव्य कराते हैं क्योंकि सारे कल्प में आत्माओं के ही परस्पर हिसाब किताब का खाता चलता है। इसलिए विश्व-कल्याण की सेवा इस ईश्वरीय जीवन का एक मुख्य अंग है।

संगमयुग पर ही परमात्मा आकर आत्माओं को श्रीमत देते है, जिससे जड़ प्रकृति सहित सर्वात्माओं का कल्याण होता है और विश्व नया सुखदायी बन जाता है।

"ट्रान्सफर ऊपर वाले क्लास में होंगे, नीचे वाले क्लास में नहीं। अभी दुनिया की ट्रान्सफर नीचे हो रही है और तुम्हारी ट्रान्सफर ऊपर हो रही है। कलियुगी मनुष्य सीड़ी नीचे उतरते हैं और तुम संगमयुगी सीड़ी ऊपर चढ़ते हो।" सा.बाबा 13.5.69 रिवा.

संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं जिससे इस विश्व का नवनिर्माण होता है, आत्मायें पावन बनती हैं। परमात्मा के इस विश्व-कल्याण के कार्य में अन्य आत्मायें

भी मददगार बनती है, जो अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगाकर विश्व का कल्याण करती हैं।

"तुम तो बड़े ते बड़े सन्यासियों, बड़े-बड़े मर्तवे वालों को हिलाते हो क्योंकि तुम्हारा है ईश्वरीय मर्तवा। उन्हों का मर्तबा क्या कुछ भी नहीं है। जो अच्छी रीति समझते हैं वह अपना भी और दूसरों का भी कल्याण करते हैं। जो अपना ही नहीं तो दूसरों का क्या करेंगे ... कोई का कल्याण नहीं करते तो अपन को कल्याणकारी बाप का बच्चा क्यों कहलाना चाहिए।"

सा.बाबा 7.2.69 रिवा.

"ड्रामा में नूँध है। इसलिए संशय की इसमें कोई बात ही नहीं। ड्रामा अनुसार एक्यूरेट ही चलता है। ड्रामा की रिपीटीशन का ज्ञान है तो कुछ भी संशय नहीं होगा। कोई भी चले जायें, संशय नहीं। कल्प पहले भी यही पार्ट बजा था। ड्रामा है ना। जो कुछ होता है, ड्रामा अनुसार ही होता है। जानते हैं हर बात में कल्याण ही है। यह है ही कल्याणकारी युग, जो कुछ होता है कल्याण के लिए ही होता है।"

सा.बाबा 25.4.69 रिवा.

विश्व-कल्याण की सेवा का समय ये संगमयुग ही है, जिसका मूलाधार ब्रह्मचारी जीवन है। संगमयुग पर विश्व-कल्याण की सेवा ब्राह्मण आत्मायें तीन प्रकार से करती हैं।

1. अपने गुणों और धारणाओं के द्वारा सेवा

विश्व-कल्याण की सेवा का युग यह संगमयुग ही है। अभी ब्रह्मचर्य की धारणा भी एक श्रेष्ठ सेवा है। ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है और संगमयुग पर परमपिता परमात्मा का परम वरदान है। ब्रह्मचर्य मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट महानता है और विश्व-कल्याण की सेवा का मूलाधार है। ब्रह्मचारी जीवन स्वत: सेवा करता है। ऐसे ही अन्य गुणों की धारणाओं से भी सेवा होती है।

इस ब्राह्मण जीवन की खुशी भी स्वत: ही सेवा करती है - आत्मा को जो आन्तरिक खुशी होती है, उसकी झलक चेहरे और चलन में प्रतिबिम्बित होती है, जिसको देखकर आत्मायें स्वत: परमात्मा और इस ईश्वरीय ज्ञान और इस योगी जीवन की ओर आकृष्ट होती हैं और आत्माओं की स्वत: सेवा होती है। खुशी संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की बहुमूल्य सम्पत्ति है।

2. ज्ञान और अपने अनुभवों का वर्णन

ज्ञान और अनुभवों का वर्णन तीन प्रकार से होता है। एक है मुख से वर्णन और दूसरा है कलम से वर्णन और तीसरा कर्म से वर्णन।

3. यज्ञ की स्थूल सेवा

संगमयुग पर परमात्मा ने इस ज्ञान-यज्ञ की स्थापना की है, जिसकी ब्राह्मण तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा सेवा करती हैं। विश्व-कल्याण के लिए रचे गये इस रुद्र-यज्ञ की स्थूल रूप से सेवा की हुई सेवा भी बहुत महत्वपूर्ण है।

"यह रुहानी महफिल, रुहानी मिलन सारे कल्प में अभी ही कर सकते हो। आत्माओं से परम-आत्मा का मिलन, यह श्रेष्ठ मिलन सतयुगी सृष्टि में भी नहीं होगा। इसीलिए इस युग को महान युग, महा-मिलन का युग, सर्व प्राप्तियों का युग, असम्भव को सम्भव होने का युग, सहज और श्रेष्ठ अनुभूतियों का युग, विशेष परिवर्तन का युग, विश्व-कल्याण का युग, सहज वरदानों का युग कहा जाता है।" अ.बापदादा 17.12.84

* संगमयुग पर ब्राह्मणों के लिए खाना है जीने के लिए और जीना है ईश्वरीय सेवा अर्थात् विश्व-कल्याण के लिए। दुनिया में जीवात्मायें खाते हैं स्वाद के लिए और जीते हैं इन्द्रीय सुखों के उपभोग के लिए। इन्द्रीय सुखों में लिप्त और स्वार्थपरता से परिपूर्ण आत्मा कभी भी विश्व-कल्याण की सेवा में सहयोगी नहीं बन सकती है क्योंकि जिसका स्वयं का ही पेट खाली है, वह दूसरों का पेट क्या भर सकेगा।

वर्तमान समय में सभी आत्मायें शान्ति चाहती हैं और विभिन्न आत्मायें, संगठन, देशों की राज-सत्तायें, धर्म-सत्तायें विश्व में शान्ति के लिए प्रयत्नशील हैं परन्तु उनको पता नहीं कि विश्व में शान्ति कब थी, कैसी थी और वह कब और कैसे स्थापन होगी, इस सत्य का किसको भी पता नहीं है। विश्व-शान्ति की स्थापना का राज़ भी परमात्मा ही संगमयुग पर आकर बताते हैं और ज्ञान देकर योग सिखलाकर विश्व में शान्ति की स्थापना करते हैं। जिससे फिर आधा कल्प तक किसी प्रकार की अशान्ति विश्व में नहीं होगी।

"तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग के योगी। ... तुम बाप के साथ योग लगाने से पवित्र बनते हो। ... अब हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण कुल के। यह पुरुषोत्तम संगमयुग ही कल्याणकारी युग है। अगर संगमयुग याद है तो समझेंगे अब हम नई दुनिया के लिए बदल रहे हैं।"

सा.बाबा 23.3.04 रिवा.

"कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। ... ब्राह्मणों का आक्यूपेशन ही है विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणकारी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है।" अ.बापदादा 18.12.87

"कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। ... ब्राह्मणों का आक्यूपेशन ही है विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणकारी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है।" अ.बापदादा 18.12.87

"बुद्धि में सदैव यही रहना चाहिए कि कैसे बहुतों का कल्याण करें। बाहर वाले प्रजा में दास-दासी बनेंगे, यहाँ वाले फिर राजाओं के दास-दासी बनेंगे।... बाप रहमदिल, दुख हर्ता सुख कर्ता है तो बच्चों को भी बनना है। सबको बाप का परिचय देना है।"

सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

"यह है कल्याणकारी संगमयुग, जबकि पतित दुनिया पावन होती है। इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। ... बाप कल्याणकारी है तो बच्चों को भी बनायेंगे।... अब तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो। सबको हक है पुरुषोत्तम बनने का।"

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग और बृहस्पति की दशा

बृहस्पति की दशा सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है और बृहस्पति को देवताओं के गुरु के रूप में जाना जाता है। बृहस्पति देवताओं के कैसे गुरु हैं और बृहस्पति दशा क्यों और कैसे श्रेष्ठ है, यह ज्ञान भी बृहस्पति परमात्मा ही संगमयुग पर आकर देते हैं और जो आत्मायें उनके बनते हैं, उन पर बृहस्पति की दशा बैठती है, जिसके प्रभाव के कारण वे आत्मायें सतयुग में जाकर देवी देवता बनने का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करते हैं।

"बच्चों के लिए संगमयुग ही बृहस्पति की वेला है, हर घड़ी संगमयुग की बृहस्पति अर्थात् भाग्यवान है। इसलिए भाग्यवान हो, भगवान के हो, भाग्य बनाने वाले हो। भाग्यवान दुनिया के अधिकारी हो।" अ.बापदादा 08.01.86 अमृतवेला विदाई के समय

"तुम बच्चे यहाँ आते हो पुरुषोत्तम बनने। ऊंच ते ऊंच बृहस्पति की दशा होती है। बृहस्पति की दशा बैठने से तुम पुरुषोत्तम बनते हो।... पुरुषोत्तम मास की बड़ी महिमा सुनाते हैं। तो इस पुरुषोत्तम युग की भी बड़ी महिमा है।" सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग और विभिन्न धर्म, धर्म-शास्त्र, धर्म की मान्यतायें

संगमयुग पर ही ज्ञान-सागर, मनुष्य सृष्टि के बीज रूप, सर्वात्माओं के परम पिता परमात्म आकर सर्व धर्मों के विषय में यथार्थ ज्ञान देते हैं क्योंकि कलियुग के अन्त में सभी धर्म वंश की आत्मायें पतित हो जाती हैं और सर्वात्माओं के गति-सद्गतिदाता पतित-पावन परमात्मा आकर सर्वात्माओं के कल्याणार्थ ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान को लेकर वे अपने धर्म-वंश की आत्माओं को ज्ञान देते हैं, जिसके आधार पर वे आत्मायें मुक्ति में जाती हैं और धर्म-स्थापना के उन संस्कारों को लेकर परमधाम जाती हैं और उन संस्कारों के आधार पर ही सभी

धर्मपितायें द्वापर-कलियुग में आकर अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं, जिसके आधार पर बाद में हरेक धर्म का धर्मशास्त्र बनता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने साकार मुरलियों में भी कहा है कि संगम पर बाबा से लिए हुए पैगाम के आधार से ही सभी धर्म-स्थापक द्वापर-कलियुग में आकर अपने-अपने धर्म की स्थापना करते हैं। सब प्रकार का पैगाम लेने का समय ये संगमयुग ही है।

आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना स्वयं परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन के द्वारा करते हैं क्योंकि आदि सनातन देवी-देवता धर्म है सर्व धर्मों का मूल और तना क्योंकि हरेक धर्मवंश की कलम इस आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं के माध्यम से ही लगती है। ये ज्ञान भी परमात्मा ने अभी संगमयुग पर ही दिया है, जिससे सर्व धर्मवंश की आत्माओं के प्रति हमारी अपनत्व की भावना हो गई है और सर्वात्माओं के कल्याणार्थ पुरुषार्थ होता है। ब्राह्मण धर्म या कुल है सर्व धर्मों रूपी झाड़ की जड़, जिसके द्वारा सभी धर्मवंश की आत्माओं को ज्ञान रूपी खाद-जल प्राप्त होता है। गीता को सर्व शास्त्रों का माई-बाप कहा जाता है। गीता का यथार्थ ज्ञान तो परमात्मा अभी संगमयुग पर ही देते हैं।

सभी वेद, शास्त्र, पुराणों और धर्मवंश के शास्त्रों में संगमयुग की ही गाथा है, संगमयुग की ही महिमा है और संगमयुग की प्राप्तियों का ही वर्णन है।

"जैसे यह देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, अभी झाड़ के एण्ड (end) में में खड़ा है। क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है ना। जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा है वैसे वह प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध ... यह सब धर्म की स्थापना करने वाले हैं। ... अन्त में यह भी आकर समझेंगे। पिछाड़ी में सलाम करने आयेंगे जरूर। उन्हों को भी कहेंगे बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप सबके लिए कहते हैं - देह सहित देह के सब धर्मों को छोड़ अपने को अशरीरी समझ बाप को याद करो।"

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

"भगवान तो सबका सद्गति दाता है इसलिए गीता सब धर्म वालों के लिए धर्म-शास्त्र है। सबको इसे मानना पड़े सद्गति का शास्त्र और कोई है नहीं। सद्गति देने वाला है ही एक, उनकी ही गीता है।"

सा.बाबा 30.12.03 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग और भक्ति मार्ग एवं भक्ति के रीति-रिवाज़, कर्मकाण्ड, त्योहार आदि

संगमयुग पर परमात्मा आकर जब ज्ञान देते हैं तो ज्ञान मार्ग का शुभारम्भ होता है और भक्ति मार्ग का अन्त होता है परन्तु भक्ति मार्ग में जो भी कर्म-काण्ड होते हैं, त्योहार आदि मनाये जाते हैं, वे संगमयुग पर होने वाली घटनाओं के ही यादगार रूप होते हैं। परमात्मा भी भक्ति का फल ज्ञान देने के लिए संगमयुग पर ही आते हैं। वास्तविकता तो ये है कि संगमयुग सारे कल्प में होने वाली घटनाओं का बीजरूप अर्थात् बीज बोने का समय है।

"यादव, कौरव, पाण्डव थे, जरूर संगम पर ही होंगे। संगमयुग की हिस्ट्री बैठ बनाई है। त्योहार भी सभी संगमयुग के हैं।... राखी आदि का भी अभी फैशन पड़ गया है। वास्तव में यह है पवित्रता की बात।" सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

"होली अर्थात् पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी है हैपी अर्थात् खुशी। खुशी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। अगर खुशी नहीं है तो होली भी नहीं ... पुरुषोत्तम मास भी होता है। तुम्हारा है पुरुषोत्तम युग। पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य आदि करते हैं। तुम इस पुरुषोत्तम युग में सर्वस्व स्वाहा कर लेते हो। ... दुनिया का सर्वस्व स्वाहा होने के पहले हम अपने को क्यों न स्वाहा करें। उसका तुमको कितना न पुण्य मिलेगा! ... पुरुषोत्तम मास में व्रत-नियम भी रखते हैं। तुम्हारा तो बड़ा भारी व्रत है। ... दिल से ममत्व मिट गया है। आप मुए मर गई दुनिया।"

सा.बाबा 29.8.01 रिवा.

"साक्षात्कार आदि कैसे होते हैं, इसमें संशयबुद्धि नहीं होना है। यह रस्म-रिवाज है। शिवबाबा का भण्डारा है तो उनको याद कर भोग लगाना चाहिए। योग में रहना तो अच्छा ही है, बाबा की याद रहेगी।" सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

"तीन प्रकार से शादी की रस्में हैं - एक ब्राह्मणों के द्वारा, दूसरा कोर्ट के द्वारा तीसरी मन्दिरों और गुरुओं के द्वारा। इन तीनों रस्मों का किस न किस रूप में यहाँ बीज पड़ता है। ... तीनों ही रस्में इस संगम पर अलौकिक रूप से होती हैं।"

अ.बापदादा 14.5.70

"संगमयुग से ही यह सभी रस्म-रिवाज आरम्भ होती है क्योंकि संगमयुग है सर्व बातों का बीज डालने का समय। ... बीजरूप द्वारा सर्व बातों का बीज पड़ता है।"

अ.बापदादा 14.5.70

"मधुवन निवासी ही मधुवन के महत्व को बढ़ा सकते हैं। ... सहनशीलता का बल अपने में धारण करना, क्यों की क्यू को खत्म करना और आसुरी संस्कारों पर पहरा देना है। इन तीन प्रतिज्ञाओं का बेल-पत्र चढ़ाना है। ... पहले बच्चे ही ज्ञान सहित करते हैं, फिर भक्त उसको कापी करते हैं।" अ.बापदादा 5.3.70

"इस ज्ञान मार्ग में भी चलते-चलते अगर विकार में गिर पड़े तो ज्ञान बह जायेगा। ... ज्ञान कितना ऊंच है, आगे तो कुछ नहीं जानते थे।"

सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

"कोई भी मनुष्य को याद न करो। भक्ति मार्ग की जो रस्म है, वह ज्ञान मार्ग में हो नहीं सकती।... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।... साक्षात्कार न ज्ञान है और न योग है। ... खाओ-पियो बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।"

सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

"आज बाबा के पास संदेशी भोग लेकर आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं, बाबा की बेगरी टोली भूल गई है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं, संगम पर तो बेगरी टोली याद पड़ती है, वह ही बाप को प्यारी लगती है। बाप के लिए सुदामा के चावलों की वेल्यू है ना।"

अ.बापदादा 27.8.69

"अभी पुरुषोत्तम मास आया तो पुरुषोत्तम युग पर भी समझानी देते रहते हैं। ... अभी तुम्हारा पुरुषोत्तम युग चल रहा है। भक्तों का पुरुषोत्तम मास चला गया।"

सा.बाबा 2.9.06 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्मा के हिसाब-किताब

मनुष्य कुछ ऐसे कर्म करता है, जिनसे अन्य आत्मायें प्रभावित होती हैं, जिससे उनके साथ हिसाब-किताब बनता है परन्तु अनेक कर्म ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध स्वयं से ही होता है अथवा यों कहें कि कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जो जड़ प्रकृति को प्रभावित करते हैं, जिसके कारण आत्मा का उनके साथ हिसाब-किताब बनता है और प्रकृति उस आत्मा को सुख या दुख देती है। संगमयुग पर इस तरह के हिसाब-किताब भी पूरे होते हैं।

* संगमयुग श्रेष्ठ भाग्य का खाता जमा करने का समय है। शुद्ध संकल्प, कर्म, दृष्टि-वृत्ति, शब्द से पुण्य का खाता जमा होता है, जब ये अशुद्ध होते हैं तो खाता ना (minus) होता है अर्थात् दुखदायी हो जाता है। हमारी दृष्टि-वृत्ति, संकल्प का प्रभाव भी जड़ तत्वों को प्रभावित करता है। परमपिता परमात्मा से प्राप्त ज्ञान की धारणा और उनकी याद ही शुद्ध दृष्टि-वृत्ति, संकल्प और कर्म का आधार है। इस तरह के हिसाब-किताब भी संगमयुग पर पूरे होते हैं।

"अभी बाप रहमदिल है, फिर हिसाब-किताब शुरू होगा। इस समय तो माफ भी कर देते हैं। कड़ी भूल को भी माफ कर और ही मददगार बन आगे उड़ाते हैं। सिर्फ दिल से महसूस करना अर्थात् माफ होना। महसूसता की विधि ही माफी है। तो दिल से महसूस करना।"

अ.बापदादा 14.12.87

"बाप के रूप में हर समय, हर परिस्थिति में साथी है लेकिन थोड़े समय के बाद साथी के बजाये साक्षी होकर देखने का पार्ट चलेगा। ... प्राप्ति में कभी अलबेले नहीं बनना। अभी इतने वर्ष पड़े हैं। सृष्टि-परिवर्तन के समय और प्राप्ति के समय दोनों को मिलाओ मत।... इसलिए सिर्फ दो शब्द याद रखो - भगवान और भाग्य।"

अ.बापदादा 16.1.85

पुरुषोत्तम संगमयुग और आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब

संगमयुग पर ही सर्व आत्माओं के सारे कल्प के परस्पर के हिसाब-किताब पूरे होते हैं और नये कल्प के लिए नये हिसाब-किताब का बीज पड़ता है, इसलिए ही इस युग को संगमयुग कहा जाता है।

इस ड्रामा का रहस्य अति गुह्य है। ड्रामा और कर्मों के गुह्य रहस्य को जानकर हर घटना को साक्षी होकर देखना, निन्दा-स्तुति से दूर अपने पुरुषार्थ में रहने वाले ही संगम के यथार्थ सुख को अनुभव कर सकते हैं। भविष्य की प्राप्तियों, सम्बन्धों, संस्कारों की नींव यहीं से पड़ती है, इसलिए किसी घटना, किसी के सम्बन्धों में कब आश्चर्य नहीं खाना है, ड्रामा के यथार्थ राज़ को जान हर घटना और हर आत्मा के पार्ट को साक्षी होकर देखना है क्योंकि ये संगम का समय आत्माओं के 63 जन्मों के हिसाब-किताब पूरे होने का समय है। परस्पर के सभी पुराने हिसाब-किताब पूरे करने के बाद ही आत्मा घर वापस जा सकेगी।

"तुम संगमयुगी ब्राह्मणों को यह मालूम है कि अभी हम न वेश्यालय में हैं और न शिवालय में हैं। हम शिवालय में जा रहे हैं। अभी वेश्यालय, विकारी सम्बन्धों से हमारा ममत्व निकल गया है। अभी है हमारा भविष्य के सम्बन्धों से ममत्व। हम अभी राजयोगी हैं, वह हैं भोगी। उनसे हमारा क्या कनेक्शन है।" सा.बाबा 24.11.01 रिवा.

संगमयुगी ईश्वरीय जीवन और संगमयुगी क़यामत का समय, हिसाब-किताब चुक्ता करने और नये शुभ सम्बन्धों का बीज बोने का समय है। बिना पुराने हिसाब-किताब के कोई भी आत्मा (भूत-प्रेत, दुष्ट) हमको दुख नहीं दे सकती है परन्तु अभी संगमयुग पर हर आत्मा को पुराने हिसाब-किताब चुक्ता करना ही होंगे। संगमयुग पर सभी पुराने हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं, इसलिए कोई भूत-प्रेत आत्मा किसको दुख दे भी सकती है परन्तु उनको दोष देने और और उनके प्रति अशुभ सोचने से तो और ही दुखदायी हिसाब-किताब बढ़ता है। इसलिए कर्म की गुह्य गति को जानकर निर्भय होकर हरेक के प्रति शुभ भावना रख योग का दान देने से ये हिसाब किताब सहज चुक्ता हो सकते हैं। इसलिए किन्ही भूत-प्रेत आत्माओं से डरना, किसको दोष देने के बजाये अपने स्वाभिमान में रह हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना

रखना ही उन हिसाब-किताब को चुक्ता करने का यथार्थ विधि-विधान है और यही हमारे लिए कल्याणकारी है। परमात्मा ने अभी संगमयुग पर ये विधि-विधान बताया है, इस ज्ञान की यथार्थता को समझकर किसी भी हालत में अपनी मन्सा को कमजोर नहीं करना चाहिए, किसी के प्रति ईष्या-घृणा की भावना जागृत नहीं होने देना है।

संगमयुग है शुभ और शुद्ध कर्म करके सतयुग-त्रेतायुग के लिए नये सुखदायी हिसाब-किताब बनाने का समय, संगमयुग के अतिरिक्त द्वापर-कलियुग के समय में शुभाशुभ दोनों प्रकार के कर्म होते हैं और आत्माओं के साथ दोनों ही प्रकार के हिसाब-किताब बनते और चुक्ता होते रहते हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक महत्व

संगमयुग विश्व में सभ्यता के सर्वोच्च उत्थान और सबसे अधिक पतन के संगम का युग है। संगमयुग पर विश्व में सबसे अधिक धर्म एवं अन्त में सबसे कम (एक) धर्म रहता है। विश्व-इतिहास की सबसे निकृष्ट और सबसे श्रेष्ठ घटनाओं के संगम का समय है। संगम पर सबसे बड़ी महाभारी महाभारत लड़ाई होती है तो संगम के अन्त समय पर ही विश्व में सबसे अधिक शान्ति भी होती है। विश्व की प्राय: सभी वर्तमान सभ्यतायें विलीन हो जाती हैं और एक दैवी सभ्यता अस्तित्व में आती है।

भौगोलिक दृष्टि से भी कल्प में सबसे अधिक देश अर्थात् आवासीय भूमि संगम पर ही होती है और सारा विश्व मिलकर एक देश भी संगम पर ही होता है। कल्प में सबसे अधिक खराब मौसम और समय संगमयुग पर ही होता है तो सबसे श्रेष्ठ शान्तिपूर्ण सदाबहार मौसम भी संगम पर ही होता है।

संगमयुग पर अनेक प्रकार की उथल-पुथल इस भूमण्डल पर होती है, जिससे पृथ्वी अपनी पूर्व स्थिति में आती है। अनेक वर्तमान भूभाग जल-मग्न हो जाते हैं और नये भूभाग अस्तित्व में आते हैं।

"आगे ऋषि-मुनि आदि सच बोलते थे, उस समय रजोगुणी थे। उस समय झूठी दुनिया नहीं कहेंगे। झूठी दुनिया नर्क, कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे - यह नर्क है, वह स्वर्ग है। ऐसे नहीं कि द्वापर को नर्क कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि हैं। अभी हैं तमोप्रधान। तो यह हेल और हेविन संगम पर लिखेंगे।"

सा.बाबा 4.11.03 रिवा.

"21 जन्मों का वर्सा संगम पर ही मिलता है। यह संगमयुग है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण हैं चोटी, फिर है देवताओं का युग।... अभी तुम अच्छे कर्म कर रहे हो, जिसकी फिर सतयुग में प्रालब्ध पाओगे।" सा.बाबा 4.11.03 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग - परमात्मा पिता का वर्सा

बाबा ने कहा है कि बाप अभी संगमयुग पर मिला है तो बाप का वर्सा भी अभी ही मिलना चाहिए। इसलिए बाप का यथार्थ वर्सा है - ज्ञान-गुण-शक्तियां, बाप से प्राप्त स्वमान-वरदान-टाइटिल।

बाबा ने कहा है - बच्चा जन्मते ही बाप के वर्से का अधिकारी बन जाता है। योग्य बच्चा कब ऐसा नहीं कह सकता कि बाप मरे तो हम बाप के वर्से के अधिकारी बनें। नहीं, वह बाप के होते ही बाप के वर्से का अधिकारी होता है, उसका सुख उपभोग करता है। और ही बच्चे को बाप के होते बाप की छत्रछाया में निश्चिन्ता का अनुभव होता है। मां-बाप का प्यार भी बच्चे के लिए उनका वर्सा ही है। अभी बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है और सहयोग दे रहा है, प्यार दे रहा है, वह सतयुग के वर्से से पद्मापद्म गुणा श्रेष्ठ है। इसके लिए एक भक्त कवि ने कहा है -

कंचन हूं कलघौत के धाम करील के कुन्जन ऊपर वारों। अर्थात् उसको कंचन और कलधौत के महलों का सुख नहीं चाहिए, उसको तो श्रीकृष्ण, जिसको वह परमात्मा समझता है, उनका साथ का सुख चाहिए।

तो अभी हमको परमात्मा का जो साथ है, वह सतयुग में नहीं होगा।

Q. परमात्मा पिता का वर्सा क्या है और वह कहाँ मिलेगा अर्थात् उसका सुखद अनुभव कहाँ होगा ? स्वर्ग की राजाई परमात्मा का वर्सा है या संगम पर प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियाँ, अतीन्द्रिय सुख ... परमात्मा का वर्सा है ? ? ?

पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत देश / पुरुषोत्तम संगमयुग और भारत का प्राचीन राजयोग

भारत देश की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान।

संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा आकर भारत के विषय में अनेक रहस्यमय बातों का रहस्योद्घाटन करते हैं और भारतवासियों को भारत के प्राचीन उत्कर्ष की याद दिलाकर उनके स्वमान को जागृत करके भारत को फिर से स्वर्ग बनाते हैं। भारत को लाइट हाउस कहा जाता है।भारत ही आध्यात्मिकता का उद्गम स्थान है और आध्यात्मिकता के मूल स्रोत

परमात्मा की अवतरण भूमि है, कर्तव्य भूमि है, जो सर्व आत्माओं के परमपिता हैं और सर्वात्माओं के आदि पिता ब्रह्मा बाबा की कर्तव्य भूमि है, जो सर्व धर्मों के आदि पिता पितामह हैं।

संगमयुग पर महाभारी महाभारत लड़ाई होती है, जिसके बाद भारत महान बनता है। संगमयुग पर ही शान्ति और पवित्रता का सन्देश सारे विश्व में भारत देश से ही जाता है, जिससे सारे विश्व की आत्मायें पावन बनकर अपने घर परमधाम जाती हैं।

भारत के प्राचीन राजयोग की सारे विश्व में महिमा है और सारे विश्व के लोग भारत का प्राचीन राजयोग सीखने के लिए इच्छुक रहते हैं। ये राजयोग परमपिता परमात्मा ने संगमयुग पर आकर सिखाया था, जिससे सारे विश्व की आत्मायें और तत्व पावन बने थे और नये विश्व का नव-निर्माण हुआ था और भारत भी महान बनता है। भारत के इस प्राचीन राजयोग का मानव जीवन के उत्थान और विश्व के नवनिर्माण में विशेष योग दान है। सभी आत्माओं में वह संगमयुग का संस्कार नीहित रहता है, जिससे समयानुसार आत्माओं में वह संकल्प जाग्रत होता है और पुन: संगमयुग पर उनका वह संकल्प पूरा होता है। परमपिता परमात्मा योग की विधि अर्थात् ज्ञान और योग की सिद्धि अर्थात् एकाग्रता, अतीन्द्रिय सुख संगमयुग पर आत्माओं को वरदान रूप में मिलती है।

भारत के विषय में परमात्मा ने अनेक बातों का ज्ञान दिया है, जिसमें कुछ का संक्षिप्त वर्णन यहाँ करते हैं:-

भारत का यथार्थ ज्ञान
भारत और भगवान का सम्बन्ध का ज्ञान
भारत और स्वर्ग-नर्क का ज्ञान
भारत खण्ड की अविनाश्यता का ज्ञान
भारत के उत्थान-पतन और उसके विश्व के उत्थान-पतन से सम्बन्ध का ज्ञान
भारत की सीमाओं और भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन का ज्ञान
"आबू तीर्थ महान" का ज्ञान
भारत और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया का ज्ञान
भारत और खूने नाहेक खेल का ज्ञान

"भारत की महिमा की जाती है कि भारत अविनाशी तीर्थ है। कैसे ? तीर्थ तो भक्ति मार्ग में होते हैं तो इनको अविनाशी तीर्थ कैसे कह सकते हैं ? ... सतयुग-त्रेता में भी तीर्थ है, जहाँ चैतन्य देवी-देवता रहते हैं। ... भारत है अविनाशी खण्ड। बाकी सब खण्ड विनाश हो जाते हैं। ...

शिवबाबा अभी है। अभी की ही सारी महिमा है। शिवबाबा का यह बर्थ-प्लेस है। ब्रह्मा का भी बर्थ-प्लेस हो गया।" सा.बाबा 3.11.03 रिवा.

"सच बाप सच सुनाते हैं, जिससे तुम बच्चे सच बन जाते हो और सच खण्ड भी बन जाता है। भारत सचखण्ड था। नम्बरवन ऊंच तें ऊंच तीर्थ भी यह है क्योंकि सर्व की सद्गति करने वाला बाप भारत में ही आते हैं। ... ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। वैराग्य है रात का। ... वह है हद का वैराग्य, तुमको तो सारी बेहद की दुनिया से वैराग्य है। संगम पर ही बाप आकर तुम्हें बेहद की बातें समझाते हैं।"

सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

भारत देश महान है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो सबसे अधिक धर्म-पिताओं का जन्म भारत में ही हुआ और उन्होंने अपने-अपने धर्म की स्थापना भारत में ही की है। जैसे शिवबाबा ने आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना की, बुद्ध ने बौध धर्म की स्थापना की, शंकराचार्य ने सन्यास धर्म की स्थापना की, नानक साहब ने सिख धर्म की स्थापना की आदि आदि। इस प्रकार भारत धर्म का मूल स्थान रहा है। प्राय: सभी धर्मों ने भारत भूमि पर राज्य भी किया है और भारत से विपुल धन-सम्पदा लूटकर अपने देशों में ले गये। ड्रामा के अनादि-अविनाशी सिद्धान्त के अनुसार हर चीज को अपने मूल स्थान पर आना ही है, इसलिए जो धन-सम्पदा भारत से लूटकर ले गये, वह वापस भारत में आनी ही है। भारत के सम्बन्ध में इन सब रहस्यों का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी संगमयुग पर ही दिया है।

"इस समय ईश्वर और माया की चट्टाबेटी है। यह भी भारतवासियों को समझाना पड़े। अभी अजुन बहुत दुख आने वाले हैं। अथाह दुख आने वाले हैं। ... पुरुषोत्तम संगमयुग किसको कहा जाता है, यह भी बाप समझाते हैं। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। ... तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण।... भारत सतोप्रधान था, जिसको ही स्वर्ग कहा जाता है। तो जरूर अभी नर्क है।" सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

"भारत में ही रामराज्य और रावण राज्य मशहूर है। ... यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। इस भारत को पुरुषोत्तम बनाकर ही छोड़ना है। ... भारत ही नया और भारत ही पुराना होता है। और कोई खण्ड को नया खण्ड नहीं कहेंगे।"

सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

"यह सारा खेल ही भारत पर बना हुआ है। शिव जयन्ति भी यहाँ मनाते हैं। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ, कल्प बाद फिर आऊंगा। भारत ही पैराडाइज़ था। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था।" सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

"यह सारी कहानी भारत की ही है। सतयुग-त्रेता में भारतवासी राजायें थे। ... इसमें डरने की बात नहीं, कहानी खुशी से सुनाई जाती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है।"

सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

"यहाँ ढेर मनुष्य हैं तो जीव-जन्तु भी ढेर हैं। वहाँ मनुष्य थोड़े होते हैं तो जीव-जन्तु भी थोड़े होते हैं। ... पहले-पहले एक आदि-सनातन देवी-देवता धर्म होगा। जमुना के कण्ठे पर उन्हों का राज्य होगा। ये सब बातें तुम्हारी बुद्धि में बैठनी चाहिए, खुशी रहनी चाहिए।"

सा.बाबा 1.9.06 रिवा.

"मैं भारत में ही आता हूँ। अपना जन्म-देश सबको प्यारा लगता है ना। बाप को तो सब प्यारे लगते हैं। फिर भी मैं अपने भारत देश में ही आता हूँ। ... तुम पाण्डव भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा कर रहे हो। आखिर विजय तो पाण्डवों की ही होनी है।"

सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

"भारत में देवी-देवतायें होकर गये हैं, इसलिए भारत में उनके मन्दिर बहुत हैं। ... बाप के साथ हम भी भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। ... देहली में बिड़ला मन्दिर में लिखा हुआ है- भारत परिस्तान था, जो धर्मराज ने स्थापन किया था।"

सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

"विदेश को भी भारत में ही समा जाना है। विश्व एक हो जायेगी।... भारत वालों को भी खुशी होती है और आप लोगों को भी खुशी होती है। ... स्थापना की सेवा भी दिल्ली में जमुना घाट पर हुई और राज्य भी जमुना घाट पर करना है।" अ.बापदादा 9.1.96

पुरुषोत्तम संगमयुग और अहंकार-हीनता, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति

अभी संगमयुग पर परमात्मा ने जो ज्ञान प्रकाश दिया है अर्थात् आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान दिया है, उसके प्रकाश में देखें तो ब्राह्मण जीवन में अहंकार-हीनता, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति आदि का कोई स्थान नहीं है। इस सत्य का अनुभव अभी संगमयुग पर ही हुआ है, तब ही सत्य ज्ञान को धारण कर इनसे मुक्त होते हैं। इसलिए इस संगमयुग की सतयुग से भी अधिक महिमा है। जो आत्मा इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझ लेती है, वह सहज इनसे मुक्त हो जाती है और संगमयुग पर इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करती है।

ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है, हर आत्मा का पार्ट अपना है और उसके अनुसार

उसकी प्राप्तियां और शक्तियां भी अपनी हैं, इसलिए किसकी प्राप्तियों से अपनी प्राप्तियों की तुलना करके अपने अन्दर अहंकार-हीनता, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा की भावना को जाग्रत करने का कोई औचित्य नहीं है। हर आत्मा को अपनी प्राप्तियों का सुख लेने का ही अधिकार है।

पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा द्वारा दिये गये स्वमान और वरदान

परमात्मा ज्ञान का सागर है और वे ही सर्व आत्माओं के आदि-मध्य-अन्त की कहानी को जानते हैं, इसलिए बाबा हमारे अन्दर सोई हुई शक्तियों को जगाने, सोये हुए संस्कारों को जाग्रत करने, अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा जाग्रत करने के लिए समय-समय पर विभिन्न स्वमानों का वर्णन करते हैं, याद दिलाते हैं और विभिन्न वरदानों को हमारे प्रति उच्चारण करते हैं, जिससे हम उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके अपने कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हों और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। परमात्मा ये कर्तव्य संगमयुग पर ही करते हैं और संगमयुग पर ही हम उन स्वमानों को धारण कर स्वमानधारी बनते हैं, जिससे सारे विश्व की आत्माओं से सम्मान पाते हैं।

स्वमानों का जितना ज्ञान होगा, उन पर जितना निश्चय होगा, उनकी स्मृति होगी उस अनुसार ही हमको नशा होगा और हमारे कर्म होंगे, जिसके फल स्वरूप हमारा वर्तमान और भविष्य जीवन सफल होगा। उन पर निश्चय के अनुसार ही हम अपने उत्तरदायित्व को अनुभव करेंगे और उस अनुसार कर्म करेंगे। जब कर्म श्रेष्ठ होंगे तो कर्म-फल भी अवश्य ही श्रेष्ठ होगा और श्रेष्ठ कर्म-फल ही मानव जीवन की सच्ची पूँजी है, सच्ची विजय है क्योंकि श्रेष्ठ कर्म-फल ही आत्मा का सच्चा साथी है, जो सदा-सर्वदा साथ देता है।

"यह अलौकिक, अव्यक्ति मिलन भविष्य स्वर्ण युग में भी नहीं हो सकता। सिर्फ इस समय इस विशेष युग को वरदान है बाप और बच्चों के मिलने का। इसलिए इस युग का नाम ही है संगमयुग।... बापदादा भी ऐसे कोटों में कोई श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को देख हर्षित होते हैं और स्मृति दिलाते हैं।" अ.बापदादा 14.10.87

परमात्मा ने आत्माओं के प्रति अभी संगमयुग पर जो महावाक्य उच्चारे, जो वरदान दिये, जिन उपाधियों से सम्बोधित किया वे केवल महिमा मात्र, आश्वासन मात्र या केवल उत्साहित करने के लिए नहीं हैं बल्कि शत प्रतिशत सत्य हैं भले ही अभी हम उनको अनुभव न करें परन्तु समय आयेगा जब उनकी हमको अनुभूति होगी। जो समय से पहले उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके, उनका लाभ उठा लेंगे, उनको जीवन की सच्ची

सफलता की अभी भी अनुभव होगी और भविष्य भी सफल होगा। जैसे -
तुम बच्चे बाप समान मास्टर ज्ञान के सागर हो,
तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो।
तुम बच्चे विश्व के कल्याणकारी हो।
तुम जगत के लिए लाइटहाउस-माइट हाउस हो।
तुम स्वराज्य अधिकारी सो विश्व के राज्य अधिकारी हो।
"ब्राह्मण जीवन की ये विशेषता है कि धर्म सत्ता और स्वराज्य सत्ता दोनों हर एक को प्राप्त होती हैं। धर्म सत्ता अर्थात् सत्यता, पवित्रता के धारणा स्वरूप और स्वराज्य सत्ता अर्थात् अधिकारी बन सर्व कर्मेन्द्रियों को अपने अधिकार से आर्डर में चलाना।"

अ.बापदादा 7.3.95

"स्वराज्य अधिकारी किसी भी परिस्थिति, प्रकृति और माया के किसी भी रूप में अधीन नहीं बनेंगे, सदा अधिकारी रहेंगे। ... धर्म सत्ता की निशानी है - लाइट का ताज और राज्य सत्ता की निशानी है रत्न जड़ित ताज। ये दोनों सत्तायें इस समय धारण करते हो।"

अ.बापदादा 7.3.95

तुम विश्व के सहारे दाता हो।
तुम सर्व आत्माओं के पूर्वज हो।
तुम लकी सितारे हो, तुम जगत को रोशन करते हो, तुम्हारे रोशन होने से जगत रोशन होता है।
तुम बेहद सन्यासी हो। (सन्यासी का क्या कर्तव्य होता है - साधना, नियम-संयम, एक परमात्मा के प्रति समर्पणमयता, ब्रह्मचर्य)
तुम योद्धा हो, रुहानी सेना हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।
(योद्धा का कर्तव्य क्या होता है - युद्ध और विजय, नियम-संयम क्या होते हैं - सेना के नियम क्या होते हैं - कमाण्डर की आज्ञा का पालन, कमाण्डर कौन होता है - हमारा सुप्रीम कमाण्डर परमात्मा ही है और जिसको उसने निमित्त बनाया। सेना में कमाण्डर की अनुपस्थिति या मरने के बाद जो सीनियर होता है, वह स्वत: कमाण्ड होल्ड करता है और सब मानते हैं। अनुशासन सेना का मूल सिद्धान्त होता है, जिससे विजय की प्राप्ति सहज होती है)
"ये स्मृति रहे कि हम युद्ध के मैदान पर उपस्थित योद्धे हैं। योद्धे कभी भी आराम पसन्द नहीं होते, आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते। योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, योद्धे कभी भय के वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं।" अ.बापदादा 13.6.73

"रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ यही है कि कभी भी अपनी देह को वा अन्य देहधारी की तरफ नहीं देखना है।" अ.बापदादा 5.7.74

तुम स्वदर्शन चक्रधारी, ब्राह्मण कुल भूषण हो।
तुम बच्चे ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो।
तुम सर्वश्रेष्ठ सत्य ज्ञान की अथॉर्टी हो।
तुम पुरुषोत्तम युगी सर्वोत्तम ब्राह्मण हो।
तुम जगत के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हो।
तुम इस जगत के जगमगाते सितारे हो, तुम्हारे आत्म-प्रकाश से जगत प्रकाशित होता है।
"तुम इस जगत के आधार हो। तुम्हारी चढ़ती कला तो जगत की चढ़ती कला है और तुम्हारी उतरती कला तो जगत की उतरती कला हो जाती है। ड्रामा के रहस्य अनुसार आप ब्राह्मण जगे तो सब जगे। ब्राह्मण जगे तो दिन, रोशनी हो जाती है और ब्राह्मणों की ज्योति बुझी तो विश्व में अन्धकार, रात हो जाती है।... इतनी जिम्मेवारी हर एक पर है।"

अ. बापदादा 2.1.82

तुम इस ब्राह्मण कुल के दीपक हो।
तुम परमात्म की ऑखो के तारे हो।
परमपिता परमात्मा तुम्हारा सर्व सम्बन्धी है।
खुदा तुम्हारा दोस्त है।
तुम परमात्मा के बगीचे के खुशबूदार फूल हो,
"मधुवन को महान भूमि कहा जाता है तो महान भूमि पर रहने वाली आत्मायें भी महान आत्मायें होंगी। तो हम महान आत्मायें हैं - इस रुहानी नशे में रहते हो?"

21.4.73 अ.बापदादा

तुम इस रुद्र ज्ञान यज्ञ के रक्षक हो। तुम्हारा जन्म यज्ञ वेदी से हुआ है।
तुम भक्तों के इष्टदेव हो, भक्त तुमको ही पुकार रहे हैं।
"सभी अपने को ऐसे इष्ट देव-आत्मा समझते हो? ऐसे परम पवित्र, सर्व प्रति रहमदिल, सर्व प्रति मास्टर वरदाता, सर्व प्रति मास्टर रुहानी स्नेह के सागर, सर्व प्रति शुभ-भावनाओं के सागर, ऐसे पूज्य इष्ट देव आत्मा हो।" अ.बापदादा 10.1.82

तुम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हो।
तुम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हो।
तुम पण्डे हो, सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताने वाले हो।

तुम पैगम्बर हो, बाप का पैगाम सबको देना है।
तुम ईश्वरीय कुल के हो।, तुम सच्चे सच्चे वैष्णव हो।, तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो।
तुम ही गोपी वल्लभ के गोप-गोपियाँ हो। बाप के साथी हो।
तुम पाण्डव हो, परमात्मा से प्रीत बुद्धि हो। पाण्डवों की विजय निश्चित है।
तुम विजयमाला के मणके हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।
तुम परमात्मा के नयनों के नूर हो।
तुम परमात्मा के शोकेश के शो-पीस हो।
"चलते-फिरते मन याद में या सेवा में बिजी रहे। स्वमान को कभी नहीं छोड़ो। चाहे झाड़ू लगा रहे हो लेकिन स्वमान क्या है? विश्व की सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ आत्मा हूँ।"

अ.बापदादा 08-10-2002 सेवाधारियों के साथ

"सर्व शक्तियाँ बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इस डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।"

अ.बापदादा 29.10.87

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए और हमारी सुसुप्त शक्तियों को जाग्रत करने के लिए अनेकानेक स्वमानों की स्मृति दिलाई है और समय-समय पर विभिन्न वरदान दिये गये हैं, जो हमारे इस जीवन की सफलता के लिए परम उपयोगी हैं, इसलिए उनकी स्मृति रखना हमारे जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक है।

पुरुषोत्तम संगमयुग और निश्चयबुद्धि

परमात्मा ने विश्व-नाटक, कर्म-सिद्धान्त आदि के जो राज़ और विधि-विधान बताये हैं, संगमयुग का जो महत्व बताया है, जो स्वमानों की स्मृति दिलाई है और जो वरदान दिये हैं, उन पर पूरा निश्चय जितना दृढ़ होगा, उतना ही हमारा पुरुषार्थ तीव्र गति का होगा और उतनी ही जीवन के हर क्षेत्र में सफलता अनुभव होगी। यथा समय, संकल्प, शक्ति का सुदुपयोग, योग का सुख, ज्ञान का सुख जो अभी है, वह सतयुग के सुखों से कई गुणा श्रेष्ठ है। कर्म और फल का जो विधि-विधान परमात्मा ने बताया है, उस अनुसार संगमयुग के कर्म का फल अन्य समय के फल से कई गुणा अधिक होता है।

प्रश्नावली

Q. ये जीवन परम प्राप्ति स्वरूप है, इसकी अनुभूति क्या है और कैसी है ?

Q. संगमयुग का मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख कैसे अनुभव हो ? चाहते हुए भी यथार्थ रीति नहीं कर पाते, क्यों ?

यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव संगमयुग पर ही होता है। अज्ञानता जनित देहाभिमान के कारण इन्द्रीय सुखों की आकर्षण और आदत उस मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख चाहते भी जीवात्मा अनुभव नहीं कर पाती। आत्मा की वह आकर्षण और आदत सतत और दृढ़ आत्मिक स्वरूप के अभ्यास से ही मिटेगी।

Q. सर्व प्राप्तियों का युग संगमयुग है या सतयुग ? क्या सतयुग में सर्व प्राप्तियां होंगी ?

Q. पुरुषोत्तम संगमयुग के विधि-विधान और सतयुग-कलियुग के विधि-विधान में क्या अन्तर है ?

Q. जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति या प्राप्तियां क्या हैं ?

मानव जीवन में सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है मुक्ति-जीवनमुक्ति और मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है परमपिता परमात्मा। परमात्मा अभी है तो प्राप्ति भी अभी ही है। जब परमपिता परमात्मा सतयुग में नहीं होगा तो वहाँ मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कैसे हो सकता है ?

Q. ज्ञान धन सर्वोत्तम धन है, तो क्या सतयुग में यथार्थ ज्ञान होगा ?

सतयुग सर्व भौतिक प्राप्तियों और भौतिक सुखों के अनुभव का युग है परन्तु सर्व प्राप्तियों का युग संगमयुग है। यदि आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ करके अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित है तो अभी ही वह सर्व सुखों का अनुभव करेगी। सत्यता ये है कि उसे सतयुग की भी आकर्षण नहीं होगी अर्थात् वह सतयुग के लिए उतावली नहीं होंगी।

Q. सतयुग की आदि श्रीकृष्ण के जन्मदिन से या लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के दिन से ?

"यह संगमयुग है ही पुरुषोत्तम बनने का युग। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण था। स्वयंवर के बाद उनकी डिग्री कुछ कम हो जाती है, इसलिए श्रीकृष्ण की महिमा बहुत है।"

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

Q. संगमयुग एक का सौगुणा फल प्राप्त करने का युग है - क्यों और कैसे ?

संगमयुग पर आत्मायें जो यज्ञ की सेवा करती हैं या जो परमात्मा के यज्ञ में देती हैं, वह

आत्माओं के कल्याणार्थ प्रयोग होता है, इसलिए उसका सौगुणा फल मिलता है और जो कोई गलत कार्य करते हैं तो उसको देखकर अन्य भी करते हैं, तो उनका अहित होता है, अनेक आत्माओं पर बन्धन आ जाते हैं, परमपिता परमात्मा की निन्दा होती है, इसलिए आत्मा को अपने ऐसे कर्मों की सौगुणा सजा भोगना पड़ती है।

अभी कर्म और फल का यथार्थ ज्ञान है। जानकर जो कर्म किया जाता है, उसका फल अन्जान में किये गये कर्म से अधिक होता है। ये विधि-विधान ज्ञान मार्ग और लौकिक दुनिया दोनों में प्रभावित होता है।

अतीन्द्रिय सुख और इन्द्रिय सुख में कौनसा सुख श्रेष्ठ है ? सतयुग में इन्द्रिय सुख होगा या अतीन्द्रिय सुख ? दोनों प्रकार के सुखों में मूलभूत अन्तर क्या है ?

अतीन्द्रिय सुख भोगने से उसकी उपयोगिता बढ़ती है और इन्द्रीय सुख भोगने से उसकी उपयोगिता कम होती जाती है। इन्द्रिय सुखों को भोगने का साधन इन्द्रियाँ हैं और अतीन्द्रिय सुख स्थूल इन्द्रियों से परे मन-बुद्धि के आधार पर अनुभव करते हैं। इन्द्रिय सुखों की अनुभूति किसी न किसी स्थूल साधन के आधार पर होती है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति परमात्मा और परमात्मा-प्रदत्त ज्ञान के आधार पर होती है। इन्दिय सुख तो सारे कल्प भोगते हैं परन्तु अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का समय ये संगमयुग ही है।

Q. क्या संगमयुग पर अतीन्द्रिय सुख और इन्द्रिय सुख में सन्तुलन होता है ? क्या सतयुग में इन्द्रिय सुख और अतीन्द्रिय सुख में कोई सन्तुलन होगा ?

Q. जीवन क्या है और किसलिए है ?

Q. विचार करो बाबा ने हमको क्या दिया है, हमारे पास क्या है और अब हमारा कर्तव्य क्या है ? हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिए ? समय की पुकार क्या है ?

Q. ये विश्व-नाटक क्या है, इसकी यथार्थता को जानते हुए हमारा कर्तव्य क्या है ? क्या हमारे हाथों में है ?

Q. क्या ये जीवन इन्द्रीय सुख-साधनों की प्राप्ति, उनके उपभोग, उनकी प्राप्ति की खुशी मनाने के लिए है ? क्या उनकी प्राप्ति की खुशी हमको अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति करायेगी ?

इन सत्यों पर विचार करके अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभीष्ट कर्तव्य करो। अपनी प्राप्तियों और विश्व-नाटक की यथार्थता को देखते हुए हमारा कर्तव्य है कि हम बाप समान अपने मूल स्वरूप में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें। यही हमारे हाथों में है। Events can't be changed but we can change our attitude towards events. ये विश्व-नाटक परम कल्याणमय है, देह से न्यारा

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इस स्वरूप का जितना गहन अभ्यास होगा, उतना ही परमानन्द का अनुभव होगा।

Q. स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

स्वेच्छा से देह-त्याग की प्रक्रिया का ज्ञान संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा मिलता है और जिस ज्ञान को पाकर और उसके अनुरूप अभ्यास करके हम अभी भी स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकते हैं और भविष्य सतयुग और त्रेतायुग में अमर पद पाते हैं अर्थात् वहाँ भी स्वेच्छा से देह का त्याग करते हैं और मृत्यु-भय एवं मृत्यु-दुख से मुक्त रहते हैं। इस प्रक्रिया का मूलाधार है यथार्थ आत्म-ज्ञान है, जो संगमयुग पर ही परमात्मा देते हैं और जिसका पुरुषार्थ करके हम आत्माभिमानी बनते हैं। देह में रहते देह से न्यारा होने का अभ्यास ही इसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ है।

जैसे अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में आते हैं, मुरली चलाते हैं, बच्चों से मिलते हैं और चले जाते हैं। कर्तव्य करते हैं परन्तु किससे मोह नहीं है। नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप साक्षी स्थिति ही स्वेच्छा से देह त्याग के लिए मूलभूत आधार है। इस स्थिति में स्थित रहने का लम्बे समय से और गहन रूप का अभ्यास हो। सेकण्ड में देह में आने और देह से न्यारे होने का सतत अभ्यास हो, तब ही हम अन्त समय में स्वेच्छा से देह का त्याग करके मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकते हैं।

मृत्यु-दुख महान दुख है, देहाभिमान मृत्यु-दुख का मूल कारण है। सत्य आत्मिक ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप के दृढ़ अभ्यास से देहाभिमान को समाप्त कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जीवन एक खेल है, मृत्य और जन्म इसमें भिन्न-भिन्न पार्ट बजाने के लिए एक वस्त्र बदलना है। इस सत्य को जानकर अभीष्ट पुरुषार्थ कर इस दुख से मुक्त हो सकते हैं।

"तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां हैं सबको प्राण दान देने वाले, उनके प्राणों को कभी काल आकर बेकायदे, अकाले नहीं ले जायेंगे। वहाँ अकाले मृत्यु होना असम्भव है।... जब जड़जड़ीभूत शरीर होता है तो फिर एक शरीर छोड़कर दूसरा ले लेते हैं। यह प्रैक्टिस यहाँ ही की जाती है।"

सा.बाबा 5.12.03 रिवा.

विविध बिन्दु

नर और मादा अर्थात स्त्री और पुरुष इस सृष्टि के समान महत्वपूर्ण अंग हैं और परमात्मा तथा प्रकृति द्वारा दोनों को समान अधिकार मिले हुए हैं और दोनों के समान कर्तव्य हैं। परन्तु इस सृष्टि के खेल में समयान्तर में ये सन्तुलन असन्तुलित हो जाता है, जिसको आकर परमात्मा फिर सन्तुलित करते हैं। संगमयुग पर ही ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर विश्व-नाटक के, कर्म के, विभिन्न भौतिक राज़ों, नियम-सिद्धान्तों को बताते हैं और संगम पर ही पुरुष-प्रधान सृष्टि को सन्तुलित करने के लिए नारी-प्रधान विधि-विधान को अपनाते हैं अर्थात् ज्ञान-कलष माताओं-बहनों के सिर पर रखते हैं। परमपिता परमात्मा के द्वारा रचित सतयुग-त्रेता की सृष्टि में स्त्री-पुरुष के अधिकार समान रहते हैं, द्वापर से देहाभिमान के कारण सृष्टि पुरुष-प्रधान बनती जाती है, जो असन्तुलन कलियुग के अन्त में अति में हो जाता है, उस असन्तुलन को सन्तुलित करने के लिए संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा का अवतरण होता है और परमात्मा ज्ञान कलष माताओं के सिर पर रखकर, उनका मान-मर्तबा बढ़ाकर उस असन्तुलन को मिटाते हैं।

ये भी सृष्टि का विधान है कि ज्ञान से हिसाब-किताब बनता भी अधिक है तो चुक्ता भी जल्दी होता है। कार्य भी सहज होता है। स्त्री-पुरुष के अधिकारों के 2500 साल के असन्तुलन को ज्ञान के आधार पर परमात्मा संगमयुग के 100 साल में ही सन्तुलित कर देते हैं

संक्षेप में देखें तो ये सृष्टि - सतयुग-त्रेता में सन्तुलित, द्वापर-कलियुग में पुरुष प्रधान अर्थात् असन्तुलित होती है। संगमयुग पर सन्तुलित करने के लिए परमात्मा इसे नारी-प्रधान बनाते हैं अर्थात् ज्ञान-कलष माताओं के सिर पर रखते हैं। सृष्टि को सन्तुलित करने के लिए ही शिवबाबा ने ज्ञान कलष माताओं के सिर पर रखा और साकार बाबा ने भी माताओं-बहनों को मान-सम्मान देकर आगे बढ़ाया और भाइयों को भी कहा कि माताओं को आगे रखना चाहिए।

* ये संगमयुग परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है। सत्य आत्मिक स्वरूप सुख-दुख, अहंकार-हीनता, प्राप्ति-अप्राप्ति ... सबकी फीलिंग से मुक्त है। यथार्थ रीति परमात्मा का साथ अहंकार-हीनता, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, अपने-पराये की फीलिंग से मुक्त, जीवनमुक्त परमानन्दमय है। यथार्थ ज्ञानयुक्त जीवन साक्षी स्थिति भी अहंकार-हीनता, जय-पराजय, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, अपने-पराये की फीलिंग से मुक्त, जीवनमुक्त प्राप्ति-स्वरूप, परम सुखमय है। ऐसे इस संगमयुगी जीवन का सुख अनुभव करो और कराओ, यही इस संगमयुगी जीवन की सफलता है, बाप समान स्थिति है।

साकार ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ कर इस जीवन की परम प्राप्तियों का अनुभव करो। जैसे ब्रह्मा बाबा ने इस जीवन की प्राप्तियों का अनुभव कर यथार्थ पुरुषार्थ के द्वारा आदि से अन्त तक निरन्तर चढ़ती कला गये, न ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ में कब और कहाँ उतार आया और न इस जीवन की परम प्राप्तियों की फीलिंग में उतार आया। निरन्तर चढ़ती कला रही। ऐसे इस जीवन के महत्व को अनुभव कर चढ़ती कला का पुरुषार्थ कर संगमयुग की यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो।

"करके पीछे सोचना अर्थात पश्चाताप का रूप और पहले सोचना फिर करना ये है ज्ञानी तू आत्मा का गुण ... संगमयुग पर पश्चाताप करना अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा नहीं हैं।"

अ.बापदादा 16.2.96

"फिर होता है संगमयुग। ... तो जरूर पहले कलियुग का विनाश होगा और विनाश के पहले स्थापना होगी। सतयुग में तो सतयुग की स्थापना नहीं होगी। ... परमपिता परमात्मा जरूर नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश के लिए ही आयेगा।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

"यह बना-बनाया खेल है। जिनका पिछाड़ी में पार्ट है, 2-4 जन्म लेते हैं तो बाकी समय शान्तिधाम में रहेंगे। बाकी खेल से कोई निकल जाये, यह हो नहीं सकता। ... आत्मा पार्टधारी है। कोई का ऊंचा पार्ट है, कोई का कम। ... ईश्वर ही आकर रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज बताते हैं। ... अच्छी रीति समझने के लिए सात रोज भट्ठी में रहना पड़े। भागवत भी सात रोज रखते हैं।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

"तुमको समझाना है कि यह वही महाभारत लड़ाई है। ... तुम जानते हो आग तो लगनी ही है। बाप आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। ... कलियुग के विनाश के लिए यह महाभारी महाभारत लड़ाई है। ये सब बातें अच्छी रीति धारण कर समझाना है।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

"श्रीकृष्ण को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। वह तो प्रिन्स था, उसने प्रालब्ध भोगी, उनकी महिमा की दरकार नहीं है। देवताओं की क्या महिमा करेंगे।... बाकी उन्होंने क्या किया, सीढ़ी तो उतरते ही आते हैं।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

"यह बेहद का अन्धियारा और सवेरा कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। अभी अज्ञान अन्धियारा दूर होता है। गाते हैं - ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अन्धेरा विनाश। ... भक्ति को अन्धियारा, ज्ञान को रोशनी कहा जाता है।... परमपिता परमात्मा आते ही है संगम पर। ... इसको कहेंगे कल्याणकारी संगमयुग।"

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

"सतयुग में तो फिर भी सीढ़ी धीरे-धीरे उतरते हैं। ... अभी तुम जानते हो हमारी चढ़ती कला चपटी में हो जाती है। गाते हैं जनक को सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिली।" (Q. बाप से सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है या मिलने में समय लगता है? ये संगमयुगी जीवन बाप का जीवनमुक्ति का वर्सा है या नहीं? परमात्मा बाप का यथार्थ वर्सा क्या है?)

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

"भगवान ने आकर ब्रह्मा द्वारा वेदों-शास्त्रों का सार समझाया है। ... तुम हो ब्रह्मा कुमार-कुमारियां। ब्राह्मण वर्ण है ऊंच ते ऊंच। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो। ... अमर कथा, सत्य नारायण की कथा बाप हीं सुनाते हैं, जिससे तुम सेकण्ड में नर से नारायण बनते हो।"

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

"शास्त्रों में ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष दिखाई है। यह जो ब्रह्मा है, जिसमें बाप बैठ वर्सा देते हैं, इनका भी यह शरीर छूट जायेगा।" सा.बाबा 27.9.06 रिवा.

"बापदादा स्नेह का रिटर्न विशेष वरदान दे रहे हैं - "सदा समीप भव, समान समर्थ भव, सदा सम्पन्न-सन्तुष्ट भव"। सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है।" अ.बापदादा 18.1.90

"आज के दिन ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की ... ब्रह्मा बाप प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बनें, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी बनें। आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। ... फरिश्ता स्वरूप धारण कर ऊंचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बनें। ... इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है।" अ.बापदादा 18.1.90

"अपने को हर कदम में पद्मों की कमाई करने वाले पद्मापद्म भाग्यवान समझते हो ? ... संगमयुग बड़े-ते-बड़ी कमाई के सीज़न का युग है।... जो समय के महत्व को जानते हैं, वे स्वत: ही महान बनते हैं। स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है।"

अ.बापदादा 18.1.90 पार्टी

"दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। ... सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधा कल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं लेकिन पूज्य की प्रारब्ध भी अभी ही बनती है।"

अ.बापदादा 18.1.97

"आप जैसी खुशनसीब आत्मायें सारे कल्प में कोई नहीं हैं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ। ... उदास होना अर्थात् माया के दास। ... आपकी कमजोरी भिन्न-भिन्न माया के रूप बन जाती है। ... बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में,

खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दुरुस्त और सदा खुशी के खज़ानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं। ... आपका खुशी का खजाना जितना खर्चो उतना बढ़ता है।"

अ.बापदादा 23.2.97

"साक्षीपन का तख्त कभी छोड़ो नहीं।... साक्षीपन का तख्त ऐसा है, जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनशीन रह सकते हो।... साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती।"

अ.बापदादा 23.2.97

"साक्षीपन का तख्त कभी छोड़ो नहीं। ... जब तख्तनशीन रहने के संस्कार अब से ही डालेंगे तब ही विश्व के तख्त पर भी बैठेंगे। ... संस्कार सब अभी भरने हैं, फिर वही भरे हुए संस्कार सतयुग में कार्य करेंगे। रॉयल्टी के संस्कार अभी से भरने हैं।"

अ.बापदादा 23.2.97

पुरुषोत्तम संगमयुग और चिन्तन-धारा

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान के चिनतन, आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, आत्मा शान्ति का अनुभव करती और अपने परम-लक्ष्य परमशान्ति को प्राप्त करती है। पर-चिन्तन, व्यर्थ चिन्तन से आत्मिक शक्ति का नाश होता है, आत्मा अशान्ति का अनुभव करती है और आत्मा अभीष्ट लक्ष्मय परमशान्ति से दूर होती जाती है। सत्य ज्ञान संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर देते हैं, और तो सारे कल्प में आत्मायें अज्ञानता जनित देह-भान और देहाभिमान के वशीभूत भौतिक पदार्थों का ही चिन्तन करता है, जिससे वह अशान्ति की ओर ही अग्रसर रहता है। भले सतयुग में आत्मा को अशान्ति की अनुभूति नहीं होती है परन्तु वहाँ भी सत्य आध्यात्मिक ज्ञान के न होने के कारण आत्मायें देह-भान के कारण भौतिक पदार्थों का ही जाने-अन्जाने चिन्तन करते हैं, उनकी बुद्धि में वे ही रहते हैं।

"घड़ी-घड़ी यह चिन्तन करने कसे बच्चों को खुशी रहेगी और पुरुषार्थ भी करेंगे। ... सारा दिन बुद्धि में विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। जैसे गाय खाना खाकर उगारती रहती है, ऐसे उगारना है। बच्चों को अविनाशी खज़ाना मिलता है। यह है आत्माओं के लिए भोजन।"

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

"गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्वि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।... तुमको बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता हैं।"

अ. बापदादा 31.5.72

संगमयुग पर तुम नई-नई बातें सुनते हो तो उसका चिन्तन चलना चाहिए, जिसको विचार सागर मंथन कहा जाता है। ... अगर अपने को संगमयुगी ब्राह्मण समझें तो सतयुग के झाड़ देखने में आयें और अथाह खुशी रहे।" सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

अन्दर विचार चलना चाहिए - अभी संगमयुग पर हैं, पावन बन रहे हैं, बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी सुमिरण करना है। ... तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। ईश्वरीय मिशन का काम है पहले तो शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता बनाना। ... तुमको सर्व आत्माओं का कल्याण करने का शौक होना चाहिए।" सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

"इस मुरली में ज्ञान का जादू है। ... इस ज्ञान का विचार सागर मंथन करना चाहिए। स्टूडेण्ट्स विचार सागर मंथन कर ज्ञान को उन्नति में लाते हैं। तुमको यह ज्ञान मिलता है, उस पर अपना विचार सागर मंथन करने से अमृत निकलेगा। अगर ज्ञान का विचार सागर मंथन नहीं होगा तो क्या मंथन होगा ? आसुरी विचार मंथन।"

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

"दान-पुण्य आदि भी यहाँ किया जाता है, सतयुग में नहीं। ... सारा मदार कर्मों पर है। ... इस चक्र का तुमको ही पता है। जो विचार सागर मंथन करते रहेंगे, उनको ही धारणा होगी। मुरली चलाने वाले का विचार सागर मंथन अच्छा चलता रहेगा।"

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कर्तव्य

संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कर्तव्य है ही त्याग, तपस्या और सेवा। ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ना और पढ़ाना, पवित्र बनना और बनाना। जो आत्मायें इस कर्तव्य में सदा लगे रहते हैं, उनको ये संगमयुगी ईश्वरीय जीवन सदा सुखमय अनुभव होता है।

"जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तब तक जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। वर्तमान समय इसका विशेष अटेन्शन चाहिए।" अ.बापदादा 3.4.96

संगमयुग पर परमात्मा पिता द्वारा दिये गये ज्ञान के गुह्य राज, स्वमान, वरदान, टाइटिल, विश्व-नाटक के विधि-विधान बुद्धि में रहें तो ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय अनुभव होगी, वह कभी इस जीवन से ऊब नहीं सकता।

सारांश

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का अनुभव परमानन्दमय है। संगमयुग पर ही परमपिता परमात्मा द्वारा दिये गये इस सत्य का ज्ञान और अनुभव सबसे बड़ी विशेषता है और जो इसका अनुभव करते, वह उनके जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। परमात्मा ही आत्माओं को संगमयुग पर अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराते हैं और उसको चिर-स्थाई बनाना जीवन का परम पुरुषार्थ है एवं उसका दूसरों को भी ज्ञान देना और अनुभव कराना जीवन का परम कर्तव्य है। ये संगमयुगी जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण परमानन्दमय है। राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, भौतिक सुख-साधनों की अच्छा, अप्राप्ति की अनुभूति इस परम समख को अनुभव करने नहीं देती है। ईश्वरीय ज्ञान को समझकर इनकी नश्वरता, उनके दुखद परिणाम को समझकर, उनसे विरक्त होकर इस सुखद स्थिति के लिए सतत अभ्यास करने वाले इसके चिर-स्थाई अनुभव को करने में सफल होते हैं।

ये सृष्टि-चक्र चार समान भागों में विभाजित है। इन चार युगों के अतिरिक्त पांचवा युग संगमयुग है, जो पुरुषोत्तम संगमयुग के नाम से जाना जाता है, जिसकी यादगार पुरुषोत्तम मास है। भक्तों की मान्यता है पुरुषोत्तम मास धर्माऊ मास है अर्थात् उस मास में दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत का विशेष फल होता है। इसका कारण है कि ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा संगमयुग पर ही आकर सत्य ज्ञान देकर आत्माओं को पतित से पावन बनाते हैं, नई सतयुगी दुनिया की स्थापना करते हैं।

ज्ञान-योग-धारणा-सेवा का अपना विशेष सुख है, जिसको अतीन्द्रिय सुख या आनन्द के नाम से जाना जाता है, जो आत्मा को संगमयुग पर ही प्राप्त होता है और वह सतयुगी सुख का आधार है। भौतिक सुख तो सारे कल्प में प्राप्त होते हैं और अभी भी अनेक आत्माओं को प्रचुर मात्रा में प्राप्त हैं फिर भी वे परमात्मा को पुकारते रहते हैं। वर्तमान संगमयुगी जीवन के सच्चे सुख को भूलकर भविष्य सुख की लालसा में जीना भी अज्ञानता-जनित भ्रम ही है। जो आत्मा वर्तमान के सुख को अनुभव करता है और उस अनुसार अभीष्ट पुरुषार्थ करता है, उसके लिए भविष्य सुख तो निश्चित ही है। वह तो इस संगमयुगी जीवन की परछाई मात्र है।

प्रालब्ध पुरुषार्थ से मिलती है, लालसा, इच्छा या मांगने से नहीं। सतयुग की प्रालब्ध भी आत्माओं को अपने पुरुषार्थ से ही मिलेगी। अभी जो जितना तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा से स्वर्ग की स्थापना में सहयोग करता है, उस अनुसार ही वहाँ प्राप्ति होती है। इसलिए

उसकी लालसा में न जीकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है। अभी का ज्ञानयुक्त-योगयुक्त जीवन का सुख सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ है। अभी का ईश्वरीय संग, ईश्वरीय परिवार का संग, विश्व-बन्धुत्व का सुख अद्वितीय है।

संगमयुग ही यथार्थ रीति से मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का समय है, जो आत्माओं को ईश्वरीय वर्सा है और आत्माओं की मूलभूत प्यास है। संगमयुग पर यथार्थ ज्ञान के साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।

गायन है - Student life is the best life. स्टूडेण्ट लाइफ तो अच्छी होती ही है परन्तु ये संगमयुगी ईश्वरीय स्टूडेण्ट लाइफ ही सर्वश्रेष्ठ लाइफ है। इस सुर-दुर्लभ संगमयुगी जीवन का परम सुख अनुभव करने का आधार है - यथार्थ सत्य को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमपिता परमात्मा के साथ इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना।

संगमयुग पर परमात्मा आकर सृष्टि-चक्र के अनादि-अविनाशी नियम बताते हैं - जिन नियम-सिद्धान्तों को समझकर, अनुभव करके निश्चयबुद्धि होकर श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है, जो श्रेष्ठ कर्म ही भविष्य नई दुनिया के आधार हैं। भविष्य सुख का बीज बोने का समय अभी ये संगमयुग ही है, जब हम सृष्टि के बीजरूप परमपिता परमात्मा के साथ हैं। फल तब ही निकलेगा, जब बीज बोयेंगे। सारे कल्प के लिए खाता जमा करने का समय ये संगमयुग ही है। चढ़ती कला का समय ये संगमयुग ही है और तो सारे कल्प आत्मा की उतरती कला ही होती है।

संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् सत्य ज्ञान और सत्य परमात्मा का साथ होने के कारण पुरुषार्थ मेहनत न लगकर प्रालब्ध के समान सुखदायी लगता है, इसीलिए संगमयुग के जन्म को भी जीवनमुक्ति का जन्म माना गया है। जो यथार्थ रीति पुरुषार्थ करता है, उसे ही ये जीवन सुखदायी अनुभव होता है। सत्यता तो ये है कि सतयुग के सुख से भी इस जीवन का सुख अधिक है और महत्वपूर्ण है। सतयुग का सुख तो इस सुख की परछाई मात्र है।

"बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। ... तो चेक करो - क्या जमा हुआ, कितना जमा हुआ ? क्योंकि यह संगमयुग ही जमा करने का युग है, फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालब्ध है।" अ.बापदादा 31.12.03

"श्रीमत तो एक ही है, जिससे तुम श्रेष्ठ बनते हो। मानव मत से श्रेष्ठ कैसे बनेंगे। यह ईश्वरीय मत तुमको एक ही बार संगम पर मिलती है।... तुमको नशा रहना चाहिए कि हम किसके

बच्चे हैं, भगवान हमको पढ़ाते हैं।"

सा.बाबा 14.1.04 रिवा.

"ऐसे-ऐसे विचार-सागर मंथन करना है। जो करेंगे सो पायेंगे। खुशी में भी वे ही आयेंगे और दूसरों को भी खुशी में वे ही लायेंगे।... तुम बच्चे जानते हो, यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह भी कोई को याद रहता है, कोई को नहीं। भूल जाता है। यह भी याद रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। ... जो बहुतों को रास्ता बताते हैं, उनको खुशी बहुत होती है।"

सा.बाबा 15.1.04 रिवा.

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्मा देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाये तो आत्मा को अभी ही परम शान्ति और परम सुख की अनुभूति होगी। जैसे ब्रह्मा बाबा को सदा ही रही।

संगमयुग की प्राप्तियाँ

ज्ञान...
गुण ...
शक्तियां ...
विविध प्रकार के दिव्य अनुभव
विविध प्रकार से प्राप्त खुशियाँ
स्वमान - वरदान - टाइटिल

सतयुग की प्राप्तियाँ

प्रकृति का सतोप्रधान सुख
निरोगी काया
सुन्दर सुसज्जित महल
स्वादिष्ट खान-पान,
निर्भय-निश्चिन्त जीवन
सुमधुर सम्बन्ध
पारिवारिक सुख

अमृत-धारा

ज्ञान के दर्पण में देखो तो विश्व-नाटक का यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु इस सत्य का ज्ञान भी अवश्य रहे कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और सदा कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए वह सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। सत्यता तो ये है कि जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य- बच्चे, तुम आत्म हो, परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। विश्व-नाटक की इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो तथा ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org